भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर
Indian Institute of Technology Indore



वार्षिक प्रतिवेदन
2025-26









अनुक्रमणिका

1. परिचय 02
2. निदेशक संदेश 04
3. शासी मंडल, संस्थान के अधिकारीगण, आईआईटी इंदौर के अभिषद् के सदस्यगण 06
4. शैक्षणिक कार्य 14
5. पदक प्राप्तकर्ता 18
6. रैंकिंग 22
7. संकाय कार्य 23
8. विभाग व स्कूल की प्रोफ़ाइल
   - खगोल विज्ञान, खगोल भौतिकी एवं अंतरिक्ष अभियांत्रिकी विभाग (Astronomy, Astrophysics and Space Engineering) 25
   - रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग (Chemical Engineering) 28
   - रसायन विज्ञान विभाग (Chemistry) 32
   - जानपद अभियांत्रिकी विभाग (Civil Engineering) 34
   - संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग (Computer Science and Engineering) 37
   - विद्युत अभियांत्रिकी विभाग (Electrical Engineering) 39
   - मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान स्कूल (Humanities and Social Sciences) 41
   - गणित विभाग (Mathematics) 43
   - यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग (Mechanical Engineering) 45
   - मेहता फैमिली स्कूल ऑफ बायोसाइंसेज एंड बायोमेडिकल इंजीनियरिंग (Mehta Family School of Biosciences and Biomedical Engineering) 47
   - मेहता फैमिली स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी (Mehta Family School of Sustainability) 49
   - धातुकर्म अभियांत्रिकी एवं पदार्थ विज्ञान विभाग (Metallurgical Engineering and Materials Science) 51
   - भौतिकी विभाग (Physics) 53
   - स्कूल ऑफ़ इनोवेशन (School of Innovation) 55
9. केंद्रों की प्रोफ़ाइल
   - परिष्कृत उपकरण केंद्र (SIC) 58
   - उन्नत इलेक्ट्रॉनिक्स केंद्र (CAE) 63
   - विद्युत वाहन एवं कुशल परिवहन प्रणाली केंद्र (CEVITS) 67
   - अत्याधुनिक रक्षा एवं अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी केंद्र (CFDST) 72
   - उद्यमिता शिक्षा एवं विकास केंद्र (CEED) 74
   - भारतीय वैज्ञानिक परंपरा प्रणाली केंद्र (CISKS) 77
   - संगणक एवं सूचना प्रौद्योगिकी केंद्र (CITC) 80
   - ग्रामीण विकास एवं प्रौद्योगिकी केंद्र (CRDT) 82
   - जयप्रकाश नारायण राष्ट्रीय मानविकी उत्कृष्टता केंद्र (JPN) 91
   - दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन 96
   - अध्यापन एवं पाठ्यचर्या उत्कृष्टता केंद्र (CPCE) 101
   - नर्मदा नदी क्षेत्र प्रबंधन केंद्र (CNRBM) 103
10. प्रशासन अनुभाग, आईआईटी इंदौर शिशु देखभाल केंद्र (क्रेच) सुविधा एवं भर्ती प्रकोष्ठ 108
11. वित्त एवं लेखा अनुभाग 113
12. सामग्री प्रबंधन अनुभाग 117
13. सेवा अनुबंध 119
14. अनुसंधान एवं विकास 121
15. अंतरराष्ट्रीय संबंध 126
16. पूर्व छात्र एवं कॉर्पोरेट संबंध 136
17. शैक्षणिक बाह्यसंपर्क 140
18. मेकरस्पेस 143
19. आधारभूत संरचना विकास कार्यालय 145
20. छात्र कार्य 151
21. करियर उन्नयन एवं मार्गदर्शन केंद्र 157
22. छात्रावास 163
23. केंद्रीय आहार सुविधा 166
24. परामर्श प्रकोष्ठ 168
25. एक भारत श्रेष्ठ भारत 172
26. जनसंपर्क कार्यालय 175
27. संस्थान के कार्यक्रम एवं समारोह 176
28. राजभाषा समिति 187
29. संस्थान की सुविधाएँ
   - संस्थान की सुविधाएँ 191
   - स्वास्थ्य केंद्र 194
   - केंद्रीय कार्यशाला 195

परिचय

मध्य प्रदेश में स्थित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर, जिसे आईआईटी इंदौर अथवा आईआईटीआई के नाम से भी जाना जाता है, राष्ट्रीय महत्त्व का संस्थान है। संस्थान ने वर्ष 2009–10 में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान बॉम्बे के मार्गदर्शन में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के प्रौद्योगिकी एवं अभियांत्रिकी संस्थान के अस्थायी परिसर से कार्य करना प्रारंभ किया।

तत्कालीन केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री अर्जुन सिंह ने 17 फरवरी, 2009 को इंदौर शहर से लगभग 25 किलोमीटर दूर खंडवा रोड पर स्थित सिमरोल में संस्थान के स्थायी परिसर की आधारशिला रखी। यह परिसर लगभग 501.42 एकड़ (2.1 वर्ग किलोमीटर) क्षेत्र में फैला हुआ है। फरवरी 2016 से आईआईटी इंदौर ने अपने स्थायी परिसर से कार्य करना प्रारंभ कर दिया।

संस्थान का आधारभूत संरचनाः संस्थान का कुल क्षेत्रफल लगभग 501 एकड़ है। प्रथम चरण के आधारभूत संरचना विकास के अंतर्गत कुल 2,30,000 वर्ग मीटर निर्मित क्षेत्र विकसित किया गया, जिसमें पाँच छात्रावास, शैक्षणिक पॉड भवन, विद्यार्जन संसाधन केंद्र (केंद्रीय पुस्तकालय), प्रशासनिक भवन, सेमिनार हॉल एवं सभागार सहित व्याख्यान कक्ष परिसर, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, केंद्रीय आहार सुविधा, तीन आवासीय इकाइयाँ, इनडोर एवं आउटडोर सुविधाओं से युक्त खेल परिसर, केन्द्रीय विद्यालय भवन, पीएम–अजय छात्रावास, बहुस्तरीय पार्किंग, वन बीट कार्यालय तथा अन्य सहायक सेवाएँ शामिल हैं।

विभाग / शैक्षणिक क्षेत्रः

- खगोल विज्ञान, खगोल भौतिकी एवं अंतरिक्ष अभियांत्रिकी
- मेहता फैमिली स्कूल ऑफ बायोसाइंसेज़ एंड बायोमेडिकल इंजीनियरिंग
- संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी
- विद्युत अभियांत्रिकी
- यांत्रिक अभियांत्रिकी
- धातुकर्म अभियांत्रिकी एवं पदार्थ विज्ञान
- स्कूल ऑफ इनोवेशन
- रासायनिक अभियांत्रिकी
- जानपद अभियांत्रिकी
- मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान
- भौतिकी
- रसायन विज्ञान
- गणित
- मेहता फैमिली स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी

उपलब्ध शैक्षणिक कार्यक्रमः

- बी.टेक.
- एम.एससी. तथा एम.एससी. + पीएच.डी. (द्वि–उपाधि कार्यक्रम)
- एम.एस. (रिसर्च) तथा एम.एस. (रिसर्च) + पीएच.डी. (द्वि–उपाधि कार्यक्रम)
- डेटा साइंस एवं प्रबंधन में एम.एस. (एम.एस.–डीएसएम)
- विज्ञान में स्नातक (बी.एस.)
- बी.टेक. + एम.टेक. (द्वि–उपाधि कार्यक्रम)
- एम.टेक. तथा एम.टेक. + पीएच.डी. (द्वि–उपाधि कार्यक्रम)
- छात्र विनिमय कार्यक्रम (एसईपी)
- पीएच.डी.
- डिज़ाइन में स्नातक (बी.डिज़ाइन)

आगामी शैक्षणिक कार्यक्रमः

जानपद अभियांत्रिकी विभाग	परिवहन प्रणाली अभियांत्रिकी में एम.टेक. (शैक्षणिक सत्र 2026–27 से) भू–तकनीकी अभियांत्रिकी में एम.टेक. (शैक्षणिक सत्र 2026–27 से) परिवहन नियोजन में एम.टेक. (शैक्षणिक सत्र 2027–28 से)
रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग	रासायनिक प्रक्रिया अभिकल्प एवं बुद्धिमत्ता में एम.टेक. (शैक्षणिक सत्र 2026–27 से)
मेहता फैमिली स्कूल ऑफ बायोसाइंसेज़ एंड बायोमेडिकल इंजीनियरिंग	बायोमेडिकल अभियांत्रिकी एवं डेटा साइंस में बी.टेक. (शैक्षणिक सत्र 2026–27 से)
मेहता फैमिली स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी	सतत विकास के अंतर्विषयी क्षेत्र में पीएच.डी. कार्यक्रम (शैक्षणिक सत्र 2026–27 से) पर्यावरणीय अर्थशास्त्र एवं सतत अभियांत्रिकी में बी.टेक.
रसायन विज्ञान विभाग	अनुप्रयुक्त एवं औद्योगिक रसायन विज्ञान में विज्ञान स्नातक कार्यक्रम (शैक्षणिक सत्र 2026–27 से)

उद्देश्य

21वीं सदी में प्रगति का प्रमुख आधार ज्ञान–आधारित समाजों का विकास है। इसी दिशा में भारत में उच्च शिक्षा के नए संस्थानों की स्थापना हुई है। वर्ष 2009 में स्थापित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर भी इस पहल का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य भारत को वैश्विक स्तर पर ज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अग्रणी बनाना है।

पुराने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए, आईआईटी इंदौर का लक्ष्य शोध–आधारित शिक्षा, नवाचार–प्रेरित अनुसंधान और उद्यमिता पर ध्यान केंद्रित करके भारत की विकास यात्रा को गति देने में सक्रिय भूमिका निभाना है। संस्थान मानवीय सरोकारों को केंद्र में रखते हुए इस मिशन को साकार करने के लिए प्रतिबद्ध है।

दृष्टिकोण

शैक्षणिक गतिविधियाँ

- स्वतंत्र चिंतन तथा अनुसंधान और नवाचार से जुड़े विचारों की मुक्त अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करते हुए एक सशक्त शैक्षणिक समुदाय का निर्माण करना।
- निरंतर अद्यतन ज्ञान के साथ आधुनिक सुविधाओं पर व्यापक व्यावहारिक प्रशिक्षण के बीच संतुलन स्थापित करना।
- डेटा साइंस, इलेक्ट्रिक वाहन, कुशल परिवहन प्रणाली, अंतरिक्ष अभियांत्रिकी तथा भारतीय वैज्ञानिक ज्ञान जैसे भविष्य की आवश्यकताओं से जुड़े क्षेत्रों में नए शैक्षणिक कार्यक्रम प्रारंभ करना।
- अधिक संख्या में अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थियों का चयन करके तथा शिक्षण और अनुसंधान के लिए प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय संकाय सदस्यों को जोड़कर संस्थान का अंतरराष्ट्रीयकरण बढ़ाना।
- विभिन्न स्नातकोत्तर एवं पीएच.डी. कार्यक्रमों में उद्योगों, रक्षा बलों और अभियांत्रिकी संस्थानों से आने वाले अभ्यर्थियों की संख्या बढ़ाना।
- शिक्षण, अनुसंधान और नवाचार में उद्योगों से सहायक संकाय सदस्यों की भागीदारी बढ़ाना।
- पाठ्यक्रम निर्माण में प्रतिष्ठित उद्योगों और विदेशी विश्वविद्यालयों के विशेषज्ञों को शामिल करना।

अनुसंधान, विकास एवं उद्यमिता

- विज्ञान, अभियांत्रिकी तथा मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान के क्षेत्रों में अंतर्विषयी अनुसंधान को बढ़ावा देना।
- सतत विकास, जलवायु परिवर्तन तथा खाद्य एवं जल सुरक्षा जैसे चुनिंदा क्षेत्रों में नवीन और व्यापक सामाजिक प्रभाव वाले अनुसंधान को प्रोत्साहित करना।
- नए उत्पादों, प्रक्रियाओं और प्रौद्योगिकियों के विकास की दिशा में उद्योग–केंद्रित अनुसंधान को बढ़ावा देना।
- जीवन विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान और कृषि विज्ञान का अभियांत्रिकी के साथ समन्वय स्थापित करने पर विशेष ध्यान देना।
- औद्योगिक अनुसंधान पार्क की स्थापना के माध्यम से स्टार्टअप और उद्यमिता की संस्कृति को प्रोत्साहित करना, जो मध्य भारत में इस दिशा में एक प्रमुख केंद्र के रूप में कार्य करेगा।
- पेटेंट प्राप्त करने तथा बौद्धिक संपदा अधिकारों की सुरक्षा के लिए व्यापक स्तर पर प्रयास करना।

लक्ष्य

ध्येय

- सामाजिक आवश्यकताओं से जुड़े अनुसंधान, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, स्वच्छता एवं ग्रामीण विकास के माध्यम से संस्थान की शैक्षणिक, तकनीकी और सामाजिक पहुँच का विस्तार करना।
- उद्योगों, शिक्षण संस्थानों एवं अनुसंधान संस्थानों के लिए विश्वस्तरीय अनुसंधान एवं शिक्षण सुविधाओं का विकास करना।
- कौशल विकास को बढ़ावा देना तथा राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप अनुसंधान एवं नवाचार का विस्तार करना।
- अभियांत्रिकी एवं जैव–चिकित्सा उपकरणों, रक्षा, इलेक्ट्रिक वाहनों, वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों आदि के क्षेत्रों में विश्वस्तरीय तकनीकी नवाचार के विकास में योगदान देना।



निदेशक
संदेश

वित्तीय वर्ष 2025–26 के लिए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत करना मेरे लिए वास्तव में गौरव का विषय है। यह प्रतिवेदन शैक्षणिक प्रगति, नवाचार, अनुसंधान में उत्कृष्टता, उद्योग जगत के साथ जुड़ाव तथा सामाजिक सहभागिता के क्षेत्र में संस्थान की निरंतर उपलब्धियों को प्रतिबिंबित करता है। शिक्षा, अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकी विकास में उत्कृष्टता के दृष्टिकोण से प्रेरित होकर संस्थान प्रतिभाओं को निखारने तथा नवाचारों को राष्ट्र के विकास और वैश्विक स्तर पर सार्थक योगदान में परिवर्तित करने की दिशा में निरंतर प्रयासरत है।

विगत वर्षों में, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर एक ऐसे जीवंत संस्थान के रूप में विकसित हुआ है, जो विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, सृजनात्मकता एवं सहयोग की भावना को प्रोत्साहित करता है। संस्थान की शैक्षणिक कार्यप्रणाली राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 की परिकल्पना के अनुरूप है, जिसमें अंतर्विषयक एवं बहुविषयक शिक्षण, पाठ्यक्रम में लचीलापन तथा कक्षाओं और प्रयोगशालाओं में उद्योग जगत के अनुभवों के समावेश पर विशेष बल दिया गया है। संस्थान इंजीनियरिंग, विज्ञान, मानविकी, डिज़ाइन तथा अंतर्विषयक क्षेत्रों में लगभग 65 शैक्षणिक कार्यक्रम संचालित करता है। इसके बी.टेक., बी.डिज़ाइन, एम.टेक., एम.एस. (रिसर्च), एम.ए. एवं पीएच.डी. कार्यक्रमों में स्थापित विषयों के साथ–साथ कंप्यूटिंग, अंतरिक्ष विज्ञान, पदार्थ अभियांत्रिकी, गणितीय एवं संगणकीय विज्ञान, अंग्रेज़ी (साहित्य एवं भाषाविज्ञान) तथा डिज़ाइन जैसे उभरते हुए क्षेत्र भी शामिल हैं। इस विविधतापूर्ण शैक्षणिक कार्यक्रमों के आधार पर, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर नवोन्मेषी शिक्षण पद्धतियों, लचीले शिक्षण विकल्पों तथा अंतर्विषयक एवं बहुविषयक अध्ययन–अन्वेषण के अवसरों के माध्यम से अपने शैक्षणिक परिवेश को निरंतर सुदृढ़ कर रहा है। उभरती वैज्ञानिक एवं सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप अपने शैक्षणिक कार्यक्रमों का और विस्तार करते हुए, संस्थान आगामी शैक्षणिक सत्र से तीन नए स्नातक कार्यक्रम प्रारंभ करने जा रहा है। इनमें जैव चिकित्सा अभियांत्रिकी एवं डेटा साइंस में बी.टेक., पर्यावरणीय अर्थशास्त्र एवं संधारणीय अभियांत्रिकी में बी.टेक. तथा अनुप्रयुक्त एवं औद्योगिक रसायन विज्ञान में बैचलर ऑफ साइंस (बी.एस.) शामिल हैं। ये नए कार्यक्रम संस्थान के शैक्षणिक कार्यक्रमों में विविधता लाने के साथ–साथ उभरते हुए विषयों के अंतर्संबंधों पर आधारित अध्ययन को प्रोत्साहित करेंगे तथा विद्यार्थियों को भविष्य की तकनीकी चुनौतियों एवं बदलती सामाजिक प्राथमिकताओं के अनुरूप तैयार करने में सहायक होंगे।

अनुसंधान, नवाचार एवं प्रौद्योगिकी का व्यावहारिक रूपांतरण भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर की परिकल्पना के केंद्र में हैं। इस वर्ष संस्थान ने कई महत्वपूर्ण पहलों को आगे बढ़ाया, जिनमें ₹100 करोड़ की एएनआरएफ–पेयर सक्षम नेटवर्क पहल तथा राष्ट्रीय अंतर्विषयी साइबर–भौतिक प्रणाली मिशन (एनएम–आईसीपीएस) के अंतर्गत लगभग ₹100 करोड़ के आवंटन से स्थापित किया जा रहा टेक्नोलॉजी ट्रांसफर रिसर्च पार्क शामिल हैं। उन्नत पदार्थ, स्वास्थ्य सेवा, कृषि एवं संधारणीयता जैसे क्षेत्रों में अनुसंधान को प्रोत्साहन देने के लिए युवा शोधकर्ताओं को ड्रीम लैब, प्रायस परियोजनाओं तथा ट्रांसलेशन रिसर्च फेलोशिप जैसी योजनाओं के माध्यम से प्रारंभिक कैरियर अनुसंधान सीड अनुदान प्रदान किए गए। इसके अतिरिक्त, टेक्नोलॉजी हैंडबुक, रिसर्च स्पेक्ट्रम, वन वीक वन टेक्नोलॉजी तथा इनोक्वेस्ट टॉक्स 1.0 जैसी पहलों ने ज्ञान के प्रसार एवं अनुसंधान उपलब्धियों को व्यापक स्तर पर साझा करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस शैक्षणिक एवं नवाचार पारितंत्र को और सुदृढ़ करने वाली एक अन्य महत्वपूर्ण पहल आईआईटीआई दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन एवं एमपीएसईडीसी द्वारा इंदौर के सिन्हासा आईटी पार्क में स्थापित 'लॉन्चपैडः इन्क्यूबेशन एंड इनोवेशन सेंटर' है। इस केंद्र का उद्घाटन मध्य प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की गरिमामयी उपस्थिति में किया गया। इस केंद्र का उद्देश्य सात वर्षों की अवधि में लगभग 100 स्टार्टअप्स को सहयोग प्रदान करना तथा 200–300 रोजगार के अवसरों का सृजन करना है।

अंतर्विषयक एवं बहुविषयक शिक्षा तथा अनुसंधान के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता को मेहता फैमिली फाउंडेशन के साथ साझेदारी के माध्यम से और अधिक सुदृढ़ किया गया है, जो संस्थान के शैक्षणिक विस्तार की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इस सहयोग के अंतर्गत मेहता फैमिली स्कूल ऑफ बायोसाइंसेज एंड बायोमेडिकल इंजीनियरिंग तथा मेहता फैमिली स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी की स्थापना की गई है। ये स्कूल स्वास्थ्य सेवा, जैव चिकित्सा प्रौद्योगिकी, ऊर्जा, जल, जलवायु तथा पर्यावरणीय संधारणीयता जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में शिक्षा एवं अनुसंधान को आगे बढ़ाने के लिए समर्पित हैं। इन पहलों के साथ–साथ, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों, संगोष्ठियों तथा कार्यशालाओं के आयोजन के माध्यम से शैक्षणिक सहभागिता और ज्ञान के आदान–प्रदान को निरंतर प्रोत्साहित कर रहा है। इनमें राष्ट्रीय जल सम्मेलन 2026, 16वाँ आईईईई इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन कंप्यूटिंग, कम्युनिकेशन एंड नेटवर्किंग टेक्नोलॉजीज़ (ईसीसीसीएनटी 2025), नर्मदा नदी क्षेत्र प्रबंधन पर राष्ट्रीय कार्यशाला तथा 31वाँ ऑल इंडिया मैन्युफैक्चरिंग टेक्नोलॉजी, डिज़ाइन एंड रिसर्च (एआईएमटीडीआर 2025) सहित कई महत्वपूर्ण आयोजन उल्लेखनीय हैं। विमर्श संस्थान लोक व्याख्यान श्रृंखला, विभिन्न क्षेत्रों एवं विषयों के प्रतिष्ठित वक्ताओं और विद्वानों के साथ संवाद के अवसर प्रदान

करके संस्थान के शैक्षणिक वातावरण को समृद्ध करती है। इसके अतिरिक्त, संस्थान का भारतीय वैज्ञानिक ज्ञान परंपरा केंद्र, कार्यशालाओं, संगोष्ठियों तथा प्रमाणपत्र एवं डिप्लोमा कार्यक्रमों के माध्यम से संस्थान समुदाय के बीच भारत की समृद्ध ज्ञान परंपराओं के प्रति जागरूकता एवं समझ विकसित करने की दिशा में कार्यरत है। यह पहल पारंपरिक ज्ञान के प्रति सम्मान की भावना विकसित करने के साथ–साथ समकालीन संदर्भों में उसकी प्रासंगिकता को समझने के लिए भी प्रोत्साहित करती है।

अनुसंधान एवं नवाचार संबंधी निरंतर पहलों के साथ–साथ, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर शैक्षणिक उत्कृष्टता, संधारणीय विकास तथा अपने परिसर समुदाय के कल्याण को ध्यान में रखते हुए परिसर के आधारभूत ढाँचे का निरंतर विस्तार एवं आधुनिकीकरण कर रहा है। वर्तमान में संस्थान में कई प्रमुख आधारभूत संरचना परियोजनाओं पर कार्य प्रगति पर है। इनमें 64 आवासीय इकाइयों तथा 9,795 वर्ग मीटर के कुल निर्मित क्षेत्रफल वाला जी+7 आवासीय परिसर शामिल है, जिसे संकाय सदस्यों एवं अन्य अधिकारियों के आवास हेतु विकसित किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त, 11,000 वर्ग मीटर क्षेत्रफल में फैला जी+7 स्टूडियो अपार्टमेंट परिसर विकसित किया जा रहा है, जिसमें कुल 120 आवासीय इकाइयाँ हैं। इनमें 16 एक–बेडरूम तथा 104 दो–बेडरूम अपार्टमेंट शामिल हैं, जो संस्थान के कर्मचारियों एवं शोधकर्ताओं की आवासीय आवश्यकताओं को पूरा करेंगे। इसके साथ ही, 1,66,231 वर्ग फुट क्षेत्रफल में फैले एक नए छात्रावास का निर्माण भी किया जा रहा है। इसमें 370 से अधिक कमरे होंगे तथा 750 विद्यार्थियों के आवास की क्षमता होगी। इस छात्रावास में अत्याधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएँगी। संस्थान द्वारा सोलर एनर्जी कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया (एसईसीआई), नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से आरईएससीओ मॉडल के अंतर्गत 1 मेगावाट क्षमता का भूमि–आधारित सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित करने की दिशा में भी कार्य किया जा रहा है। लगभग 3.15 एकड़ क्षेत्र में विकसित की जा रही इस परियोजना से 25 वर्षों तक ₹3.04 प्रति किलोवाट–घंटा की निश्चित दर पर विद्युत आपूर्ति उपलब्ध होगी तथा इससे प्रतिवर्ष लगभग ₹75 लाख की विद्युत लागत में बचत होने की उम्मीद है। इसके अतिरिक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन के निर्धारित मानदंडों के अनुरूप केन्द्रीय विद्यालय के लिए 63,840 वर्ग फुट के प्रस्तावित निर्मित क्षेत्रफल वाला एक नया जी+2 भवन भी निर्मित किए जाने की योजना है। इन आधारभूत संरचना संबंधी पहलों के साथ–साथ, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर ने अपने अनुसंधान एवं नवाचार पारितंत्र को सुदृढ़ करने की दिशा में भी उल्लेखनीय प्रगति की है। संस्थान द्वारा 21,662 वर्ग फुट क्षेत्रफल में सीजीएस उन्नत अनुसंधान संकुल भी विकसित किया गया है, जिसमें 10 अत्याधुनिक प्रयोगशालाएँ, 24 संकाय कक्ष तथा विद्यार्थियों के लिए 96 कार्यस्थल उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त, आईआईटीआई दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन द्वारा डिजिटल स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में संवर्धित वास्तविकता (एआर) एवं आभासी वास्तविकता (वीआर) आधारित नवाचार प्रयोगशाला *'स्वास्थ्यएक्सआर'* का उद्घाटन किया गया। ये सभी पहलें आधुनिक आधारभूत संरचना के विकास, संधारणीय परिसर निर्माण, प्रौद्योगिकी उन्नयन तथा अनुसंधान–आधारित नवाचार के प्रति संस्थान की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर, उद्योग जगत के साथ अपने जुड़ाव को निरंतर सुदृढ़ करने, विद्यार्थियों के लिए रोजगार के अवसरों का विस्तार करने तथा उभरते प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में रणनीतिक सहयोग को बढ़ावा देने की दिशा में निरंतर प्रयासरत है। शैक्षणिक सत्र 2024–25 के प्लेसमेंट सत्र के दौरान संस्थान में प्रौद्योगिकी, कोर इंजीनियरिंग, वित्त, परामर्श एवं ऊर्जा क्षेत्रों की 130 से अधिक कंपनियों ने भर्ती प्रक्रिया में भाग लिया तथा लगभग 400 प्लेसमेंट ऑफर प्राप्त हुए। रिपोर्टिंग के समय तक 85 प्रतिशत से अधिक बी.टेक. विद्यार्थियों का प्लेसमेंट हो चुका था। इस दौरान उच्चतम वार्षिक वेतन पैकेज ₹1 करोड़ से अधिक रहा, जबकि औसत वार्षिक वेतन पैकेज में 13 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई और यह लगभग ₹27 लाख तक पहुँच गया। संस्थागत सहयोग को और सुदृढ़ करने की दिशा में, आईआईटीआई दृष्टि ने एमएच महू तथा एमसीटीई, महू के वरिष्ठ रक्षा स्वास्थ्य सेवा प्रतिनिधिमंडल की मेजबानी की। इस दौरान डिजिटल स्वास्थ्य सेवा एवं अनुसंधान के व्यावहारिक रूपांतरण से संबंधित विषयों पर चर्चा की गई। प्रतिनिधिमंडल ने रक्षा स्वास्थ्य सेवा की आवश्यकताओं को पूरा करने के उद्देश्य से संचालित अनुसंधान पहलों एवं स्टार्टअप–आधारित समाधानों की संभावनाओं का पता लगाने के लिए चरक केंद्र का भी दौरा किया। इस पहल से रक्षा, स्वास्थ्य सेवा एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में परस्पर सहयोग को बढ़ावा मिला।

आगामी पाँच वर्षों में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर ज्ञान, नवाचार एवं सामाजिक प्रभाव के एक अग्रणी केंद्र के रूप में अपनी स्थिति को और सुदृढ़ करने के लिए संकल्पित है। 230 से अधिक संकाय सदस्यों एवं 170 से अधिक कर्मचारियों की समर्पित टीम के सहयोग से संस्थान शैक्षणिक उत्कृष्टता, अनुसंधान एवं संस्थागत विकास की दिशा में निरंतर प्रगति कर रहा है। संस्थान का लक्ष्य लक्षित जनसंपर्क एवं ग्रामीण विकास संबंधी पहलों के माध्यम से समुदायों के साथ अपने जुड़ाव को और सुदृढ़ करना, डिजिटल स्वास्थ्य सेवा एवं संधारणीयता के क्षेत्रों में उन्नत अनुप्रयुक्त अनुसंधान को बढ़ावा देना तथा सहयोगात्मक अनुसंधान एवं विकास, कौशल विकास और प्रौद्योगिकी अंगीकरण को प्रोत्साहित करने के लिए उद्योग जगत के साथ साझेदारियों का विस्तार करना है। इसके साथ ही, संस्थान इन्क्यूबेशन, मार्गदर्शन एवं उद्योग जगत के सहयोग के माध्यम से नवाचार एवं उद्यमिता के एक गतिशील पारितंत्र को विकसित करने की दिशा में भी प्रयासरत है, ताकि संभावनाशील विचारों को प्रभावशाली समाधानों में परिवर्तित किया जा सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप, संस्थान ने शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाओं को सुदृढ़ करने, पाठ्यक्रम संबंधी नवाचार को प्रोत्साहित करने तथा शैक्षणिक उत्कृष्टता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से अध्यापन एवं पाठ्यचर्या उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना की है। पर्यावरणीय संधारणीयता एवं जल संसाधन प्रबंधन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को आगे बढ़ाते हुए, जल शक्ति मंत्रालय द्वारा प्रारंभ किए गए नर्मदा नदी क्षेत्र प्रबंधन केंद्र (सी–नर्मदा) के माध्यम से संस्थान नर्मदा नदी क्षेत्र के लिए स्थिति आकलन एवं प्रबंधन योजना (सीएएमपी) से संबंधित अध्ययन कर रहा है।

इन पहलों तथा संस्थान के शैक्षणिक एवं प्रशासनिक समुदाय के सामूहिक प्रयासों के माध्यम से, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर उभरती चुनौतियों का समाधान करने तथा ऐसे भावी विद्यार्थियों को तैयार करने के लिए प्रतिबद्ध है, जो समाज के विकास में सार्थक योगदान दे सकें।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर की प्रगति एवं उपलब्धियाँ इसके शैक्षणिक समुदाय और सहयोगी संस्थानों की सामूहिक प्रतिबद्धता, समर्पण एवं दूरदर्शिता का प्रतिबिंब हैं। मैं संस्थान की प्रगति एवं विकास में अमूल्य योगदान देने वाले अपने सभी संकाय सदस्यगण, विद्यार्थीगण, कर्मचारीगण, पूर्व विद्यार्थीगण एवं सहयोगी संस्थानों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। उनका निरंतर सहयोग एवं साझा प्रतिबद्धता उत्कृष्टता की दिशा में हमारी यात्रा का अभिन्न अंग है।

हम सब मिलकर ऐसे संस्थान के निर्माण की दिशा में निरंतर प्रयासरत रहेंगे, जो ज्ञान को आगे बढ़ाए, नवाचार को प्रेरित करे तथा सत्यनिष्ठा, समावेशिता और मानवता के प्रति अटूट प्रतिबद्धता के साथ समाज की सेवा करे।

सुहास एस. जोशी
निदेशक, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर

शासी मंडल



अध्यक्ष

डॉ. के. शिवन
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर

सदस्यगण

प्रोफेसर सुहास एस. जोशी
निदेशक, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर

श्रीमती सौम्या गुप्ता
संयुक्त सचिव (तकनीकी शिक्षा), भारत सरकार
शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली

श्री मनीष सिंह, भा.प्र.से.
प्रधान सचिव
तकनीकी शिक्षा एवं कौशल विकास विभाग
मध्य प्रदेश सरकार

प्रो. योगेश एम. जोशी
रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर

प्रो. अरुणा तिवारी (अभिषद् नामित सदस्य)
संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर

प्रो. बिस्वरूप पाठक (अभिषद् नामित सदस्य)
रसायन विज्ञान विभाग
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर

श्री एस. पी. होता
कुलसचिव एवं शासी मंडल के सचिव
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर

संस्थान के अधिकारीगण



निदेशक, आईआईटी इंदौर
प्रो. सुहास एस. जोशी



अधिष्ठाता, शैक्षणिक कार्य
प्रो. विपुल सिंह



अधिष्ठाता, शैक्षणिक बाह्य संपर्क
प्रो. देवेंद्र एल. देशमुख



अधिष्ठाता, प्रशासन
प्रो. संदीप चौधरी



अधिष्ठाता, आधारभूत संरचना विकास
प्रो. पंकज आर. सगदेव



अधिष्ठाता, अनुसंधान एवं विकास
प्रो. अभिरूप दत्ता



अधिष्ठाता, छात्र कार्य
प्रो. आमोद सी उमरीकर



अधिष्ठाता, अंतरराष्ट्रीय संबंध
प्रो. प्रभात कुमार उपाध्याय



अधिष्ठाता, संकाय कार्य
प्रो. अभिषेक श्रीवास्तव



अधिष्ठाता, पूर्व छात्र एवं कॉर्पोरेट संबंध
प्रो. सुमन मुखोपाध्याय



अधिष्ठाता, सूचना प्रौद्योगिकी आधारभूत संरचना एवं स्वचालन
प्रो. सत्य एस. बुलुसु



कुलसचिव, आईआईटी इंदौर
श्री एस. पी. होता

सह अधिष्ठाता

शैक्षणिक कार्य (स्नातकोत्तर एवं पीएच.डी. कार्यक्रम)	:	प्रो. सोमनाथ डे
अनुसंधान एवं विकास–I	:	प्रो. सूर्य प्रकाश
प्रशासन (वित्त एवं एमएमएस)	:	प्रो. पवन के. कांकर
छात्र कार्य–I	:	डॉ. जयप्रकाश मुरुगेसन
छात्र कार्य–II	:	डॉ. अभिजीत जोशी

विभागाध्यक्ष

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान	:	प्रो. रुचि शर्मा
मेहता फैमिली स्कूल ऑफ बायोसाइंसेज़ एंड बायोमेडिकल इंजीनियरिंग	:	प्रो. परिमल कर
मेहता फैमिली स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी	:	प्रो. प्रीति शर्मा
विद्युत अभियांत्रिकी	:	डॉ. स्वामीनाथन आर.
यांत्रिक अभियांत्रिकी	:	प्रो. आनंद पारे
संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी	:	डॉ. रणवीर सिंह
धातुकर्म अभियांत्रिकी एवं पदार्थ विज्ञान	:	डॉ. अजय कुमार कुशवाहा
जानपद अभियांत्रिकी	:	डॉ. गौरब सिल
खगोल विज्ञान, खगोल भौतिकी एवं अंतरिक्ष अभियांत्रिकी	:	डॉ. सौरभ दास
रासायनिक अभियांत्रिकी	:	डॉ. ईश्वर प्रसाद कोरमिल्ली
गणित	:	डॉ. संजीव सिंह
भौतिकी	:	प्रो. प्रीति ए. भोबे
रसायन विज्ञान	:	डॉ. उमेश ए. क्षीरसागर

केंद्रों के प्रभारी प्राध्यापक

उन्नत इलेक्ट्रॉनिक्स केंद्र	:	प्रो. विवेक कन्हंगड़
अत्याधुनिक रक्षा एवं अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी केंद्र	:	डॉ. बोधिसत्व मजूमदार
उद्यमिता शिक्षा एवं विकास केंद्र	:	प्रो. शेख एम. मोबिन
ग्रामीण विकास एवं प्रौद्योगिकी केंद्र	:	प्रो. देबायन सरकार
डीएसटी–फिस्ट गियर अभियांत्रिकी उत्कृष्टता केंद्र	:	प्रो. नीलेश कुमार जैन
परिष्कृत उपकरण केंद्र	:	प्रो. अपूर्व के. दास
भारतीय वैज्ञानिक ज्ञान परंपरा केंद्र	:	प्रो. जी. एस. मूर्ति
इलेक्ट्रिक वाहन एवं कुशल परिवहन प्रणाली केंद्र	:	डॉ. सुनील कुमार
करियर उन्नयन एवं मार्गदर्शन केंद्र	:	डॉ. अंकुर मिगलानी
केंद्रीय कार्यशाला	:	डॉ. डैन सत्यराज
प्रभारी प्राध्यापक, खेल संवर्धन	:	डॉ. स्वामीनाथन आर.

अप्रैल 2025 से मार्च 2026 के दौरान आयोजित अभिषद् की बैठकें

1	53वीं अभिषद् बैठक	23.04.2025
2	54वीं अभिषद् बैठक	25.06.2025
3	55वीं अभिषद् बैठक	08.07.2025
4	56वीं अभिषद् बैठक	17.09.2025
5	57वीं अभिषद् बैठक	17.10.2025
6	58वीं अभिषद् बैठक	26.11.2025
7	59वीं अभिषद् बैठक	22.12.2025
8	60वीं अभिषद् बैठक	29.01.2026
9	61वीं अभिषद् बैठक	26.02.2026

अप्रैल 2025 से मार्च 2026 के दौरान आयोजित शासी मंडल की बैठकें

1	शासी मंडल की 57वीं बैठक	09.07.2025
2	शासी मंडल की 58वीं बैठक	08.12.2025
3	शासी मंडल की 59वीं बैठक	27.03.2026

आईआईटी इंदौर के अभिषद् के सदस्यगण

अध्यक्ष

प्रोफ़ेसर सुहास एस. जोशी
निदेशक, आईआईटी इंदौर

बाहरी विशेषज्ञ

प्रो. हिमांशु राय	निदेशक	भारतीय प्रबंध संस्थान इंदौर प्रबंध शिखर, राऊ–पीथमपुर रोड, इंदौर 453556, मध्य प्रदेश, भारत

अधिष्ठातागण

अधिष्ठाता, शैक्षणिक कार्य	प्रो. विपुल सिंह	प्राध्यापक, विद्युत अभियांत्रिकी विभाग
अधिष्ठाता, प्रशासन	प्रो. संदीप चौधरी	प्राध्यापक, जानपद अभियांत्रिकी विभाग
अधिष्ठाता, अंतर्राष्ट्रीय संबंध	प्रो. प्रभात कुमार उपाध्याय	प्राध्यापक, विद्युत अभियांत्रिकी विभाग
अधिष्ठाता, आधारभूत संरचना विकास	प्रो. पंकज सगदेव	प्राध्यापक, भौतिकी विभाग
अधिष्ठाता, अनुसंधान एवं विकास	प्रो. अभिरूप दत्ता	प्राध्यापक, खगोल विज्ञान, खगोल भौतिकी एवं अंतरिक्ष अभियांत्रिकी विभाग
अधिष्ठाता, छात्र कार्य	प्रो. आमोद सी. उमरीकर	प्राध्यापक, विद्युत अभियांत्रिकी विभाग
अधिष्ठाता, पूर्व छात्र एवं कॉर्पोरेट संबंध	प्रो. सुमन मुखोपाध्याय	प्राध्यापक, रसायन विज्ञान विभाग
अधिष्ठाता, संकाय कार्य	प्रो. अभिषेक श्रीवास्तव	प्राध्यापक, संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग
अधिष्ठाता, शैक्षणिक बाह्य संपर्क	प्रो. देवेंद्र लक्ष्मणराव देशमुख	प्राध्यापक, यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग
अधिष्ठाता, सूचना प्रौद्योगिकी आधारभूत संरचना एवं स्वचालन	प्रो. सत्य एस. बुलुसु	प्राध्यापक, रसायन विज्ञान विभाग

विभागाध्यक्षगण

विभागाध्यक्ष, जानपद अभियांत्रिकी	डॉ. गौरब सिल	सह प्राध्यापक, जानपद अभियांत्रिकी विभाग
विभागाध्यक्ष, संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी	डॉ. रणवीर सिंह	सह प्राध्यापक, संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग
विभागाध्यक्ष, विद्युत अभियांत्रिकी	डॉ. स्वामीनाथन आर.	सह प्राध्यापक, विद्युत अभियांत्रिकी विभाग
विभागाध्यक्ष, यांत्रिक अभियांत्रिकी	प्रो. आनंद पारे	प्राध्यापक, यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग
विभागाध्यक्ष, धातुकर्म अभियांत्रिकी एवं पदार्थ विज्ञान	डॉ. अजय कुमार कुशवाहा	सह प्राध्यापक, धातुकर्म अभियांत्रिकी एवं पदार्थ विज्ञान विभाग
विभागाध्यक्ष, खगोल विज्ञान, खगोल भौतिकी एवं अंतरिक्ष अभियांत्रिकी	डॉ. सौरभ दास	सह प्राध्यापक, खगोल विज्ञान, खगोल भौतिकी एवं अंतरिक्ष अभियांत्रिकी विभाग
विभागाध्यक्ष, रसायन विज्ञान	डॉ. उमेश ए. क्षीरसागर	सह प्राध्यापक, रसायन विज्ञान विभाग
विभागाध्यक्ष, गणित	डॉ. संजीव सिंह	सह प्राध्यापक, गणित विभाग
विभागाध्यक्ष, भौतिकी	प्रो. प्रीति ए. भोबे	प्राध्यापक, भौतिकी विभाग
विभागाध्यक्ष, रासायनिक अभियांत्रिकी	डॉ. ईश्वर प्रसाद कोरमिल्ली	सह प्राध्यापक, रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग

स्कूलों के विभागाध्यक्षगण

विभागाध्यक्ष, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान स्कूल	प्रो. रुचि शर्मा	प्राध्यापक, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान स्कूल
विभागाध्यक्ष, मेहता फैमिली स्कूल ऑफ बायोसाइंसेज़ एंड बायोमेडिकल इंजीनियरिंग	प्रो. परिमल कर	प्राध्यापक, मेहता फैमिली स्कूल ऑफ बायोसाइंसेज़ एंड बायोमेडिकल इंजीनियरिंग
विभागाध्यक्ष, मेहता फैमिली स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी	प्रो. प्रीति शर्मा	प्राध्यापक, मेहता फैमिली स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी

प्राध्यापकगण

प्रो. नीलेश कुमार जैन	यांत्रिक अभियांत्रिकी
प्रो. आनंद पारे	यांत्रिक अभियांत्रिकी
प्रो. राम बिलास पचौरी	विद्युत अभियांत्रिकी
प्रो. अभिनव क्रांति	विद्युत अभियांत्रिकी
प्रो. विमल भाटिया	विद्युत अभियांत्रिकी
प्रो. रजनीश मिश्रा	रसायन विज्ञान
प्रो. सुमन मुखोपाध्याय	रसायन विज्ञान
प्रो. शुभेंदु रक्षित	भौतिकी
प्रो. कृष्णा आर. मवाणी	भौतिकी
प्रो. सारिका जालान	भौतिकी
प्रो. संदीप चौधरी	जानपद अभियांत्रिकी
प्रो. अविनाश सोनावणे	मेहता फैमिली स्कूल ऑफ बीएसबीई
प्रो. जी. एस. मूर्ति	मेहता फैमिली स्कूल ऑफ बीएसबीई
प्रो. संतोष कुमार विश्वकर्मा	विद्युत अभियांत्रिकी
प्रो. शैबल मुखर्जी	विद्युत अभियांत्रिकी
प्रो. विपुल सिंह	विद्युत अभियांत्रिकी
प्रो. प्रभात कुमार उपाध्याय	विद्युत अभियांत्रिकी
प्रो. तृप्ति जैन	विद्युत अभियांत्रिकी
प्रो. मुकेश कुमार	विद्युत अभियांत्रिकी
प्रो. मनीष कुमार गोयल	जानपद अभियांत्रिकी
प्रो. नीलिमा देवरकोंडा सत्यम	जानपद अभियांत्रिकी
प्रो. पलानी इयाम्पेरुमल आनंद	यांत्रिक अभियांत्रिकी
प्रो. भूपेश कुमार लाड	यांत्रिक अभियांत्रिकी
प्रो. संतोष कुमार साहू	यांत्रिक अभियांत्रिकी
प्रो. ऋतुनेश कुमार	यांत्रिक अभियांत्रिकी
प्रो. दिनाकरन शनमुगम	यांत्रिक अभियांत्रिकी
प्रो. अरुणा तिवारी	संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी
प्रो. अभिषेक श्रीवास्तव	संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी
प्रो. कपिल आहूजा	संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी

प्रो. अभिरूप दत्ता	खगोल विज्ञान, खगोल भौतिकी एवं अंतरिक्ष अभियांत्रिकी
प्रो. अमित कुमार	मेहता फैमिली स्कूल ऑफ बीएसबीई
प्रो. प्रशांत कोडगिरे	मेहता फैमिली स्कूल ऑफ बीएसबीई
प्रो. एस. के. सफीक अहमद	गणित
प्रो. अपूर्व कुमार दास	रसायन विज्ञान
प्रो. संपक सामंत	रसायन विज्ञान
प्रो. संजय कुमार सिंह	रसायन विज्ञान
प्रो. बिस्वरूप पाठक	रसायन विज्ञान
प्रो. निर्मला मेनन	मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान
प्रो. प्रीति शर्मा	मेहता फैमिली स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी
प्रो. रुचि शर्मा	मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान
प्रो. प्रीति आनंद भोबे	भौतिकी
प्रो. राजेश कुमार	भौतिकी
प्रो. सुदेशना चट्टोपाध्याय	भौतिकी
प्रो. परशराम मारुति शिरागे	धातुकर्म अभियांत्रिकी एवं पदार्थ विज्ञान
प्रो. स्वदेश कुमार साहू	गणित
प्रो. रघुनाथ साहू	भौतिकी
प्रो. आमोद सी. उमरीकर	विद्युत अभियांत्रिकी
प्रो. विवेक कन्हंगड़	विद्युत अभियांत्रिकी
प्रो. श्रीवत्सन वासुदेवन	विद्युत अभियांत्रिकी
प्रो. देवेंद्र लक्ष्मणराव देशमुख	यांत्रिक अभियांत्रिकी
प्रो. पंकज रमेश सगदेव	भौतिकी
प्रो. अंखी रॉय	भौतिकी
प्रो. सोमादित्य सेन	भौतिकी
प्रो. शेख मोहम्मद मोबिन अब्दुल मुजीब	रसायन विज्ञान
प्रो. तुषार कांति मुखर्जी	रसायन विज्ञान
प्रो. अंजन चक्रवर्ती	रसायन विज्ञान
प्रो. सत्य सिलेंद्र बुलुसु	रसायन विज्ञान
प्रो. चेल्वम वेंकटेश	रसायन विज्ञान
प्रो. किरण बाला	मेहता फैमिली स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी
प्रो. मिर्जा साकिब बेग	मेहता फैमिली स्कूल ऑफ बीएसबीई
प्रो. अनिर्बान सेनगुप्ता	संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी
प्रो. नेमिनाथ हुब्बल्ली	संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी
प्रो. रूपेश शिवाजी देवण	धातुकर्म अभियांत्रिकी एवं पदार्थ विज्ञान
प्रो. संतोष सत्तप्पा होसमनी	धातुकर्म अभियांत्रिकी एवं पदार्थ विज्ञान

प्रो. एंटनी विजेश विलावरायन	गणित
प्रो. नीरज कुमार शुक्ला	गणित
प्रो. सत्यजीत चटर्जी	यांत्रिक अभियांत्रिकी
प्रो. काजी साबिरुद्दीन	यांत्रिक अभियांत्रिकी
प्रो. पवन कुमार कांकर	यांत्रिक अभियांत्रिकी
प्रो. शरद गुप्ता	मेहता फैमिली स्कूल ऑफ बीएसबीई
प्रो. सूर्य प्रकाश	संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी
प्रो. सोमनाथ डे	संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी
प्रो. संजराम प्रेमजीत खंगनबा	मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान
प्रो. एम. तनवीर	गणित
प्रो. शैलेश कुंडलवाल	यांत्रिक अभियांत्रिकी
प्रो. देबायन सरकार	रसायन विज्ञान
प्रो. गौरीनाथ बांदा	संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी
प्रो. मोहम्मद अकील खान	गणित

अन्य प्राधिकारीगण

मुख्य छात्रावास अधीक्षक	डॉ. सप्तर्षि घोष (सह प्राध्यापक, विद्युत अभियांत्रिकी विभाग)
स्वास्थ्य केंद्र सलाहकार समिति के संयोजक	अधिष्ठाता, प्रशासन
अधीक्षक, केंद्रीय कार्यशाला	डॉ. आनंद पिटारे

पूर्व छात्र प्रतिनिधि (केवल गैर–मूल्यांकन संबंधी मदों हेतु)

छात्र प्रतिनिधि (केवल गैर–मूल्यांकन संबंधी मदों हेतु)

महासचिव, छात्र जिमखाना	पदेन सदस्य
शैक्षणिक सचिव, छात्र जिमखाना	पदेन सदस्य

सचिव

कुलसचिव, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर

शैक्षणिक कार्य

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर का शैक्षणिक कार्यालय, संस्थान की सभी शैक्षणिक गतिविधियों के प्रबंधन एवं समन्वय के लिए उत्तरदायी केंद्रीय प्रशासनिक इकाई है। यह कार्यालय, संस्थान तथा इसके वैधानिक निकायों की नीतियों, नियमों एवं विनियमों के अनुरूप शैक्षणिक कार्यक्रमों की सुचारु योजना, कार्यान्वयन और निगरानी सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शैक्षणिक कार्यालय, आईआईटी इंदौर की शैक्षणिक व्यवस्था का प्रमुख आधार रहा है। यह स्नातक, स्नातकोत्तर एवं डॉक्टरेट कार्यक्रमों के कुशल संचालन को सुनिश्चित करता है। कार्यालय प्रवेश, नवप्रवेशित विद्यार्थियों के शिक्षारंभ, पंजीकरण, पाठ्यक्रम के कार्यान्वयन, परीक्षाओं, शैक्षणिक अभिलेखों के रखरखाव, दीक्षांत समारोह के आयोजन, उपाधियों के प्रदान करने तथा अभिषद्, अभिषद् स्नातक समिति और अभिषद् स्नातकोत्तर समिति की शैक्षणिक बैठकों के समन्वय सहित विभिन्न प्रमुख शैक्षणिक प्रक्रियाओं को सुगम बनाता है। इस कार्यालय का नेतृत्व शैक्षणिक कार्य की अधिष्ठाता द्वारा किया जाता है तथा सह–अधिष्ठाताओं, उप–कुलसचिव और अन्य कर्मचारियों द्वारा इसे सहयोग प्रदान किया जाता है। समन्वित प्रशासनिक सहायता एवं सुदृढ़ शैक्षणिक शासन व्यवस्था के माध्यम से शैक्षणिक कार्यालय विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों और अन्य हितधारकों को पारदर्शी, कुशल एवं समयबद्ध शैक्षणिक सेवाएँ उपलब्ध कराना सुनिश्चित करता है। शैक्षणिक कार्यालय, उच्च शैक्षणिक मानकों को बनाए रखने, विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति में सहयोग देने तथा शैक्षणिक उत्कृष्टता और जीवंत अनुसंधान परिवेश के लिए आईआईटी इंदौर की प्रतिष्ठा को और सुदृढ़ करने के लिए निरंतर प्रतिबद्ध है।



प्रो. अंखी रॉय
अधिष्ठाता,
शैक्षणिक कार्य (डीओएए)



प्रो. सोमनाथ डे
सह अधिष्ठाता, शैक्षणिक कार्य
(स्नातकोत्तर एवं पीएच.डी. कार्यक्रम)



डॉ. सेल्वकुमार सेर्मदुराई
सह अधिष्ठाता, शैक्षणिक कार्य
(स्नातक कार्यक्रम)



शैक्षणिक कार्य का प्रशासनिक दल

शैक्षणिक वर्ष 2025–26 में संस्थान ने स्नातक कार्यक्रमों के 483, स्नातकोत्तर कार्यक्रमों के 391 तथा पीएच.डी. कार्यक्रमों के 211 विद्यार्थियों सहित कुल लगभग 1,073 नए विद्यार्थियों का स्वागत किया। इसके लिए सुव्यवस्थित शिक्षारंभ एवं प्रवेशोत्तर प्रक्रिया अपनाई गई।

इस वर्ष संस्थान का 14वाँ दीक्षांत समारोह सफलतापूर्वक आयोजित किया गया, जिसमें विभिन्न विषयों के 807 विद्यार्थियों को उपाधियाँ प्रदान की गईं। यह आईआईटी इंदौर के समस्त समुदाय के लिए गौरवपूर्ण उपलब्धि रही।

इस कैलेंडर वर्ष के दौरान अभिषद् की 11 बैठकें आयोजित की गईं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप सभी शैक्षणिक कार्यक्रमों की कार्यप्रणाली को और सुदृढ़ किया गया। साथ ही, संस्थान के शैक्षणिक कार्यक्रमों का विस्तार करते हुए 17 विषयों में 9 बी.टेक., बी.डिज़ाइन, 18 एम.टेक., 5 एम.एससी., 5 एम.एस. (रिसर्च), एम.ए., एम.एस.डी.एस.एम. तथा पीएच.डी. कार्यक्रम संचालित किए गए।

संस्थान ने शैक्षणिक वर्ष 2025–26 से निम्नलिखित नए कार्यक्रम प्रारंभ किए:

- जीवविज्ञान एवं जैवचिकित्सा अभियांत्रिकी में एम.टेक., जैवचिकित्सा उपकरणों में विशेषज्ञता के साथ।
- विद्युत अभियांत्रिकी में एम.टेक., विद्युत शक्ति प्रणालियों एवं पॉवर इलेक्ट्रॉनिक्स में विशेषज्ञता के साथ।
- मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान स्कूल के अंतर्गत अंग्रेज़ी में एम.ए. (साहित्य एवं भाषाविज्ञान)।
- संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग में अंतर्विषयक दोहरी उपाधि कार्यक्रम।
- संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग में तीन वर्षीय एम.टेक. कार्यक्रम।

निम्नलिखित नए शैक्षणिक कार्यक्रमों के प्रस्तावों को अभिषद् द्वारा स्वीकृति प्रदान की गई है, जिन्हें शैक्षणिक वर्ष 2026–2027 से प्रारंभ किया जाएगा:

1. मेहता फैमिली स्कूल ऑफ बायोसाइंसेज़ एंड बायोमेडिकल इंजीनियरिंग द्वारा संचालित जैवचिकित्सा अभियांत्रिकी एवं डेटा साइंस में बी.टेक.।
2. मेहता फैमिली स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी द्वारा संचालित पर्यावरणीय अर्थशास्त्र एवं सतत अभियांत्रिकी में बी.टेक.।
3. रसायन विज्ञान विभाग द्वारा संचालित अनुप्रयुक्त एवं औद्योगिक रसायन विज्ञान में बी.एस.।
4. परिवहन प्रणाली अभियांत्रिकी में एम.टेक.।
5. परिवहन नियोजन में एम.टेक.।
6. भू–तकनीकी अभियांत्रिकी में एम.टेक.।
7. रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग द्वारा रासायनिक प्रक्रिया अभिकल्पना एवं इंटेलिजेंस में विशेषज्ञता के साथ एम.टेक. कार्यक्रम।
8. मेहता फैमिली स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी द्वारा प्रस्तावित सततता के अंतर्विषयक क्षेत्र में पीएच.डी. कार्यक्रम।

संस्थान ने विद्यार्थियों के कल्याण को सदैव प्राथमिकता दी है। इसी क्रम में, नवप्रवेशित बी.टेक. विद्यार्थियों के लिए कक्षाएँ प्रारंभ होने से पहले सात दिवसीय जीवन कौशल विकास कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक कल्याण पर विशेष ध्यान दिया गया, ताकि विद्यार्थी शैक्षणिक परिवेश में सहजता से समायोजित हो सकें।

इस वर्ष खेलों में रुचि रखने वाले प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के लिए भी अवसर उपलब्ध कराए गए हैं। उनकी खेल प्रतिभा, समर्पण एवं योग्यता के आधार पर उन्हें आईआईटी में प्रवेश प्राप्त करने का अवसर मिल सकता है। हमें प्रसन्नता है कि इस वर्ष इस पहल के अंतर्गत एक विद्यार्थी को स्नातक कार्यक्रम में प्रवेश दिलाने में सफलता मिली। हमें आशा है कि आगामी वर्ष से अधिकाधिक विद्यार्थी इस पहल से लाभान्वित होंगे और खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन जारी रखते हुए अपनी शिक्षा भी पूरी कर सकेंगे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप, संस्थान ने पाठ्यक्रम में अधिक लचीलापन प्रदान किया, प्रारंभिक सेमेस्टरों से ही वैकल्पिक विषयों के चयन के अवसर बढ़ाए तथा बहुविषयक एवं उद्योग की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षण मार्गों को प्रोत्साहित किया।

लगभग 3,372 विद्यार्थियों और 214 से अधिक संकाय सदस्यों के जीवंत शैक्षणिक समुदाय के साथ, आईआईटी इंदौर निरंतर गतिशील एवं समृद्ध शिक्षण परिवेश को बढ़ावा दे रहा है। परियोजना–आधारित शिक्षण, मेकर स्पेस पाठ्यक्रम तथा उद्योग जगत के साथ सुदृढ़ सहभागिता जैसी नई शिक्षण पहलों से अनुभवात्मक एवं भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा प्रदान करने के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता परिलक्षित होती है।

शैक्षणिक नवाचार के साथ–साथ, एनपीटीईएल और स्वयं जैसे मंचों के माध्यम से डिजिटल शिक्षण को बढ़ावा देने के लिए किए गए लक्षित प्रयासों ने शैक्षणिक अनुभव को और समृद्ध बनाया है।

बी.टेक. विद्यार्थियों के अनुभवात्मक अधिगम को बढ़ावा देने के लिए तकनीकी संपर्क, पर्यावरणीय संपर्क, उद्योग संपर्क एवं सामाजिक संपर्क से संबंधित पाठ्यक्रम समूहों के अंतर्गत व्यावसायिक एवं सामाजिक संपर्क पाठ्यक्रम तथा बी.टेक. इंटर्नशिप को अनुभवात्मक अधिगम पाठ्यक्रमों के रूप में शामिल किया गया है।

संस्थान ने विद्यार्थियों को अतिरिक्त क्रेडिट का लाभ प्रदान करने के लिए अकादमिक बैंकिंग क्रेडिट (एबीसी) नीति लागू की है। इस नीति के अंतर्गत विद्यार्थी नियमित सेमेस्टर की आवश्यकताओं से अधिक अर्जित क्रेडिट को संचित कर सकते हैं और आवश्यकता के अनुसार उनका उपयोग कर सकते हैं।

यह नीति विद्यार्थियों को अतिरिक्त पाठ्यक्रमों का अध्ययन करने, समान स्तर के वैकल्पिक विषयों को बदलने तथा एनपीटीईएल और स्वयं जैसे मंचों के माध्यम से स्वीकृत ऑनलाइन पाठ्यक्रम करने की सुविधा प्रदान करती है। इससे मुख्य पाठ्यक्रम संबंधी आवश्यकताओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। यह नीति विद्यार्थियों को अपनी गति से सीखने, वैकल्पिक विषयों के अधिक अवसरों का लाभ उठाने तथा ऑनलाइन प्रमाणपत्र पाठ्यक्रमों के माध्यम से अपने ज्ञान एवं कौशल को बढ़ाने में सहायता करती है।

संस्थान के 14वें दीक्षांत समारोह में उपाधि प्रदान किए जाने हेतु निर्धारित सभी आवश्यकताएँ पूर्ण करने वाले 807 विद्यार्थियों का सारांश।

14वें दीक्षांत समारोह–2026 में उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की संख्या

कार्यक्रम	विभाग	महिला	पुरुष	कुल योग
बी.टेक.	जानपद अभियांत्रिकी	8	40	48
	संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी	16	72	88
	विद्युत अभियांत्रिकी	17	68	75
	यांत्रिक अभियांत्रिकी	19	63	82
	धातुकर्म अभियांत्रिकी एवं पदार्थ विज्ञान	19	40	53
	कुल	**73**	**284**	**356**
एम.एससी.	खगोल विज्ञान, खगोल भौतिकी एवं अंतरिक्ष अभियांत्रिकी	4	8	12
	मेहता फैमिली स्कूल ऑफ बायोसाइंसेज़ एंड बायोमेडिकल इंजीनियरिंग	11	9	20
	रसायन विज्ञान	8	20	28
	गणित	4	13	17
	भौतिकी	7	18	25
	कुल	**34**	**68**	**102**

एम.टेक.	खगोल विज्ञान, खगोल भौतिकी एवं अंतरिक्ष अभियांत्रिकी	3	0	3
	मेहता फैमिली स्कूल ऑफ बायोसाइंसेज़ एंड बायोमेडिकल इंजीनियरिंग	3	5	8
	इलेक्ट्रिक वाहन एवं कुशल परिवहन प्रणाली केंद्र	0	27	27
	अत्याधुनिक रक्षा एवं अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी केंद्र (सीएफडीएसटी)	0	2	2
	संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी	1	13	14
	विद्युत अभियांत्रिकी	3	15	18
	यांत्रिक अभियांत्रिकी	3	41	44
	जानपद अभियांत्रिकी	5	12	17
	धातुकर्म अभियांत्रिकी एवं पदार्थ विज्ञान	3	10	13
	कुल	**20**	**126**	**146**
एम.एस. (रिसर्च)	खगोल विज्ञान, खगोल भौतिकी एवं अंतरिक्ष अभियांत्रिकी	1	1	2
	संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी	3	10	13
	विद्युत अभियांत्रिकी	1	4	5
	यांत्रिक अभियांत्रिकी	0	3	3
	कुल	**5**	**18**	**23**
एम.एस.–डीएसएम	डेटा साइंस एवं प्रबंधन में विज्ञान स्नातकोत्तर	27	42	69
	कुल	**27**	**42**	**69**
पीएच.डी.	खगोल विज्ञान, खगोल भौतिकी एवं अंतरिक्ष अभियांत्रिकी	0	3	3
	मेहता फैमिली स्कूल ऑफ बायोसाइंसेज़ एंड बायोमेडिकल इंजीनियरिंग	4	6	10
	रसायन विज्ञान	6	9	15
	जानपद अभियांत्रिकी	3	6	9
	संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी	4	8	12
	विद्युत अभियांत्रिकी	3	10	13
	मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान	8	5	13
	गणित	2	7	9
	यांत्रिक अभियांत्रिकी	0	8	8
	धातुकर्म अभियांत्रिकी एवं पदार्थ विज्ञान	2	2	4
	भौतिकी	5	10	15
	कुल	**37**	**74**	**111**
	कुल योग			**807**

पदक विजेता

14वें दीक्षांत समारोह का एक प्रमुख आकर्षण प्रतिष्ठित पदकों एवं पुरस्कारों के माध्यम से विद्यार्थियों की उत्कृष्ट शैक्षणिक उपलब्धियों और विद्वत्तापूर्ण उत्कृष्टता को सम्मानित करना रहा।

प्रतिभा, समर्पण एवं दृढ़ता का सम्मान करते हुए, संस्थान ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया, जिनकी उपलब्धियाँ संस्थान में प्रोत्साहित शैक्षणिक उत्कृष्टता एवं नवाचार की भावना को प्रतिबिंबित करती हैं।

स्वर्ण पदक, रजत पदक एवं सर्वश्रेष्ठ बीटीपी पुरस्कार प्रदान करने के लिए अभिषद् द्वारा अनुमोदित नीति के अनुसार, विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों के विद्यार्थियों का इन विशिष्ट सम्मानों एवं पुरस्कारों के लिए चयन किया गया। ये पुरस्कार संस्थान में विद्यार्थियों की शैक्षणिक यात्रा के दौरान उनके उत्कृष्ट शैक्षणिक प्रदर्शन, बीटीपी परियोजनाओं में असाधारण कार्य तथा सर्वांगीण उत्कृष्टता को मान्यता प्रदान करते हैं।

इन पदकों एवं पुरस्कारों के लिए अनुमोदित पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं की सूची निम्नलिखित है:

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर

14वाँ दीक्षांत समारोह 2026:
पदक एवं पुरस्कार प्राप्तकर्ता

राष्ट्रपति स्वर्ण पदक

सभी स्नातक कार्यक्रमों के उत्तीर्ण विद्यार्थियों में सर्वश्रेष्ठ शैक्षणिक प्रदर्शन हेतु



श्री मदन पी.
बी.टेक. सीएसई
अनुक्रमांक 220001043

संस्थान रजत पदक

संबंधित विभाग में सर्वश्रेष्ठ शैक्षणिक रिकॉर्ड प्राप्त करने वाले स्नातक विद्यार्थी



श्री अविरल शर्मा
बी.टेक. सीएसई
अनुक्रमांक 220001014



श्री कुमार अनमोल
बी.टेक. ईई
अनुक्रमांक 220002044



श्री ऋषिकेश जावले
बी.टेक. एमई
अनुक्रमांक 220003038

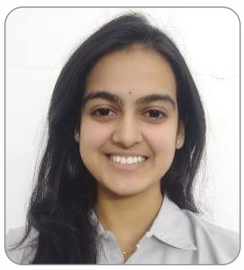

सुश्री एडुला चार्मी रेड्डी
बी.टेक. सीई
अनुक्रमांक 220004017



श्री ध्रुव जैन
बी.टेक. एमईएमएस
अनुक्रमांक 220005018

संस्थान रजत पदक

सभी स्नातकोत्तर विद्यार्थियों (एम.टेक. एवं एम.एससी. कार्यक्रमों) में सर्वश्रेष्ठ समग्र प्रदर्शन हेतु

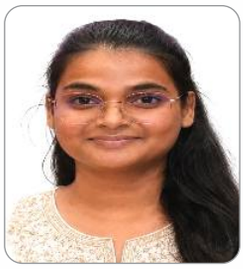

सुश्री शिक्षा सिंह
एम.टेक. (सीई)
अनुक्रमांक 2402104017



सुश्री स्मिता कराटी
एम.एससी. (बीएसबीई)
अनुक्रमांक 2403171020

बुटी फाउंडेशन स्वर्ण पदक

उपाधि प्राप्त करने वाली सभी महिला स्नातकोत्तर विद्यार्थियों में सर्वश्रेष्ठ शैक्षणिक प्रदर्शन हेतु



सुश्री ग्लैडिस जे.
एम.एससी. (रसायन विज्ञान)
अनुक्रमांक 2403131010

वी.पी.पी. मेनन स्वर्ण पदक

सभी उपाधि प्राप्त करने वाली महिला विद्यार्थियों में उत्कृष्ट पीएच.डी. शोधप्रबंध हेतु



डॉ. हरप्रिया मिन्हास
पीएच.डी. (रसायन विज्ञान)
अनुक्रमांक 2101131002

शोधप्रबंध का शीर्षक: *"बॉन्डिंग पदानुक्रमों के माध्यम से तापविद्युत पदार्थों के अभिकल्पन में तीव्रता लाने हेतु मशीन लर्निंग एवं ग्राफ न्यूरल नेटवर्क आधारित विभव"*

अगम प्रसाद मेमोरियल स्वर्ण पदक

विभिन्न विभागों में उत्कृष्ट पीएच.डी. शोधप्रबंध हेतु



डॉ. अर्पित कुमार सिंह

एम.टेक.+पीएच.डी. (एमई)

अनुक्रमांक 2206103001

शोधप्रबंध का शीर्षक: *"ट्राइबोइलेक्ट्रिक नैनो जनरेटर अनुप्रयोगों हेतु लेज़र–प्रेरित ग्राफीन के संश्लेषण के लिए पॉलीइमाइड के साथ लेज़र की अंतःक्रिया का अध्ययन"*

श्री गण्टि सुब्बा राव एवं श्रीमती गण्टि वेंकट रमणी पुरस्कार

आईआईटी इंदौर के विभिन्न अभियांत्रिकी विभागों के विद्यार्थियों में उत्कृष्ट पीएच.डी. शोधकार्य हेतु



डॉ. सौरभ मिश्रा

पीएच.डी. (एमई)

अनुक्रमांक 2201103002

शोधप्रबंध का शीर्षक: *"हाइड्रोजन भंडारण एवं रिसाव नियंत्रण के लिए कार्बन नैनोट्यूब–आधारित प्रणालियों का परमाण्विक मॉडलिंग एवं प्रायोगिक अध्ययन"*

अशोक बंसल मेमोरियल स्वर्ण पदक

विभिन्न विभागों की महिला विद्यार्थियों में उत्कृष्ट पीएच.डी. शोधप्रबंध हेतु



डॉ. नबास्मिता फुकन

पीएच.डी. (ईई)

अनुक्रमांक 2201102004

शोधप्रबंध का शीर्षक: *"जीवन के लिए घातक हृदय अतालताओं का पता लगाने हेतु डीप लर्निंग एवं सिग्नल प्रोसेसिंग–आधारित विधियाँ"*

संस्थान स्वर्ण पदक

सभी उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में सर्वश्रेष्ठ सर्वांगीण प्रदर्शन हेतु



डॉ. अर्पित कुमार सिंह

एम.टेक.+पीएच.डी. (एमई)

अनुक्रमांक 2206103001

सर्वश्रेष्ठ बी.टेक. परियोजना (बीटीपी) पुरस्कार

सभी उपाधि प्राप्त करने वाले स्नातक विद्यार्थियों में से



श्री ध्रुव जैन

बी.टेक. (एमईएमएस)

अनुक्रमांक 220005018

परियोजना का शीर्षक: *"जल विभाजन हेतु इलेक्ट्रोड के रूप में शुद्ध–चरण $CuFeO_2$ डेलाफोसाइट एवं इसके नैनोकंपोजिट का संश्लेषण और अनुकूलन"*

एमएसडीएसएम रजत पदक

एमएस–डीएसएम कार्यक्रम के सभी उपाधि प्राप्त करने वाले
विद्यार्थियों में सर्वश्रेष्ठ शैक्षणिक प्रदर्शन हेतु



श्री गुप्ता ऋतविक

अनुक्रमांक 2404107027

रैंकिंग

आईआईटी इंदौर ने क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2026 में विश्व स्तर पर 556वाँ स्थान प्राप्त किया है। भारतीय विश्वविद्यालयों में संस्थान 12वें स्थान पर रहा और दूसरी पीढ़ी के भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों में एक बार फिर सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग में संस्थानों का मूल्यांकन नौ प्रमुख मानकों के आधार पर किया जाता है। इनमें शैक्षणिक प्रतिष्ठा, नियोक्ता प्रतिष्ठा, प्रति संकाय सदस्य उद्धरण, संकाय–छात्र अनुपात, अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थी, अंतरराष्ट्रीय संकाय, अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान नेटवर्क, सतत विकास और रोजगार संबंधी परिणाम शामिल हैं। इस वर्ष की क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग में विश्वभर के लगभग 1,501 संस्थानों को शामिल किया गया, जिनमें भारत के 54 संस्थान भी सम्मिलित थे। इस रैंकिंग में यूरोप, एशिया और उत्तरी अमेरिका सहित विभिन्न क्षेत्रों के विश्वविद्यालय शामिल थे।

शिक्षा मंत्रालय द्वारा जारी इंडिया रैंकिंग 2025, जिसे राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क (एनआईआरएफ) के अंतर्गत प्रकाशित किया गया, में आईआईटी इंदौर ने देश के अभियांत्रिकी संस्थानों में 12वाँ स्थान प्राप्त किया। इस श्रेणी में संस्थानों का मूल्यांकन पाँच प्रमुख मानकों के आधार पर किया जाता है। इनमें शिक्षण एवं अधिगम संसाधन, अनुसंधान एवं व्यावसायिक अभ्यास, स्नातक परिणाम, पहुँच एवं समावेशिता तथा धारणा शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, आईआईटी इंदौर ने समग्र श्रेणी में 22वाँ और अनुसंधान श्रेणी में 24वाँ स्थान प्राप्त किया। पिछले संस्करण की तुलना में संस्थान ने सभी श्रेणियों में अपनी रैंकिंग में उल्लेखनीय सुधार किया है।

निदेशक प्रो. सुहास एस. जोशी ने इस उपलब्धि पर आईआईटी इंदौर समुदाय को बधाई दी। उन्होंने संस्थान की प्रगति और भविष्य में वैश्विक स्तर पर अधिक पहचान प्राप्त करने के उद्देश्य से सभी से अपने अनुसंधान एवं शैक्षणिक कार्यों को पूर्ण समर्पण और निष्ठा के साथ जारी रखने का आह्वान किया।

संकाय कार्य

संकाय कार्य कार्यालय, संकाय सदस्यगण से संबंधित सभी प्रशासनिक मामलों का संचालन करता है। यह संकाय सदस्यगण की नियुक्ति से लेकर कार्यमुक्ति तक के प्रशासनिक अभिलेखों का रखरखाव करता है। इस कार्यालय का नेतृत्व संकाय कार्य के अधिष्ठाता प्रो. अभिषेक श्रीवास्तव करते हैं। कार्यालय में डॉ. आशीष उपाध्याय, उप कुलसचिव; श्री सुनिल सावले, अनुभाग अधिकारी; श्री सनी नामदेव, कनिष्ठ अधीक्षक; तथा सुश्री पिनाज़ डेनियल, कनिष्ठ सहायक व अधिष्ठाता, संकाय कार्य की निजी सहायक के रूप में कार्यरत हैं।

इस कार्यालय के प्रमुख कार्य निम्नलिखित हैं:

(क) विभिन्न विभागों, स्कूलों एवं केंद्रों में स्थायी, संविदा, विजिटिंग, डिस्टिंग्विश्ड तथा प्रोफेसर ऑफ़ प्रैक्टिस, चेयर प्रोफेसर और एमेरिटस संकाय सदस्यगण की नियुक्ति हेतु भर्ती प्रक्रिया संचालित करना।

(ख) नवनियुक्त संकाय सदस्यगण के कार्यग्रहण संबंधी औपचारिकताएँ पूरी करना।

(ग) संकाय सदस्यगण की सेवा पुस्तिकाओं एवं व्यक्तिगत फाइलों का रखरखाव करना।

(घ) वेतन पुनरीक्षण, पदोन्नयन एवं संवर्ग परिवर्तन, अवकाश, छुट्टी यात्रा रियायत, आश्रितों की सूची, प्रतिनियुक्ति, लियन, वार्षिक वेतनवृद्धि, संविदा नियुक्तियों की अवधि बढ़ाने, सेवा की पुष्टि तथा राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली आदि सहित सभी सेवा संबंधी मामलों का निस्तारण करना।

(ङ) सेवा संबंधी विवरणों को नियमित रूप से अद्यतन करना।

(च) शिक्षा मंत्रालय, सूचना का अधिकार अधिनियम के अंतर्गत प्राप्त प्रश्नों, लोकसभा एवं राज्यसभा के अतारांकित प्रश्नों तथा न्यायालयीन मामलों से संबंधित उत्तर उपलब्ध कराना।

वर्ष 2025–26 के दौरान किए गए प्रमुख कार्य निम्नलिखित हैं:

(क) शिक्षक दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

(ख) शिक्षण संकाय सदस्यगण के बीच आपसी मेल–जोल बढ़ाने, तनाव प्रबंधन तथा उनके मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार के उद्देश्य से फैकल्टी पिकनिक का आयोजन किया गया।

(ग) नियमों एवं प्रक्रियाओं में एकरूपता सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न नीतियाँ तैयार की गईं।

(घ) नवनियुक्त संकाय सदस्यगण के लिए कार्यग्रहण संबंधी औपचारिकताओं को सुव्यवस्थित किया गया, जिससे अनावश्यक आवागमन कम हो और वे नए परिवेश में शीघ्रता से जुड़ सकें।

(ङ) आईआईटी इंदौर परिसर के बाहर आवास की व्यवस्था करने में नवनियुक्त संकाय सदस्यगण को सहायता प्रदान की गई।

(च) वर्ष 2025–26 में कार्यालयी पत्राचार में हिंदी भाषा के प्रयोग के लिए संकाय कार्य कार्यालय के कर्मचारी को संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

31 मार्च, 2026 तक संकाय सदस्य के भरे गए पद:

पदनाम	संख्या
प्राध्यापक	78
सह प्राध्यापक	54
सहायक प्राध्यापक ग्रेड I	86
सहायक प्राध्यापक ग्रेड II	08
कुल	**226**

वर्ष 2025–26 के दौरान आईआईटी इंदौर में सेवा में शामिल हुए संकाय सदस्यगण का विवरण निम्नलिखित है:

पदनाम	संख्या
सहायक प्राध्यापक ग्रेड I	10
सहायक प्राध्यापक ग्रेड II	06
कुल	**16**

वर्ष 2025–26 के दौरान, कुल 25 संकाय सदस्यों को अपग्रेड किया गया। इनमें 3 संकाय सदस्यगण को सह प्राध्यापक से प्राध्यापक, 12 संकाय सदस्यगण को सहायक प्राध्यापक ग्रेड I से सह प्राध्यापक तथा 10 संकाय सदस्यगण को सहायक प्राध्यापक ग्रेड II से सहायक प्राध्यापक ग्रेड I के पद पर अपग्रेड किया गया।

1. डॉ. सिद्धार्थ सव्यसाची मालू, सह प्राध्यापक, खगोल विज्ञान, खगोल भौतिकी एवं अंतरिक्ष अभियांत्रिकी विभाग को 16 मई, 2025 को सेवा से कार्यमुक्त किया गया।
2. डॉ. विभोर पंढारे, सहायक प्राध्यापक, यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग को 18 अगस्त, 2025 को सेवा से कार्यमुक्त किया गया।

सम्मान एवं पुरस्कार (2025–2026)

विवरण निम्नलिखित हैं:

सर्वश्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार प्राप्तकर्ता	
बड़ी कक्षा–आकार वाली कक्षाओं की श्रेणी	प्रो. राजेश कुमार, भौतिकी विभाग
मध्यम कक्षा–आकार वाली कक्षाओं की श्रेणी	डॉ. स्वामीनाथन रामबद्रन, विद्युत अभियांत्रिकी विभाग
छोटी कक्षा–आकार वाली कक्षाओं की श्रेणी	डॉ. विजय ए. एस., विद्युत अभियांत्रिकी विभाग
उपविजेता	
बड़ी कक्षा–आकार वाली कक्षाओं की श्रेणी	डॉ. दिब्येंदु मंडल, गणित विभाग
मध्यम कक्षा–आकार वाली कक्षाओं की श्रेणी	डॉ. कैलाशम रामलिंगम, रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग
छोटी कक्षा–आकार वाली कक्षाओं की श्रेणी	प्रो. तुषार कांति मुखर्जी, रसायन विज्ञान विभाग
विभिन्न सेमेस्टरों में निरंतर उत्कृष्ट शिक्षण योगदान	प्रो. अभिनव क्रांति, विद्युत अभियांत्रिकी विभाग











विभाग व स्कूल की प्रोफ़ाइल

खगोल विज्ञान, खगोल भौतिकी एवं अंतरिक्ष अभियांत्रिकी विभाग



विभाग का परिचय

वर्ष 2015 में स्थापित खगोल विज्ञान, खगोल भौतिकी एवं अंतरिक्ष अभियांत्रिकी विभाग (डीएएएसई), आईआईटी प्रणाली का अपनी तरह का पहला अंतर्विषयक विभाग है। इस विभाग में पीएच.डी., खगोल विज्ञान में एम.एससी., एम.टेक., एम.एस. (रिसर्च) तथा अंतरिक्ष अभियांत्रिकी में बी.टेक. कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं। विभाग में तेरह नियमित संकाय सदस्य, एक आईएनएआई डिस्टिंग्विश्ड प्रोफेसर तथा तीन विजिटिंग प्रोफेसर हैं, जो उन्नत अनुसंधान परियोजनाओं पर कार्य करते हैं। इनमें स्क्वायर किलोमीटर ऐरे और आदित्य–एल1 जैसे प्रमुख अनुसंधान कार्यक्रम शामिल हैं। इन परियोजनाओं को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ), भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) तथा अन्य वित्तपोषण एजेंसियों का सहयोग प्राप्त है। डीएएएसई विश्व के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं उद्योग जगत के साथ सहयोग करता है। विभाग के अधिकांश पूर्व विद्यार्थी उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान के क्षेत्र में आगे बढ़ रहे हैं अथवा संबंधित क्षेत्रों में अपना व्यावसायिक करियर बना रहे हैं।

यह विभाग मध्य प्रदेश में अनुसंधान एवं नवाचार को बढ़ावा देने के लिए हेरिटेज एंड इनोवेशन सेंटर इन एस्ट्रोनॉमी एंड स्पेस इंजीनियरिंग (एचआईसीएएसई) की स्थापना में भी योगदान दे रहा है। वर्तमान में, डीएएएसई में 46 पीएच.डी. शोधार्थी, 55 स्नातकोत्तर विद्यार्थी तथा 56 स्नातक विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। विभाग के विद्यार्थी विभिन्न अत्याधुनिक अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकी विकास गतिविधियों में संलग्न हैं। इनमें आकाशगंगा समूहों के रेडियो एवं एक्स–रे प्रेक्षण, मशीन लर्निंग एवं बिग डेटा, सतत विकास संबंधी अनुसंधान, अंतरिक्ष मौसम एवं आयनमंडल, जीएनएसएस, एनएवीआईसी तथा निम्न–आवृत्ति रेडियो खगोल विज्ञान का उपयोग, पेलोड, लघु उपग्रह, डिटेक्टर अभिकल्पना, डेटा विश्लेषण, इमेजिंग तथा उच्च–स्तरीय संख्यात्मक सिमुलेशन जैसे क्षेत्र शामिल हैं। इन अनुसंधान गतिविधियों का उद्देश्य जलवायु परिवर्तन, सतत विकास, कृषि, रक्षा, संचार, नौवहन एवं खगोल विज्ञान जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उपयोगी अनुप्रयोगों का विकास करना है।

शैक्षणिक कार्यक्रम

विभाग में खगोल विज्ञान में एम.एससी., एम.एस. (रिसर्च), अंतरिक्ष अभियांत्रिकी में एम.टेक. तथा पीएच.डी. के शैक्षणिक कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं। खगोल विज्ञान में एम.एससी. कार्यक्रम में प्रवेश संयुक्त प्रवेश परीक्षा (जैम) के माध्यम से दिया जाता है। इसके अतिरिक्त, विभाग बी.टेक. विद्यार्थियों के लिए अंतरिक्ष अभियांत्रिकी में माइनर डिग्री कार्यक्रम भी प्रदान करता है।

विभाग के समर्पित एवं ऊर्जावान संकाय सदस्यों का उद्देश्य खगोल विज्ञान, खगोल भौतिकी एवं अंतरिक्ष अभियांत्रिकी के अध्ययन, अनुसंधान तथा प्रशिक्षण के क्षेत्र में शैक्षणिक गतिविधियों के सुचारु संचालन हेतु अनुकूल परिवेश तैयार करना है। सहयोगात्मक एवं नवाचारोन्मुख परिवेश को प्रोत्साहित करते हुए विभाग विद्यार्थियों एवं शोधकर्ताओं को ब्रह्मांड के रहस्यों को समझने और उनका अन्वेषण करने के लिए प्रेरित करता है। विभाग के संकाय सदस्य उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा एवं मार्गदर्शन प्रदान करने के साथ–साथ अत्याधुनिक सुविधाओं तक पहुँच सुनिश्चित करते हैं तथा अग्रणी अनुसंधान परियोजनाओं में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। यह प्रतिबद्धता विद्यार्थियों को विश्वभर के शैक्षणिक संस्थानों, उद्योग जगत एवं अनुसंधान संस्थानों में सफल व्यावसायिक करियर के लिए तैयार करती है। साथ ही, वे अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति और नवाचार में योगदान देने के लिए सक्षम बनते हैं।

संकाय सदस्यों की संख्या	*13*
प्राध्यापक	01
सह प्राध्यापक	05
सहायक प्राध्यापक I	07
सहायक प्राध्यापक II	निरंक
विजिटिंग प्रोफेसर / आईएनएआई फेलो	04
पोस्ट–डॉक्टोरल शोधार्थियों की संख्या	01

कार्यक्रम	*विद्यार्थी प्रवेश*	*उपाधि प्राप्त*
बी.टेक	56	निरंक
एम.एससी.	29	66
एम.टेक	21	21
एमएस (रिसर्च)	5	9
पीएचडी	46	27

प्रमुख अनुसंधान एवं विकास गतिविधियाँ

डीएएएसई के संकाय सदस्य निम्नलिखित क्षेत्रों में विभिन्न परियोजनाओं पर कार्य कर रहे हैं:

1. ***हेरिटेज एंड इनोवेशन सेंटर इन एस्ट्रोनॉमी एंड स्पेस इंजीनियरिंग (एचआईसीएएसई):*** खगोल विज्ञान एवं अंतरिक्ष अभियांत्रिकी के क्षेत्र में अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एचआईसीएएसई के विकास में योगदान।
2. ***अनुसंधान सहयोग:*** इंदौर स्थित राजा रामन्ना प्रगत प्रौद्योगिकी केन्द्र (आरआरकैट) के साथ अनुसंधान सहयोग।
3. ***खगोल विज्ञान एवं खगोल भौतिकी:*** भारत की तीन प्रमुख मेगा साइंस परियोजनाओं कृ स्क्वायर किलोमीटर ऐरे, थर्टी मीटर टेलीस्कोप तथा एलआईजीओ–इंडिया (गुरुत्वाकर्षण तरंग वेधशाला) कृ से संबद्ध अनुसंधान गतिविधियाँ। इन परियोजनाओं के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), परमाणु ऊर्जा विभाग (डीएई), वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) एवं शिक्षा मंत्रालय (एमओई) से वित्तपोषण प्राप्त होता है।
4. ***अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी:*** भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) की विभिन्न प्रमुख वैज्ञानिक परियोजनाओं एवं अंतरिक्ष अभियानों से संबद्ध गतिविधियाँ। इन क्षेत्रों में अनुसंधान हेतु इसरो, शिक्षा मंत्रालय (एमओई) तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) से वित्तपोषण प्राप्त होता है।
5. ***पृथ्वी एवं वायुमंडलीय विज्ञान:*** सुदूर संवेदन अनुप्रयोगों तथा जलवायु एवं मौसम संबंधी अध्ययनों से जुड़ी अनुसंधान गतिविधियाँ। इन क्षेत्रों में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो), पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (एमओईएस) आदि से वित्तपोषण प्राप्त होता है।
6. ***उद्योग जगत के साथ सहयोग:*** विभाग ने अपनी अनुसंधान सुविधाओं का उपयोग करने के इच्छुक विभिन्न उद्योगों के साथ सहयोग भी विकसित किया है। अब तक विभाग से जुड़े प्रमुख औद्योगिक संस्थानों म ध्रुव स्पेस, एरियल आईक्यू, एलॉग8, पियरसाइट, गैलेक्सआई स्पेस, इम्पेटस तथा सनलाइफ आदि शामिल हैं।

विभाग की प्रमुख गतिविधियाँ

1.1.हमारे संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी विभिन्न गतिविधियों में सक्रिय रूप से संलग्न हैं:

I. भारत के सूर्य के अध्ययन हेतु प्रथम सौर मिशन आदित्य–एल1 से प्राप्त इन–सिटू मापों के पूरक के रूप में अंतरिक्ष मौसम अनुकूली मॉडलिंग फ्रेमवर्क (प्रौद्योगिकी तत्परता स्तरकृटीआरएल 5) विकसित किया गया।

ii. डीएएएसई की ओर से सर्च फॉर एक्स्ट्राटेरेस्ट्रियल इंटेलिजेंस (एसईटीआई) पर पहला शोध–पत्र वर्ष 2024 में मंथली नोटिसेज़ ऑफ द रॉयल एस्ट्रोनॉमिकल सोसाइटी में प्रकाशित हुआ। इस शोध–पत्र में डीएएएसई के सदस्यों – प्रियतम कुमार (खगोल विज्ञान के एम.एससी. विद्यार्थी) तथा डॉ. सुमन मजूमदार (संकाय सदस्य) – का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

iii. रडार डेटा के प्रसंस्करण हेतु मुक्त–स्रोत सॉफ्टवेयर 'पीवाईआईडब्ल्यूआर' विकसित किया गया है।

iv. भारतीय अंतरिक्ष मिशन एस्ट्रोसैट तथा अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के मिशन नाइसर की सहायता से न्यूट्रॉन तारे की एक्स–रे द्विआधारी प्रणाली के ज़ेड–स्रोत में व्यापक आवृत्ति पर परिवर्तनशीलता तथा वर्णक्रमीय उत्सर्जन का अध्ययन किया गया। इस अध्ययन से तारकीय गुणधर्मों तथा पदार्थ के तारे पर अभिवृद्धि के दौरान होने वाले उतार–चढ़ावों के संबंध में महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त हुए।

v. आईआईटी इंदौर के व्यतिकरणमापी के लिए डिजिटल डेटा प्रसंस्करण प्रणाली का विकास।
vi. इंदौर में शहरी वृक्षों का मानचित्रण तथा जैवभार में होने वाली क्षति का आकलन।
vii. वर्ष 2024 एवं 2025 में भारतीय आर्कटिक अभियान में सहभागिता।

2. अनुसंधान, राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (एएनआरएफ) तथा राष्ट्रीय क्वांटम मिशन से पर्याप्त बाह्य वित्तपोषण प्राप्त हुआ।
3. अंतरराष्ट्रीय सहयोगः तीन स्पार्क परियोजनाओं, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की दो एसआईआरई परियोजनाओं तथा एक मैक्स प्लांक साझेदार अनुदान के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान सहयोग।
4. अनेक उच्च प्रभावशाली शोध–पत्रिकाओं में शोध–पत्र प्रकाशित हुए।
5. वर्ष 2026 में आईपीएससी अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया।
6. क्षमता संवर्धन गतिविधियाँः कार्यशालाओं, राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस समारोहों तथा खगोल विज्ञान एवं अंतरिक्ष अभियांत्रिकी के क्षेत्र में व्यावहारिक प्रशिक्षण सत्रों का आयोजन।
7. तीन स्पार्क परियोजनाओं, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की दो एसआईआरई परियोजनाओं तथा एक मैक्स प्लांक साझेदार अनुदान के माध्यम से सक्रिय अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान सहयोग।
8. कार्यशालाओं, प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों एवं अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजनः वर्ष 2025 में संख्यात्मक विकिरण स्थानांतरण पर स्पार्क पाठ्यक्रम के अंतर्गत एनटीएएसएस कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस पाठ्यक्रम का संचालन यूनिवर्सिटी ऑफ ससेक्स, यूनाइटेड किंगडम के प्रो. इलियन टी. इलिव ने किया। इसके अतिरिक्त, प्रो. आंद्रेई मेसिंगर एवं प्रो. मत्तेओ विएल के नेतृत्व में 'बहु–तरंगदैर्घ्य पर ब्रह्मांड विज्ञान' विषय पर दो स्पार्क पाठ्यक्रम आयोजित किए गए। विभाग ने 'एसकेए एवं उससे आगे ब्रह्मांड विज्ञान' तथा 'बहु–तरंगदैर्घ्य पर ब्रह्मांड विज्ञान' विषयों पर दो स्पार्क बैठकों का भी आयोजन किया। इसके अतिरिक्त, आईसीटीएस–टीआईएफआर तथा स्पार्क के संयुक्त प्रायोजन में 'एसकेए युग में रेडियो ब्रह्मांड विज्ञान एवं सतत उत्सर्जन प्रेक्षणरू एक समन्वित दृष्टिकोण' शीर्षक से अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।
9. सर्वश्रेष्ठ शोध–पत्र पुरस्कार 2026ः चंदन कुमार दास, भार्गव वैद्य, अमित शुक्ला, जियानकार्लो मत्तिया तथा कार्ल मानहाइम को "संख्यात्मक अनुकरण द्वारा ब्लेज़ार की परिवर्तनशीलता में चुंबकीय पुनर्संयोजन की भूमिका" शीर्षक से किए गए शोध कार्य के लिए सर्वश्रेष्ठ शोध–पत्र पुरस्कार 2026 प्रदान किया गया।
10. सर्वश्रेष्ठ प्रौद्योगिकी पुरस्कार 2026रू डॉ. सौरभ दास, रंजन कुमार, लक्ष्य रसाप्रोलु, वैभव त्यागी, लेखराज सैनी, कविता तथा पार्वती थंकचि पी को "वायु प्रदूषकों एवं वायुमंडलीय मापदंडों की रूपरेखा तैयार करने हेतु कम लागत वाली मानवरहित प्रणाली" विकसित करने के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रौद्योगिकी पुरस्कार 2026 प्रदान किया गया।
11. श्री अभिजीत दत्ता को तकनीकी कर्मचारियों की श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ कार्य–निष्पादन के लिए सम्मानित किया गया।
12. विभाग के पीएच.डी. शोधार्थी श्री लियोन नोबल को तीन वर्ष की अवधि के लिए प्रतिष्ठित आईसीटीपी–एसटीईपी फेलोशिप प्रदान की गई। इसके अंतर्गत वे इटली के ट्रिएस्टे स्थित सिस्सा संस्थान में प्रो. मत्तेओ विएल के सहयोग से अपना शोध कार्य करेंगे।
13. विभाग के तीन पीएच.डी. शोधार्थियोंकृश्री लियोन नोबल, श्री डी. मानस मोहित तथा श्री यशराजसिंह महीदाकृको अमेरिका के सिमंस फाउंडेशन से प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय यात्रा अनुदान प्राप्त हुए।
14. विभाग के पीएच.डी. शोधार्थियों को निम्नलिखित सम्मेलनों में भाग लेने हेतु यात्रा अनुदान प्राप्त हुआः
    आईजीएआरएसएस 2025ः प्रतिभागीकृअनम साबिर एवं चुंबिथा लीना; स्थान – ब्रिस्बेन, ऑस्ट्रेलिया; दिनांक – 3 से 8 अगस्त 2025।
    पीएसएआर 2025ः प्रतिभागी – अनम साबिर एवं साक्षी जैन; स्थान – मात्सुए, जापान; दिनांक – 5 से 9 अक्टूबर 2025।
    इनजीएआरएसएस 2025ः प्रतिभागी – साक्षी जैन; स्थान – भुवनेश्वर, भारत; दिनांक – 10 से 13 दिसंबर 2025।
15. डॉ. सुमन मजूमदार को इटली के ट्रिएस्टे स्थित अंतरराष्ट्रीय सैद्धांतिक भौतिकी केंद्र (ICTP) से अंतरराष्ट्रीय यात्रा अनुदान एवं विजिटिंग फेलोशिप प्राप्त हुई।

परियोजना

परियोजना	*प्रायोजित*	*परामर्श कार्य*
नई परियोजनाएँ	8	–
जारी परियोजनाएँ	18	–
पूर्ण परियोजनाएँ	9	1

प्रकाशन

विवरण	*प्रकाशित पुस्तकें*	*पुस्तकों में अध्याय*	*सम्मेलन में शोधपत्र*	*पत्रिकाओं में लेख*
कुल	1	5	42	48

रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग



विभाग का परिचय

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) इंदौर के रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग की स्थापना वर्ष 2023 में की गई थी। इसी वर्ष विभाग के प्रमुख चार वर्षीय स्नातक (बी.टेक.) कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। यह विभाग शैक्षणिक उत्कृष्टता एवं अत्याधुनिक अनुसंधान के क्षेत्र में एक उभरता हुआ, गतिशील केंद्र है तथा अनुसंधान एवं पीएच.डी. कार्यक्रमों के लिए विद्यार्थियों को सक्रिय रूप से प्रोत्साहित करता है। वर्तमान में विभाग में बारह नियमित संकाय सदस्य तथा पाँच विजिटिंग डिस्टिंग्विश्ड प्रोफेसर हैं। विभाग की अनुसंधान परियोजनाओं को एएनआरएफ–ईसीआरजी, डीएसटी–इंस्पायर, दृष्टि सीपीएस तथा अन्य वित्तपोषण एजेंसियों से सहायता प्राप्त होती है। विभाग का उद्देश्य विषमांगी उत्प्रेरण, मृदु पदार्थ, बहुलक, जटिल तरल एवं प्रवाहिकी तथा सतत विकास एवं ऊर्जा जैसे रासायनिक अभियांत्रिकी के अग्रणी क्षेत्रों में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान स्थापित करना है।

शैक्षणिक कार्यक्रम

विभाग में शैक्षणिक वर्ष 2023 से बी.टेक. कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त, गेट तथा कठोर चयन प्रक्रिया के माध्यम से पीएच.डी. कार्यक्रम में प्रवेश दिया जाता है। विभाग का उद्देश्य शैक्षणिक सत्र 2026 की शरद ऋतु से एम.टेक. कार्यक्रम प्रारंभ करना है। विभाग का पाठ्यक्रम व्यावहारिक प्रयोगशाला अनुभव पर विशेष बल देता है। इसमें विभाग में उपलब्ध अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ उन्नत संगणकीय उपकरणों एवं कार्यप्रणालियों का समावेश किया गया है। साथ ही, पाठ्यक्रम में अंतर्विषयक अध्ययन एवं अनुसंधान के लिए पर्याप्त लचीलापन प्रदान किया गया है।

संकाय सदस्यों की संख्या	
सह प्राध्यापक	1
सहायक प्राध्यापक I	9
सहायक प्राध्यापक II	2
विजिटिंग डिस्टिंग्विश्ड प्रोफेसर	5
तकनीकी एवं प्रशासनिक कर्मचारी	4

कार्यक्रम	विद्यार्थी प्रवेश	उपाधि प्राप्त
पीएचडी	1	0
बी.टेक	109	0

प्राप्त अनुदान

अनुदान	पुरस्कार प्राप्तकर्ता	प्राप्तकर्ता
प्राइम मिनिस्टर अर्ली करियर रिसर्च ग्रांट	अनुसंधान नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (एएनआरएफ)	डॉ. सृष्टश्रीता दास
प्राइम मिनिस्टर अर्ली करियर रिसर्च ग्रांट	अनुसंधान नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (एएनआरएफ)	डॉ. गौरव चौहान
प्राइम मिनिस्टर अर्ली करियर रिसर्च ग्रांट	अनुसंधान नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (एएनआरएफ)	डॉ. के.वी.एस. चौतन्य
चाणक्य पीएचडी फेलोशिप	दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन	डॉ. गौरव चौहान
इंस्पायर फैकल्टी फेलोशिप	विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी)	डॉ. के.वी.एस. चौतन्य

प्राप्त कुल बाह्य वित्तपोषण लगभग रु.1.93 करोड़ रहा।

प्रमुख बाह्यसंपर्क गतिविधियाँ

- डॉ. आर. कैलाशम को आईआईटी इंदौर के अनुसंधान एवं विकास कार्यालय द्वारा स्वतंत्र सदस्य एवं तकनीकी विशेषज्ञ के रूप में नामित किया गया। उन्हें वित्त मंत्रालय के राजस्व विभाग के अपर सचिव की अध्यक्षता वाली प्रबंधन समिति (सीओएम) को अफीम एवं एल्कलॉइड संबंधी कार्यों में व्यावसायिक एवं तकनीकी सुझाव प्रदान करने का दायित्व सौंपा गया।
- डॉ. आर. कैलाशम को मई 2026 में एसवीएनआईटी सूरत द्वारा आयोजित सतत संसाधन, ऊर्जा एवं पर्यावरण प्रबंधन में प्रगति पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन (एएसआरईईएम 2.0) की राष्ट्रीय सलाहकार समिति के सदस्य के रूप में नामित किया गया।
- संकाय मार्गदर्शक डॉ. प्रीतिका करनाल के मार्गदर्शन में भारतीय मानक ब्यूरो के विद्यार्थी अध्याय द्वारा मालवा केमिकल कॉन्क्लेव 2025, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता तथा सेफफ्लेक्स औद्योगिक भ्रमण का आयोजन किया गया।
- डॉ. अभिलाषा माहेश्वरी को 8–9 दिसंबर 2025 को आईआईटी हैदराबाद, तेलंगाना में आयोजित कार्यक्रम में "जल नेटवर्क अनुकूलनः नवाचार के माध्यम से सतत जल नेटवर्क को सशक्त बनाना" विषय पर मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया।
- डॉ. अभिलाषा माहेश्वरी के आयोजन में एमआईटी–डब्ल्यूपीयू के लिए दो सप्ताह के राष्ट्रीय शैक्षणिक अवगाहन कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- डॉ. अभिलाषा माहेश्वरी ने रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग में औद्योगिक प्रक्रिया नियंत्रण एवं अनुकूलन पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। इसका संचालन बेंगलुरु स्थित योकोगावा टेक्नोलॉजी सॉल्यूशंस के श्री संजय वेणुगोपाल ने किया।
- डॉ. सृष्टश्रीता दास ने अक्टूबर 2025 में आईसीटी मुंबई, आईओसीएल ओडिशा तथा कीट विश्वविद्यालय में और मई 2026 में आईआईटी पलक्कड़ में आमंत्रित विभागीय व्याख्यान प्रस्तुत किए।
- डॉ. प्रीतिका करनाल ने आईआईटी कानपुर में आयोजित अंतरराष्ट्रीय नैनोट्राइबोलॉजी फोरम 2026 तथा यंग इन्वेस्टिगेटर्स मीट 2026 में अपने शोध कार्य प्रस्तुत किए।
- डॉ. गौरव चौहान ने स्विट्जरलैंड के लॉज़ेन में आयोजित रासायनिक रूप से सक्रिय मिश्रणों के बहुस्तरीय मॉडलिंग विषयक सीईसीएएम कार्यशाला में अपना शोध कार्य प्रस्तुत किया।
- डॉ. सृष्टश्रीता दास ने अक्टूबर 2025 में सी. वी. रमन ग्लोबल विश्वविद्यालय के रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग में आमंत्रित व्याख्यान दिया।
- डॉ. के. वी. एस. चौथन्य ने भारतीय विज्ञान संस्थान (प्पैब), बेंगलुरु में आयोजित कॉम्पफ्लू 2025 में अपना शोध कार्य प्रस्तुत किया।
- डॉ. राजन सिंह की पहल पर ऑस्ट्रेलिया स्थित न्यू साउथ वेल्स विश्वविद्यालय के रासायनिक अभियांत्रिकी विद्यालय ने आईआईटी इंदौर के रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग के साथ विद्यार्थी विनिमय कार्यक्रम की संभावनाओं पर आगे चर्चा करने की सहमति व्यक्त की।

प्रकाशन

1. जॉन जे. एवं अन्य, "चुंबकीय जैनेस कणों द्वारा स्थिर की गई पिकरिंग इमल्शन में चुंबकीय क्षेत्र के प्रभाव," लैंगमुइर (2026), 42 (12), 8301–8312।
2. कैलाशम आर., "प्रेरित बीड–स्प्रिंग–डैशपॉट श्रृंखलाओं की अपव्ययी प्रतिक्रिया," फिजिकल रिव्यू ई (2026), स्वीकृत।
3. येरासी, एस., एस. आर., पुट्टन्ना, वी. के., विंचेन्ज़ी, डी., रविचंद्रन, एस. एवं चौथन्य, के.वी.एस., "गैर–स्थानीय प्रवाह नमूना भारी कणों को भँवर में फँसाने में सक्षम बनाता है," फिजिकल रिव्यू फ्लुइड्स (2026), समीक्षाधीन।
4. चौहान, जी., विल्किंसन, ई.जी., युआन, वाई., कोहेन, एस.आर., ओनिशी, एम., पप्पू, आर.वी. एवं स्ट्रेडर, एल.सी., "सक्रिय परिवहन कोशिकाओं में प्रोटीन संघनन को सक्षम बनाता है," साइंस एडवांसेज़ (2025), 11 (21), पृ. मंकअ7875।
5. कैंट्रॉल, जी.आर., चौहान, जी. एवं एबेल, एस.एम., "भीड़–प्रभाव के कारण असमान वक्रण कठोरता वाले पॉलिमरों का संकुचन एवं अधिशोषण," सॉफ्ट मैटर (2026)।
6. ओझा, एम., कुमार, वाई., सक्सेना, वी., तिवारी, टी., चौहान, जी. एवं पुष्पवनम, के., "पुनः संयोजक रूप से अभिव्यक्त प्रोटीनों के माइक्रोजेल निर्माण हेतु द्रव–द्रव प्रावस्था पृथक्करण," स्मॉल (2026), 12 (15), म03643।
7. मित्रा, जी., घोष, एस., रफ, के.एम., झांग, आर., चौहान, जी. एवं पप्पू, आर.वी., "आंतरिक रूप से अव्यवस्थित प्रोटीनों के निकट–क्रांतिक एवं क्रांतिक से दूर प्रावस्था व्यवहारों में अंतर करना," रिपोर्ट्स ऑन प्रोग्रेस इन फिजिक्स (2026), प्रकाशन हेतु स्वीकृत।
8. प्रियदर्शिनी, एन., सक्सेना, वी., कांबलेकर, ए., चौहान, जी. एवं पुष्पवनम, के., "स्वतः प्रावस्था पृथक्करण द्वारा तीव्र एवं पॉलिमरीकरण–मुक्त विलेय हाइड्रोजेल निर्माण," लैंगमुइर (2026), समीक्षाधीन।
9. कौर, जे., शियाओ, एक्स., कर्नाल, पी., हुई, सी.वाई. एवं जगोटा, ए., "स्तंभाकार संरचनाओं के घर्षणयुक्त सर्पण हेतु परत–आधारित मॉडल," लैंगमुइर (2026), 42 (7), 5440–5451।
10. भारुचा, ए., माहेश्वरी, ए., प्रसाद, वी. एवं गुड़ी, आर.डी., "औद्योगिक जल प्रणालियों में सततता हेतु परिसंपत्ति मूल्य एवं परिचालन लागत का अनुकूलनः एक इस्पात संयंत्र का केस स्टडी," इंडस्ट्रियल एंड इंजीनियरिंग केमिस्ट्री रिसर्च (2025), 64 (43), 20679–20691।
11. सिंह, ए., सिंह, एस. एवं माहेश्वरी, ए., "बड़े पैमाने के जल वितरण नेटवर्क में परिचालन उत्कृष्टता हेतु डिजिटल ट्विन विकसित करने की अवधारणा–सत्यापन संबंधी अध्ययन," अर्बन वाटर जर्नल (2025), 22 (5), 507–525।

कार्यशाला / सम्मेलन / प्रस्तुतियाँ





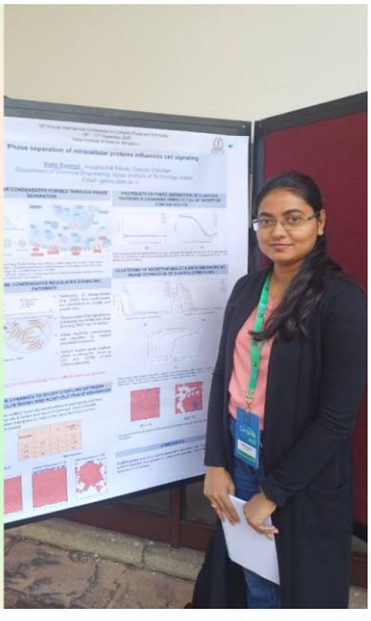

विद्यार्थीः अनघा टोटाडे (बी.टेक. तृतीय वर्ष), विधि सक्सेना (पीएच.डी. द्वितीय वर्ष) तथा मितांशु कुमावत (बी.टेक. तृतीय वर्ष) ने डॉ. के.वी. एस. चौतन्य और डॉ. जैकब जॉन के साथ कॉम्प्लेक्स फ्लुइड्स एंड सॉफ्ट मैटर पर आयोजित 19वें वार्षिक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन (कॉम्प्फ्लु 2025) में अपना शोध कार्य प्रस्तुत किया।



भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) ने रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग के लिए सेफफ्लेक्स इंटरनेशनल लिमिटेड उद्योग के शैक्षणिक भ्रमण को प्रायोजित किया।

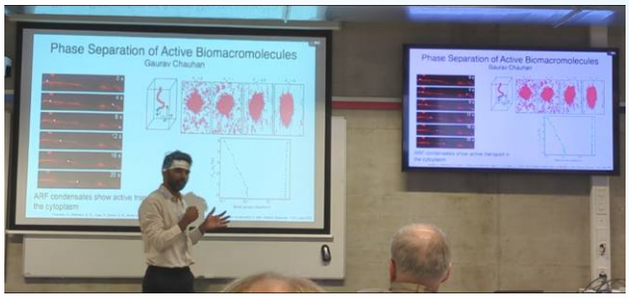

डॉ. गौरव चौहान ने स्विट्जरलैंड के लॉज़ेन में आयोजित रासायनिक रूप से सक्रिय मिश्रणों के बहुस्तरीय मॉडलिंग पर सीईसीएएम कार्यशाला में अपना शोध कार्य प्रस्तुत किया।



डॉ. प्रीतिका करनाल मैकेनिकल साइंसेज़ यंग इन्वेस्टिगेटर्स मीट 2026 में।



मालवा केमिकल कॉन्क्लेव, दिसंबर 2025, रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग का वार्षिक सम्मेलन था, जिसमें बीआईएस, मोइरा सरिया, सेफफ्लेक्स और फेंटन केमिकल्स जैसे विभिन्न उद्योगों के अतिथि वक्ताओं ने सहभागिता की।



डॉ. स्रष्टसृता दास ने अक्टूबर 2025 में सी. वी. रमन ग्लोबल यूनिवर्सिटी के रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग में आमंत्रित व्याख्यान दिया।

रसायन विज्ञान विभाग



विभाग का परिचय

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर (आईआईटी इंदौर) में रसायन विज्ञान विभाग की स्थापना अगस्त 2009 में हुई थी। विभाग अनुसंधान की विविधता, बाह्य वित्तपोषण तथा शोध प्रकाशनों के क्षेत्र में तीव्र गति से प्रगति कर रहा है। विभाग में 19 संकाय सदस्य हैं, जिनकी अनुसंधान रुचियाँ पारंपरिक क्षेत्रों, कार्बनिक, अकार्बनिक, भौतिक तथा सैद्धांतिक एवं संगणकीय रसायन विज्ञानकृसे लेकर नैनोप्रौद्योगिकी, उत्प्रेरण, ऊर्जा, मशीन लर्निंग, जैव–रसायन, विश्लेषणात्मक रसायन विज्ञान एवं पदार्थ विज्ञान जैसे बहुविषयक क्षेत्रों तक विस्तृत हैं। विभाग के संकाय सदस्य उच्च योग्यताप्राप्त एवं अनुसंधान के प्रति प्रेरित हैं तथा शिक्षण और शोध के प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता रखते हैं। विभाग में रसायन विज्ञान एवं बहुविषयक अनुसंधान के विभिन्न क्षेत्रों में शोध कार्यों को सुगम बनाने हेतु अत्याधुनिक एवं उन्नत उपकरण सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

शैक्षणिक कार्यक्रम

रसायन विज्ञान विभाग के शैक्षणिक कार्यक्रमों में पीएच.डी., एम.एससी. तथा बी.टेक. के विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम शामिल हैं। समन्वय रसायन विज्ञान, सैद्धांतिक रसायन विज्ञान, संश्लेषी कार्बनिक रसायन विज्ञान, अतिआणविक रसायन विज्ञान, ठोस–अवस्था रसायन विज्ञान तथा अन्य अंतर्विषयक क्षेत्रों में व्यापक अनुसंधान कार्य विभाग को अत्याधुनिक शोध का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र बनाते हैं। आईआईटी इंदौर का रसायन विज्ञान विभाग भारत में स्थापित द्वितीय पीढ़ी के आईआईटी संस्थानों में एकमात्र ऐसा विभाग है, जिसने रसायन विज्ञान में दो वर्षीय स्नातकोत्तर कार्यक्रम (एम.एससी. रसायन विज्ञान) प्रारंभ किया है। इस कार्यक्रम की एक विशिष्ट विशेषता यह है कि इसका पूरा एक वर्ष, विशेषकर द्वितीय वर्ष, विद्यार्थियों की रुचि के अनुरूप चुने गए क्षेत्र में प्रयोगशाला–आधारित अनुसंधान के लिए समर्पित है। वर्ष 2013 से संचालित इस विशिष्ट कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों को प्रयोगशाला में मौलिक अनुसंधान संबंधी समस्याओं पर कार्य करने के लिए पूरे एक वर्ष का अवसर प्रदान किया जाता है। इससे उन्हें यह निर्णय लेने में सहायता मिलती है कि वे उच्च शिक्षा के अंतर्गत डॉक्टरेट कार्यक्रम में आगे बढ़ना चाहते हैं या नहीं। यह व्यवस्था सुनिश्चित करती है कि केवल योग्य एवं अनुसंधान के प्रति प्रेरित विद्यार्थी ही डॉक्टरेट कार्यक्रम में प्रवेश लें और समाज के कल्याण में योगदान दें। इसके अतिरिक्त, आईआईटी इंदौर से स्नातकोत्तर कार्यक्रम पूरा करने के बाद विद्यार्थी अपनी रुचि एवं करियर संबंधी लक्ष्यों के अनुरूप डॉक्टरेट की दिशा में आगे बढ़ने अथवा रोजगार के बेहतर अवसर तलाशने का निर्णय ले सकते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के दृष्टिकोण के अनुरूप, रसायन विज्ञान विभाग शैक्षणिक सत्र 2026 से अनुप्रयुक्त एवं औद्योगिक रसायन विज्ञान में चार वर्षीय बैचलर ऑफ साइंस (बी.एस.) कार्यक्रम भी प्रारंभ कर रहा है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को रसायन विज्ञान के मूलभूत सिद्धांतों का सुदृढ़ ज्ञान प्रदान करने के साथ–साथ औद्योगिक प्रासंगिकता, अंतर्विषयक अनुभव तथा कौशल–आधारित प्रशिक्षण उपलब्ध कराना है, ताकि वे उभरती शैक्षणिक, अनुसंधान एवं औद्योगिक आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम बन सकें।

कार्यक्रम	विद्यार्थी प्रवेश	उपाधि प्राप्त
एम.एससी.	28	27
पीएचडी	110 (वर्तमान संख्या)	12

संकाय सदस्यों की कुल संख्याः	19
प्राध्यापक	12
सह प्राध्यापक	05
सहायक प्राध्यापक I	02
पोस्ट–डॉक्टोरल शोधार्थियों की संख्या	08

प्रमुख अनुसंधान एवं विकास गतिविधियाँ तथा विभागीय उपलब्धियाँ

- 13 फरवरी, 2026 को रसायन विज्ञान विभाग द्वारा आंतरिक संगोष्ठी का आयोजन।
- शैक्षणिक जगत एवं उद्योग के बीच संवाद/सहयोगः मेसर्स डीसीएम नोवेल स्पेशियलिटी केमिकल्स के साथ औषधि, तेल, रबर रसायन, पेंट एवं अन्य क्षेत्रों में विशेष एमीन के अनुसंधान एवं विकास (आर एंड डी) संबंधी विभिन्न गतिविधियों के लिए 9 जुलाई 2025 को उज्जैन स्थित संयंत्र में एक बैठक आयोजित की गई।
- ज्ञान पाठ्यक्रमः "प्रिसीजन मेडिसिन एवं अगली पीढ़ी की 'डीप' मेडिसिन की रोमांचक संभावनाएँ" विषय पर 16–27 दिसंबर 2025 तक पाठ्यक्रम आयोजित किया गया।
- स्पार्क कार्यशालाः "बोरॉन न्यूट्रॉन कैप्चर थेरेपीरू कैंसर का उपचार" विषय पर 4–15 दिसंबर 2025 तक कार्यशाला आयोजित की गई।
- संस्थान चेयर प्रोफेसर के रूप में पदोन्नतिः प्रो. बिस्वरूप पाठक को जनवरी 2026 से दो वर्ष की अवधि के लिए संस्थान चेयर प्रोफेसर नियुक्त किया गया। इस पद के अंतर्गत उन्हें प्रतिवर्ष रू.1 लाख की राशि प्रदान की जाएगी, जिससे विभाग में अनुसंधान गतिविधियों को प्रोत्साहन मिलेगा।
- राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 2025: प्रो. देबायन सरकार को माननीय राष्ट्रपति द्वारा उच्च शिक्षा संस्थान श्रेणी में राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 2025 से सम्मानित किया गया।
- पेटेंट अनुदानः प्रो. देबायन सरकार को भारतीय बौद्धिक संपदा कार्यालय द्वारा "सूक्ष्मजीवों के दृश्य प्रकाश–आधारित फोटोडायनेमिक निष्क्रियकरण हेतु एक पोर्टेबल किट एवं उसकी विधि" विषय पर पेटेंट प्रदान किया गया। यह पेटेंट 20 मार्च 2026 को प्रदान किया गया (पेटेंट संख्याः 584119)।





परियोजना

परियोजना	प्रायोजित	परामर्श सेवाएँ
नई परियोजनाएँ	03	निरंक
जारी परियोजनाएँ	16	निरंक
पूर्ण परियोजनाएँ	12	निरंक

प्रकाशन

विवरण	प्रकाशित पुस्तकें	पुस्तकों में प्रकाशित	सम्मेलनों में प्रस्तुत	शोध–पत्रिकाओं में प्रकाशित
कुल	निरंक	02	निरंक	163
पेटेंट की संख्याः 04				

जानपद अभियांत्रिकी विभाग



विभाग का परिचय

जानपद अभियांत्रिकी विभाग वर्ष 2016 से कार्यरत है और वास्तविक जीवन की समस्याओं के समाधान हेतु मूलभूत एवं अनुप्रयुक्त अनुसंधान पर केंद्रित है। विभाग, जानपद अभियांत्रिकी में चार वर्षीय स्नातक डिग्री कार्यक्रम तथा पीएच.डी. कार्यक्रम संचालित करता है। विभाग के संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी भारत सरकार के विभिन्न संगठनों द्वारा वित्तपोषित प्रायोजित अनुसंधान परियोजनाओं के साथ–साथ देश–विदेश में उद्योगों एवं परामर्श संबंधी परियोजनाओं में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। विभाग में अंतरराष्ट्रीय अनुभव से समृद्ध एवं गतिशील संकाय सदस्यों की एक टीम है, जिन्हें सिविल अभियांत्रिकी के विविध क्षेत्रों, जैसे संरचनात्मक अभियांत्रिकी, भू–तकनीकी अभियांत्रिकी, परिवहन अभियांत्रिकी, जल संसाधन अभियांत्रिकी तथा पर्यावरण अभियांत्रिकी में विशेषज्ञता प्राप्त है। विभाग के संकाय सदस्यों को विश्व स्तर पर विभिन्न मंचों पर समितियों के अध्यक्ष एवं सदस्य, उत्कृष्ट समीक्षक तथा संपादकीय मंडलों के सदस्य के रूप में मान्यता प्राप्त हुई है। जानपद अभियांत्रिकी विभाग सक्रिय औद्योगिक सहभागिता तथा राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सहयोग के माध्यम से राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर एक अग्रणी शैक्षणिक केंद्र के रूप में स्थापित होने की दिशा में निरंतर प्रयासरत है।

शैक्षणिक कार्यक्रम

विभाग, जानपद अभियांत्रिकी में बी.टेक., एम.टेक. एवं पीएच.डी. कार्यक्रम संचालित करता है। इसके अतिरिक्त, विभाग विभिन्न विशेषज्ञता क्षेत्रों में संस्थान, प्रायोजित अनुसंधान परियोजनाओं तथा अन्य एजेंसियों द्वारा वित्तपोषित पोस्टडॉक्टोरल शोधार्थियों को भी अनुसंधान के अवसर प्रदान करता है।

कार्यक्रम	विद्यार्थी प्रवेश	उपाधि प्राप्त
बी.टेक	53	44
एम.टेक	21	17
पीएचडी	12	8

संकाय सदस्यों की कुल संख्या	17
प्राध्यापक	03
सह प्राध्यापक	03
सहायक प्राध्यापक II	00
सहायक प्राध्यापक I	11
पोस्ट–डॉक्टोरल शोधार्थियों की संख्या	01

विभाग की प्रमुख गतिविधियाँ

1. प्रो. संदीप चौधरी – "निर्माण की अवधारणाओं का पुनर्परिवर्तनरू अगली पीढ़ी के लिए इस्पात" विषय पर तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन 22 जनवरी 2026 को आईआईटी इंदौर में किया गया।
2. प्रो. मनीष कुमार गोयल – स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय द्वारा तैयार विश्व के शीर्ष 2% वैज्ञानिकों की सूची में वर्ष 2020, 2021, 2022, 2023, 2024 एवं 2025 में स्थान प्राप्त किया।
3. प्रो. मनीष कुमार गोयल – बीआईएस– संस्थान समझौता ज्ञापन के अंतर्गत बीआईएस मानकीकरण चेयर प्रोफेसर के रूप में गणित, यांत्रिक अभियांत्रिकी, धातुकर्म एवं पदार्थ विज्ञान, कंप्यूटर विज्ञान, सिविल अभियांत्रिकी, रासायनिक अभियांत्रिकी तथा विद्युत अभियांत्रिकी सहित अनेक विभागों में बीआईएस विद्यार्थी चौप्टर सफलतापूर्वक स्थापित किए।
4. प्रो. मनीष कुमार गोयल – "सतत एवं आपदा–सहिष्णु भविष्य के लिए जल संसाधनों का संवर्धन" विषय पर 24 मार्च 2026 को राष्ट्रीय जल सम्मेलन 2026 का सफल आयोजन किया। सम्मेलन में 150 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसमें शोधकर्ताओं, नीति–निर्माताओं एवं क्षेत्र के विशेषज्ञों ने जल संसाधन प्रबंधन की उभरती चुनौतियों, नवाचारों तथा सतत समाधानों पर विचार–विमर्श किया।
5. प्रो. मनीष कुमार गोयल के नेतृत्व में शोध दल द्वारा विकसित क्लाइमेट बायोडायवर्सिटी टूल को डीडी न्यूज़ पर प्रदर्शित किया गया।
6. प्रो. नीलिमा सत्यम देवरकोंडा को संस्थान चेयर प्रोफेसर नियुक्त किया गया।
7. प्रो. नीलिमा सत्यम देवरकोंडा को एसोसिएशन ऑफ कंसल्टिंग सिविल इंजीनियर्स (इंडिया), हैदराबाद केंद्र द्वारा सर्वश्रेष्ठ महिला अभियंता पुरस्कार प्रदान किया गया।
8. प्रो. नीलिमा सत्यम देवरकोंडा को अमेरिकन जियोफिजिकल यूनियन (एजीयू) द्वारा एजीयू प्राकृतिक आपदा न्यूनीकरण पुरस्कार प्रदान किया गया।
9. प्रो. नीलिमा सत्यम देवरकोंडा को इंडियन जियोटेक्निकल सोसाइटी द्वारा भू–तकनीकी अभियांत्रिकी में सर्वश्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार प्रदान किया गया।
10. प्रो. नीलिमा सत्यम देवरकोंडा को इंडियन नेशनल साइंस अकादमी द्वारा अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी अनुभाग में आईएनएसए विशिष्ट व्याख्यान – 1 के लिए सम्मानित किया गया।
11. प्रो. नीलिमा सत्यम देवरकोंडा को इंडियन जियोटेक्निकल सोसाइटी द्वारा "पर्यावरणीय भू–प्रौद्योगिकी" विषय में आईजीएस–वाईजीई द्विवार्षिक सर्वश्रेष्ठ शोधपत्र पुरस्कार प्रदान किया गया।
12. प्रो. नीलिमा सत्यम देवरकोंडा को जर्नल ऑफ रॉक मैकेनिक्स एंड जियोटेक्निकल इंजीनियरिंग द्वारा उत्कृष्ट वैज्ञानिक संपादक पुरस्कार 2024 प्रदान किया गया।
13. प्रो. नीलिमा सत्यम देवरकोंडा को स्प्रिंगर नेचर (आईजीजे) द्वारा संपादकीय योगदान पुरस्कार एवं लेखक सेवा पुरस्कार प्रदान किए गए।
14. प्रो. नीलिमा सत्यम देवरकोंडा के नेतृत्व वाली आईआईटी इंदौर की जियोहैज़र्ड्स प्रयोगशाला को छठा पेटेंट प्रदान किया गया।
15. प्रो. नीलिमा सत्यम देवरकोंडा को कज़ाखस्तान जियोटेक्निकल सोसाइटी की मानद सदस्यता प्रदान की गई। यह संस्था इंटरनेशनल सोसाइटी ऑफ सॉइल मैकेनिक्स एंड जियोटेक्निकल इंजीनियरिंग (आईएसएसएमजीई) की सदस्य संस्था है।
16. डॉ. गौरब सिल को स्प्रिंगर नेचर के साइंटिफिक रिपोर्ट्स द्वारा एडिटर ऑफ डिस्टिंक्शन पुरस्कार प्रदान किया गया।
17. डॉ. गौरब सिल को आईईईई आईटीएसएस मध्य प्रदेश चौप्टर का अध्यक्ष नियुक्त किया गया।
18. डॉ. कौस्तव बख्शी ने साइंटिफिक रिपोर्ट्स के संपादकीय समुदाय में पंजीकरण कराया।

19. डॉ. प्रियंक जे. शर्मा को साइंटिफिक रिपोर्ट्स पत्रिका के संपादकीय मंडल के सदस्य के रूप में योगदान हेतु स्प्रिंगर नेचर एडिटर ऑफ डिस्टिंक्शन पुरस्कार 2026 प्रदान किया गया।
20. डॉ. प्रियंक जे. शर्मा को आईआईटी इंदौर में बड़े विद्यार्थी समूह वाली कक्षा में द्वितीय सर्वश्रेष्ठ शिक्षक होने के लिए वर्ष 2025 का उत्कृष्ट शिक्षण पुरस्कार प्रदान किया गया।
21. एम.टेक. (डब्ल्यूसीएस) के विद्यार्थी श्री सुयश शुक्ला को इंडियन सोसाइटी फॉर हाइड्रोलिक्स द्वारा दिसंबर 2025 में आईएसएच सर्वश्रेष्ठ एम.टेक. शोध–प्रबंध पुरस्कार 2025 प्रदान किया गया।
22. डॉ. अशुतोष एस. मांडपे को "जैव ईंधन उत्पादन हेतु जैविक अपशिष्ट के उपयोग में हालिया प्रगति का मूल्यांकन – एक व्यापक समीक्षा" शीर्षक वाले शोधपत्र के लिए आईआईटी इंदौर का सर्वश्रेष्ठ समीक्षा शोधपत्र पुरस्कार (2025–26) प्रदान किया गया।
23. डॉ. अशुतोष एस. मांडपे को भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) की सिविल अभियांत्रिकी विभाग की 'सीईडी 24' – लोक स्वास्थ्य अभियांत्रिकी अनुभागीय समिति में राष्ट्रीय स्तर पर सदस्य के रूप में शामिल किया गया।
24. पीएच.डी. शोधार्थी वीणा एन. भजन्त्री को आईआईटी दिल्ली में आयोजित टीएलएस कार्यशाला में उत्कृष्ट शोध के लिए सर्वश्रेष्ठ शोध प्रस्तुति पुरस्कार एवं सर्वश्रेष्ठ शिक्षण प्रदर्शन पुरस्कार प्रदान किए गए।
25. श्री निखिल कुमार पांडेय, शोधार्थी, को 41वीं मध्य प्रदेश युवा वैज्ञानिक कांग्रेस में सिविल अभियांत्रिकी श्रेणी के अंतर्गत मध्य प्रदेश युवा वैज्ञानिक पुरस्कार प्रदान किया गया।
26. डॉ. अक्षय प्रताप सिंह को एएनआरएफ की प्रधानमंत्री प्रारंभिक–कैरियर अनुसंधान अनुदान योजना (पीएम–ईसीआरजी) के अंतर्गत अनुसंधान परियोजना प्राप्त हुई।
27. पर्यावरण अभियांत्रिकी प्रयोगशाला ने आईईईई जीआरएसएस विश्व पर्यावरण दिवस 2025 चौलेंज में उत्कृष्ट सफलता प्राप्त की।

अनुसंधान एवं विकास गतिविधियाँ

विभाग को जानपद अभियांत्रिकी की विभिन्न उपशाखाओं, जैसे संरचनात्मक अभियांत्रिकी, भू–तकनीकी अभियांत्रिकी, परिवहन अभियांत्रिकी, जल संसाधन अभियांत्रिकी तथा पर्यावरण अभियांत्रिकी में विशेषज्ञता प्राप्त है।

परियोजना

परियोजना	*प्रायोजित*	*परामर्श सेवाएँ*
नई परियोजनाएँ	19	61
जारी परियोजनाएँ	23	22
पूर्ण परियोजनाएँ	4	26

प्रकाशन

विवरण	*प्रकाशित पुस्तकें*	*पुस्तकों में प्रकाशित*	*सम्मेलनों में प्रस्तुत*	*शोध–पत्रिकाओं में प्रकाशित*
कुल	8+5 (संपादित पुस्तकें)	19	42	107

संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग



विभाग का परिचय

संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग (सीएसई) की स्थापना जुलाई 2009 में हुई थी। विभाग में प्रौद्योगिकी स्नातक (बी.टेक.), शोध द्वारा विज्ञान स्नातकोत्तर (एम.एस.), प्रौद्योगिकी में स्नातकोत्तर (एम.टेक.) तथा डॉक्टरेट ऑफ फिलोसोफी (पीएच.डी.) कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं। वर्ष 2024 से विभाग अंतर्विषयक डुअल डिग्री एम.टेक. कार्यक्रम भी संचालित कर रहा है। विभाग शिक्षण के लिए आधुनिक दृष्टिकोण अपनाता है, जिसके अंतर्गत विद्यार्थियों को नवाचार करने तथा सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी के लिए पर्याप्त शैक्षणिक स्वतंत्रता प्रदान की जाती है। विभाग की विभिन्न प्रयोगशालाओं में अत्याधुनिक सुविधाएँ, नवीनतम सॉफ्टवेयर तथा उन्नत हार्डवेयर उपलब्ध हैं, जिनका उपयोग शिक्षण एवं अनुसंधान दोनों के लिए किया जाता है। ये सुविधाएँ बी.टेक., एम.एस. (रिसर्च) तथा पीएच.डी. के प्रमुख परियोजना कार्यों के प्रभावी क्रियान्वयन के साथ–साथ अनुसंधान परिणामों के सत्यापन एवं प्रमाणीकरण में सहायक हैं। संस्थान की भौगोलिक स्थिति से भी विभाग को लाभ मिलता है। इंदौर मध्य भारत के एक प्रमुख सूचना प्रौद्योगिकी केंद्र के रूप में तेजी से विकसित हो रहा है। सीएससी और इम्पेटस जैसी कंपनियों की शहर में सशक्त उपस्थिति है, जबकि टीसीएस, इन्फोसिस तथा अन्य प्रमुख सूचना प्रौद्योगिकी संगठनों ने भी यहाँ अपने कार्यालय स्थापित किए हैं। इससे कंप्यूटर विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग को उद्योग और शिक्षा जगत के बीच सहयोग एवं साझेदारी को बढ़ावा देने के उत्कृष्ट अवसर प्राप्त होते हैं।

दृष्टिकोण एवं मिशन

दृष्टिकोणः संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग का लक्ष्य सूचना प्रौद्योगिकी एवं संगणक विज्ञान के क्षेत्र में अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों और ज्ञान पर मूलभूत एवं अनुप्रयुक्त अनुसंधान में अग्रणी बनना है। विभाग का उद्देश्य अपने क्षेत्र में ज्ञान के प्रसार हेतु एक प्रमुख केंद्र के रूप में स्थापित होना है। विभाग में अत्यंत प्रतिभाशाली संकाय सदस्यों एवं सहायक कर्मचारियों की टीम है, जो इस दिशा में विभाग की निरंतर प्रगति सुनिश्चित करती है।

मिशनः विकसित होती प्रौद्योगिकियों के उपयोग एवं ज्ञान के प्रसार में अग्रणी बने रहना।

शैक्षणिक कार्यक्रम

संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग (सीएसई) में प्रौद्योगिकी स्नातक (बी.टेक.), शोध द्वारा विज्ञान स्नातकोत्तर (एम.एस.), प्रौद्योगिकी स्नातकोत्तर (एम.टेक.) तथा डॉक्टरेट ऑफ फिलोसोफी (पीएच.डी.) की उपाधि प्रदान करने वाले शैक्षणिक कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं। जुलाई 2026 तक विभाग से कुल 783 बी.टेक., 47 एम.एस. (रिसर्च), 31 एम.टेक. तथा 59 पीएच.डी. विद्यार्थी उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। वर्तमान में विभाग में 258 बी.टेक., 27 एम.एस. (रिसर्च), 21 एम.टेक. तथा 75 पीएच.डी. विद्यार्थी अध्ययनरत हैं।

संकाय सदस्यों की कुल संख्या	21
प्राध्यापक	08
सह प्राध्यापक	04
सहायक प्राध्यापक I	7
सहायक प्राध्यापक II	2
पोस्ट–डॉक्टोरल शोधार्थियों की संख्या	निरंक

कार्यक्रम	विद्यार्थी प्रवेश	उपाधि प्राप्त
बी.टेक	80	783
एम.एस. (रिसर्च)	12	47
एम.टेक	16	31
पीएचडी	लागू नहीं	59

प्रमुख अनुसंधान एवं विकास गतिविधियाँ

प्रो. कपिल आहूजा

- चार नई अनुसंधान परियोजनाओं के अंतर्गत कुल रू 0.75 करोड़ की वित्तीय सहायता प्राप्त हुई।
- इस वित्तपोषण का आधे से अधिक हिस्सा अमेरिकी एजेंसियों से तथा शेष भारतीय एजेंसियों से प्राप्त हुआ।
- स्तन, थायरॉइड एवं गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर के वर्गीकरण हेतु साहित्य में उपलब्ध विधियों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन करने वाले एल्गोरिदम विकसित किए गए। इन पर आधारित शोध कार्य प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए।
- सोयाबीन, चावल एवं ज्वार के अनुप्रयोगों के साथ पादप संबंधी आँकड़ों में लक्षणात्मक एवं आनुवंशिक सहसंबंध के विश्लेषण हेतु साहित्य में उपलब्ध विधियों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन करने वाला एल्गोरिदम विकसित किया गया।

डॉ. अयान मंडल

- पाठ्यक्रम के सह–समन्वयक एवं प्रशिक्षक: "आईओटी एवं साइबर सुरक्षा हेतु कृत्रिम बुद्धिमत्ता" विषय पर एनपीटीईएल+ कार्यक्रम, 23–24 मई 2026।
- पाठ्यक्रम के सह–समन्वयक एवं प्रशिक्षक: "अगली पीढ़ी की साइबर सुरक्षा: क्वांटम–पश्चात युग की तैयारी" विषय पर पाठ्यक्रम, सीएसई विभाग, आईआईटी इंदौर एवं आईईईई विद्यार्थी शाखा, आईआईटी इंदौर के सहयोग से, 1–2 जुलाई 2025।
- पाठ्यक्रम के सह–समन्वयक एवं प्रशिक्षक: "उन्नत मिश्रित पदार्थों में उभरती प्रौद्योगिकियाँ: मॉडलिंग, विनिर्माण एवं परीक्षण" विषय पर एआईसीटीई–क्यूआईपी–पीजी प्रमाणपत्र कार्यक्रम, यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग, आईआईटी इंदौर के सहयोग से, जनवरी–जून 2026 (हाइब्रिड मोड)।
- सह–संपादक: इंटरनेशनल जर्नल ऑन सिमेंटिक वेब एंड इन्फॉर्मेशन सिस्टम्स (आईजेएसडब्ल्यूआईएस), आईजीआई ग्लोबल।
- सह–संपादक: इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्लाउड एप्लिकेशन्स एंड कंप्यूटिंग (आईजेसीएसी), आईजीआई ग्लोबल।

परियोजना

परियोजना	प्रायोजित	परामर्श सेवाएँ
नई परियोजनाएँ	7	2
जारी परियोजनाएँ	12	–
पूर्ण परियोजनाएँ	6	–

प्रकाशन

विवरण	पेटेंट	प्रकाशित पुस्तकें	पुस्तकों में प्रकाशित	सम्मेलनों में प्रस्तुत	शोध–पत्रिकाओं में प्रकाशित
कुल	4	1	11	22	36

विद्युत अभियांत्रिकी विभाग



विभाग का परिचय

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर में विद्युत अभियांत्रिकी विभाग की स्थापना वर्ष 2009 में हुई थी। विभाग का उद्देश्य युवा प्रतिभाओं को आवश्यक मार्गदर्शन एवं अनुकूल शिक्षण वातावरण प्रदान करना है, ताकि वे प्रौद्योगिकी विशेषज्ञों, नेतृत्वकर्ताओं तथा उच्च गुणवत्ता वाले पेशेवरों के रूप में विकसित हो सकें। विभाग में 24 संकाय सदस्य एवं 8 सहायक कर्मचारी कार्यरत हैं। वर्तमान में यहाँ लगभग 330 स्नातक, 73 स्नातकोत्तर तथा 93 डॉक्टरेट विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। विभाग ने राष्ट्रीय स्तर पर उल्लेखनीय स्थान प्राप्त किया है। इसके शोध कार्यों पर आधारित 1,500 से अधिक शोध प्रकाशन हैं, जिन्हें कुल मिलाकर 60,000 से अधिक उद्धरण प्राप्त हुए हैं। स्थापना के बाद मात्र 15 वर्षों की अवधि में विभाग ने विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों द्वारा वित्तपोषित 100 से अधिक अनुसंधान परियोजनाओं को सफलतापूर्वक पूरा किया है, जिनका कुल वित्तपोषण रु. 32 करोड़ से अधिक है। इसके अतिरिक्त, विभाग को लगभग 26 पेटेंट प्रदान किए जा चुके हैं तथा कई अन्य पेटेंट आवेदन भी दाखिल किए गए हैं। अब तक विभाग से लगभग 1,200 विद्यार्थी उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। विभाग उत्कृष्टता की दिशा में अपनी इस यात्रा को निरंतर आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। वर्तमान में विभाग के संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी इंस्ट्रूमेंटेशन, रोबोटिक्स एवं नियंत्रण, वीएलएसआई डिज़ाइन, नैनोइलेक्ट्रॉनिक्स एवं फोटोनिक्स, विद्युत शक्ति प्रणालियों, पावर इलेक्ट्रॉनिक्स एवं विद्युत मशीन ड्राइव, आरएफ एवं माइक्रोवेव, संचार, नेटवर्क एवं संकेत/छवि प्रसंस्करण तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं क्वांटम प्रौद्योगिकी जैसे विविध क्षेत्रों में सक्रिय रूप से अनुसंधान कर रहे हैं।

शैक्षणिक कार्यक्रम

विभाग की दृष्टि उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करना तथा अंतर्विषयक एवं उद्योगोन्मुख उन्नत वैज्ञानिक अनुसंधान को प्रोत्साहित करना है, ताकि औद्योगिक एवं सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप चुनौतियों का समाधान किया जा सके और भविष्य की प्रौद्योगिकियों का विकास हो सके। विभाग में स्नातक (बी.टेक.), स्नातकोत्तर (संचार एवं संकेत प्रसंस्करण में एम.टेक., वीएलएसआई डिज़ाइन एवं नैनोइलेक्ट्रॉनिक्स में एम.टेक., विद्युत शक्ति प्रणालियों एवं पावर इलेक्ट्रॉनिक्स में एम.टेक. तथा एम.एस. (रिसर्च)) एवं डॉक्टरेट (पीएच.डी.) कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं।

संकाय सदस्यों की कुल संख्या	24
प्राध्यापक	12
सह प्राध्यापक	02
सहायक प्राध्यापक II	02
सहायक प्राध्यापक I	08

कार्यक्रम	विद्यार्थी प्रवेश	उपाधि प्राप्त
बी.टेक.	83	90
एम.टेक. (सीएसपी)	14	11
एम.टेक. (वीओएन)	15	10
एम.टेक. (पीएसपीई)	10	–
एम.एस. (रिसर्च)	07	05
पीएच.डी.	13	11

परियोजना

परियोजना	प्रायोजित	परामर्श सेवाएँ
नई परियोजनाएँ	10	2
जारी परियोजनाएँ	34	00
पूर्ण परियोजनाएँ	12	2

प्रकाशन

विवरण	प्रकाशित पुस्तकें	पुस्तकों में प्रकाशित	सम्मेलनों में प्रस्तुत	शोध–पत्रिकाओं में प्रकाशित
कुल	1	9	103	172

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान स्कूल



स्कूल के बारे में

आईआईटी इंदौर का मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान स्कूल, अनुसंधान एवं शिक्षण के क्षेत्र में एक जीवंत और उत्कृष्ट शैक्षणिक केंद्र है। संकाय सदस्य अर्थशास्त्र, अंग्रेज़ी, इतिहास, दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान एवं समाजशास्त्र जैसे विविध विषयों के शोधकर्ताओं का एक समावेशी समूह हैं। स्कूल में कुल 16 संकाय सदस्य हैं, जिनमें 3 मानद प्रोफेसर, डिस्टिंग्विश्ड विजिटिंग प्रोफेसर एवं विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं। वर्तमान में 67 पीएच.डी. शोधार्थी विभिन्न नवीन एवं महत्त्वपूर्ण परियोजनाओं तथा अनुसंधान विषयों पर कार्य कर रहे हैं। संकाय के सदस्यों के अनुसंधान सहयोग – चाहे स्कूल के भीतर हो, संस्थान के विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विषयों के साथ हो अथवा राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अन्य शोधकर्ताओं के साथ – यह प्रदर्शित करते हैं कि यहाँ किया जाने वाला अनुसंधान वास्तव में अंतर्विषयक प्रकृति का है।

शैक्षणिक कार्यक्रम

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान स्कूल में तीन प्रमुख शैक्षणिक कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं, अर्थात् पीएच.डी., एम.ए. (साहित्य एवं भाषा विज्ञान) तथा एम.एस. (रिसर्च)।

एम.ए. अंग्रेज़ी (साहित्य एवं भाषा विज्ञान) कार्यक्रम में साहित्यिक एवं भाषावैज्ञानिक विषयों का अनूठा समन्वय प्रस्तुत किया जाता है। इसका पाठ्यक्रम सुदृढ़ सैद्धांतिक आधार पर विकसित किया गया है तथा यह अनुसंधान एवं व्यावहारिक अनुप्रयोग पर केंद्रित है।

पीएच.डी. कार्यक्रम में पाठ्यक्रम कार्य के साथ–साथ गहन शोध–प्रबंध कार्य भी शामिल है। स्कूल के विद्यार्थियों ने प्रतिष्ठित राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय छात्रवृत्तियाँ, फेलोशिप तथा पुरस्कार प्राप्त किए हैं। कार्यक्रम पूरा करने के बाद विद्यार्थियों ने अपने चुने हुए व्यावसायिक क्षेत्रों में उत्कृष्ट उपलब्धियाँ हासिल की हैं।

संकाय सदस्यों की कुल संख्या	
प्राध्यापक	3
सह प्राध्यापक	6
सहायक प्राध्यापक I	7
सहायक प्राध्यापक II	1

प्रमुख अनुसंधान एवं विकास गतिविधियाँ

1. प्रो. रुचि शर्मा विश्व बौद्धिक संपदा संगठन (डब्ल्यूआईपीओ) की एक परियोजना में आमंत्रित विशेषज्ञ सदस्य के रूप में कार्यरत हैं। यह परियोजना गैर–कृषि भौगोलिक संकेतकों पर केंद्रित है, जिसमें स्थानीय समुदायों एवं पारंपरिक शिल्पकला पर उनके सामाजिक–आर्थिक प्रभाव का मूल्यांकन किया जा रहा है।
2. प्रो. निर्मला मेनन को लगभग रु.1.7 करोड़ की अनुसंधान परियोजना हेतु एएनआरएफ–एआरजी अनुदान प्राप्त हुआ है। इसके अतिरिक्त, जेपीएन केंद्र को यूरोपीय संघ के डिजिटल मानविकी अनुसंधान अवसंरचना क्लैरिन (CLARIN) के अंतर्गत क्लैरिन नॉलेज सेंटर (के–सेंटर) के रूप में मान्यता प्रदान की गई है।
3. प्रो. निर्मला मेनन को डिजिटल मानविकी के वैश्विक मंच डीएच नाउ (DHNow) के वैश्विक सलाहकार मंडल के लिए निर्वाचित किया गया है।
4. प्रो. अशोक के. मोचेरला ने जून–जुलाई 2025 के दौरान हांगकांग के चीनी विश्वविद्यालय (सीयूएचके) के सांस्कृतिक एवं धार्मिक अध्ययन विभाग में विजिटिंग फेलो के रूप में कार्य किया।
5. प्रो. अनन्या घोषाल को टेसोल इंटरनेशनल एसोसिएशन, अलेक्जेंड्रिया, अमेरिका द्वारा टेसोल कार्यशाला छात्रवृत्ति प्रदान की गई। वर्ष 2025–2026 में उनके अनुसंधान को आईआईटी इंदौर के अंतरराष्ट्रीय यात्रा अनुदान के माध्यम से भी सहयोग प्राप्त हुआ, जिससे मिशिगन विश्वविद्यालय, एन आर्बर, अमेरिका के साथ अनुसंधान सहयोग को बढ़ावा मिला।
6. प्रो. मोहना सुंदरी को 17–21 जून 2026 के दौरान ओबरलिन कॉलेज में आयोजित यूएस सोसाइटी फॉर इकोलॉजिकल इकोनॉमिक्स सम्मेलन में अपना शोध प्रस्तुत करने हेतु एएनआरएफ का अंतरराष्ट्रीय यात्रा अनुदान प्राप्त हुआ।
7. प्रो. दिशारी चटर्जी ने आईआईटी इंदौर की सीड ग्रांट अनुसंधान परियोजना पर आधारित फूड लिटरेसी, करिकुलम, एंड द ग्लोबल साउथरू एग्ज़ाम्पल्स फ्रॉम साउथ एशिया शीर्षक से एक शोधपरक पुस्तक प्रकाशित की (2025, पालग्रेव मैकमिलन)।
8. प्रो. केदारमल वर्मा की अनुसंधान परियोजना को भारत सरकार की एएनआरएफ–आईआरजी योजना के अंतर्गत लगभग रु. 60 लाख के बजट के साथ स्वीकृति प्रदान की गई।
9. प्रो. दिशारी चटर्जी एवं उनके विद्यार्थी प्रसन्न नाइक को ए.एस. हॉर्नबी एजुकेशन ट्रस्ट, यूके से एएसएचडीआरए डिक्शनरी रिसर्च ग्रांट (2025–2027) प्राप्त हुआ। इस अनुदान के अंतर्गत विद्यालय स्तर पर समावेशी भाषा–शिक्षा को प्रोत्साहित करने हेतु एक शब्दकोश विकसित किया जाएगा।
10. प्रो. दिशारी चटर्जी एवं उनकी विद्यार्थी आयुषी चटर्जी को आईआईटी इंदौर के 17वें स्थापना दिवस पर क्रिटिकल फूड स्टडीज़ के क्षेत्र में किए गए शोध कार्य के लिए सर्वश्रेष्ठ शोधपत्र पुरस्कार प्रदान किया गया।
11. दिव्य प्रकाश पांडा (शोध–निर्देशकः प्रो. तपस्या) को "नेगेशन इन ओड़िया वैरायटीज़: अ रिफ्लेक्शन ऑफ द लिंग्विस्टिक एरिया" शीर्षक शोधपत्र के लिए प्रो. कॉलिन पी. मैसिका पुरस्कार 2025 प्रदान किया गया। यह पुरस्कार भारत एक भाषाई क्षेत्र के रूप में एवं भाषा–शिक्षण संबंधी भाषाविज्ञान श्रेणी में दिया गया।

परियोजना

परियोजना	*प्रायोजित*
नई परियोजनाएँ	7
जारी परियोजनाएँ	17
पूर्ण परियोजनाएँ	11

प्रकाशन

विवरण	*प्रकाशित पुस्तकें*	*पुस्तकों में प्रकाशित*	*सम्मेलनों में प्रस्तुत*	*शोध–पत्रिकाओं में प्रकाशित*
कुल	4	16	27	117

गणित विभाग



विभाग का परिचय

आईआईटी इंदौर का गणित विभाग गणित की विभिन्न शाखाओं में शैक्षणिक एवं अनुसंधान गतिविधियों का एक प्रमुख केंद्र है। विभाग निरंतर अनुसंधान के अग्रणी क्षेत्रों में सक्रिय रहा है तथा विज्ञान एवं अभियांत्रिकी के अन्य विभागों के साथ सहयोगात्मक अनुसंधान को प्रोत्साहित करता रहा है।

संकाय सदस्यों की कुल संख्या	
प्राध्यापक	06
सह प्राध्यापक	07
सहायक प्राध्यापक I	07
सहायक प्राध्यापक II	01
पोस्टडॉक्टोरल शोधार्थियों की संख्या	04

शैक्षणिक कार्यक्रम

वर्तमान में गणित विभाग गणित में पीएच.डी. एवं एम.एससी. कार्यक्रम तथा गणित एवं संगणन में बी.टेक. कार्यक्रम संचालित करता है। विभाग सांख्यिकी एवं अनुप्रयुक्त संगणन जैसे संबद्ध क्षेत्रों में अन्य स्नातकोत्तर कार्यक्रम प्रारंभ करने की भी परिकल्पना रखता है।

कार्यक्रम	विद्यार्थी प्रवेश	उपाधि प्राप्त
एम.एससी. (गणित)	20	19
पीएच.डी.	12	9
बी.टेक.	40	लागू नहीं

प्रमुख अनुसंधान एवं विकास गतिविधियाँ

- द्वितीय अंतरराष्ट्रीय अनुप्रयुक्त गणित एवं यांत्रिकी सम्मेलन (आईसीएएमएम 2026) रू 3 – 5 दिसंबर 2026 को आईआईटी इंदौर, भारत में आयोजित किया जाएगा। (डॉ. शांतनु मन्ना)
- आईईईईई सीआईएस कार्यशालाः "साइबर–भौतिक प्रणालियाँः अनुसंधान की संभावनाएँ एवं सहयोग के अवसर" विषय पर 27 फरवरी 2026 को आईआईटी इंदौर में आयोजित की गई। (प्रो. एम. तनवीर)
- ज्ञान पाठ्यक्रमः "आवर्ती न्यूरल नेटवर्क का उपयोग करके रैखिक प्रणालियों का समाधान एवं सामान्यीकृत प्रतिलोमों की गणना" विषय पर 9–19 जून 2025 को आईआईटी इंदौर, भारत में आयोजित किया गया। (प्रो. एस.के. सफीक अहमद)
- गणितीय अनुप्रयोगों पर कार्यशालाः भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) के तत्वावधान में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर द्वारा 3 दिसंबर 2025 (बुधवार) को "अभियांत्रिकी में गणितीय अनुप्रयोग" विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। (डॉ. विजय कुमार सोहानी)

परियोजना

परियोजना	*प्रायोजित*	*परामर्श सेवाएँ*
नई परियोजनाएँ	04	निरंक
जारी परियोजनाएँ	19	निरंक
पूर्ण परियोजनाएँ	24	निरंक

डीएसटी–फिस्ट सहायता

भास्कराचार्य गणित प्रयोगशाला
ब्रह्मगुप्त गणित पुस्तकालय

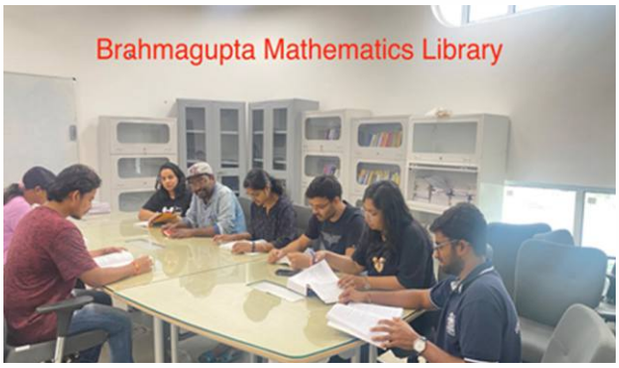

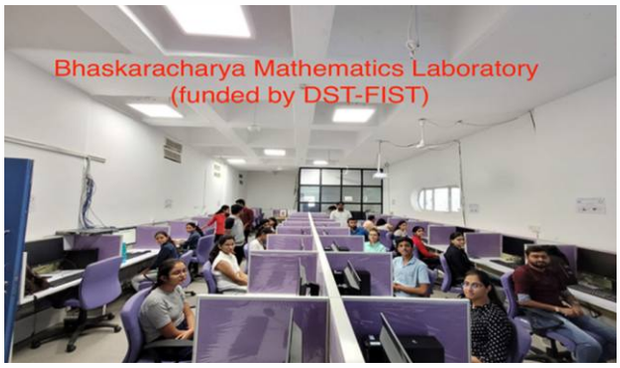

प्रकाशन

विवरण	*प्रकाशित पुस्तकें*	*पुस्तकों में प्रकाशित*	*सम्मेलनों में प्रस्तुत*	*शोध–पत्रिकाओं में प्रकाशित*
कुल	17	23	33	427

इसके अतिरिक्त, विभाग अल्पकालिक पाठ्यक्रमों, वेबिनार, विद्यार्थी संगोष्ठी श्रृंखला आदि विभिन्न जनसंपर्क गतिविधियों के माध्यम से भारत में महाविद्यालयों के शिक्षकों तथा स्नातकोत्तर एवं स्नातक विद्यार्थियों के बीच गणित को प्रोत्साहित करने में भी सक्रिय रूप से संलग्न है। विभाग विश्व के प्रतिष्ठित संस्थानों के प्रख्यात गणितज्ञों के व्याख्यानों का नियमित रूप से आयोजन भी करता है।

अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस पर जाएँ: http://math.iiti.ac.in.

यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग



स्कूल का परिचय

यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग संस्थान के सबसे पुराने एवं सबसे बड़े विभागों में से एक है। विभाग में 28 पूर्णकालिक संकाय सदस्य तथा 10 से अधिक प्रशासनिक एवं तकनीकी कर्मचारी कार्यरत हैं। विभाग का पाठ्यक्रम विज्ञान, अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी पर विशेष बल देता है, जिसमें तकनीकी कौशल, समस्या–समाधान तथा नवाचार को प्रोत्साहित करने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। शैक्षणिक एवं अनुसंधान कार्यक्रमों को सहयोग प्रदान करने के लिए विभाग में अत्याधुनिक अनुसंधान सुविधाएँ उपलब्ध हैं। विभाग का प्रमुख उद्देश्य उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करना तथा विद्यार्थियों को सुदृढ़ आधारभूत ज्ञान एवं विशिष्ट प्रशिक्षण से सुसज्जित करना है, ताकि वे वर्तमान और भविष्य की आवश्यकताओं को पूरा कर सकें। विभाग सक्षम अभियंताओं को तैयार करने के लिए प्रतिबद्ध है, जो यांत्रिक अभियांत्रिकी के क्षेत्र की उन्नति में योगदान देंगे।

शैक्षणिक कार्यक्रम

यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग बी.टेक., एम.टेक., एम.एस. (रिसर्च) तथा पीएच.डी. सहित दोहरी उपाधि वाले शैक्षणिक कार्यक्रम संचालित करता है। विभाग में 335 से अधिक स्नातक, 86 स्नातकोत्तर तथा 67 पीएच.डी. विद्यार्थी अध्ययनरत हैं, जो एक गतिशील शैक्षणिक वातावरण का निर्माण करते हैं। विभाग में पोस्टडॉक्टोरल शोधार्थियों के साथ–साथ रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ), सशस्त्र बलों तथा विभिन्न क्षेत्रों के कार्मिकों को भी शैक्षणिक एवं अनुसंधान संबंधी अवसर प्रदान किए जाते हैं। विभाग के एम.टेक. कार्यक्रमों में उन्नत विनिर्माण, यांत्रिक प्रणाली अभिकल्पना तथा तापीय एवं ऊर्जा प्रणालियाँ शामिल हैं। नेपाल और नाइजीरिया जैसे देशों के अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थी भी विभाग में अध्ययनरत हैं, जो वैश्विक शैक्षणिक वातावरण को समृद्ध बनाते हैं। विभाग शैक्षणिक उत्कृष्टता, अनुसंधान में नवाचार तथा ऐसे अभियंताओं के विकास के लिए प्रतिबद्ध है, जो यांत्रिक अभियांत्रिकी के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकें।

संकाय सदस्यों की कुल संख्या	*28*
प्राध्यापक	13
सह प्राध्यापक	7
सहायक प्राध्यापक II	1
सहायक प्राध्यापक I	7
पोस्ट–डॉक्टोरल शोधार्थियों की संख्या	3

कार्यक्रम	*विद्यार्थी प्रवेश*	*उपाधि प्राप्त*
बी.टेक	81	84
एम.टेक	31	45
एम.एस. (रिसर्च)	3	6
पीएचडी	7	4

प्रमुख अनुसंधान एवं विकास गतिविधियाँ

यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग ने रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ), भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो), जॉन डियर (इंडिया) तथा सिम्पल एनर्जी प्राइवेट लिमिटेड जैसे संगठनों के लिए अनेक अनुसंधान परियोजनाएँ संचालित की हैं। अत्याधुनिक अनुसंधान सुविधाओं से सुसज्जित विभाग ने उद्योग जगत के पेशेवरों एवं शिक्षाविदों के लिए अल्पकालिक कार्यक्रमों (एसटीपी) तथा संकाय विकास कार्यक्रमों (एफडीपी) का भी आयोजन किया है। विभाग के प्रमुख अनुसंधान कार्यों में अपरिवर्धी विनिर्माण के लिए माइक्रो–प्लाज्मा ट्रांसफर्ड आर्क (--PTA) प्रक्रियाओं का विकास, जैव–संगत घुटना प्रत्यारोपणों का निर्माण, पवन टर्बाइन गियरबॉक्स में दोषों का पता लगाने हेतु एल्गोरिदम का विकास तथा ऊर्जा संचयन के लिए सीसा–मुक्त ट्राइबोइलेक्ट्रिक नैनोजनरेटरों का विकास शामिल है। इसके अतिरिक्त, विभाग सॉफ्ट रोबोटिक्स, प्रावस्था परिवर्तन पदार्थों के उपयोग से तापीय प्रबंधन, सिरेमिक कोटिंग, आकार–स्मृति मिश्रधातु के स्प्रिंगों के विश्वसनीयता परीक्षण, नैनोग्लास अनुसंधान तथा रूट कैनाल की तैयारी के जैवयांत्रिक विश्लेषण जैसे विविध क्षेत्रों में भी अनुसंधान कर रहा है।

परियोजना

परियोजना	*प्रायोजित*	*परामर्श सेवाएँ*
नई परियोजनाएँ	23	05
जारी परियोजनाएँ	10	12
पूर्ण परियोजनाएँ	102	72

प्रकाशन

विवरण	*प्रकाशित पुस्तकें*	*पुस्तकों में प्रकाशित*	*सम्मेलनों में प्रस्तुत*	*शोध–पत्रिकाओं में प्रकाशित*
कुल	3	6	66	183

मेहता फैमिली स्कूल ऑफ बायोसाइंसेज़ एंड बायोमेडिकल इंजीनियरिंग



स्कूल के बारे में:

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर का मेहता फैमिली स्कूल ऑफ बायोसाइंसेज़ एंड बायोमेडिकल इंजीनियरिंग एक अंतर्विषयक केंद्र है, जो जीवविज्ञान, अभियांत्रिकी, चिकित्सा एवं डेटा विज्ञान के अंतर्संबंधों पर शिक्षा, अनुसंधान एवं नवाचार को आगे बढ़ाने के लिए समर्पित है। उभरती स्वास्थ्य देखभाल एवं जैव–चिकित्सकीय चुनौतियों के समाधान की दृष्टि से स्थापित यह स्कूल जैव–चिकित्सा अभियांत्रिकी, स्वास्थ्य देखभाल में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जैव–सूचना विज्ञान, आणविक जीवविज्ञान, चिकित्सा उपकरणों, जैव–संवेदकों तथा औषधि खोज जैसे क्षेत्रों पर केंद्रित है। स्कूल प्रभावी स्वास्थ्य प्रौद्योगिकियों के विकास हेतु अत्याधुनिक अनुप्रयुक्त अनुसंधान, उद्योग जगत के साथ सहयोग तथा उद्यमिता को प्रोत्साहित करता है। नवाचार, परिशुद्ध स्वास्थ्य देखभाल एवं जैव–विनिर्माण पर विशेष बल देते हुए, स्कूल का उद्देश्य भारत तथा विश्व स्तर पर जैव–चिकित्सकीय अनुसंधान एवं नवाचार के एक अग्रणी केंद्र के रूप में स्थापित होना है।

शैक्षणिक कार्यक्रम:

शैक्षणिक कार्यक्रमों में जैव–प्रौद्योगिकी में एम.एससी., जैव–चिकित्सा अभियांत्रिकी में एम.टेक., जैव–चिकित्सा उपकरणों में एम.टेक. तथा पीएच.डी. शामिल हैं। जैव–प्रौद्योगिकी में एम.एससी. कार्यक्रम में विद्यार्थियों को जेएएम एवं गैट–बी के माध्यम से प्रवेश दिया जाता है।

जैव–चिकित्सा अभियांत्रिकी में दो वर्षीय एम.टेक. तथा एम.टेक.–पीएच.डी. दोहरी उपाधि कार्यक्रम शैक्षणिक सत्र 2023–2024 से प्रारंभ किए गए, जबकि जैव–चिकित्सा उपकरणों में दो वर्षीय एम.टेक. तथा एम.टेक.–पीएच.डी. दोहरी उपाधि कार्यक्रम शैक्षणिक सत्र 2025–2026 से प्रारंभ किए गए। जैव–चिकित्सा उपकरणों में एम.टेक. कार्यक्रम को रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय के औषध विभाग द्वारा तथा जैव–प्रौद्योगिकी में एम.एससी. कार्यक्रम को भारत सरकार के जैव–प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा सहायता प्रदान की जाती है। स्कूल, बी. टेक. विद्यार्थियों के लिए जैव–चिकित्सा अभियांत्रिकी में माइनर डिग्री कार्यक्रम भी संचालित करता है। इसके अतिरिक्त, स्कूल शैक्षणिक सत्र 2026–2027 से जैव–चिकित्सा अभियांत्रिकी एवं डेटा विज्ञान में बी.टेक. कार्यक्रम प्रारंभ करेगा।

स्कूल के संकाय सदस्यों का एक सक्रिय एवं उत्साही समूह अनुसंधान तथा प्रशिक्षण के माध्यम से शैक्षणिक गतिविधियों के सुचारु संचालन हेतु अनुकूल वातावरण विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध है। उनका कार्य जीवन एवं जीवित जीवों के अध्ययन से संबंधित है, जिसमें सरल बैक्टीरियोफेज से लेकर मनुष्य जैसे जटिल बहुकोशिकीय जीव शामिल हैं। इस अध्ययन में जीवों की संरचना, कार्य, वृद्धि, उत्पत्ति, विकास, वितरण एवं वर्गिकी पर विशेष ध्यान दिया जाता है। मूलभूत जीवविज्ञान अनुसंधान के अतिरिक्त, मेहता फैमिली स्कूल ऑफ बायोसाइंसेज़ एंड बायोमेडिकल इंजीनियरिंग देश की व्यावहारिक समस्याओं के समाधान हेतु अनुप्रयुक्त अनुसंधान में भी योगदान देने के लिए प्रयासरत है।

संकाय सदस्यों की कुल संख्या	*13*
प्राध्यापक	06
सह प्राध्यापक	03
सहायक प्राध्यापक I	04
सहायक प्राध्यापक II	00
पोस्ट–डॉक्टोरल शोधार्थियों की संख्या	03

कार्यक्रम	*विद्यार्थी प्रवेश*	*उपाधि प्राप्त*
एम.एससी.	20	20
एम.टेक. (बीएमई)	08	08
एम.टेक. (बीएमडी)	27	0
पीएचडी	18	10

प्रमुख अनुसंधान एवं विकास गतिविधियाँ

- प्रो. अविनाश सोनवाणे ने अपनी प्रौद्योगिकी का डी.के. फार्माकेम प्राइवेट लिमिटेड को सफलतापूर्वक हस्तांतरण किया।
- डॉ. परिमल कर, डॉ. सौरव चंद्रा, डॉ. अयान मंडल एवं डॉ. सोमनाथ डे ने ऑटोमेटेड पेशेंट स्क्रीनिंग सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड नामक स्टार्टअप की स्थापना की।
- प्रो. अमित कुमार के अनुसंधान समूह ने कई प्रभावी औषधियों की पहचान की है, जिनके लिए सात अलग–अलग पेटेंट आवेदन दाखिल किए गए हैं तथा इनमें से कुछ पेटेंट प्रदान भी किए जा चुके हैं।
- प्रो. प्रशांत कोडगिरे के अनुसंधान समूह के हालिया अध्ययन में पहली बार जीनोम उत्परिवर्तनकारी एंजाइम एआईडी और यूबीएन1 के बीच अंतःक्रिया की जानकारी प्रस्तुत की गई है। हालाँकि, हाइपरम्यूटेशन (एसएचएम) अथवा क्लास स्विच रिकॉम्बिनेशन के संदर्भ में यूबीएन1 और एआईडी के बीच अंतःक्रिया के परिणामों का अध्ययन अभी किया जाना शेष है।
- डॉ. परिमल कर के अनुसंधान समूह ने वर्चुअल स्क्रीनिंग एवं आणविक गतिकी सिमुलेशन के माध्यम से ड्यूल ल्यूसीन ज़िपर काइनेज़ को लक्ष्य बनाकर तंत्रिका–अपक्षयी रोगों के लिए नए अवरोधकों की पहचान की है।
- डॉ. बैग के अनुसंधान ने संक्रमण के प्रति मेज़बान जीव की प्रतिक्रिया को समझने के लिए एक नवीन तंत्र प्रस्तुत किया है। इस अनुसंधान ने दीर्घकालिक सूजन संबंधी रोगों एवं कैंसर के लिए नवीन उपचारात्मक लक्ष्यों की खोज में योगदान दिया है। इसमें नवीन लघु अणुओं, पेप्टाइडों तथा संयोजन उपचारों का अध्ययन शामिल है।
- डॉ. हेम सी. झा ने विषाणु–जनित तंत्रिका संबंधी विकारों की जाँच एवं उनके उपचार से संबंधित पेटेंट आवेदन दाखिल किए हैं।

परियोजना

परियोजना	*प्रायोजित*	*परामर्श सेवाएँ*
नई परियोजनाएँ	10	निरंक
जारी परियोजनाएँ	22	निरंक
पूर्ण परियोजनाएँ	28	01

प्रकाशन

विवरण	*प्रकाशित पुस्तकें*	*पुस्तकों में प्रकाशित*	*सम्मेलनों में प्रस्तुत*	*शोध–पत्रिकाओं में प्रकाशित*
कुल	01	09	09	93

मेहता फैमिली स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी



स्कूल के बारे में:

मेहता फैमिली स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी की स्थापना जुलाई 2025 में की गई। इसका उद्देश्य पर्यावरणीय अर्थशास्त्र, ऊर्जा प्रणालियों तथा जल एवं जलवायु प्रणालियों के तीन प्रमुख क्षेत्रों के माध्यम से सततता के अंतर्विषयक क्षेत्र में अनुसंधान, शैक्षणिक एवं जनसंपर्क गतिविधियों को बढ़ावा देना है।

प्रमुख अनुसंधान क्षेत्र

(I) पर्यावरणीय अर्थशास्त्रः जलवायु परिवर्तन का अर्थशास्त्र, सतत विकास, पर्यावरणीय नीतियाँ, प्राकृतिक संसाधनों (भूमि, जल, वन, मत्स्य संसाधन आदि) का अर्थशास्त्र, आर्थिक मूल्यांकन एवं प्रभाव आकलन, चक्रीय अर्थव्यवस्था एवं अपशिष्ट प्रबंधन, ऊर्जा अर्थशास्त्र तथा संगणकीय सततता।

(ii) ऊर्जा प्रणालियाँ एवं बैटरी प्रौद्योगिकीः नवीन बैटरी रसायन (ठोस–अवस्था, सोडियम–आयन, मैग्नीशियम–आयन एवं लिथियम–सल्फर), उन्नत बैटरी सामग्री (उच्च क्षमता वाली सामग्री, ग्राफीन–आधारित सामग्री एवं क्वांटम डॉट), संगणकीय पदार्थ विज्ञान, आणविक मॉडलिंग, ऊर्जा भंडारण प्रणालियाँ, ऊर्जा रूपांतरण, कार्बन पृथक्करण, जल विलवणीकरण तथा मशीन लर्निंग एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता।

(iii) जल एवं जलवायु सततताः बाढ़ जलविज्ञान, जलवैज्ञानिक चरम घटनाएँ, नदी बेसिनों की प्रत्यास्थता एवं जलवैज्ञानिक मॉडलिंग, जल–मौसम विज्ञान एवं सांख्यिकीय डाउनस्केलिंग, सिंचाई प्रबंधन एवं फसल मॉडलिंग के अनुप्रयोग, बहुचर सांख्यिकीय विश्लेषण, मशीन लर्निंग मॉडल एवं डेटा माइनिंग, सततता के लिए इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी) एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता, वायु एवं जल प्रदूषण तथा उनकी निगरानी एवं उपचार।

शैक्षणिक कार्यक्रम

स्कूल में 6 मुख्य संकाय सदस्य एवं 10 सहयोगी संकाय सदस्य हैं। स्कूल में जल, जलवायु एवं सततता में एम.टेक. कार्यक्रम संचालित किया जाता है तथा पीएच.डी. कार्यक्रम भी प्रारंभ किया गया है। स्कूल ने पर्यावरणीय अर्थशास्त्र एवं सतत अभियांत्रिकी में अपनी तरह का पहला बी.टेक. कार्यक्रम प्रारंभ किया है, जिसमें प्रवेश शैक्षणिक सत्र जुलाई 2026 से आईआईटी–जेईई के माध्यम से शुरू हुए हैं।

पद	*संख्या*
प्राध्यापक	2 + 1 (मुख्य संकाय सदस्य एवं मूल विभाग से संबद्ध)
सह प्राध्यापक	1 (मुख्य संकाय सदस्य एवं मूल विभाग से संबद्ध)
सहायक प्राध्यापक ग्रेड I	2
सहायक प्राध्यापक ग्रेड–II	–

प्रमुख अनुसंधान एवं विकास गतिविधियाँ

1. पर्यावरणीय मानविकी एवं सततता पर कार्यशालाः 18 दिसंबर 2025 को आयोजित।
2. पारिस्थितिकी, शासन एवं प्रौद्योगिकी पर संगोष्ठीः पर्यावरणीय मानविकी एवं सततता के दृष्टिकोण से अंतर्संबंधों पर केंद्रित संगोष्ठी 12–13 फरवरी 2026 को आयोजित की गई।
3. व्यावहारिक कार्यशालाः माइक्रोप्लास्टिक, भारी धातुओं एवं कीटनाशकों की पर्यावरणीय निगरानी पर 5–19 जनवरी 2026 को कार्यशाला आयोजित की गई।
4. अंतरराष्ट्रीय कार्यशालाः जलीय पर्यावरण में माइक्रोप्लास्टिक से संबंधित विषयों पर 2–6 मार्च 2026 को आयोजित की गई।
5. अंतरराष्ट्रीय जल सम्मेलनः 22 अप्रैल 2026 को आईआईटी इंदौर में आयोजित किया गया।
6. प्रो. प्रीति शर्मा को 5–6 सितंबर 2025 को इंदौर स्थित नैट्रैक्स में आयोजित सतत गतिशीलता कॉन्क्लेव 2025 में मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया।
7. प्रो. प्रीति शर्मा ने 14–15 अक्टूबर 2025 को भारतीय विज्ञान संस्थान (आईआईएससी), बेंगलुरु के दीवेचा जलवायु परिवर्तन केंद्र में आयोजित प्री–कॉप 30 कार्यशाला – जलवायु प्रत्यास्थता एवं पारिस्थितिक अखंडता की दिशा में विषय पर "भारत के जैवविविधतापूर्ण कार्बन सिंक के रूप में वन" शीर्षक से शोधपत्र प्रस्तुत किया।
8. प्रो. प्रीति शर्मा को आईआईटी इंदौर द्वारा भारत अंतरराष्ट्रीय लोकतंत्र एवं निर्वाचन प्रबंधन सम्मेलन (आईआईसीडीईएम 2026) में "सतत विकास में लोकतंत्र की भूमिका" विषय पर प्रस्तुति देने के लिए नामित किया गया। यह सम्मेलन 21–23 जनवरी 2026 को नई दिल्ली में आयोजित हुआ।
9. इंडो–मैक्स प्लांक कार्यशाला–थेसिस 2026 "जलवायु, जल एवं शहरी प्रणालियों की सततता हेतु ऊष्मागतिकी" विषय पर 9–11 मार्च 2026 को आईआईटी कानपुर के कोटक स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी में आयोजित की गई।
10. डॉ. पंकज डे ने कॉपरनिकस मीटिंग्स में "पर्वतीय जलग्रहण क्षेत्र में बाढ़ जलालेख की विशेषताओं में जलवायु–प्रेरित परिवर्तन" (शोधपत्र संख्या ईजीयू26–503) शीर्षक से अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया।
11. डॉ. अभिषेक अग्रवाल ने 6–7 मार्च 2026 को आईआईटी कानपुर में आयोजित उन्नत पदार्थों पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी 2026 (आईएसएएम–2026) के सतत ऊर्जा अभियांत्रिकी एवं रसायन विज्ञान सत्र में "कार्बन उत्सर्जन में कमी हेतु उच्च–प्रदर्शन वाली ऊर्जा भंडारण प्रणालियों का अभिकल्पन" विषय पर प्रस्तुति दी।

परियोजना

परियोजना		*प्रायोजित*
नई परियोजनाएँ		1
जारी परियोजनाएँ		15
पूर्ण परियोजनाएँ		निरंक

प्रकाशन

विवरण	*प्रकाशित पुस्तकें*	*पुस्तकों में प्रकाशित*	*सम्मेलनों में प्रस्तुत*	*शोध–पत्रिकाओं में प्रकाशित*
कुल	–	5	9	7

धातुकर्म अभियांत्रिकी एवं पदार्थ विज्ञान विभाग



विभाग के बारे में

विभाग की शुरुआत वर्ष 2013 में पदार्थ विज्ञान एवं अभियांत्रिकी केंद्र के रूप में हुई थी। इसके पश्चात वर्ष 2016 में इसे धातुकर्म अभियांत्रिकी एवं पदार्थ विज्ञान विभाग (एमईएमएस) के रूप में स्थापित किया गया। विभाग समाज के हित में जटिल वास्तविक समस्याओं के समाधान खोजने हेतु पदार्थ विज्ञान एवं धातुकर्म के क्षेत्र में अंतर्विषयक अनुसंधान पर केंद्रित है। वर्तमान में विभाग में 18 मुख्य संकाय सदस्य एवं 6 सहायक कर्मचारी हैं।

विभाग का सामूहिक उद्देश्य विभिन्न प्रकार के पदार्थों के संश्लेषण, प्रसंस्करण एवं अभिलक्षणन को समझना तथा उनके गुणों और निष्पादन के बीच सहसंबंध स्थापित करके उनके कार्यनिष्पादन में सुधार करना है। विभाग के संकाय सदस्य पारंपरिक धातुकर्म से लेकर आधुनिक पदार्थ विज्ञान तक के विविध अनुसंधान क्षेत्रों में कार्यरत हैं।

शैक्षणिक कार्यक्रम

विभाग स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रम संचालित करता है। इनमें धातुकर्म अभियांत्रिकी एवं पदार्थ विज्ञान में बी.टेक., पदार्थ विज्ञान एवं अभियांत्रिकी में एम.टेक., धातुकर्म अभियांत्रिकी में एम.टेक. तथा पीएच.डी. कार्यक्रम शामिल हैं। विभाग के पाठ्यक्रमों में मूलभूत विज्ञान एवं अभियांत्रिकी के साथ–साथ उन्नत स्तर के वैकल्पिक पाठ्यक्रम भी शामिल हैं।

विभाग के संकाय सदस्य धातुकर्म एवं पदार्थ विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान और प्रशिक्षण संबंधी शैक्षणिक गतिविधियों के सुचारु संचालन हेतु अनुकूल वातावरण विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। विभाग का अनुसंधान सरल मिश्रधातुओं से लेकर जटिल मिश्रित पदार्थों तक विस्तृत है, जिसमें उनकी संरचना, गुणधर्म, प्रसंस्करण एवं कार्यनिष्पादन पर विशेष बल दिया जाता है। विभाग का उद्देश्य पदार्थों के व्यवहार को नियंत्रित करने वाले मूलभूत सिद्धांतों को समझना तथा इस ज्ञान का उपयोग व्यावहारिक समस्याओं के समाधान हेतु नवीन उपाय विकसित करने में करना है। मूलभूत अनुसंधान के अतिरिक्त, धातुकर्म अभियांत्रिकी एवं पदार्थ विज्ञान विभाग विभिन्न उद्योगों के समक्ष आने वाली व्यावहारिक चुनौतियों के समाधान हेतु अनुप्रयुक्त अनुसंधान में योगदान देने के लिए भी समर्पित है।

संकाय सदस्यों की संख्याः	*21*
प्राध्यापक	03
सह प्राध्यापक	08
सहायक प्राध्यापक ग्रेड–I	10
सहायक प्राध्यापक ग्रेड–II	निरंक
पोस्ट–डॉक्टोरल शोधार्थियों की संख्या	02

कार्यक्रम	*विद्यार्थी प्रवेश*	*उपाधि प्राप्त*
बी.टेक	53	47 +4
एम.टेक.	15	13
पीएचडी	15	2

परियोजना

परियोजना	*प्रायोजित*	*परामर्श सेवाएँ*
नई परियोजनाएँ	13	02
जारी परियोजनाएँ	35	02
पूर्ण परियोजनाएँ	निरंक	निरंक

प्रकाशन

विवरण	*प्रकाशित पुस्तकें*	*पुस्तकों में प्रकाशित*	*सम्मेलनों में प्रस्तुत*	*शोध–पत्रिकाओं में प्रकाशित*
कुल	निरंक	3	2	97

भौतिकी विभाग



विभाग के बारे में

वर्ष 2009 में संस्थान की स्थापना के समय से ही भौतिकी विभाग एक सक्रिय एवं निरंतर प्रगतिशील विभाग रहा है। वर्तमान में विभाग में 20 संकाय सदस्य हैं, जिन्हें संघनित पदार्थ भौतिकी, उच्च ऊर्जा भौतिकी, कृष्ण विवर भौतिकी, गेज/गुरुत्व द्वैतता, जटिल नेटवर्क तथा क्वांटम क्रिप्टोग्राफी सहित अनेक क्षेत्रों में विशेषज्ञता प्राप्त है। विभाग में अत्याधुनिक अनुसंधान प्रयोगशालाएँ उपलब्ध हैं, जिन्हें उन्नत अनुसंधान की आवश्यकताओं के अनुरूप निरंतर विकसित किया गया है। ये सुविधाएँ युवा शोधकर्ताओं के बीच नवाचार एवं तकनीकी प्रगति को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

शैक्षणिक कार्यक्रम

भौतिकी विभाग ने वर्ष 2009 में पीएच.डी. कार्यक्रम प्रारंभ किया तथा इसके बाद वर्ष 2013 में एम.एससी. कार्यक्रम शुरू किया। अब तक विभाग से 86 से अधिक पीएच.डी. तथा 217 एम.एससी. विद्यार्थी उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। विभाग के पीएच.डी. एवं एम.एससी. उपाधि प्राप्तकर्ताओं ने विश्वभर के प्रतिष्ठित संस्थानों में स्थान प्राप्त किया है और अनुसंधान एवं उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सक्रिय योगदान दे रहे हैं।

वर्ष 2023 में विभाग ने इंजीनियरिंग भौतिकी में बी.टेक. कार्यक्रम प्रारंभ किया, जिसके प्रथम बैच में 20 विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया। इसके अतिरिक्त, विभाग यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग तथा खगोल विज्ञान एवं खगोल भौतिकी विभाग के सहयोग से अनुप्रयुक्त प्रकाशिकी एवं लेज़र प्रौद्योगिकी में एम.टेक. कार्यक्रम संचालित करता है।

सभी शैक्षणिक स्तरों पर व्यावहारिक अनुसंधान अनुभव प्रदान करने की प्रतिबद्धता के अनुरूप, विभाग ने 18 से अधिक उन्नत अनुसंधान प्रयोगशालाएँ स्थापित की हैं। इनमें से प्रत्येक प्रयोगशाला भौतिकी की एक विशिष्ट शाखा को समर्पित है। ये सुविधाएँ विद्यार्थियों को सीखने एवं नवाचार के उत्कृष्ट अवसर प्रदान करती हैं।

भारत सरकार द्वारा हाल ही में घोषित राष्ट्रीय क्वांटम मिशन के उद्देश्यों के अनुरूप, विभाग ने स्नातक एवं स्नातकोत्तर दोनों स्तरों पर क्वांटम प्रौद्योगिकी से संबंधित वैकल्पिक पाठ्यक्रम प्रारंभ किए हैं। इस कार्यक्रम की अंतर्विषयक प्रकृति को ध्यान में रखते हुए, भौतिकी विभाग संस्थान–स्तरीय वैकल्पिक पाठ्यक्रम के संचालन हेतु कंप्यूटर विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग के साथ भी निकट सहयोग करता है।

संकाय सदस्यों की कुल संख्या	*20*
प्राध्यापक – एचएजी	03
प्राध्यापक	07
सह प्राध्यापक	04
सहायक प्राध्यापक I	05
सहायक प्राध्यापक II	01
पोस्ट–डॉक्टोरल शोधार्थियों की संख्या	05

कार्यक्रम	*विद्यार्थी प्रवेश*	*उपाधि प्राप्त*
बी.टेक (इंजीनियरिंग भौतिकी)	20	–
एम.एससी.	26	25
पीएचडी	18	13

विभाग की प्रमुख गतिविधियाँ

विभाग एक सशक्त सहयोगात्मक अनुसंधान वातावरण विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध है, जो आईआईटी इंदौर के विभिन्न विभागों के साथ–साथ प्रतिष्ठित राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के बीच निकट सहयोग को प्रोत्साहित करता है। विभाग के सक्रिय राष्ट्रीय सहयोगों में भारतीय विज्ञान संस्थान (आईआईएससी), बेंगलुरु; आईआईटी बॉम्बे, दिल्ली, मद्रास, कानपुर, रोपड़ एवं हैदराबाद; राजा रमन्ना प्रगत प्रौद्योगिकी केंद्र (आरआरकैट), इंदौर; भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (बीएआरसी), मुंबई; भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (आईआईएसईआर), कोलकाता, पुणे एवं बरहामपुर; हरिश्चंद्र अनुसंधान संस्थान (एचआरआई), प्रयागराज; पुणे, मुंबई, प्रयागराज एवं कलकत्ता के केंद्रीय विश्वविद्यालय; एसएनबी–एनसीबीएस, कोलकाता तथा एसएनआईपी, कोलकाता जैसे प्रतिष्ठित संस्थान शामिल हैं।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विभाग के सहयोग कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय, मिशिगन स्टेट विश्वविद्यालय (अमेरिका), पेन स्टेट विश्वविद्यालय (अमेरिका), सिटी यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयॉर्क (अमेरिका), लाइबनिज विश्वविद्यालय हनोवर एवं डुइसबर्ग–एसेन विश्वविद्यालय (जर्मनी), रदरफोर्ड एपलटन प्रयोगशाला एवं आईएसआईएस सुविधाएँ (यूके), टीयू बर्लिन एवं टीयू डॉर्टमुंड (जर्मनी), क्वीन मैरी विश्वविद्यालय लंदन (यूके), एलएमयू म्यूनिख (जर्मनी), बर्न विश्वविद्यालय (स्विट्जरलैंड), ओसाका विश्वविद्यालय (जापान), एनटीयू (सिंगापुर), कॉम्प्लेक्सिटी साइंस इंस्टीट्यूट–सीएनआरएस (इटली) तथा इंस्टीट्यूटो सुपीरियर टेक्निको, लिस्बन (पुर्तगाल) जैसे अग्रणी विश्वविद्यालयों एवं अनुसंधान केंद्रों तक विस्तृत हैं।

विभाग अपनी शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए विशेष रूप से गौरवान्वित है। इसके एक संकाय सदस्य को आईआईटी इंदौर में संस्थान चेयर प्रोफेसर नियुक्त किया गया है। कई संकाय सदस्य प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं के संपादक के रूप में कार्यरत हैं, उन्होंने प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय सम्मान प्राप्त किए हैं तथा राष्ट्रीय स्तर की वैज्ञानिक समितियों एवं शैक्षणिक निकायों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

प्रभावशाली अनुसंधान के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित करते हुए, विभाग ने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), भारत सरकार की पार–अनुसंधान पहल (डीएसटी इंडिया पीएआईआर योजना) के अंतर्गत बहु–संस्थागत अनुसंधान प्रस्ताव प्रस्तुत करने में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

परियोजना

परियोजना	*प्रायोजित*	*परामर्श सेवाएँ*
नई परियोजनाएँ	09	निरंक
जारी परियोजनाएँ	20	निरंक
पूर्ण परियोजनाएँ	17	निरंक

प्रकाशन

विवरण	*प्रकाशित पुस्तकें*	*पुस्तकों में प्रकाशित*	*सम्मेलनों में प्रस्तुत*	*शोध–पत्रिकाओं में प्रकाशित*
कुल	02	03	29	185

स्कूल ऑफ इनोवेशन



स्कूल के बारे में

आईआईटी इंदौर का स्कूल ऑफ इनोवेशन, सृजनात्मकता, अनुसंधान एवं वास्तविक जीवन में प्रभाव उत्पन्न करने का एक गतिशील केंद्र है। इस स्कूल का उद्देश्य नवाचार के माध्यम से मूल्य सृजन करना तथा चिन्हित प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में तात्कालिक सामाजिक समस्याओं के व्यापक समाधान उपलब्ध कराना है। इन क्षेत्रों का चयन राष्ट्रीय प्राथमिकताओं एवं मिशन मोड में संचालित पहलों के आधार पर किया गया है। इसका उद्देश्य उत्पाद की संपूर्ण पारिस्थितिकी प्रणाली का अभिकल्पन करके तथा राष्ट्रीय स्तर पर उसके कार्यान्वयन को सुनिश्चित करके व्यापक प्रभाव उत्पन्न करना है।

संकाय में विशेषज्ञता के चार प्रमुख क्षेत्र हैं – शहरी प्रणालियाँ, शैक्षिक प्रौद्योगिकियाँ, स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियाँ तथा सतत ऊर्जा प्रणालियाँ। आईआईटी इंदौर का नवाचार संकाय एक अंतर्विषयक एवं सहयोगात्मक अनुसंधान वातावरण के रूप में कार्य करता है, जहाँ संस्थान के विभिन्न विभागों के संकाय सदस्यों की विशेषज्ञता एवं क्षमताओं का समुचित उपयोग करके तात्कालिक एवं महत्त्वपूर्ण समस्याओं के व्यापक समाधान विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

शैक्षणिक कार्यक्रम

आईआईटी इंदौर के स्कूल ऑफ इनोवेशन में बैचलर ऑफ डिज़ाइन (बी.डिज़ाइन) कार्यक्रम एक अंतर्विषयक एवं व्यावहारिक दृष्टिकोण पर आधारित पाठ्यक्रम है, जिसे सृजनात्मकता, प्रणालीगत चिंतन, आलोचनात्मक विश्लेषण तथा वास्तविक जीवन की समस्याओं के समाधान की क्षमता विकसित करने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। विद्यार्थियों को डिज़ाइन के लिए स्नातक सामान्य प्रवेश परीक्षा (यूसीईईडी) के माध्यम से प्रवेश दिया जाता है। इस कार्यक्रम में 16 विद्यार्थियों को प्रवेश दिया जाता है, जिससे व्यक्तिगत मार्गदर्शन, सहयोगात्मक अधिगम तथा स्टूडियो–आधारित गतिविधियों के लिए अनुकूल वातावरण उपलब्ध होता है।

कार्यक्रम का प्रथम वर्ष आधारभूत वर्ष के रूप में निर्धारित है, जिसमें विद्यार्थियों को प्रमुख विषय क्षेत्रों से परिचित कराया जाता है। द्वितीय वर्ष से विद्यार्थी अपनी रुचियों एवं शैक्षणिक आकांक्षाओं के आधार पर संकाय के चार विशेषज्ञता क्षेत्रों में से एक का चयन करते हैंकृशहरी प्रणालियाँ, शैक्षिक प्रौद्योगिकियाँ, स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियाँ तथा सतत ऊर्जा प्रणालियाँ।

इस कार्यक्रम में संकाय के आंतरिक शिक्षकों, आईआईटी इंदौर के विभिन्न विभागों के अंतर्विषयक विशेषज्ञों तथा उद्योग एवं सृजनात्मक कार्यक्षेत्रों से जुड़े आमंत्रित पेशेवरों का योगदान शामिल है। इस दृष्टिकोण के माध्यम से विद्यार्थी डिज़ाइन, प्रौद्योगिकी, प्रणालीगत चिंतन एवं सामाजिक समझ का समन्वय करके नवाचार के माध्यम से समकालीन चुनौतियों का समाधान विकसित करने की क्षमता प्राप्त करते हैं।

संकाय सदस्यों की कुल संख्या	04
विजिटिंग डिस्टिंग्विश्ड प्रोफेसर	01
प्राध्यापक	00
सह प्राध्यापक	01
सहायक प्राध्यापक I	01
सहायक प्राध्यापक II	01
पोस्ट–डॉक्टोरल शोधार्थियों की संख्या	00

कार्यक्रम	विद्यार्थी प्रवेश	उपाधि प्राप्त
बी.डेस	16	00

परियोजना

परियोजना	प्रायोजित	परामर्श सेवाएँ
नई परियोजनाएँ	00	00
जारी परियोजनाएँ	01	00
पूर्ण परियोजनाएँ	00	00

प्रकाशन

विवरण	प्रकाशित पुस्तकें	पुस्तकों में प्रकाशित	सम्मेलनों में प्रस्तुत	शोध–पत्रिकाओं में प्रकाशित
कुल	00	00	01	00

प्रो. कीर्ति त्रिवेदी

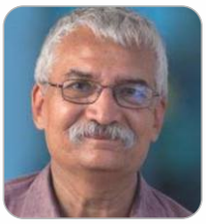

विजिटिंग डिस्टिंग्विश्ड प्रोफेसर

रॉयल कॉलेज ऑफ आर्ट, लंदन से डिज़ाइन में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.डिज़ाइन)

अनुसंधान क्षेत्र एवं प्रमुख उपलब्धियाँ: प्रो. कीर्ति त्रिवेदी (जन्म 1948, ग्वालियर, भारत) वर्ष 1981 में भारत के प्रथम दृश्य संचार (विजुअल कम्युनिकेशन) डिज़ाइन स्नातकोत्तर कार्यक्रम के प्रवर्तक एवं संस्थापक हैं। वे भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान बॉम्बे के औद्योगिक डिज़ाइन केंद्र में पूर्व प्रोफेसर रह चुके हैं। यांत्रिक अभियांत्रिकी में उपाधि प्राप्त करने के बाद उन्होंने आईआईटी बॉम्बे तथा रॉयल कॉलेज ऑफ आर्ट, लंदन से औद्योगिक डिज़ाइन में स्नातकोत्तर अध्ययन किया। वर्ष 1981 में उन्होंने जापान में यूनेस्को फेलो के रूप में प्रो. कोहेई सुगिउरा के मार्गदर्शन में कार्य किया। प्रो. सुगिउरा ने उन्हें एशियाई डिज़ाइन की बौद्धिक गहराई एवं समृद्ध परंपरा से परिचित कराया। वर्ष 1984 से वे भारत और एशिया की शास्त्रीय डिज़ाइन परंपराओं के अनुसंधान एवं दस्तावेज़ीकरण में संलग्न हैं तथा भारतीय डिज़ाइन परंपराओं पर उनकी अनेक पुस्तकें एवं अन्य प्रकाशन उपलब्ध हैं।

अध्यापन एवं डिज़ाइन अनुसंधान के अतिरिक्त, वे ग्राफिक डिज़ाइन, पुस्तक डिज़ाइन, प्रदर्शनी एवं संग्रहालय डिज़ाइन, पर्यावरणीय ग्राफिक्स, संकेतक प्रणाली तथा उत्पाद डिज़ाइन के क्षेत्रों में डिज़ाइन परामर्शदाता के रूप में सक्रिय हैं। उनके कार्यों को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनेक प्रकाशनों और पुरस्कारों के माध्यम से मान्यता मिली है। उनका वर्तमान अनुसंधान उभरती प्रौद्योगिकियों की संभावनाओं के आधार पर भारतीय आवश्यकताओं के अनुरूप अंतःक्रिया डिज़ाइन समाधान विकसित करने तथा एशियाई डिज़ाइन को समझने पर केंद्रित है।

वे भारत के अग्रणी संग्रहालय एवं प्रदर्शनी डिज़ाइनरों में से एक हैं। उनकी प्रमुख परियोजनाओं में साबरमती आश्रम, अहमदाबाद में महात्मा गांधी के जीवन एवं दर्शन पर आधारित स्थायी प्रदर्शनी 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश'; गोपुरी, वर्धा में आचार्य विनोबा भावे के जीवन एवं दर्शन पर आधारित स्थायी प्रदर्शनी 'विनोबा दर्शन'; सिंगापुर में सीएसआईआर इंडिया प्रदर्शनी; नानयांग प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (एनटीयू), सिंगापुर में 'द वे ऑफ एशियन डिज़ाइन'; स्कूल ऑफ आर्ट, डिज़ाइन एंड मीडिया (एडीएम), सिंगापुर में 'द फॉर्म्स ऑफ एवरीडे एशिया'; तथा दांडी में 'राष्ट्रीय नमक सत्याग्रह स्मारक' शामिल हैं। प्रो. त्रिवेदी पिछले 30 वर्षों से अधिक समय से राजा भोज से संबंधित सामग्री एवं संदर्भों का संकलन कर रहे हैं। इस महान परमार शासक के योगदान को विश्व के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए उनके पास एक विशिष्ट अवधारणा भी है।



डॉ. चेतन शास्त्री

सह प्राध्यापक
ईमेलः chetanshastri@iiti.ac.in
आरएमआईटी विश्वविद्यालय, मेलबर्न से पीएच.डी.

अनुसंधान क्षेत्र एवं प्रमुख उपलब्धियाँः डॉ. चेतन शास्त्री का सृजनात्मक अभ्यास–आधारित अनुसंधान जीवन की दो महत्त्वपूर्ण घटनाओं – जन्म एवं मृत्यु – के लिए डिज़ाइन विकसित करने पर केंद्रित है। इसके साथ ही, वे उस पारिस्थितिकी एवं सामाजिक परिवेश के संदर्भ में समय के अनुभव का अध्ययन करते हैं, जिसमें मनुष्य जीवन व्यतीत करता है।



डॉ. पल्लवी रानी

सहायक प्राध्यापक
ईमेलः pallavirani@iiti.ac.in
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान गुवाहाटी से पीएच.डी.

अनुसंधान क्षेत्र एवं प्रमुख उपलब्धियाँः डॉ. पल्लवी रानी का अनुसंधान नृवंशविज्ञानपरक अध्ययन के दृष्टिकोण से लोक एवं ग्रामीण कला रूपों की पड़ताल करता है। इसमें सांस्कृतिक आँकड़ों को अंतःक्रियात्मक एवं दृष्टिगत रूप से आकर्षक डेटा–कथ्य में रूपांतरित करने पर विशेष बल दिया जाता है। वे गुणात्मक अनुसंधान को ऐसे सार्थक एवं आकर्षक दृश्य निरूपणों में परिवर्तित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं, जो परंपरा और समकालीन डिज़ाइन पद्धतियों के बीच सेतु का कार्य करें। उनके प्रमुख रुचि क्षेत्र डिज़ाइन अनुसंधान, डेटा–कथ्य, चित्रांकन तथा दृश्य कलाएँ हैं।



डॉ. क्षेत्रीमयुम दीदेश्वर सिंह

सहायक प्राध्यापक
ईमेलः dideshwork@iiti.ac.in
चीन के वुहान प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय से पीएच.डी.

अनुसंधान क्षेत्र एवं प्रमुख उपलब्धियाँः डॉ. क्षेत्रीमयुम डिडेश्वर सिंह अध्यापन, अनुसंधान एवं सृजनात्मक अभ्यास के माध्यम से फ़ोटो एवं वीडियो संचार, टाइपोग्राफी, दृश्य संचार तथा शहरी प्रणालियों के क्षेत्रों में कार्य करते हैं। उनका अनुसंधान जन–केंद्रित डिज़ाइन, अंतःक्रियात्मक मूर्तिकला, स्थानिक कथ्य, दृश्य कहानी–वाचन, सिरेमिक कला, उपयोगी सार्वजनिक कला तथा फुमदी जैसी जैव–आधारित सामग्रियों की पड़ताल करता है।

व्यावहारिक प्रयोग एवं निर्माण–आधारित कार्य के माध्यम से वे स्टेनलेस स्टील, पीतल, कांस्य, बाँस, लकड़ी, प्लास्टिक, रेशों तथा उभरती हुई 3डी प्रिंटिंग प्रौद्योगिकियों सहित विभिन्न सामग्रियों के साथ कार्य करते हैं। उनका अंतर्विषयक कार्य सामूहिक स्मृति, सांस्कृतिक पहचान एवं पर्यावरणीय डिज़ाइन का अध्ययन करता है तथा कला, संस्कृति, समुदायों और समकालीन सार्वजनिक स्थलों के बीच सार्थक संबंध स्थापित करने को प्रोत्साहित करता है।

केंद्र की प्रोफ़ाइल

परिष्कृत उपकरण केंद्र (एसआईसी)

एसआईसी के बारे में

परिष्कृत उपकरण केंद्र (एसआईसी) की स्थापना सितंबर 2011 में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर (आईआईटी इंदौर) में अनुसंधान गतिविधियों को गति प्रदान करने के उद्देश्य से की गई थी। एसआईसी का मुख्य उद्देश्य अत्याधुनिक उपकरण सुविधाएँ उपलब्ध कराकर तथा अत्याधुनिक अनुसंधान में उनके अनुप्रयोग को प्रोत्साहित करके संस्थान की अनुसंधान पहलों को सहयोग एवं बढ़ावा देना है। उच्च–मूल्य वाले उपकरणों को एक ही स्थान पर स्थापित किया गया है, ताकि हितधारकों को उच्च गुणवत्ता वाली विश्लेषणात्मक डेटा सेवाएँ प्रदान की जा सकें।

एसआईसी संस्थान के सभी विभागों के साथ–साथ बाहरी शैक्षणिक संस्थानों और औद्योगिक क्षेत्र के उपयोगकर्ताओं को भी विश्लेषणात्मक सेवाएँ प्रदान करता है। केंद्र आईआईटी इंदौर में विज्ञान एवं अभियांत्रिकी की सभी शाखाओं में अनुसंधान को सहयोग और प्रोत्साहन देने के लिए निरंतर प्रयासरत है।

वर्तमान में, एसआईसी बाहरी उपयोगकर्ताओं को सेवाएँ प्रदान करके राजस्व अर्जित करने और केंद्र को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में प्रयासरत है। इस केंद्र की एक प्रमुख विशेषता विद्यार्थियों एवं संकाय सदस्यों के लिए उपकरण सुविधाओं की सहज उपलब्धता तथा उपलब्ध उपकरणों की तुलना में विद्यार्थियों का अनुकूल अनुपात है। संस्थान के रसायन विज्ञान, भौतिकी, यांत्रिक अभियांत्रिकी, विद्युत अभियांत्रिकी, जानपद अभियांत्रिकी, धातुकर्म अभियांत्रिकी एवं पदार्थ विज्ञान, जीवविज्ञान एवं जैवचिकित्सा अभियांत्रिकी तथा रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग अपनी अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों को सुदृढ़ करने के लिए एसआईसी की सुविधाओं का सक्रिय रूप से उपयोग कर रहे हैं।

विज़न, मिशन एवं उद्देश्य

1. अनुसंधान एवं विकास कार्यों के लिए नमूनों का विश्लेषण करने हेतु आईआईटी इंदौर के प्राध्यापकों, वैज्ञानिकों एवं विद्यार्थियों के साथ–साथ विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों और उद्योगों को उच्चस्तरीय उपकरण सुविधाएँ उपलब्ध कराना।
2. विश्वविद्यालयों एवं उद्योगों के शोधकर्ताओं के लिए एसआईसी के विभिन्न उपकरणों के उपयोग एवं अनुप्रयोग पर व्याख्यान, संगोष्ठियाँ और कार्यशालाएँ आयोजित करना।
3. उपकरणों का पूर्ण उपयोग सुनिश्चित करने के लिए नई विश्लेषणात्मक तकनीकों एवं विधियों का विकास करना तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान की नई संभावनाओं का अन्वेषण करने हेतु उन्हें उपलब्ध कराना।
4. उन्नत अनुसंधान के लिए डेटा संग्रहण की प्रक्रिया को सुगम बनाना।
5. अन्य शैक्षणिक संस्थानों एवं उद्योगों को नाममात्र के शुल्क पर सेवाएँ प्रदान करना।
6. संस्थान एवं उद्योगों के बीच सहयोग के माध्यम से 'उत्कृष्टता केंद्रों' की स्थापना करना तथा उन्हें सहयोग प्रदान करना।



प्रो. अपूर्व के. दास
प्रभारी प्राध्यापक, एसआईसी
ईमेलः head-sic@iiti.ac.in



प्रो. कृष्णा आर. मवाणी
सह–संयोजक, एसआईसी
ईमेलः krushna@iiti.ac.in



श्री घनश्याम भावसार
तकनीकी अधीक्षक



श्री किन्नी पांडेय
तकनीकी अधीक्षक



डॉ. रविंदर
कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक



श्री अतुल सिंह
कनिष्ठ तकनीकी सहायक



श्री सागर पाटिल
कनिष्ठ तकनीकी सहायक



श्री रंजीत रघुवंशी
प्रशासनिक कर्मचारी

एसआईसी में उपलब्ध सुविधाएँ

1. स्पेक्ट्रोस्कोपी
2. क्रोमैटोग्राफी
3. माइक्रोस्कोपी एवं इमेजिंग
4. तापीय विश्लेषण
5. अभिलक्षण उपकरण

स्पेक्ट्रोस्कोपी		
400 MH एवं 500 MHz एनएमआर (डीएसटी–फिस्ट–केमिस्ट्री)	वृत्तीय द्विवर्णता (सीडी)	यूवी–दृश्य स्पेक्ट्रोमीटर
फूरियर रूपांतरण अवरक्त स्पेक्ट्रोमीटर (एफटी–आईआर)	समय–सहसंबद्ध एकल फोटॉन गणना (टीसीएसपीसी)	स्पेक्ट्रोफ्लुओरोमीटर

क्रोमैटोग्राफी		
उच्च विभेदन द्रव क्रोमैटोग्राफी–द्रव्यमान स्पेक्ट्रोमेट्री (एलसी–एचआरएमएस)	गैस क्रोमैटोग्राफी–द्रव्यमान स्पेक्ट्रोमीटर (जीसी–एमएस)	रिवर्स फेज–उच्च निष्पादन द्रव क्रोमैटोग्राफी (आरपी–एचपीएलसी)
प्रिपरेटिव–उच्च निष्पादन द्रव क्रोमैटोग्राफी (प्रिप–एचपीएलसी)	सामान्य फेज–उच्च निष्पादन द्रव क्रोमैटोग्राफी	

सूक्ष्मदर्शिकी एवं इमेजिंग		
उच्च विभेदन संचरण इलेक्ट्रॉन सूक्ष्मदर्शिकी (एचआर–टीईएम)	क्षेत्र उत्सर्जन स्कैनिंग इलेक्ट्रॉन सूक्ष्मदर्शिकी (एफई–एसईएम), ईडीएएक्स एवं एएसटीईएम सहित	क्षेत्र उत्सर्जन स्कैनिंग इलेक्ट्रॉन सूक्ष्मदर्शिकी (एफई–एसईएम), ईडीएएक्स एवं डब्ल्यूएडीएक्स सहित
कॉन्फोकल लेज़र स्कैनिंग सूक्ष्मदर्शिकी (सीएलएसएम)	परमाणु बल सूक्ष्मदर्शिकी (एएफएम)	

तापीय विश्लेषण	
तापभारमितीय विश्लेषक (टीजीए)	विभेदी स्कैनिंग कैलोरीमिति (डीएससी)

अभिलक्षणीकरण उपकरण		
लायोफिलाइज़र	पृष्ठीय क्षेत्रफल विश्लेषक (बीईटी)	रियोमीटर
सीएचएनएसओ विश्लेषक	स्पेक्ट्रो इलेक्ट्रो–रासायनिक सेल (एसईसी)	भौतिक गुणधर्म मापन प्रणाली (पीपीएमएस)
ध्रुवणमापी	माइक्रोवेव संश्लेषक	माइक्रोवेव पाचन प्रणाली

एसआईसी में महत्वपूर्ण सुविधाओं की झलक
















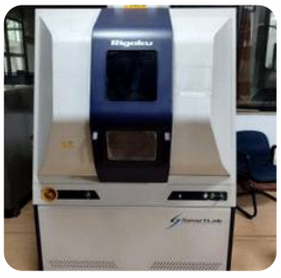




एसआईसी में स्थापित नए उपकरण

1. उच्च विभेदन संचरण इलेक्ट्रॉन सूक्ष्मदर्शी (एचआर–टीईएम), निर्माताः थर्मो फिशर साइंटिफिक, मॉडलः टैलोस 200।

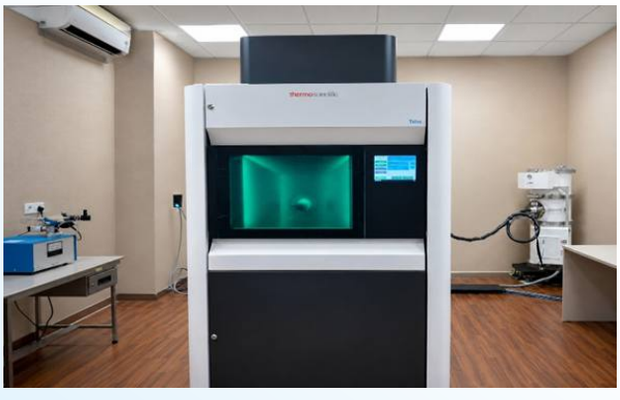


एचआर–टीईएम उपकरण का उद्घाटन आईआईटी इंदौर के 17वें स्थापना दिवस के अवसर पर 17 फरवरी, 2026 को डॉ. शरद कुमार सराफ एवं निदेशक प्रो. सुहास एस. जोशी द्वारा किया गया।

अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थियों के लिए व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम

स्पार्क–जीआईएएनटी (भारत–जर्मनी) कार्यक्रम के अंतर्गत जर्मनी के जूलियस–मैक्सिमिलियंस विश्वविद्यालय, वुर्ज़बर्ग (जेएमयू) के विद्यार्थियों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

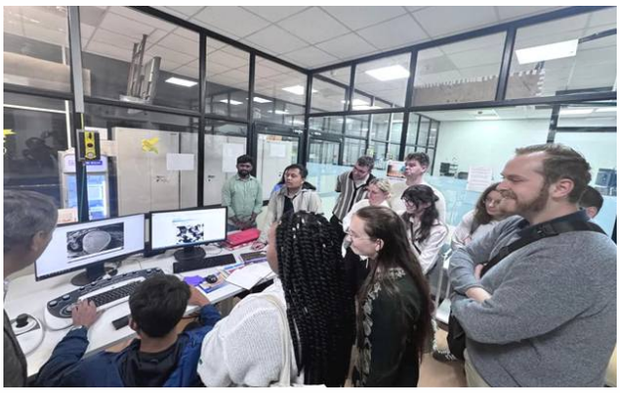

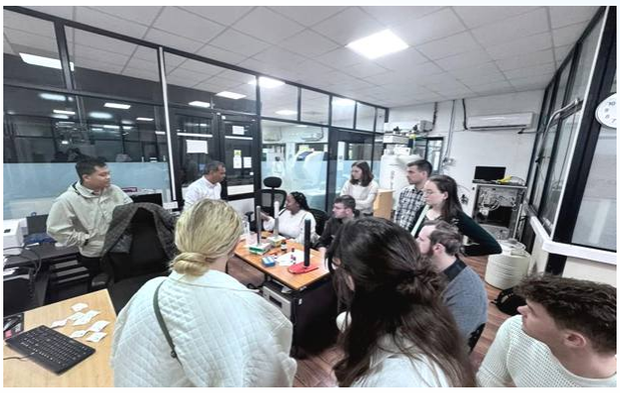

क्रय किए गए नए उपकरण (शीघ्र स्थापित किए जाने हेतु)

1. एएनआरएफ–पेयर अनुदान के अंतर्गत उच्च विभेदन ठोस अवस्था 500 मेगाहट्ज़ एनएमआर स्पेक्ट्रोमीटर।
2. भौतिक गुण मापन प्रणाली (पीपीएमएस)।
3. उच्च विभेदन 400 मेगाहट्ज़ एनएमआर स्पेक्ट्रोमीटर का उन्नयन।

एसआईसी में कुछ गणमान्य अतिथियों का आगमन

क्र. सं.	*प्रतिनिधि का नाम*	*पद एवं विभाग*
1	प्रो. उमेश कुमार सिंह	निदेशक, कंप्यूटर विज्ञान संस्थान, विक्रम विश्वविद्यालय
2	प्रो. प्रतोष बंसल	निदेशक, अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, डीएवीवी, इंदौर
3	डॉ. शरद कुमार सराफ	अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, टेक्नोक्राफ्ट ग्रुप
4	डॉ. लवकुश द्विवेदी	समन्वयक, इनोवेशन सेंटर एवं प्रमुख, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय
5	डॉ. दादासाहेब एम. कोराके	आरटीएम विश्वविद्यालय, नागपुर
6	प्रो. इरीना ए. कुज़िना	टॉम्स्क स्टेट यूनिवर्सिटी, रूस
7	प्रो. श्रीकांत क्रांति	जूलियस–मैक्सिमिलियंस यूनिवर्सिटेट वुर्ज़बर्ग (जेएमयू), जर्मनी

संस्थान की अनुसंधान गतिविधियों में स्थापना से अब तक एसआईसी की भूमिका

प्रकाशनः एसआईसी ने अनेक अंतरराष्ट्रीय शोध–पत्रिकाओं में शोध–प्रकाशनों हेतु सहयोग प्रदान किया है। केंद्र संस्थान के संकाय सदस्यों एवं शोधार्थियों की अनुसंधान संबंधी आवश्यकताओं को निरंतर पूरा कर रहा है।

पेटेंटः एसआईसी से प्राप्त आँकड़ों का उपयोग करके अनेक पेटेंट प्रदान किए गए हैं तथा उनके लिए आवेदन भी किए गए हैं।

प्रौद्योगिकी स्थानांतरणः एसआईसी के सहयोग से अनेक प्रौद्योगिकियों का उद्योगों को हस्तांतरण किया गया है तथा उनका इनक्यूबेशन किया गया है।

अनुसंधान परियोजनाएँः एसआईसी ने 600 करोड़ रुपये से अधिक के कुल मूल्य वाली अनेक परियोजनाओं को सहयोग प्रदान किया है।

उत्कृष्टता केंद्रः एसआईसी दो उत्कृष्टता केंद्रों, अर्थात् आरसीओई और सीएनएच, को भी सहयोग प्रदान कर रहा है।

प्रमुख उपलब्धियाँ: 2025–26 में प्रमुख उपकरणों के माध्यम से विश्लेषित नमूने

उपकरण	नमूनों की संख्या
एनएमआर (400 मेगाहट्ज़ एवं 500 मेगाहट्ज़, रसायन विज्ञान विभाग की डीएसटी–फिस्ट सुविधा)	24,854
एलसी–एचआरएमएस	7,900
एफई–एसईएम	4,483
सीएलएसएम	4,657
जीसी–एमएस	2,422
बीईटी	792
टीजीए	875
सीडी	936
एएफएम	458
यूवी–विज़	1,301
यूवी–विज़–एनआईआर	236
फ्लोरेसेंस	1,805
लायोफिलाइज़र	850
प्रेप–एचपीएलसी	657
सीएचएनएस–ओ	367
डीएससी	217
एफटीआईआर	411
टीसीएसपीसी	877
एलएन2 संयंत्र	25,279 लीटर
मिली–क्यू जल	3,124 लीटर

स्थापना से अब तक बाहरी शैक्षणिक संस्थानों, उद्योगों एवं अंतरराष्ट्रीय उपयोगकर्ताओं से कुल 1.36 करोड़ रुपये का राजस्व अर्जित किया गया है, जबकि वर्तमान वित्तीय वर्ष 2025–26 में 12.32 लाख रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ है।



समूह चित्र

उन्नत इलेक्ट्रॉनिक्स केंद्र (सीएई)

केंद्र के बारे में

उन्नत इलेक्ट्रॉनिक्स केंद्र (सीएई) की स्थापना जून 2020 में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर (आईआईटी इंदौर) में एक अंतर्विषयक अनुसंधान केंद्र के रूप में की गई थी। यह केंद्र कंप्यूटिंग, संचार, स्वास्थ्य देखभाल एवं ऊर्जा सहित विभिन्न क्षेत्रों में बहुविषयक अनुप्रयोगों हेतु पदार्थों, उपकरणों एवं प्रौद्योगिकियों के विकास के लिए समर्पित है।

सीएई इलेक्ट्रॉनिक्स एवं संबद्ध विषयों के प्रतिष्ठित शिक्षाविदों और शोधकर्ताओं को एक साझा मंच पर लाता है, ताकि समाज के लाभ के लिए उच्च गुणवत्ता वाले अनुप्रयुक्त अनुसंधान को प्रोत्साहित किया जा सके। केंद्र का उद्देश्य इलेक्ट्रॉनिक्स के राष्ट्रीय महत्व के क्षेत्र में अनुप्रयुक्त अनुसंधान, उपकरण विकास तथा कौशल एवं मानव संसाधन विकास के लिए एक सशक्त और जीवंत पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना है।

शैक्षणिक कार्यक्रम

उन्नत इलेक्ट्रॉनिक्स केंद्र (सीएई) उन्नत इलेक्ट्रॉनिक्स में पीएच.डी. कार्यक्रम संचालित करता है। इसके अंतर्गत नैनोइलेक्ट्रॉनिक्स/माइक्रोइलेक्ट्रॉनिक्स, एकीकृत सिलिकॉन फोटोनिक्स/ऑप्टोइलेक्ट्रॉनिक्स, उन्नत पदार्थ एवं उपकरण, उन्नत मेमोरी प्रौद्योगिकी, इलेक्ट्रॉनिक अपशिष्ट का उपयोग, संगणकीय इलेक्ट्रॉनिक्स एवं पदार्थ, द्विविमीय (2डी) इलेक्ट्रॉनिक पदार्थ, जैव–रासायनिक सेंसर, संकेत प्रसंस्करण, वीएलएसआई परिपथ एवं प्रणाली अभिकल्पना, फोटोवोल्टिक्स, वायरलेस एवं ऑप्टिकल संचार तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं मशीन लर्निंग जैसे अनुसंधान क्षेत्र शामिल हैं।

केंद्र कुशल मानव संसाधन तैयार करने, देश की अर्धचालक संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने तथा इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन में तकनीकी योगदान देने के उद्देश्य से उन्नत इलेक्ट्रॉनिक्स में एम.एस. (रिसर्च) कार्यक्रम प्रारंभ करने की भी योजना बना रहा है।

संकाय सदस्यों की कुल संख्याः	12
प्राध्यापकः	09
सह प्राध्यापकः	02
रामानुजन फेलोः	01

कार्यक्रम	विद्यार्थी प्रवेश	प्राप्त उपाधि
पीएच.डी.	03	–

प्रमुख अनुसंधान एवं विकास गतिविधियाँ

केंद्र बहुविषयक क्षेत्रों में अनुप्रयुक्त अनुसंधान में संलग्न है तथा उन्नत अर्धचालक प्रौद्योगिकियों और पदार्थ विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास हेतु अत्याधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध कराता है।

परियोजनाएँ

परियोजना	बाह्य प्रायोजित परियोजनाएँ
नई परियोजनाएँ	–
जारी परियोजनाएँ	8
पूर्ण परियोजनाएँ	–

प्रकाशन

विवरण	प्रकाशित पुस्तकें	पुस्तकों में अध्याय	सम्मेलन में शोध–पत्र	शोध–पत्रिकाओं में शोध–पत्र	पेटेंट
कुल	01	01	23	59	05 आवेदित, 04 स्वीकृत

आउटरीच गतिविधियाँ

क्र. सं.	*दिनांक*	*गतिविधियाँ*
1	16–18 नवंबर, 2025	उन्नत फोटोनिक्स पर संगोष्ठी (एसएपी 2025)
2	23 दिसंबर, 2025	नेचर कम्युनिकेशंस के वरिष्ठ संपादक डॉ. राकेश राणा द्वारा 'नेचर कम्युनिकेशंस में प्रकाशन प्रक्रिया की जानकारी' विषय पर विशेषज्ञ व्याख्यान।
3	29–30 मई, 2026	सतत एवं समावेशी भविष्य के लिए बुद्धिमान प्रौद्योगिकियों पर प्रथम आईईईई अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन।

सीएई के संकाय सदस्यों का परिचय



प्रो. विवेक कन्हांगड

(प्रभारी प्राध्यापक, सीएई)

अनुसंधान रुचियाँ:

- बायोमेट्रिक्स
- डिजिटल सिग्नल एवं इमेज प्रोसेसिंग



प्रो. शैबल मुखर्जी

अनुसंधान रुचियाँ:

- डीसी–टू–डीसी कन्वर्टर्स के लिए कम लागत वाले एचईएमटी / एचएफईटी
- इमेज प्रोसेसिंग एवं न्यूरोमॉर्फिक कंप्यूटेशन के लिए विषम रूप से एकीकृत आरआरएएम
- अगली पीढ़ी के अति–पतले एवं कम लागत वाले फोटोवोल्टिक उपकरण
- कृषि, जल एवं वायु के लिए लचीले एवं कम लागत वाले जैव–रासायनिक सेंसर
- उच्च–प्रदर्शन वाले यूवी डिटेक्टर



प्रो. राजेश कुमार

अनुसंधान रुचियाँ:

- नैनोमैटेरियल्स एवं नैनोडिवाइसेस
- इलेक्ट्रॉनिक एवं इलेक्ट्रोक्रोमिक डिवाइसेस
- डिवाइस फिजिक्स, रमन स्पेक्ट्रोस्कोपी एवं माइक्रोस्कोपी
- प्राकृतिक बायोमैटेरियल्स



प्रो. मुकेश कुमार

अनुसंधान रुचियाँ:

- इंटीग्रेटेड ऑप्टोइलेक्ट्रॉनिक्स
- सिलिकॉन फोटोनिक्स
- नैनोइलेक्ट्रॉनिक्स
- इंटीग्रेटेड सीएमओएस फोटोनिक्स
- डिवाइस फैब्रिकेशन एवं वीएलएसआई टेक्नोलॉजी
- जैव–रासायनिक सेंसर
- नैनो–स्केल डिवाइसेस



प्रो. विमल भाटिया

अनुसंधान रुचियाँ:

- संचार एवं ऑप्टिक्स के लिए एआई / एमएल
- 6जी एवं 7जी संचार प्रणालियाँ
- प्रदर्शन विश्लेषण एवं अनुकूलन
- सिग्नल एवं इमेज प्रोसेसिंग एल्गोरिदम
- गणितीय विश्लेषण एवं कंप्यूटिंग
- सॉफ्टवेयर इम्प्लीमेंटेशन



डॉ. अजय कुमार कुशवाहा

अनुसंधान रुचियाँ:

- संक्षारण–रोधी कोटिंग्स
- नैनोमैटेरियल्स
- ऊर्जा संचयन एवं भंडारण



प्रो. संतोष कुमार विश्वकर्मा

अनुसंधान रुचियाँ:

- एसआरएएम डिजाइन एवं आर्किटेक्चर
- विश्वसनीय, सुरक्षित एवं ऊर्जा–कुशल सर्किट डिजाइन
- डिजिटल एएसआईसी / एसओसी डिजाइन
- इन–मेमोरी कंप्यूटिंग
- एसओसी / एफपीजीए–आधारित सीएनएन हार्डवेयर एक्सेलेरेटर्स
- एनएएनडी फ्लैश मेमोरी डिवाइस
- उन्नत एमओएस डिवाइसेस
- डिवाइस–सर्किट को–डिजाइन



प्रो. विनोद कुमार

अनुसंधान रुचियाँ:

- नैनोमैटेरियल्स
- हाई–एंट्रॉपी अलॉय
- मैग्नेटिक मैटेरियल्स
- संक्षारण एवं कोटिंग
- स्ट्रक्चर–प्रॉपर्टी सहसंबंध
- माइक्रोस्ट्रक्चरल कैरेक्टराइजेशन
- हल्की धातु मिश्रधातुओं एवं इस्पात का थर्मो–मैकेनिकल प्रोसेसिंग
- फेल्योर एनालिसिस
- बिल्डिंग मैटेरियल्स
- एनर्जी मैटेरियल्स



प्रो. अपूर्व के. दास

अनुसंधान रुचियाँ:

- बायोमैटेरियल्स
- पेप्टाइड एवं न्यूक्लियोबेस–आधारित नैनो–संरचित पदार्थ
- सिस्टम्स केमिस्ट्री
- सुप्रामॉलिक्यूलर इलेक्ट्रॉनिक्स
- कार्बनिक–अकार्बनिक हाइब्रिड मैटेरियल्स



डॉ. श्रीमंत पाखिरा

अनुसंधान रुचियाँ:

- सैद्धांतिक संघनित पदार्थ भौतिकी
- कंप्यूटेशनल मैटेरियल साइंस
- क्वांटम मैटेरियल्स
- नवीकरणीय ऊर्जा प्रौद्योगिकी
- प्रथम–सिद्धांत गणनाओं द्वारा यौगिक अर्धचालकों की सतहों एवं अंतरापृष्ठों तथा उनके विद्युत एवं चुंबकीय गुणों पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन



डॉ. अभिषेक सिंह (रामानुजन फेलो)

अनुसंधान रुचियाँ:

- फोटोनिक टेराहर्ट्ज़ टेक्नोलॉजीरू टीएचज़ेड जनरेशन, डिटेक्शन एवं एप्लिकेशन
- ऑप्टोइलेक्ट्रॉनिक्स
- अल्ट्राब्रॉडबैंड टीएचज़ेड टेक्नोलॉजी के लिए जीएएएस, जीई एवं जीई / एसआई–आधारित सेमीकंडक्टर डिवाइसेस
- टेराहर्ट्ज़ स्पेक्ट्रोस्कोपी
- अल्ट्राफास्ट ऑप्टिक्स
- जीई–आधारित हाई–स्पीड फोटो–डिटेक्टर्स
- लिथोग्राफी द्वारा नैनो–स्केल एवं माइक्रो–स्केल डिवाइस फैब्रिकेशन



प्रो. राम बिलास पचौरी

अनुसंधान रुचियाँ:

- सिग्नल एवं इमेज प्रोसेसिंग
- बायोमेडिकल सिग्नल प्रोसेसिंग
- अनॉन–स्टेशनरी सिग्नल प्रोसेसिंग
- स्पीच सिग्नल प्रोसेसिंग
- ब्रेन–कंप्यूटर इंटरफेसिंग
- मशीन लर्निंग
- स्वास्थ्य देखभाल में एआई
- वेदों के लिए सिग्नल प्रोसेसिंग

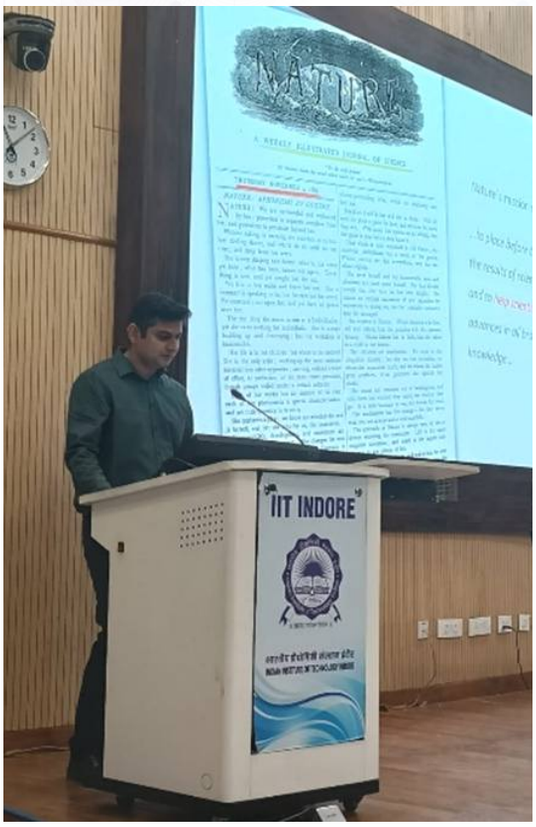
NATURE
IIT INDORE





इलेक्ट्रिक वाहन एवं कुशल परिवहन प्रणाली केंद्र (सीईवीआईटीएस)

केंद्र का विज़न/मिशन

इलेक्ट्रिक वाहन एवं कुशल परिवहन प्रणाली केंद्र (सीईवीआईटीएस) की स्थापना अप्रैल 2021 में आईआईटी इंदौर में इलेक्ट्रिक मोबिलिटी एवं कुशल परिवहन प्रणालियों के क्षेत्र में शिक्षा, अनुसंधान, नवाचार और उद्यमिता के अग्रणी केंद्र के रूप में विकसित होने के विज़न के साथ की गई थी। केंद्र की स्थापना तीन प्रमुख उद्देश्यों के साथ की गई थीरू (प) इलेक्ट्रिक वाहन प्रौद्योगिकियों में कुशल मानव संसाधन एवं प्रतिभा का विकास करना, (पप) परिवर्तनकारी मोबिलिटी के क्षेत्र में अनुसंधान एवं नवाचार के लिए विश्वस्तरीय पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना, तथा (पपप) उद्यमिता को प्रोत्साहित करना और स्वदेशी इलेक्ट्रिक वाहन प्रौद्योगिकियों एवं स्टार्टअप के विकास में सहयोग प्रदान करना।

इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए, सीईवीआईटीएस ने इलेक्ट्रिक मोबिलिटी पर केंद्रित शैक्षणिक कार्यक्रम प्रारंभ किए हैं, जिनका उद्देश्य देशभर के विद्यार्थियों एवं पेशेवरों को व्यापक ज्ञान तथा अंतर्विषयक प्रशिक्षण प्रदान करना है। केंद्र शैक्षणिक सत्र 2021–22 से इलेक्ट्रिक वाहन प्रौद्योगिकी (ईवीटी) में एम.टेक. कार्यक्रम संचालित कर रहा है। इस कार्यक्रम में इलेक्ट्रिक मोबिलिटी के सभी प्रमुख पहलुओं को शामिल किया गया है, जिनमें इलेक्ट्रिक ड्राइव, ऊर्जा भंडारण प्रणालियाँ, पावर इलेक्ट्रॉनिक्स, वाहन गतिकी, चार्जिंग अवसंरचना, उन्नत चालक सहायता प्रणालियाँ तथा कुशल परिवहन प्रौद्योगिकियाँ शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, सतत मोबिलिटी के क्षेत्र में भावी शोधकर्ताओं एवं प्रौद्योगिकी विशेषज्ञों को तैयार करने के लिए एम.टेक.–पीएच.डी. दोहरी उपाधि कार्यक्रम भी प्रारंभ किया गया है।

तेजी से विकसित हो रहे ऑटोमोटिव क्षेत्र में उद्योग जगत के पेशेवरों के कौशल उन्नयन की बढ़ती आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, सीईवीआईटीएस ने उद्योगोन्मुख कार्यकारी शिक्षा कार्यक्रम भी प्रारंभ किए हैं। मध्य प्रदेश के पीथमपुर स्थित वीई कमर्शियल व्हीकल्स लिमिटेड (वीईसीवी) के कर्मचारियों के लिए हाइब्रिड एवं इलेक्ट्रिक वाहन प्रौद्योगिकी में कार्यकारी एम.टेक. कार्यक्रम शैक्षणिक सत्र 2023–24 से प्रारंभ किया गया। उद्योग जगत के साथ अपने जुड़ाव को और सुदृढ़ करते हुए, केंद्र ने केस न्यू हॉलैंड कंस्ट्रक्शन इक्विपमेंट इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (सीएनएचआई) के कर्मचारियों के लिए हेवी व्हीकल मोबिलिटी इंजीनियरिंग में कार्यकारी एम.टेक. कार्यक्रम भी प्रारंभ किया है, जो शैक्षणिक सत्र 2026–27 से शुरू हुआ है। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य कार्यरत पेशेवरों को उभरती मोबिलिटी प्रौद्योगिकियों में उन्नत तकनीकी विशेषज्ञता प्रदान करके शैक्षणिक ज्ञान एवं औद्योगिक आवश्यकताओं को पूरा करना है।

सीईवीआईटीएस परिवहन क्षेत्र की उभरती चुनौतियों का समाधान करने के लिए शिक्षा, अनुसंधान, नवाचार एवं उद्योग सहयोग को एकीकृत करते हुए बहुविषयक दृष्टिकोण अपनाता है। केंद्र का ध्यान अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों की तीन व्यापक श्रेणियों पर केंद्रित है।

(क) अनुसंधान, विकास एवं अभियांत्रिकी (आर, डी एवं ई): उद्योगों के साथ सुदृढ़ सहयोग एवं समर्थन के माध्यम से उत्पादन क्षमता युक्त प्रौद्योगिकियों के विकास से संबंधित परियोजनाएँ;

(ख) अनुप्रयोगोन्मुख अनुसंधान, अभिकल्पना एवं विकास (आर, डी एवं डी): ऐसे अनुप्रयुक्त अनुसंधान प्रयास, जिनमें व्यावसायीकरण एवं व्यावहारिक उपयोग की पर्याप्त संभावनाएँ हों; तथा

(ग) मूलभूत अनुसंधान एवं विकास: ऐसे बुनियादी अनुसंधान, जो वैज्ञानिक ज्ञान को आगे बढ़ाते हैं और इलेक्ट्रिक मोबिलिटी एवं कुशल परिवहन प्रणालियों में नवाचार को प्रोत्साहित करते हैं।

इन पहलों के माध्यम से, सीईवीआईटीएस का उद्देश्य उच्च कुशल पेशेवरों को तैयार करके, प्रभावशाली अनुसंधान परिणाम प्राप्त करके, शिक्षा जगत एवं उद्योगों के बीच साझेदारी को सुदृढ़ करके तथा इलेक्ट्रिक वाहन एवं कुशल परिवहन प्रौद्योगिकियों में नवाचार एवं उद्यमिता को बढ़ावा देने वाला पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करके भारत को सतत परिवहन व्यवस्था की ओर अग्रसर करने में महत्वपूर्ण योगदान देना है।

सीईवीआईटीएस के टीम सदस्य

मुख्य संकाय सदस्य (14 सदस्य)

संकाय सदस्य (नाम एवं पदनाम)	*अनुसंधान क्षेत्र एवं विशेषज्ञता*
डॉ. सुनील कुमार, प्रभारी प्राध्यापक (एसोसिएट प्रोफेसर, एमईएमएस)	विद्युत–रासायनिक ऊर्जा भंडारण; सोडियम–आयन बैटरियाँ; पूर्णतः ठोस–अवस्था वाली बैटरियाँ
प्रो. आमोद सी उमरीकर (प्रोफेसर, ईई)	उच्च स्टेप–अप डीसीदृडीसी कन्वर्टर; नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का ग्रिड से एकीकरण; विद्युत गुणवत्ता का विश्लेषण एवं निगरानी
डॉ. देवेंद्र देशमुख (प्रोफेसर, एमई)	आंतरिक दहन इंजन; जैव ईंधन; स्प्रे एवं दहन निदान
डॉ. आई. ए. पलानी (प्रोफेसर, एमई)	प्रकाशीय उपकरणीकरण; मेकाट्रॉनिक्स; प्रणाली अभिकल्पना; लेज़र–सहायित नैनोसंरचनाओं का संश्लेषण एवं अभिलक्षणन
डॉ. एस. आई. कुंडलवाल (प्रोफेसर, एमई)	संगणकीय नैनोयांत्रिकी; मिश्रित पदार्थों का परिमित तत्व विधि (एफईएम); नैनोयांत्रिकी एवं सूक्ष्मयांत्रिकी; स्मार्ट पदार्थ एवं संरचनाएँ
डॉ. रुपेश एस. देवन (प्रोफेसर, एमईएमएस)	प्रकाश–सक्रिय पदार्थ; हाइड्रोजन उत्पादन; जल परिशोधन; ऊर्जा भंडारण पदार्थ; नैनो–विषम संरचनाएँ
डॉ. तृप्ति जैन (प्रोफेसर, ईई)	विद्युत प्रणाली सुरक्षा; विद्युत प्रणालियों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता; विद्युत गुणवत्ता; इलेक्ट्रिक वाहन; स्मार्ट ग्रिड
डॉ. विपुल सिंह (प्रोफेसर, ईई)	एमओएसएफईटी सेंसर; नैनोइलेक्ट्रॉनिक्स; आरएफ उपकरण; एकल–इलेक्ट्रॉन उपकरण; सिलिकॉन नैनो–उपकरण; प्रकाश–संदीप्ति
प्रो. सोमनाथ डे (प्रोफेसर, आईआईटी इंदौर)	मानव–कंप्यूटर अंतःक्रिया; इमेज प्रोसेसिंग; कंप्यूटर ग्राफिक्स; बायोमेट्रिक सुरक्षा
डॉ. स्वामीनाथन आर. (एसोसिएट प्रोफेसर, ईई)	सहकारी रिले प्रणालियाँ; एमआईएमओ; हाइब्रिड एफएसओ/आरएफ संचार; वायरलेस कोडिंग एवं आकलन
डॉ. बोधिसत्व मजूमदार (एसोसिएट प्रोफेसर, ईई)	हार्डवेयर सुरक्षा; साइड–चौनल विश्लेषण; क्रिप्टोग्राफी; डिजिटल वीएलएसआई अभिकल्पना
के. ईश्वर प्रसाद (एसोसिएट प्रोफेसर, एमईएमएस)	उच्च विकृति–दर पर विरूपण; नैनोइंडेंटेशन; सतह अभियांत्रिकी; विफलता विश्लेषण
डॉ. बी. प्रताप रेड्डी (असिस्टेंट प्रोफेसर, ईई)	इलेक्ट्रिक वाहन; बहुफेज मशीनें; पावर इलेक्ट्रॉनिक्स; ईवी चार्जिंग; बहुस्तरीय इन्वर्टर
डॉ. कृष्ण मोहन कुमार (असिस्टेंट प्रोफेसर, एमई)	ध्वनिकी; डक्ट एवं मफलर में शोर नियंत्रण; ऑटोमोटिव एनवीएच; औद्योगिक कंपन नियंत्रण

संबद्ध संकाय सदस्य (10 सदस्य)

संकाय सदस्य (नाम एवं पदनाम)	*अनुसंधान क्षेत्र एवं विशेषज्ञता*
प्रो. सुमित गौतम (असिस्टेंट प्रोफेसर, ईई)	वायरलेस संचार; एसडब्ल्यूआईपीटी प्रणालियाँ; आईआरएस–सहायित नेटवर्क; एज कैशिंग; सहकारी रिले
डॉ. शुभदीप पलाधी (असिस्टेंट प्रोफेसर, ईई)	विद्युत प्रणाली संरक्षण; ग्रिड निगरानी में मशीन लर्निंग; डिजिटल ट्विन; नवीकरणीय ऊर्जा–एकीकृत ग्रिड की प्रत्यास्थता
डॉ. पंकज आर. सगदेव (प्रोफेसर, यूजीसी–डीएई सीएसआर)	वैज्ञानिक उपकरणों का विकास; पदार्थों का प्रायोगिक अभिलक्षणन
डॉ. सोमादित्य सेन (प्रोफेसर, भौतिकी)	फेरोइलेक्ट्रिक्स; मल्टीफेरोइक्स; ऑप्टोइलेक्ट्रॉनिक पदार्थ; संवेदन पदार्थ; ऑक्साइड एवं नैनो–पदार्थ
डॉ. सुमंत सामल (एसोसिएट प्रोफेसर, एमईएमएस)	उच्च–एंट्रॉपी मिश्रधातुएँ; ठोसीकरण; प्रावस्था संतुलन; उच्च–ताप अनुप्रयोगों हेतु पदार्थ अभिकल्पना
डॉ. जे. पी. मुरुगेसन (एसोसिएट प्रोफेसर, एमईएमएस)	वेल्डिंग अभियांत्रिकी; फ्रैक्चर यांत्रिकी; यांत्रिक व्यवहार; एडिटिव मैन्युफैक्चरिंग
डॉ. हरेकृष्ण यादव (एसोसिएट प्रोफेसर, एमई)	प्रायोगिक तरल गतिकी; ऊष्मा अंतरण; प्रवाह दृश्यांकन; नवीकरणीय ऊर्जा प्रणालियाँ
डॉ. एस. धनाकरन (प्रोफेसर, एमई)	संगणकीय तरल गतिकी (सीएफडी); जैव–तरल यांत्रिकी; छिद्रयुक्त माध्यमों में ऊष्मा अंतरण; नैनो–द्रव
प्रो. आनंद पारे (प्रोफेसर)	स्थिति निगरानी; संकेत प्रसंस्करण; कंपन एवं शोर नियंत्रण
डॉ. गौरव सिल (एसोसिएट प्रोफेसर)	राजमार्ग अभियांत्रिकी; यातायात सुरक्षा; चालक व्यवहार; सांख्यिकीय परिवहन विश्लेषण

शैक्षणिक कार्यक्रम

सीईवीआईटीएस ने विद्यार्थियों एवं उद्योग जगत के पेशेवरों के लिए उन्नत शिक्षण और अंतर्विषयक कौशल विकास को बढ़ावा देने हेतु इलेक्ट्रिक मोबिलिटी के क्षेत्र में सुव्यवस्थित शैक्षणिक कार्यक्रम प्रारंभ किए हैं। इन कार्यक्रमों को केंद्रित तकनीकी शिक्षा एवं अनुसंधान–उन्मुख प्रशिक्षण के माध्यम से सतत परिवहन प्रणालियों की बदलती आवश्यकताओं को पूरा करने के उद्देश्य से तैयार किया गया है।

केंद्र इलेक्ट्रिक वाहन प्रौद्योगिकी (ईवीटी) में स्नातकोत्तर कार्यक्रम के साथ–साथ एकीकृत एम.टेक.–पीएच.डी. दोहरी उपाधि कार्यक्रम भी संचालित करता है, जिनका उद्देश्य इलेक्ट्रिक मोबिलिटी के क्षेत्र में उन्नत अनुसंधान क्षमताओं को सुदृढ़ करना है। इसके अतिरिक्त, सीईवीआईटीएस ने प्रमुख ऑटोमोटिव कंपनियों वीईसीवी एवं सीएनएचआई के सहयोग से उद्योगोन्मुख कार्यकारी शिक्षा कार्यक्रम विकसित किए हैं। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य कार्यरत पेशेवरों को आधुनिक इलेक्ट्रिक एवं हाइब्रिड वाहन प्रौद्योगिकियों का उन्नत तकनीकी ज्ञान और व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करना तथा शैक्षणिक अधिगम एवं औद्योगिक आवश्यकताओं को पूरा करना है।

प्रकाशन

कार्यक्रम	*विद्यार्थी प्रवेश*	*प्राप्त उपाधि*	*प्रारंभिक शैक्षणिक वर्ष*
इलेक्ट्रिक वाहन प्रौद्योगिकी में एम.टेक. (ईवीटी)	10–15	एम.टेक.	2021–22
इलेक्ट्रिक मोबिलिटी में एम.टेक.–पीएच.डी. दोहरी उपाधि कार्यक्रम	लागू नहीं	एम.टेक. + पीएच.डी.	2021–22
इलेक्ट्रिक वाहन प्रौद्योगिकी में पीएच.डी. कार्यक्रम (गैर–टीए श्रेणी)	लागू नहीं	पीएच.डी.	(2023–24
हाइब्रिड एवं इलेक्ट्रिक वाहन प्रौद्योगिकी में कार्यकारी एम.टेक. (वीईसीवी)	उद्योग–प्रायोजित (10–20)	एम.टेक. (कार्यकारी)	2023–24
हेवी व्हीकल मोबिलिटी इंजीनियरिंग में कार्यकारी एम.टेक. (सीएनएचआई)	उद्योग–प्रायोजित (10–20)	एम.टेक. (कार्यकारी)	2026–27

अनुसंधान एवं विकास गतिविधियाँ

सीईवीआईटीएस में वर्तमान अनुसंधान एवं विकास गतिविधियाँ इलेक्ट्रिक मोबिलिटी, कुशल परिवहन प्रणालियों तथा अगली पीढ़ी की ऑटोमोटिव प्रौद्योगिकियों को उन्नत बनाने पर केंद्रित हैं। इन गतिविधियों में विद्युत, यांत्रिक, पदार्थ, संचार, भौतिकी एवं नियंत्रण अभियांत्रिकी के क्षेत्रों में संकाय सदस्यों की बहुविषयक विशेषज्ञता का उपयोग किया जाता है।

- उन्नत बैटरी प्रौद्योगिकियाँः सोडियम–आयन बैटरियाँ, ठोस–अवस्था बैटरियाँ एवं विद्युत–रासायनिक ऊर्जा भंडारण।
- ऊर्जा भंडारण प्रणालियाँः विद्युत–रासायनिक प्रणालियाँ एवं उच्च–प्रदर्शन वाले भंडारण पदार्थ।
- पावर इलेक्ट्रॉनिक्स एवं मशीनेंः इलेक्ट्रिक वाहन ड्राइव, बहुस्तरीय इन्वर्टर, दक्ष एवं दुर्लभ मृदा तत्वों से मुक्त मशीनें तथा कन्वर्टर अभिकल्पना।
- वाहन गतिकीः इलेक्ट्रिक एवं हाइब्रिड वाहनों की स्थिरता, नियंत्रण एवं प्रदर्शन का अनुकूलन।
- वाहन संचार प्रणालियाँः वायरलेस नेटवर्क, एमआईएमओ, रिले प्रणालियाँ एवं सहकारी संचार।
- ईवी चार्जिंग प्रौद्योगिकियाँः पावर कन्वर्टर, चार्जिंग अवसंरचना, विद्युत गुणवत्ता एवं ग्रिड एकीकरण।
- कंपन एवं शोर नियंत्रणः एनवीएच विश्लेषण, डक्ट एवं मफलर ध्वनिकी तथा ऑटोमोटिव शोर नियंत्रण।
- हाइब्रिड पावरट्रेनः हाइब्रिड एवं इलेक्ट्रिक प्रणोदन प्रणालियाँ तथा मोबिलिटी अनुप्रयोगों के लिए माइक्रोग्रिड।
- उन्नत चालक सहायता प्रणालियाँ (एडीएएस)ः कुशल मोबिलिटी तथा स्मार्ट वाहनों के लिए संवेदन एवं नियंत्रण।
- ऑटोट्रॉनिक्सः पावरट्रेन इलेक्ट्रॉनिक्स, नियंत्रण प्रणालियाँ एवं ईवी प्रणाली एकीकरण।
- मेकाट्रॉनिक्सः सेंसर–एकीकृत प्रणालियाँ, प्रकाशीय उपकरणीकरण, प्रणाली अभिकल्पना एवं नियंत्रण।
- इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए उन्नत पदार्थः प्रकाश–सक्रिय पदार्थ, नैनोसंरचनाएँ, मिश्रित पदार्थ, सतह अभियांत्रिकी एवं उच्च–तापमान वाले पदार्थ।

ये अनुसंधान क्षेत्र मूलभूत अनुसंधान, अनुप्रयोगोन्मुख अभियांत्रिकी एवं उद्योग–संबंधित नवाचारों को एकीकृत करते हुए दक्ष, कुशल एवं सतत इलेक्ट्रिक मोबिलिटी समाधानों के विकास में योगदान देते हैं।

केंद्र की प्रमुख गतिविधियाँ

आईआईटी इंदौर का सीईवीआईटीएस इलेक्ट्रिक मोबिलिटी एवं बुद्धिमान परिवहन प्रणालियों के क्षेत्र में क्षमता निर्माण, उद्योग सहयोग तथा शैक्षणिक प्रगति को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न प्रमुख पहलें कर रहा है।

- *डीएसटी–एसईआरबी कार्यशाला:* 12–19 जुलाई, 2022 के दौरान "अगली पीढ़ी की बुद्धिमान परिवहन प्रणालियों के लिए वाहन संचार" विषय पर डीएसटी–एसईआरबी कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें कनेक्टेड मोबिलिटी के लिए उन्नत संचार ढाँचों पर ध्यान केंद्रित किया गया।
- *एम.टेक. कार्यक्रम में शैक्षणिक उपलब्धि:* जुलाई 2023 में प्रथम बैच के उत्तीर्ण होने के साथ, जून 2026 तक इलेक्ट्रिक वाहन प्रौद्योगिकी (ईवीटी) में एम.टेक. कार्यक्रम के चार बैच उत्तीर्ण हो चुके हैं। यह सीईवीआईटीएस की एक महत्वपूर्ण शैक्षणिक उपलब्धि है।
- *उद्योग–प्रायोजित कार्यकारी एम.टेक. कार्यक्रम:* वीई कमर्शियल व्हीकल्स (वीईसीवी) के सहयोग से 2023 में कार्यकारी एम.टेक. कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। इसका उद्देश्य इलेक्ट्रिक एवं हाइब्रिड वाहन प्रौद्योगिकियों तथा अनुप्रयुक्त मोबिलिटी प्रणालियों में पेशेवरों के कौशल का उन्नयन करना है।
- *कार्यकारी एम.टेक. में उपलब्धि:* जून 2026 तक हाइब्रिड एवं इलेक्ट्रिक वाहन प्रौद्योगिकी (वीईसीवी) में कार्यकारी एम.टेक. के दो बैच उत्तीर्ण हो चुके हैं, जिससे उद्योगोन्मुख कौशल विकास को बल मिला है।
- *सीएनएचआई के साथ नया कार्यक्रम:* वर्ष 2026 में केस न्यू हॉलैंड इंडिया (सीएनएचआई) के सहयोग से दूसरा कार्यकारी एम.टेक. कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। यह कार्यक्रम भारी वाहन मोबिलिटी अभियांत्रिकी एवं उन्नत ऑफ–हाईवे मोबिलिटी समाधानों पर केंद्रित है और उद्योग सहयोग को सुदृढ़ करता है।
- *उच्च प्रभाव वाले अनुसंधान परिणाम:* शोध–पत्रिकाओं में प्रकाशनों एवं सम्मेलन की कार्यवाहियों के माध्यम से उच्च प्रभाव वाले अनुसंधान परिणाम प्राप्त किए गए हैं।



चित्रः सीईवीआईटीएस, आईआईटी इंदौर की टीम ने वर्ष 2024 में आईआईटी मद्रास स्थित सीओईज़ेडईटी का दौरा किया।



चित्रः सीईवीआईटीएस, आईआईटी इंदौर की टीम ने वर्ष 2025 में भोपाल स्थित वीईसीवी का दौरा किया।

अत्याधुनिक रक्षा एवं अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी केंद्र (सीएफडीएसटी)

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर (आईआईटी इंदौर) का अत्याधुनिक रक्षा एवं अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी केंद्र (सीएफडीएसटी) एक अंतर्विषयक अनुसंधान केंद्र है, जो रक्षा, एयरोस्पेस, साइबर सुरक्षा, स्वायत्त प्रणालियों एवं बुद्धिमान संचार नेटवर्क के क्षेत्रों में स्वदेशी प्रौद्योगिकियों को उन्नत बनाने पर केंद्रित है। केंद्र का उद्देश्य इलेक्ट्रॉनिक्स, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स, सिग्नल प्रोसेसिंग, एम्बेडेड प्रणालियों, उन्नत पदार्थों तथा सुरक्षित संचार प्रौद्योगिकियों के विशेषज्ञ ज्ञान को एकीकृत करके अत्याधुनिक रक्षा एवं अंतरिक्ष अनुसंधान के लिए एक सुदृढ़ पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करना है।

सीएफडीएसटी यूएवी प्रणालियों, स्वार्म इंटेलिजेंस, सुरक्षित एम्बेडेड हार्डवेयर, उपग्रह संचार, इलेक्ट्रॉनिक युद्ध तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता–सक्षम निगरानी प्लेटफॉर्म जैसे रणनीतिक अनुप्रयोगों से संबंधित अनुसंधान को प्रोत्साहित करके तकनीकी आत्मनिर्भरता के राष्ट्रीय दृष्टिकोण को साकार करने में सहयोग प्रदान करता है। केंद्र रक्षा के व्यापक क्षेत्र में एआई/एमएल, साइबर सुरक्षा, संचार एवं सिग्नल प्रोसेसिंग तथा वीएलएसआई अभिकल्पना से संबंधित विशेषज्ञता विकसित करने के उद्देश्य से संचार एवं सूचना प्रणाली में विशिष्ट एम.टेक. तथा पीएच.डी. कार्यक्रम संचालित कर रहा है।

केंद्र ने सहयोगात्मक परियोजनाओं, उन्नत अनुसंधान अवसंरचना तथा अंतर्विषयक नवाचार के माध्यम से आईआईटी इंदौर के विस्तारित अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र को सुदृढ़ करने में योगदान दिया है। सीएफडीएसटी उद्योग एवं शिक्षा जगत के बीच संवाद और सहयोग को प्रोत्साहित करता है तथा रक्षा एवं एयरोस्पेस क्षेत्रों के लिए प्रासंगिक अगली पीढ़ी की प्रौद्योगिकियों के विकास में सहयोग प्रदान करता है। केंद्र साइबर–भौतिक सुरक्षा, विश्वसनीय हार्डवेयर, बुद्धिमान संवेदन तथा स्वायत्त नौवहन प्रणालियों जैसे उभरते क्षेत्रों में विद्यार्थियों एवं शोधकर्ताओं को प्रशिक्षण देने में भी संलग्न है।

केंद्र की दीर्घकालिक परिकल्पना रक्षा आधुनिकीकरण, स्मार्ट निगरानी तथा अंतरिक्ष–आधारित अनुप्रयोगों के लिए सुरक्षित एवं विस्तार योग्य प्रौद्योगिकियों का विकास करना है। सीएफडीएसटी को आईआईटी इंदौर के विभिन्न विभागों के संकाय सदस्यों का सहयोग प्राप्त है, जिन्हें संचार प्रणालियों, साइबर सुरक्षा, वीएलएसआई, एआई/एमएल, फोटोनिक्स, सिग्नल प्रोसेसिंग, रोबोटिक्स तथा अर्धचालक प्रौद्योगिकियों में विशेषज्ञता प्राप्त है। डॉ. बोधिसत्व मजूमदार (प्रमुख, सीएफडीएसटी) एवं श्री बालकृष्ण विश्वकर्मा केंद्र का प्रबंधन कर रहे हैं।

सीएफडीएसटी के सदस्य

- डॉ. बोधिसत्व मजूमदार – प्रमुख, सीएफडीएसटी
- प्रोफेसर नीलेश कुमार जैन
- प्रोफेसर रजनीश मिश्रा
- प्रोफेसर राम बिलास पचौरी
- प्रोफेसर विमल भाटिया
- प्रोफेसर अभिरूप दत्ता
- डॉ. अभिषेक राजपूत
- प्रोफेसर अविनाश सोनवणे
- डॉ. अजय कुमार कुशवाहा
- प्रोफेसर आई. ए. पलानी
- डॉ. ललित बोराना
- डॉ. मृगेन्द्र दुबे
- प्रोफेसर नीलिमा सत्यम
- प्रोफेसर पंकज सगदेव
- डॉ. पुनीत गुप्ता
- डॉ. राम सजीवन मौर्य
- प्रोफेसर संजय कुमार सिंह
- डॉ. सौरभ दास
- प्रोफेसर शैबल मुखर्जी
- डॉ. विनोद कुमार
- डॉ. विवेक कन्हांगड
- डॉ. हेम झा
- डॉ. जयप्रकाश मुरुगेसन
- प्रोफेसर मुकेश कुमार
- प्रोफेसर निर्मला मेनन
- प्रोफेसर रुचि शर्मा
- प्रोफेसर सोमादित्य सेन
- डॉ. सुमंता समल
- प्रोफेसर सूर्य प्रकाश
- डॉ. स्वामीनाथन रामबद्रन
- प्रोफेसर नेमिनाथ हुब्बल्ली
- प्रोफेसर मनीष कुमार गोयल
- डॉ. गौरीनाथ बांदा
- डॉ. के. ईश्वर प्रसाद
- प्रोफेसर संतोष कुमार विश्वकर्मा
- डॉ. सप्तर्षि घोष
- प्रोफेसर सोमनाथ डे
- डॉ. इंद्रसेन सिंह
- डॉ. अयान मंडल
- प्रोफेसर संजराम प्रेमजीत खंगनबा
- प्रोफेसर गण्टि एस. मूर्ति
- डॉ. विजय कुमार सोहनी

सीएफडीएसटी में कार्यालय कर्मचारी

- श्री बालकृष्ण विश्वकर्मा

प्रमुख उपलब्धियाँः कोविड–19 महामारी के दौरान आयोजित वेबिनार

- डॉ. अजय कुमार, आईएएस, रक्षा सचिव, भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय द्वारा "भारतीय रक्षा उद्योगः एक उभरता हुआ क्षेत्र" विषय पर विशेषज्ञ व्याख्यान।
- मेजर जनरल ए. के. चन्नन, पीवीएसएम, एसएम, अतिरिक्त महानिदेशक, आर्मी डिज़ाइन ब्यूरो द्वारा "सैन्य युद्ध में परिवर्तनकारी प्रभाव डालने वाली प्रौद्योगिकी" विषय पर विशेषज्ञ व्याख्यान।
- लेफ्टिनेंट जनरल वी. जी. खंडारे, पीवीएसएम, एवीएसएम, एसएम (सेवानिवृत्त), सैन्य सलाहकार, राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय द्वारा "राष्ट्रीय सुरक्षा एवं समग्र राष्ट्रीय शक्ति में प्रौद्योगिकी की भूमिका" विषय पर विशेषज्ञ व्याख्यान।
- 26 अगस्त 2020 को आयुध प्रतिष्ठानों में अनुसंधान एवं विकास के अवसरों पर एक दिवसीय कार्यशाला (आर्मरेब–2020) का आयोजन।





उद्यमिता शिक्षा एवं विकास केंद्र (सीईईडी)

केंद्र के बारे में

उद्यमिता शिक्षा एवं विकास केंद्र (सीईईडी), आईआईटी इंदौर की एक पहल है, जो नवाचार एवं उद्यमिता के क्षेत्र में शिक्षा प्रदान करने के लिए समर्पित है। सीईईडी आईआईटी इंदौर के विद्यार्थियों के लिए शैक्षणिक पाठ्यक्रमों के साथ–साथ बाहरी समुदाय के सदस्यों के लिए अल्पकालिक कार्यक्रम एवं संकाय विकास संबंधी पहलें भी संचालित करता है।

शैक्षणिक कार्यक्रम

सीईईडी ऑटम सत्र 2022 से आईआईटी इंदौर के सभी स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएच.डी. विद्यार्थियों के लिए 'उद्यमिता की आधारभूत अवधारणाएँ' शीर्षक से एक ओपन इलेक्टिव पाठ्यक्रम संचालित कर रहा है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य अनुभवात्मक अधिगम के माध्यम से नवाचार एवं उद्यमिता संबंधी कौशल को प्रोत्साहित करना है। नियमित कक्षा व्याख्यानों के अतिरिक्त, इसमें संबंधित क्षेत्रों के विशेषज्ञों, स्टार्टअप संस्थापकों, आईआईटी एवं आईआईएम के संकाय सदस्यों, एंजेल निवेशकों तथा अन्य अनुभवी पेशेवरों के आमंत्रित व्याख्यान भी शामिल हैं। पाठ्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थी समूहों में कार्य करते हुए अपने स्टार्टअप विचारों पर आधारित व्यावसायिक योजनाएँ तैयार करेंगे, जिन्हें प्रारंभिक वित्तपोषण उपलब्ध कराया जाएगा। इन योजनाओं का मूल्यांकन विशेषज्ञ समिति द्वारा किया जाएगा। इस वर्ष इस पाठ्यक्रम में 46 विद्यार्थियों ने पंजीकरण कराया।

सदस्य

- प्रो. मोबिन शेख (प्रभारी प्राध्यापक)
- डॉ. अनन्या घोषाल
- डॉ. शोमिक दासगुप्ता
- डॉ. आशुतोष मांडपे
- डॉ. मोहनसुंदरी थंगावेल
- प्रो. रुचि शर्मा
- डॉ. स्वामीनाथन आर.
- सुश्री सोनल राय (कनिष्ठ सहायक)

प्रमुख उपलब्धियाँ

- सीईईडी, आईआईटी इंदौर ने आईआईटीआई एडवांस्ड सेंटर फॉर एंटरप्रेन्योरशिप (एसीई) फाउंडेशन तथा एमएसएमई डीएफओ, इंदौर के सहयोग से सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) के लिए विभिन्न स्थानों पर चार जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए। इन कार्यक्रमों के माध्यम से एमएसएमई की डिज़ाइन योजना के बारे में जागरूकता प्रदान की गई।

- सीईईडी ने आईआईटीआई एसीई फाउंडेशन एवं एमएसएमई डीएफओ, इंदौर के सहयोग से इंदौर के विभिन्न स्थानों, जिनमें आईआईटी इंदौर भी शामिल है, पर पाँच उद्यमिता जागरूकता कार्यक्रम (ईएपी), एक प्रबंधन विकास कार्यक्रम (एमडीपी) तथा एक उन्नत उद्यमिता कौशल विकास कार्यक्रम (ईएसडीपी) आयोजित किया। इन कार्यक्रमों से विद्यार्थियों, स्टार्टअप संस्थापकों, संस्थागत कर्मचारियों, उद्यमियों एवं एमएसएमई प्रतिनिधियों सहित 500 से अधिक प्रतिभागियों को लाभ मिला।

कार्यक्रम की झलक






4 डिज़ाइन स्कीम जागरूकता कार्यक्रम






उन्नत उद्यमिता कौशल विकास कार्यक्रम






एमडीपी कार्यक्रम






05 ईएपी

भारतीय वैज्ञानिक ज्ञान परंपरा केंद्र (सीआईएसकेएस)

केंद्र के बारे में

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर (आईआईटी इंदौर) में भारतीय वैज्ञानिक ज्ञान परंपरा केंद्र (सीआईएसकेएस) की स्थापना जून 2021 में भारत की विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विरासत को समझने, संरक्षित करने, शिक्षण एवं आधुनिक संदर्भों के अनुरूप विकसित करने के उद्देश्य से की गई थी। यह केंद्र विशेष रूप से भारत की वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी विरासत तथा आधुनिक विश्व में उसकी प्रासंगिकता पर ध्यान केंद्रित करता है। इसके प्रमुख अध्ययन क्षेत्र गणित, खगोल विज्ञान, धातुकर्म, जीवविज्ञान, कृषि, अभियांत्रिकी एवं चिकित्सा जैसे मूलभूत विज्ञान विषय हैं। यह केंद्र भारतीय ज्ञान प्रणालियों के भाषा–अध्ययन, मानविकी अथवा सामाजिक विज्ञान संबंधी पहलुओं पर ध्यान केंद्रित नहीं करता है।

शैक्षणिक कार्यक्रम

केंद्र के शैक्षणिक कार्यक्रमों में संस्कृत भाषा प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम (सीसीएसएल) तथा संस्कृत भाषा डिप्लोमा पाठ्यक्रम (डीसीएसएल) शामिल हैं। ये पाठ्यक्रम परिसर के भीतर एवं बाहर, सभी इच्छुक व्यक्तियों के लिए उपलब्ध हैं।

केंद्र के सक्रिय एवं समर्पित संकाय सदस्यों का समूह संस्कृत अनुसंधान की शैक्षणिक गतिविधियों तथा भारत की विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विरासत से संबंधित प्रशिक्षण के लिए अनुकूल वातावरण विकसित करने की दिशा में प्रयासरत है।

संकाय सदस्यों की कुल संख्या:	21
प्राध्यापक:	04
सह प्राध्यापक:	06
सहायक प्राध्यापक ग्रेड I	01
सहायक प्राध्यापक ग्रेड II	शून्य

कार्यक्रम	विद्यार्थी प्रवेश	प्राप्त उपाधि / प्रमाणपत्र संख्या
संस्कृत भाषा प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम (सीसीएसएल)	22	10
संस्कृत भाषा डिप्लोमा पाठ्यक्रम (डीसीएसएल) (प्रगतिरत)	05	06

परियोजनाएँ

परियोजना की स्थिति	प्रायोजित परियोजनाएँ	परामर्श परियोजनाएँ
नई परियोजनाएँ	3	शून्य
जारी परियोजनाएँ	6	शून्य
पूर्ण परियोजनाएँ	2	शून्य

1. भारतीय ज्ञान परंपरा एवं विरासत के तत्व

यूजीसी–आईकेएस के तत्वावधान में 4–6 जुलाई 2025 तक "भारतीय ज्ञान प्रणालियों एवं विरासत के तत्व" विषय पर एक कार्यशाला आयोजित की गई। प्रो. गण्टि एस. मूर्ति, डॉ. मोहन राघवन एवं डॉ. हर्ष सिम्हा के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यक्रम में प्रतिभागियों को भारतीय ज्ञान परंपराओं की प्रासंगिकता एवं अनुप्रयोगों से परिचित कराया गया। यह कार्यशाला ज्ञानार्जन एवं बौद्धिक आदान–प्रदान का एक समृद्ध मंच सिद्ध हुई।



2. बालावधानमः मन पर नियंत्रण की कला

विद्यालयी विद्यार्थियों के लिए डॉ. संपदानंद मिश्रा जी द्वारा 23–24 अगस्त 2025 को दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। प्रो. गण्टि सूर्यनारायण मूर्ति जी के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यक्रम में मानसिक प्रशिक्षण अभ्यासों के माध्यम से एकाग्रता, स्मरणशक्ति एवं मानसिक चपलता बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया गया। यह सत्र अत्यंत संवादात्मक रहा और प्रतिभागियों ने इसकी सराहना की।



3. रामायण एवं महाभारत

11 सितंबर 2025 को अमी गणात्रा जी द्वारा एक विशेष व्याख्यान एवं कार्यशाला आयोजित की गई। उन्होंने रामायण एवं महाभारत की प्रामाणिक समझ प्रस्तुत करते हुए इनके वास्तविक आख्यानों तथा गहन दार्शनिक महत्त्व पर प्रकाश डाला। यह सत्र अत्यंत रोचक रहा और प्रतिभागियों द्वारा इसकी सराहना की गई।



4. चंचल मन पर नियंत्रण की कला

7 अक्टूबर 2025 को इस्कॉन के परम कृपालु चौतन्य चरण दास जी महाराज द्वारा एक विशेष सत्र आयोजित किया गया। भगवद्गीता से प्रेरणा लेते हुए उन्होंने आज की तेज़ गति वाली जीवनशैली में एकाग्रता, आत्मानुशासन एवं मन को नियंत्रित करने के व्यावहारिक उपाय साझा किए। प्रतिभागियों ने इस सत्र की सराहना की।

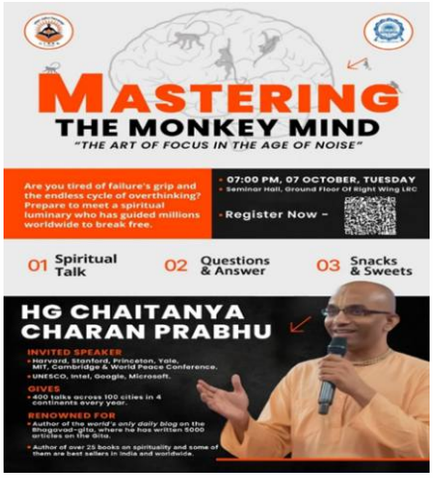

5. पारंपरिक खगोलीय उपकरणों के निर्माण पर व्यावहारिक कार्यशाला

प्रो. नचिकेता शर्मा जी के मार्गदर्शन में इंदौर जिले के विद्यालयी शिक्षकों के लिए 31 अक्टूबर से 1 नवंबर 2025 तक भारतीय ज्ञान परंपरा (आईकेएस) पर डेढ़ दिवसीय व्यावहारिक कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें कुल 40 शिक्षकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा पारंपरिक खगोलीय उपकरणों एवं भारत की वैज्ञानिक विरासत के संबंध में व्यावहारिक जानकारी प्राप्त की।

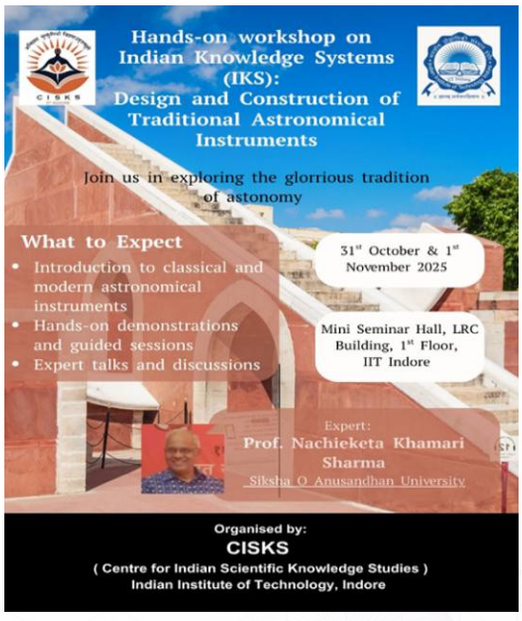

6. प्रेरणा संवाद

12 नवंबर 2025 को एकात्म धाम के सहयोग से आयोजित प्रेरणा संवाद संगीत, संस्कृति एवं आध्यात्मिकता को एक मंच पर लाने वाला एक अनूठा कार्यक्रम था। इसमें राहुल वेल्लाल की मनमोहक संगीत प्रस्तुति हुई, जिसमें आईआईटी इंदौर के भीतर एवं बाहर से संगीतप्रेमियों ने भाग लिया। इस अवसर पर आचार्य जोनास मासेट्टी, स्वामी शुद्धिदानंद जी एवं शारदा माता जी की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम को विशेष बना दिया। उन्होंने अपने प्रेरणादायक विचारों एवं आशीर्वचनों से श्रोताओं को लाभान्वित किया।

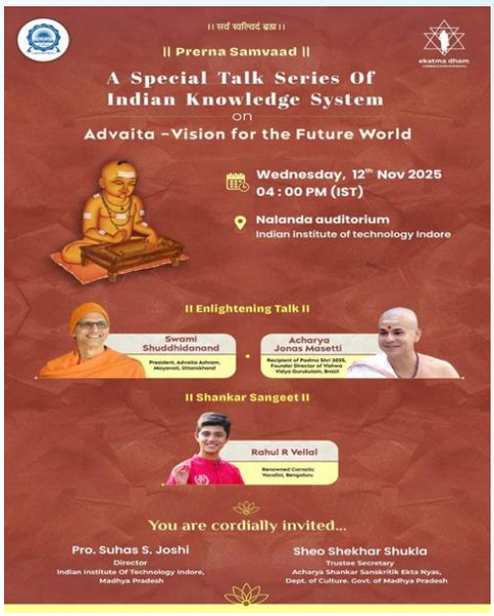

7. राष्ट्रीय युवा दिवस समारोह

स्वामी विवेकानंद की जयंती के उपलक्ष्य में आईआईटी इंदौर में 12 जनवरी 2026 को राष्ट्रीय युवा दिवस मनाया गया। इस अवसर पर शक्ति, अनुशासन एवं नवाचार को प्रोत्साहित करने वाली गतिविधियाँ आयोजित की गईं। योग एवं फिटनेस क्लब ने प्रशिक्षक जया नेमा के नेतृत्व में क्षितिज मंडपम में योग सत्र आयोजित किया। इसी दौरान सीआरडीटी एवं सीआईएसकेएस ने संयुक्त रूप से विचार प्रस्तुति प्रतियोगिता आयोजित की, जिसमें विद्यार्थियों ने "धार्मिक दृष्टिकोण से कृत्रिम बुद्धिमत्ता" से लेकर "वैदिक विज्ञान एवं राष्ट्रीय सुरक्षा" जैसे विषयों पर अपने नवाचारी विचार प्रस्तुत किए।



8. विभागीय पुस्तकालय

विभागीय पुस्तकालय की औपचारिक स्थापना जनवरी 2025 में की गई।

9. शिक्षा मंत्रालय के आईकेएस प्रभाग द्वारा सीआईएसकेएस का आईकेएस केंद्र के रूप में चयन

शिक्षा मंत्रालय के भारतीय ज्ञान परंपरा (आईकेएस) प्रभाग द्वारा सीआईएसकेएस का चयन आईकेएस केंद्र के रूप में किया गया। यह चयन आईकेएस प्रभाग द्वारा प्रदान की जाने वाली सर्वोच्च संस्थागत मान्यता है। चयन प्रक्रिया अत्यंत प्रतिस्पर्धात्मक रही, जिसमें प्राप्त 184 आवेदनों में से केवल 9 केंद्रों का चयन किया गया। इस प्रस्ताव का नेतृत्व प्रो. ईश्वर प्रसाद कोरिमिल्ली एवं प्रो. गण्टि एस. मूर्ति ने किया।

10. सीआईएसकेएस में आईकेएस केंद्र के प्रमुख अनुसंधान क्षेत्र

सीआईएसकेएस में स्थापित आईकेएस केंद्र भारत की धातुकर्म परंपराओं, विशेषकर लौह धातुकर्म, तथा भारतीय पारंपरिक कृषि पद्धतियों से प्रेरित सतत कृषि पर ध्यान केंद्रित करेगा। केंद्र के उद्देश्य राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के अनुरूप हैं और खाद्य सुरक्षा एवं धातुकर्म से जुड़ी महत्त्वपूर्ण चुनौतियों के समाधान हेतु पारंपरिक ज्ञान को समकालीन वैज्ञानिक प्रगति के साथ एकीकृत करने पर बल देते हैं। अनुसंधान के अतिरिक्त, केंद्र आधुनिक अभियांत्रिकी विषयों के साथ भारतीय ज्ञान परंपरा के शैक्षणिक एकीकरण को भी प्राथमिकता देता है।

संगणक एवं सूचना प्रौद्योगिकी केंद्र (सीआईटीसी)





सीआईटीसी भवन

संगणक एवं सूचना प्रौद्योगिकी केंद्र (सीआईटीसी) संस्थान के मूलभूत आईटी अवसंरचना एवं डिजिटल सेवाओं के प्रावधान और रखरखाव का कार्य निरंतर कर रहा है। वर्ष 2025–26 के दौरान, सीआईटीसी ने आईआईटी इंदौर की बढ़ती शैक्षणिक, अनुसंधान एवं प्रशासनिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संस्थान के नेटवर्क, साइबर सुरक्षा, स्वचालन, वेब सेवाओं, शैक्षणिक प्रणालियों तथा डेटा सेंटर अवसंरचना को और सुदृढ़ किया।

नेटवर्क कनेक्टिविटी एवं साइबर अवसंरचना

सीआईटीसी शैक्षणिक भवनों, छात्रावासों, आवासीय क्षेत्रों, प्रयोगशालाओं, स्वास्थ्य केंद्र तथा प्रशासनिक अनुभागों में विस्तृत सुदृढ़ 10 जीबीपीएस बैकबोन नेटवर्क संरचना के माध्यम से पूरे परिसर में उच्च गति की वायर्ड एवं वायरलेस कनेक्टिविटी प्रदान करता है। परिसर का बैकबोन नेटवर्क 144–कोर ऑप्टिकल फाइबर अवसंरचना के माध्यम से उच्च उपलब्धता वाली नेटवर्क प्रणालियों से जुड़ा हुआ है। वर्ष के दौरान नेटवर्क की अतिरिक्त व्यवस्था, ओएफसी कनेक्टिविटी, रैक अवसंरचना, वाई–फाई कवरेज, संरचित केबलिंग तथा केंद्रीकृत निगरानी प्रणालियों को सुदृढ़ करने के लिए अनेक गतिविधियाँ की गईं। प्रयोगशाला परिसर, पशु गृह, खगोल विज्ञान प्रयोगशाला, बहुस्तरीय कार पार्किंग तथा अन्य निर्माणाधीन सुविधाओं सहित नवनिर्मित भवनों में भी आईटी सेवाएँ प्रारंभ की गईं।

फोर्टिनेट नेक्स्ट जनरेशन फायरवॉल (एनजीएफडब्ल्यू) की स्थापना

वर्ष के दौरान साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में एक प्रमुख पहल के अंतर्गत एंटरप्राइज–स्तरीय नेक्स्ट जनरेशन फायरवॉल (एनजीएफडब्ल्यू), फोर्टिनेट फोर्टीगेट 900जी की खरीद, स्थापना एवं कमीशनिंग की गई। इससे नेटवर्क ट्रैफिक की बेहतर दृश्यता, केंद्रीकृत सुरक्षा नीति प्रबंधन, उन्नत जोखिम संरक्षण, वीपीएन सेवाओं तथा इंटरनेट पहुँच नियंत्रण के माध्यम से संस्थान की साइबर सुरक्षा व्यवस्था और सुदृढ़ हुई।

डेटा सेंटर अवसंरचना

सीआईटीसी का डेटा सेंटर संस्थान की महत्त्वपूर्ण अवसंरचना को संचालित करता है, जिसमें सर्वर, वर्चुअलाइजेशन प्लेटफॉर्म, स्टोरेज प्रणालियाँ, एंटरप्राइज एप्लिकेशन तथा उच्च–प्रदर्शन संगणना सुविधाएँ शामिल हैं। डेटा सेंटर में 120 केवीए क्षमता की यूपीएस प्रणाली तथा 320 केवीए क्षमता की डीजी सुविधा उपलब्ध है। सीआईटीसी में कई इन्फिनीबैंड लिनक्स क्लस्टर स्थापित हैं, जिनमें कुल 3,500 से अधिक सीपीयू कोर तथा 500 टीबी स्टोरेज क्षमता उपलब्ध है। डेटा सेंटर में डीजीएक्स एनवीआईडीआईए क्लस्टर भी स्थापित है। निर्बाध सेवाएँ सुनिश्चित करने के लिए पूरे वर्ष नियमित निगरानी, बैकअप सत्यापन, सुरक्षा पैचिंग तथा रखरखाव संबंधी गतिविधियाँ की गईं।

शैक्षणिक स्वचालन, ईआरपी सेवाएँ एवं वेब सेवाएँ

एआरओएल, ईआरपी, एचआरएमएस, भर्ती तथा संबंधित स्वचालन प्रणालियों में अनेक विकास एवं उन्नयन संबंधी गतिविधियाँ संचालित की गईं। प्रमुख गतिविधियों में ऑनलाइन फीडबैक, ग्रेड संग्रहण एवं परिणाम घोषणा कार्यप्रवाह; पाठ्यक्रम पंजीकरण एवं शैक्षणिक प्रबंधन मॉड्यूल; विद्यार्थी प्रोफाइल प्रबंधन, पीएसपीसी एवं व्यापक परीक्षा मॉड्यूल; पुराने शैक्षणिक मॉड्यूल का नए एआरओएल में स्थानांतरण; एचआरएमएस एवं स्वास्थ्य सेवा मॉड्यूल का उन्नयन; गैर–शिक्षण कर्मचारियों की भर्ती के लिए ई–समर्थ का कार्यान्वयन; फाइल ट्रैकिंग प्रणाली का उन्नयन एवं आंतरिक स्वचालन प्रणालियाँ; विभागीय एवं आयोजन संबंधी वेबसाइटों का विकास एवं रखरखाव; संस्थान के आयोजनों के लिए एकीकृत भुगतान गेटवे सहित ऑनलाइन पंजीकरण पोर्टल; भर्ती पोर्टल एवं आरटीआई वेब पोर्टल का उन्नयन; आंतरिक आईटी सेवा पोर्टल एवं प्रशासनिक डैशबोर्ड का विकास; तथा वेब एप्लिकेशन एवं वर्चुअल अवसंरचना की सुरक्षित होस्टिंग एवं प्रबंधन शामिल हैं।

आवश्यक आईटी सेवाएँ एवं तकनीकी सहायता

सीआईटीसी संस्थान की महत्त्वपूर्ण आईटी सेवाओं का निर्बाध संचालन एवं सहयोग सुनिश्चित करता रहा। इनमें संस्थान की वेबसाइट की होस्टिंग एवं रखरखाव, आंतरिक एवं बाहरी डीएनएस सेवाएँ, परिसर–व्यापी वाई–फाई एवं इंटरनेट सुविधा, एलडीएपी/रेडियस–आधारित केंद्रीकृत प्रमाणीकरण, डीएचसीपी–आधारित आईपी आवंटन सेवाएँ, आधिकारिक ईमेल एवं सहयोग सेवाएँ, ओपनवीपीएन रिमोट एक्सेस सेवाएँ, आईपी टेलीफोनी अवसंरचना तथा टिकट–आधारित ऑनलाइन सहायता प्रणाली शामिल हैं।
शैक्षणिक भवनों, छात्रावासों, आवासीय क्षेत्रों, प्रयोगशालाओं, सम्मेलन कक्षों एवं प्रशासनिक अनुभागों में निरंतर तकनीकी सहायता प्रदान की गई।

हमारी टीम के सदस्य

- प्रो. सत्य एस. बुलुसु, अधिष्ठाता, आईटी, अवसंरचना एवं स्वचालन
- श्री जीनियस संजोग, सिस्टम मैनेजर
- श्री जितेंद्र गुप्ता, तकनीकी अधीक्षक
- श्री धीरज विजयवर्गीय, कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक
- श्री सुभाष सोनी, कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक
- सुश्री प्रिंसी अवधिया, एप्लिकेशन सॉफ्टवेयर डेवलपर
- सुश्री प्रीति रघुवंशी, एप्लिकेशन सॉफ्टवेयर डेवलपर
- श्री प्रहलाद सिंह पंवार, सिस्टम विश्लेषक
- श्री शैलेश कौशल, तकनीकी अधीक्षक
- श्री सुभा जाना, तकनीकी अधीक्षक
- श्री वैभव राठौर, एप्लिकेशन सॉफ्टवेयर डेवलपर
- सुश्री आस्था तिवारी, एप्लिकेशन सॉफ्टवेयर डेवलपर
- श्री संदीप नरोलिया, एप्लिकेशन सॉफ्टवेयर डेवलपर
- श्री शैलेंद्र तिवारी, एप्लिकेशन सॉफ्टवेयर डेवलपर
- सुश्री कंचन निकोसे, सॉफ्टवेयर गुणवत्ता अभियंता

सीआईटीसी संस्थान के शैक्षणिक, अनुसंधान एवं प्रशासनिक तंत्र के लिए सुरक्षित, विस्तार योग्य एवं विश्वसनीय डिजिटल अवसंरचना तथा स्वचालन सेवाएँ उपलब्ध कराने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

ग्रामीण विकास एवं प्रौद्योगिकी केंद्र (सीआरडीटी)

केंद्र के बारे में

संस्थान ने अप्रैल 2020 में ग्रामीण विकास एवं प्रौद्योगिकी केंद्र (सीआरडीटी) की स्थापना शोधकर्ताओं, स्वयंसेवकों, कार्यकर्ताओं, शिक्षकों तथा अन्य संबंधित व्यक्तियों के लिए एक प्रमुख केंद्र के रूप में की, ताकि वे ग्रामीण सशक्तीकरण एवं प्रगति के लिए सहयोग कर सकें और समाधान विकसित कर सकें। सीआरडीटी सहभागितापूर्ण, सतत, लोकतांत्रिक, पारदर्शी एवं लैंगिक संवेदनशील प्रक्रियाओं को अपनाते हुए उपयुक्त एवं जनहितैषी प्रौद्योगिकियों के विकास तथा अनुप्रयोग के माध्यम से ग्रामीण आबादी को उनकी जीवन स्थितियों में सुधार लाने हेतु सशक्त एवं सक्षम बनाने का प्रयास करता है।

शैक्षणिक कार्यक्रम

ग्रामीण विकास एवं प्रौद्योगिकी केंद्र (सीआरडीटी) ने विशेष रूप से ग्रामीण विकास एवं प्रौद्योगिकी में पीएच.डी. कार्यक्रम प्रारंभ किया है। इसमें कृषि एवं पर्यावरणीय अर्थशास्त्र, सततता अध्ययन, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव, खाद्य सुरक्षा तथा जल–ऊर्जा–खाद्य संबंध, कृषि संबंधी समस्याओं में कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीकों का अनुप्रयोग, ग्रामीण क्षेत्रों के लिए निर्माण उत्पाद, ग्रामीण अवसंरचना में मृदा स्थिरीकरण हेतु सतत पदार्थों का विकास एवं मूल्यांकन, ग्रामीण क्षेत्रों में आपदा जोखिम न्यूनीकरण, सतत पारिस्थितिकी तंत्र के लिए फसलों में रोगों का शीघ्र पता लगाना, ग्रामीण अवसंरचना विकास के सामाजिक–आर्थिक प्रभावों का मूल्यांकन, खाद्य एवं जैव–प्रसंस्करण उपकरणों की अभिकल्पना एवं क्षमता विस्तार, सतत ग्रामीण विकास के लिए पारंपरिक ज्ञान एवं प्रथाओं का आधुनिक प्रौद्योगिकियों के साथ एकीकरण, प्राकृतिक संसाधन एवं पर्यावरणीय अर्थशास्त्र, कृषि पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव, जनजातीय अध्ययन, नीति विश्लेषण, ग्रामीण विकास, कृषि मशीनरी एवं ऑटोमोबाइल में शोर, कंपन एवं कठोरता, पोषक तत्त्व–ऊर्जा–जल संबंध, ग्रामीण आवास के लिए किफायती एवं सतत निर्माण तकनीकों तथा सामग्रियों का अनुकूलन, कृषि–पारिस्थितिक प्रणालियों की प्रत्यास्थता, कृषि हेतु सेंसर, सतत निर्माण, सतत ग्रामीण स्वास्थ्य सेवा, खाद्य भंडारण की सतत तकनीकें तथा वीएलएसआई परिपथ एवं प्रणाली अभिकल्पना जैसे अनुसंधान क्षेत्र शामिल हैं।

संकाय सदस्यों की संख्या	*13*
प्राध्यापक:	11
सह प्राध्यापक:	02

क्र. सं.	*विद्यार्थी का नाम*	*पर्यवेक्षक का नाम*
1	*श्री हब्तामु मेलेस्से डिचा* (शिक्षा मंत्रालय तथा नवाचार एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय, इथियोपिया के अंतर्गत अर्बा मिंच विश्वविद्यालय, इथियोपिया से संयुक्त एकीकृत पीएच.डी. कार्यक्रम)	*प्रो. संदीप चौधरी*
2	*श्री सतीश डाबे*	*प्रो. संदीप चौधरी*
3	*श्री बुद्धदेव घोष*	*प्रो. गण्टि एस. मूर्ति*
4	*श्री आशीष राठौर*	*प्रो. संदीप चौधरी*
5	*श्री किशन कुमार यादव*	*प्रो. अरुणा तिवारी,* *प्रो. पवन कुमार कांकर*
6	*सुश्री अर्जू त्रिपाठी*	*डॉ. हेम चंद्र झा*
ऐच्छिक कार्यक्रम: 02		
1. ग्रामीण अनुप्रयोगों के लिए अभिकल्पना चिंतन (आरडीटी 301/401/601)		
2. ग्रामीण प्रौद्योगिकी विकास हेतु क्षेत्रीय अनुभव (आरडीटी 201)		

उल्लेखनीय अनुसंधान एवं विकास गतिविधियाँ

क्र.सं.	कार्यक्रम का नाम	दिनांक	प्रतिभागियों की संख्या	सहयोगी संस्थान
1	वनस्पतियों एवं जैव विविधता प्रलेखन कार्यशाला	29–30 अक्टूबर, 2025	300	सिमरोल शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय, आईआईटी इंदौर
2	ग्रामीण विकास की दिशा में नवाचारः सर्वश्रेष्ठ विचार प्रस्तुति प्रतियोगिता	07 नवंबर, 2025	12	–
3	जैविक खेती, निर्माण सामग्री तथा पीडीआई प्रणाली के माध्यम से फसल कटाई के उपरांत समाधानों से संबंधित तकनीकों पर केंद्रित दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम	19–20 नवंबर, 2025	190	–
4	ग्रामीण जनसमुदाय के लिए प्रौद्योगिकियों को समझने हेतु विद्यार्थियों के लिए कौशल विकास कार्यक्रम	02 दिसंबर, 2025	10	माता गुजरी गर्ल्स पब्लिक स्कूल, इंदौर
5	राष्ट्रीय युवा दिवस एवं स्वामी विवेकानंद की विरासत के उपलक्ष्य में विचार प्रस्तुति प्रतियोगिता	12 जनवरी, 2026	32	आईआईएम, इंदौर
6	मध्य प्रदेश में सुगंध एवं स्वाद उद्योग की संभावनाओं पर दो दिवसीय कार्यशाला	12 फरवरी, 2026	100	सुगंध एवं सुरस विकास केंद्र (एफएफडीसी), कन्नौज
7	वर्मीकम्पोस्टिंग एवं निर्माण सामग्री पर केंद्रित दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम	21–22 फरवरी, 2026	95	–

परियोजनाएँ

परियोजनाएँ	बाह्य प्रायोजित परियोजना
जारी परियोजनाएँ	04
पूर्ण परियोजनाएँ	01

बाह्य वित्तपोषित परियोजनाए

क्र. सं.	परियोजना का शीर्षक	वित्तपोषण एजेंसी	अवधि	वित्तपोषण राशि (₹)	सहयोगी संगठन	प्रधान अन्वेषक / सह–प्रधान अन्वेषक	परियोजना कर्मचारी	स्थिति
1	विभिन्न उत्पादों के लिए संपीडित रंगीन मिश्रित सामग्री के प्रौद्योगिकी प्रसार द्वारा सतत ग्रामीण अवसंरचना को समर्थन	विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), भारत सरकार	2023–2025	59,40,000	टीआईईटी, पटियाला, भारत	प्रधान अन्वेषक – प्रो. संदीप चौधरी	–	पूर्ण
2	"श्रमिक विकास" सामुदायिक भागीदारी प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से सिमरोल ब्लॉक, इंदौर जिला, मध्य प्रदेश में अनुसूचित जाति के श्रमिकों के लिए आजीविका संबंधी हस्तक्षेप	विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी)	2025–2028	68,85,115	सिमरोल पंचायत	प्रधान अन्वेषक – प्रो. संदीप चौधरी	डॉ. शांतनु सामंत	प्रगतिरत
3	प्रकाश–गतिशील निष्क्रियकरण तकनीक का उपयोग करते हुए पारंपरिक फसलोत्तर प्रबंधन के विकल्प के रूप में पोर्टेबल किट का विकास	एग्रीहबः कृषि नवाचार केंद्र (एआई एवं डीप लर्निंग सेंटर ऑफ एक्सीलेंस) योजना, आईआईटी इंदौर	2025–2027	12,50,000	–	सह–प्रधान अन्वेषक – प्रो. देबायन सरकार	सुश्री प्रियंका चव्हाण	प्रगतिरत
4	पारंपरिक फसलोत्तर प्रबंधन के विकल्प के रूप में पोर्टेबल किट का विकास	टीआईएच फाउंडेशन फॉर आईओटी एवं आईओई	2025–2027	1,29,57,438	–	प्रधान अन्वेषक – प्रो. देबायन सरकार	डॉ. रोबिंदो चटर्जी	प्रगतिरत
5	हरित भविष्य के लिए पर्यावरणीय सततता एवं ऊर्जा प्रौद्योगिकियों में नवाचार को प्रोत्साहन	एएनआरएफ पेयर परियोजना – सक्षम (ग्रीन–एफआईईएसटी)	2025–2030	33,50,00,000	–	प्रधान अन्वेषक – प्रो. देबायन सरकार	–	प्रगतिरत

प्रकाशन

विवरण	प्रकाशित पुस्तक	पुस्तकों में अध्याय	सम्मेलनों में शोध–पत्र	शोध–पत्रिकाओं में शोध–पत्र	पेटेंट
कुल	–	–	1	8	2 स्वीकृत 2 दायर

शोध–पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध–पत्र

1. डिचा, एच. एम., हुसैन, एम. एन., चौधरी, एस. एवं कृष्णराज, आर. "उच्च तापमान पर संरचनात्मक पुनर्चक्रित एग्रीगेट कंक्रीट के गुणों में सुधार हेतु केले के रेशे–प्रबलित डायटोमेशियस अर्थ स्लरी उपचार", डिस्कवर सस्टेनेबिलिटी, 2026, 7, 122। प्रभाव कारकः 3। डीओआईः https: / / doi-org / 10-1007 / s43621&025&02489&8

2. डिचा, एच. एम., चौधरी, एस., हुसैन, एम. एन. एवं कृष्णराज, आर. "प्रबलित पुनर्चक्रित एग्रीगेट कंक्रीट संरचनाओं का स्रोत–आधारित अपरूपण व्यवहारः एक समीक्षा", डिस्कवर मैटेरियल्स, 2026, 6(3)। प्रभाव कारकः 5.1। डीओआईः https: / / doi-org / 10-1007 / s43939&025&00478&2

3. पाराडकर, ए., शर्मा, ए. एवं चौधरी, एस. "अपशिष्ट से संसाधन तकः निर्माण क्षेत्र में चक्रीय अर्थव्यवस्था हेतु आयामी पत्थर के अपशिष्ट का जियोपॉलिमर मोर्टार में मूल्यवर्धन", जर्नल ऑफ एशियन कंक्रीट फेडरेशन, 2026, 12(1), 1–11। डीओआईः https: / / doi-org / 10-18702 / acf-2026-12-1-1

4. लेंका, बी. एस., मिश्रा, आर. के. एवं सरकार, डी. "दृश्य प्रकाश–प्रेरित फ्लेविन उत्प्रेरणः ओ–(नैफ्थो)क्विनोन मध्यवर्ती के माध्यम से नैफ्थोख्2,1–इ,फ्यूरान के संश्लेषण का एक हरित मार्ग", ऑर्गेनिक लेटर्स, 2025, 27(29), 7738–7743। प्रभाव कारकः 5। डीओआईः https: / / doi-org / 0-1021@acs-orglett-5c00744

5. गनी, एम. ए., रॉय, एन. एस., रज़ा, ए., कोनिग, बी. एवं सरकार, डी. "फ्लेविन–प्रकाश–उत्प्रेरित फिनॉल का बेंज़िलिक क्रियात्मकीकरण, स्पाइरोचक्रीकरण एवं स्पाइरोएपॉक्सीडेशन", एसीएस कैटालिसिस, 2025, 15(20), 17078–17088। प्रभाव कारकः 13.1। डीओआईः https: / / doi-org / 10-1021 / acscatal-5c05312

6. बिशी, एस., पास्तोरे, जी., क्राइटमायर, पी., राइज़र, ओ. एवं सरकार, डी. "जी–सी3एन4–सक्षम प्रकाश–उत्प्रेरित 3–हाइड्रॉक्सीआइसोइंडोलिन–1–ओन का संश्लेषण", यूरोपियन जर्नल ऑफ ऑर्गेनिक केमिस्ट्री, 2026। प्रभाव कारकः 2.7।

7. सामंत, एस., डे, ए., रॉय, एस. एवं सरकार, डी. "एरिल–आइनोन्स / एन–एरिलप्रोपायोलामाइड्स का दृश्य प्रकाश–प्रेरित डीएरोमेटिव कैस्केड चक्रीकरण द्वारा फॉस्फोरोथायोलेटेड स्पाइरोख्5.5, एवं एजास्पाइरोख्4.5,ट्राइईनोन का निर्माण", ऑर्गेनिक केमिस्ट्री फ्रंटियर्स, 2026। प्रभाव कारकः 4.7। डीओआईः https: / / doi-org / 10-1039 / D6QO00411C

8. रॉय, एन. एस., गनी, एम. ए., बिशी, एस., नायक, बी. एस., सोनवणे, ए. एवं सरकार, डी. "भारत में ताज़ी उपज की भंडारण अवधि बढ़ाने हेतु एक सतत दृष्टिकोण के रूप में फ्लेविन–आधारित प्रकाशगतिक निष्क्रियकरण", एनपीजे साइंस ऑफ फूड। संशोधित शोध–पत्र पुनः प्रस्तुत।

सम्मेलन में प्रस्तुत शोध–पत्र

1. थंगावेल, एम. "जनजातीय परंपराओं के माध्यम से प्रत्यास्थता की पुनर्स्थापना: मध्य भारत के झाबुआ में हालमा जलग्रहण मॉडल का एक अध्ययन।" यूएस सोसाइटी फॉर इकोलॉजिकल इकोनॉमिक्स के 13वें द्विवार्षिक सम्मेलन, ओबरलिन में प्रस्तुति हेतु स्वीकृत; 18–21 जून, 2026।

पेटेंट

- दृश्य प्रकाश द्वारा सूक्ष्मजीवों के प्रकाशगतिक निष्क्रियकरण हेतु एक पोर्टेबल किट तथा उसकी विधि। स्वीकृति दिनांक: 20–03–2026। पेटेंट संख्या: 584119। आविष्कारक: रॉय, एन. एस. एवं सरकार, डी.।
- एकीकृत तापीय प्रबंधन एवं बहु–वायल अभिक्रिया सुविधा युक्त आईओटी–सक्षम दृश्य प्रकाश फोटो–रिएक्टर। आवेदन दिनांक: 01–05–2026। आवेदन संख्या: 202621055580। आविष्कारक: रॉय, एन. एस. एवं सरकार, डी.।
- गोबर–आधारित हल्की निर्माण सामग्री तथा उसकी निर्माण विधि। स्वीकृति दिनांक: 22–04–2026। पेटेंट संख्या: 587432। आविष्कारक: गुप्ता, एस. एवं चौधरी, एस.।
- खाद्य अपशिष्ट से प्राप्त पोषक माध्यम का उपयोग करके जीवाणु मोर्टार संरचना एवं उसकी निर्माण प्रक्रिया। आवेदन दिनांक: 26–07–2025। आवेदन संख्या: 202521071253।। आविष्कारक: ठाकरे, ए. ए., गुप्ता, एस., राजपूत, एस., झा, एच. सी. एवं चौधरी, एस.।

प्रसार गतिविधियाँ

विशेषज्ञ व्याख्यान			
क्र.सं.	दिनांक	वक्ता का नाम	व्याख्यान का विषय
1	11 अगस्त, 2025	विज्ञान भारती के प्रतिनिधि	मध्य प्रदेश एवं निकटवर्ती राज्यों में ग्रामीण विकास
2	01 अक्टूबर, 2025	सीए सैलेश अग्रवाल, एफसीए	वित्तीय साक्षरता, जागरूकता एवं ग्रामीण युवाओं का सशक्तीकरण
3	29 अक्टूबर, 2025	श्री मोहम्मद निज़ार के., परियोजना प्रबंधक, सीज़न वॉच	जैव विविधता अवलोकन एवं आँकड़ा प्रलेखन तकनीकें
4	30 अक्टूबर, 2025	श्री अजय गाडिकर, पक्षीविज्ञानी	पक्षियों का व्यवहार एवं परिसर में पक्षियों का अध्ययन

प्रतियोगिता			
क्र.सं.	दिनांक	कार्यक्रम का नाम	प्रतिभागियों की संख्या
1	27 सितंबर, 2025	ग्रामीण कला प्रतियोगिता	11

ग्रामीण अनुप्रयोग हेतु अभिकल्पना चिंतन (डिज़ाइन थिंकिंग फ़ॉर रूरल एप्लीकेशन – आरडीटी 301/401/601) पाठ्यक्रम के अंतर्गत क्षेत्रीय भ्रमण		
क्र.सं.	दिनांक	स्थान / भ्रमण का विवरण
1	30–31 अगस्त, 2025	शैक्षणिक भ्रमण: शिवगंगा (झाबुआ दर्शन यात्रा)
2	14–15 अक्टूबर, 2025	सुगंध एवं फ्लेवर विकास केंद्र (एफएफडीसी), कन्नौज, उत्तर प्रदेश में सुगंधित पदार्थों के संग्रह, पृथक्करण एवं उत्पाद विकास हेतु शैक्षणिक भ्रमण
3	09 मई, 2026	अंकितग्राम सेवाधाम आश्रम, उज्जैन का शैक्षणिक भ्रमण

सीआरडीटी की संगठनात्मक संरचना

प्रभारी प्राध्यापक

प्रो. देबायन सरकार



अनुसंधान रुचि के क्षेत्र:

- दृश्य प्रकाश द्वारा सूक्ष्मजीवों का निष्क्रियकरण
- दृश्य प्रकाश आधारित सूक्ष्मजीवों के प्रकाश–गतिशील निष्क्रियकरण का उपयोग करके सब्जियों का भंडारण
- जैव–सक्रिय प्राकृतिक उत्पादों का पृथक्करण एवं अनुप्रयोग

कृषि, वानिकी एवं पर्यावरण

प्रो. प्रीति शर्मा



अनुसंधान रुचि के क्षेत्र:

- कृषि अर्थशास्त्र (भूमि, जल एवं वनों का अर्थशास्त्र)
- विकास अर्थशास्त्र (ग्रामीण गरीबी एवं विकासशील देशों से संबंधित व्यापारिक मुद्दे)

प्रो. गण्टि एस. मूर्ति



अनुसंधान रुचि के क्षेत्र:

- मूल्यवर्धित जैव–उत्पादों एवं जैव–ईंधनों के उत्पादन हेतु जैव–प्रक्रिया विकास एवं वृहद् स्तर पर विस्तार
- जैविक एवं जैव–प्रक्रिया मॉडलिंग, नियंत्रण तथा बहु–मापदंड अनुकूलन
- तकनीकी–आर्थिक विश्लेषण, जीवन–चक्र आकलन एवं संसाधन आकलन के माध्यम से प्रणाली विश्लेषण
- पोषक तत्त्व–ऊर्जा–जल–भूमि के अंतर्संबंधों के संदर्भ में प्रत्यास्थता एवं संधारणीयता

डॉ. मोहनसुंदरी थंगावेल



अनुसंधान रुचि के क्षेत्र:

- कृषि अर्थशास्त्र
- असंसाधन अर्थशास्त्र: ऊर्जा, जल एवं कृषि–वानिकी
- पर्यावरणीय अर्थशास्त्र: जलवायु परिवर्तन अनुकूलन एवं प्रभाव अध्ययन
- शहरी एवं ग्रामीण उपभोग प्रतिरूप
- कृषक उत्पादक संगठन

ग्रामीण स्वास्थ्य सेवा

प्रो. अविनाश सोनवणे



अनुसंधान रुचि के क्षेत्र:

- मेज़बान की प्रतिरक्षा प्रतिक्रियाओं के नियमन में माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरकुलोसिस के ग्लाइकोप्रोटीन एवं ग्लाइकोलिपोप्रोटीन की भूमिका
- एम. ट्यूबरकुलोसिस संक्रमण के दौरान स्टेम कोशिकाओं का एपिजीनोमिक्स

- माइकोबैक्टीरिया–विरोधी प्रतिरक्षा में मेज़बान के रोगाणुरोधी पेप्टाइड्स की भूमिका
- औषधि संवहन
- प्राथमिक एवं पुनरावर्ती तीव्र लसीकाभ ल्यूकेमिया के उपचार हेतु एल–एस्पैरजिनेज आधारित चिकित्सा का विकास

डॉ. हेम चंद्र झा



अनुसंधान रुचि के क्षेत्र:

- कोविड–19 जीवविज्ञान
- जैविक एवं जैव–प्रक्रिया मॉडलिंग, नियंत्रण तथा बहु–मापदंड अनुकूलन
- मेज़बान–रोगजनक अंतःक्रियाः कैंसर की प्रगति में एपस्टीन–बार वायरस एवं हेलिकोबैक्टर पाइलोरी से संबंधित सह–संक्रमण
- एपिजेनेटिक नियमनः रोगजनकों से उत्पन्न कैंसरजनन
- गैस्ट्रिक कैंसर, सिर एवं गर्दन के कैंसर तथा मल्टीपल स्क्लेरोसिस में विषाणु संक्रमण के दौरान रोगजनकों का भार
- कैंसर एवं संक्रामक कारकों से उत्पन्न रोगों के लिए औषधि खोज
- आनुवंशिक अभियांत्रिकी

प्रौद्योगिकी विकास एवं कौशल विकास

प्रो. संदीप चौधरी



अनुसंधान रुचि के क्षेत्र:

- संरचनात्मक अभियांत्रिकी
- संधारणीय निर्माण पद्धतियाँ
- मिश्रित पदार्थों से बने पुल
- नवीन ईंटें एवं ब्लॉक
- कंक्रीट की सूक्ष्मसंरचना एवं टिकाऊपन
- उन्नत अभिलक्षण तकनीकें
- भवन निर्माण सामग्री में अपशिष्ट प्रबंधन

प्रो. राजेश कुमार



अनुसंधान रुचि के क्षेत्र:

- नैनोमैटेरियल्स एवं नैनो–उपकरण
- इलेक्ट्रॉनिक एवं इलेक्ट्रोक्रोमिक उपकरण
- उपकरण भौतिकी, रमन स्पेक्ट्रोस्कोपी एवं माइक्रोस्कोपी
- प्राकृतिक जैव–सामग्री

प्रो. शैबल मुखर्जी



अनुसंधान रुचि के क्षेत्र:

- डीसी–से–डीसी कन्वर्टर्स के लिए कम लागत वाले एचईएमटी/एचएफईटी
- इमेज प्रोसेसिंग एवं न्यूरोमॉर्फिक संगणना के लिए विषम रूप से एकीकृत आरआरएएम
- अगली पीढ़ी के अति–पतले एवं कम लागत वाले फोटोवोल्टिक उपकरण
- कृषि, जल एवं वायु के लिए लचीले एवं कम लागत वाले जैव–रासायनिक सेंसर
- उच्च–प्रदर्शन वाले यूवी डिटेक्टर

प्रो. संतोष कुमार विश्वकर्मा



अनुसंधान रुचि के क्षेत्रः

- ऊर्जा–कुशल एवं विश्वसनीय एसआरएएम मेमोरी डिज़ाइन
- डीएनएन एक्सेलरेटर के लिए हार्डवेयर–कुशल आर्किटेक्चर
- एज एआई के लिए एसआरएएम–आधारित इन–मेमोरी कंप्यूटिंग आर्किटेक्चर
- आईओटी अनुप्रयोगों के लिए विश्वसनीय एवं सुरक्षित डिज़ाइन
- विश्वसनीयता हेतु डिज़ाइन

प्रो. पवन कुमार कांकर



अनुसंधान रुचि के क्षेत्रः

- यांत्रिक घटकों का दोष निदान
- स्थिति–आधारित अनुरक्षण
- मशीन लर्निंग
- सिग्नल प्रोसेसिंग

जनसंपर्क एवं लैंगिक समानता

प्रो. निर्मला मेनन



अनुसंधान रुचि के क्षेत्रः

- डिजिटल मानविकी
- उत्तर–औपनिवेशिक साहित्य एवं सिद्धांत
- वैश्वीकरण अध्ययन
- अनुवाद के माध्यम से अन्य भाषाओं के विश्व साहित्य का अध्ययन
- उत्तर–औपनिवेशिक साहित्य का संस्थानीकरण

प्रो. नीलिमा सत्यम डी.



अनुसंधान रुचि के क्षेत्रः

- भू–तकनीकी भूकंप अभियांत्रिकी
- गतिशील मृदा–संरचना अंतःक्रिया विश्लेषण
- द्रवीकरण संबंधी जोखिम एवं उसका न्यूनीकरण
- एपिजेनेटिक नियमनः रोगजनकों से उत्पन्न कैंसरजनन
- पर्यावरणीय भू–तकनीक
- भूस्खलन अनुसंधान
- शैल यांत्रिकी एवं भूमिगत संरचनाएँ












CRDT

जय प्रकाश नारायण राष्ट्रीय मानविकी उत्कृष्टता केंद्र (जेपीएन)

केंद्र के बारे में

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा अक्टूबर 2022 में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर में स्थापित जय प्रकाश नारायण (जेपीएन) राष्ट्रीय मानविकी उत्कृष्टता केंद्र, डिजिटल युग में मानविकी की भूमिका को नए दृष्टिकोण से परिभाषित करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण पहल है। राष्ट्रीय महत्त्व की एक अग्रणी संस्था के रूप में यह केंद्र डिजिटल मानविकी एवं पर्यावरणीय मानविकी के दो प्रमुख क्षेत्रों में अत्याधुनिक अनुसंधान, उन्नत अकादमिक अध्ययन तथा व्यापक प्रभाव वाले जनसंपर्क एवं प्रसार कार्यों के लिए प्रतिबद्ध है।

अंतर्विषयी नवाचार के राष्ट्रीय केंद्र के रूप में परिकल्पित यह केंद्र भाषा, साहित्य, संस्कृति, पर्यावरण एवं प्रौद्योगिकी के अंतर्संबंधों में उत्कृष्ट मानक स्थापित करने का लक्ष्य रखता है। यह विद्वानों एवं शोधकर्ताओं को पारंपरिक विषयगत सीमाओं से आगे बढ़ने तथा हमारे समय के कुछ अत्यंत महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के समाधान हेतु अत्याधुनिक डिजिटल उपकरणों एवं पद्धतियों का उपयोग करने में सक्षम बनाएगा। सहयोगात्मक उत्कृष्टता को बढ़ावा देकर तथा मानविकी अनुसंधान की नई दिशाओं का प्रतिमान प्रस्तुत करके, जेपीएन केंद्र का उद्देश्य मानविकी, पर्यावरण एवं उभरती प्रौद्योगिकियों के बीच परिवर्तनकारी संवाद के क्षेत्र में भारत को वैश्विक नेतृत्वकर्ता के रूप में स्थापित करना है।

शासन एवं अनुसंधान दल की संरचना

नेतृत्व दल	
संयोजक, जेपीएन केंद्रः – सह संयोजक, जेपीएन केंद्रः	प्रो. निर्मला मेनन प्रो. प्रीति शर्मा
केंद्र संचालन समिति के सदस्य	
1. प्रो. निर्मला मेनन –	संयोजक एवं संचालन समिति की सदस्य मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, आईआईटी इंदौर में प्रोफेसर
2. प्रो. प्रीति शर्मा –	सह संयोजक एवं संचालन समिति की सदस्य मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, आईआईटी इंदौर में प्रोफेसर
3. प्रो. बिस्वरूप पाठक –	संचालन समिति के सदस्य रसायन विज्ञान विभाग, आईआईटी इंदौर में प्रोफेसर
4. प्रो. अभिषेक श्रीवास्तव –	संचालन समिति के सदस्य संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग, आईआईटी इंदौर में प्रोफेसर
मानव संसाधन संरचना	
– संकाय सदस्यों की संख्याः	02
– प्रशासनिक कर्मचारियों की संख्याः	02
– पोस्ट–डॉक्टोरल फेलो की संख्याः	04 (डिजिटल मानविकी में 02 एवं पर्यावरणीय मानविकी में 02)

शैक्षणिक कार्यक्रम

मानविकी उत्कृष्टता केंद्र प्रौद्योगिकी, संस्कृति एवं पर्यावरण के अंतर्संबंधों पर अंतर्विषयी अनुसंधान एवं अकादमिक विकास को बढ़ावा देता है। नवंबर 2023 में केंद्र ने डिजिटल एवं पर्यावरणीय मानविकी में एम.ए. एवं पीएच.डी. कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करने के लिए पाठ्यचर्या विकास कार्यशाला आयोजित की। पीएच.डी. कार्यक्रम शरद सत्र 2024–25 में प्रारंभ किया गया, जबकि एम.ए. कार्यक्रम 2025–26 में प्रारंभ किया जाना निर्धारित था।

प्रो. निर्मला मेनन डिजिटल मानविकी का नेतृत्व करती हैं, जबकि प्रो. प्रीति शर्मा संसाधन शासन, जलवायु प्रत्यास्थता एवं संधारणीयता के क्षेत्र में अपनी विशेषज्ञता के आधार पर पर्यावरणीय मानविकी का नेतृत्व करती हैं। उनके मार्गदर्शन में केंद्र के शैक्षणिक कार्यक्रमों में अकादमिक कठोरता, प्रासंगिकता एवं प्रभावोन्मुखी दृष्टिकोण सुनिश्चित होता है।

परियोजनाएँ

शैक्षणिक कार्यक्रम		
कार्यक्रम	***विद्यार्थी प्रवेश संख्या***	***प्रवेश वर्ष***
पीएच.डी. (डिजिटल मानविकी एवं पर्यावरणीय मानविकी)	06	जुलाई 2024 से प्रवेश प्रारंभ
एम.एस. (अनुसंधान द्वारा) (पर्यावरणीय मानविकी)	01	जुलाई 2024 से प्रवेश प्रारंभ

शैक्षणिक वर्ष 2025–26 में अपनी अकादमिक उपस्थिति को और सुदृढ़ करने के उद्देश्य से केंद्र ने जनसंपर्क एवं प्रसार गतिविधियों के अंतर्गत निम्नलिखित पहलें प्रारंभ की हैं:

डिजिटल मानविकी	*पर्यावरणीय मानविकी*
– डिजिटल मानविकी पद्धति प्रशिक्षण शिविरः पाठ, डेटा एवं अभिलेखागार – आईआईटी इंदौर में 27 एवं 28 जनवरी 2026 को दो दिवसीय कार्यशाला एवं परियोजना अनुसंधान संगोष्ठी आयोजित की जाएगी।	– पर्यावरणीय मानविकी एवं संधारणीयता को बढ़ावा देने पर एक दिवसीय कार्यशाला – जय प्रकाश नारायण (जेपीएन) राष्ट्रीय मानविकी उत्कृष्टता केंद्र एवं मेहता फैमिली स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी (एमएफएसएस), आईआईटी इंदौर की पहल के अंतर्गत 18 दिसंबर 2025 को आयोजित की गई। – पारिस्थितिकी, शासन एवं प्रौद्योगिकी पर संगोष्ठीः पर्यावरणीय मानविकी एवं संधारणीयता के दृष्टिकोण से अंतर्संबंध – जय प्रकाश नारायण (जेपीएन) राष्ट्रीय मानविकी उत्कृष्टता केंद्र एवं मेहता फैमिली स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी (एमएफएसएस), आईआईटी इंदौर की पहल के अंतर्गत 12 एवं 13 फरवरी 2026 को दो दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की गई।

डिजिटल मानविकी पद्धति प्रशिक्षण शिविरः पाठ्य सामग्री, आँकड़े एवं अभिलेखागार (27 एवं 28 जनवरी, 2026)



पारिस्थितिकी, शासन एवं प्रौद्योगिकी पर संगोष्ठी (12–13 फरवरी, 2026)



उल्लेखनीय अनुसंधान एवं विकास गतिविधियाँ

जेपीएन राष्ट्रीय मानविकी उत्कृष्टता केंद्र प्रौद्योगिकी एवं मानविकी के अंतर्संबंधों पर अंतर्विषयी अनुसंधान को प्रोत्साहित करता है। यह केंद्र डिजिटल अभिलेखीकरण, संगणकीय भाषाविज्ञान, डेटा विज़ुअलाइज़ेशन तथा सांस्कृतिक विरासत के भू–स्थानिक मानचित्रण के क्षेत्र में नवाचारी परियोजनाओं को सहयोग प्रदान करता है। समावेशी एवं सुलभ ज्ञान प्रणालियों को बढ़ावा देकर केंद्र ऐतिहासिक कलाकृतियों एवं धरोहरों का संरक्षण करता है तथा डिजिटल युग के संदर्भ में उनकी पुनर्व्याख्या को प्रोत्साहित करता है।

केंद्र प्रतिवर्ष शोध प्रस्ताव आमंत्रित करता है तथा विद्वानों को अनुदान, मार्गदर्शन एवं सहयोगात्मक अवसर प्रदान करता है। नवाचार एवं क्षमता निर्माण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के माध्यम से केंद्र डिजिटल एवं पर्यावरणीय मानविकी के विकसित होते क्षेत्रों को आगे बढ़ाता है और मानविकी अनुसंधान के भविष्य को आकार देने में योगदान देता है।

जेपीएन केंद्र द्वारा वित्तपोषित परियोजनाएँ

वर्ष	*प्राप्त परियोजना प्रस्ताव*	*स्वीकृत परियोजनाएँ*
2023–24	47	10
2024–25	40	24
2025–26	05	04

केंद्र के संकाय सदस्यों के नेतृत्व में प्राप्त परियोजनाएँ

वर्ष	*प्राप्त परियोजनाएँ*
2023–24	***03***
2024–25	***04***

केंद्र की जनसंपर्क एवं प्रसार गतिविधियाँ

केंद्र की जनसंपर्क एवं प्रसार गतिविधियों का उद्देश्य विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से जन–जागरूकता बढ़ाना तथा जनभागीदारी को प्रोत्साहित करना है। इस दिशा में जेपीएन द्वारा वित्तपोषित लेखन केंद्र परियोजना एक प्रमुख पहल है, जिसके अंतर्गत सामुदायिक सहभागिता, भागीदारी एवं सहयोग को बढ़ावा देने वाली विभिन्न गतिविधियाँ संचालित की गईं। केंद्र की गतिविधियों की नियमित जानकारी इसकी वेबसाइट (https://jpnnationalcentre-com/) एवं सोशल मीडिया माध्यमों पर उपलब्ध कराई जाती है।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर के जय प्रकाश नारायण (जेपीएन) राष्ट्रीय मानविकी उत्कृष्टता केंद्र ने इंडियन–लिपि (भारतीय भाषा नवाचार एवं प्रकाशन अवसंरचना) के लिए क्लैरिन के–केंद्र (CLARIN K&Centre) के रूप में मान्यता प्राप्त करके एक महत्त्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय उपलब्धि हासिल की है। इस मान्यता से केंद्र वैश्विक क्लैरिन ईआरआईसी अनुसंधान अवसंरचना से जुड़ गया है तथा अंतरराष्ट्रीय डिजिटल मानविकी नेटवर्कों के साथ उसका जुड़ाव और सुदृढ़ हुआ है।

यह पहल कॉर्पस विकास, डिजिटलीकरण, ओसीआर कार्यप्रवाह तथा नवाचारी प्रकाशन अवसंरचनाओं के माध्यम से बहुभाषी डिजिटल शोध को प्रोत्साहित करती है। यह मान्यता जेपीएन केंद्र की संयोजक प्रो. निर्मला मेनन के नेतृत्व में डिजिटल मानविकी के क्षेत्र में अनुसंधान को आगे बढ़ाने तथा केंद्र की राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पहचान सुदृढ़ करने के प्रति उसकी निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

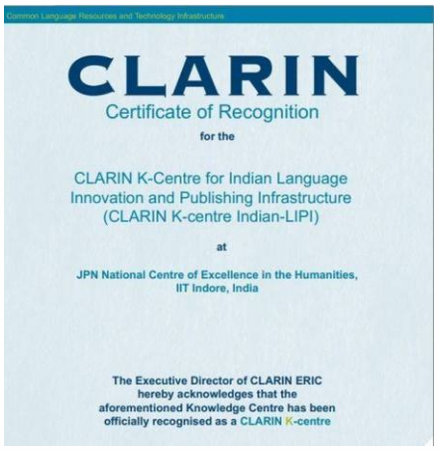

भारतीय भाषाओं हेतु क्लेरिन–के–सेंटर – लिपि

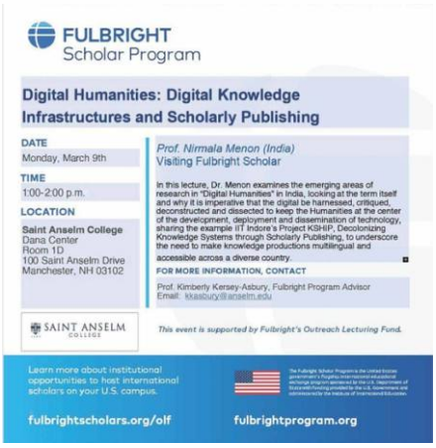

सेंट एंसलम कॉलेज में फुलब्राइट यात्रा अनुदान संबंधी कार्यक्रमों के अंतर्गत व्याख्यान।

अनुसंधान क्षेत्र एवं प्रमुख उपलब्धियाँ



प्रो. निर्मला मेनन

संयोजक, जेपीएन राष्ट्रीय केंद्र

प्रोफेसर,

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, आईआईटी इंदौर

ईमेलः convenerjpn/iiti.ac.in, nmenon/iiti.ac.in

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, आईआईटी इंदौर

प्रो. निर्मला मेनन आईआईटी इंदौर में अंग्रेज़ी की प्रोफेसर तथा जेपीएन मानविकी उत्कृष्टता केंद्र की संयोजक हैं। वह डिजिटल मानविकी एवं प्रकाशन समूह का नेतृत्व करती हैं तथा उत्तर–औपनिवेशिक एवं डिजिटल मानविकी पर महत्त्वपूर्ण पुस्तकें एवं शोध–कार्य प्रकाशित कर चुकी हैं। ऑक्सफोर्ड से संबद्धता तथा प्रमुख शोध अनुदान प्राप्त करने वाली प्रो. मेनन भारत में डिजिटल सांस्कृतिक विरासत एवं मुक्त अभिगम को बढ़ावा देने की दिशा में कार्यरत हैं।

अनुसंधान रुचि के क्षेत्रः

- टेक्स्ट माइनिंग एवं प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (एनएलपी)
- डिजिटल अभिलेखीकरण एवं संरक्षण
- आभासी एवं संवर्धित वास्तविकता
- विभाजन अध्ययन
- डिजिटल संस्करण एवं डिजिटल प्रकाशन
- अनुवाद अध्ययन
- स्थानिक मानविकी एवं भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस)
- ग्रंथसूचीमितीय अययन



प्रो. प्रीति शर्मा
सह–संयोजक, जेपीएन राष्ट्रीय केंद्र
प्रोफेसर,
मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, आईआईटी इंदौर
ईमेलः psharma/iiti.ac.in

प्रो. प्रीति शर्मा आईआईटी इंदौर में अर्थशास्त्र की प्रोफेसर तथा जेपीएन केंद्र की सह–संयोजक हैं। उनका अनुसंधान कृषि एवं विकास अर्थशास्त्र, पर्यावरणीय मानविकी तथा जलवायु प्रत्यास्थता पर केंद्रित है। उनके कार्यों में भूमि, जल एवं वन संसाधनों का शासन, ग्रामीण गरीबी तथा पारंपरिक प्रथाएँ शामिल हैं। वह सस्टेनेबिलिटी स्टडीज़ लैब का नेतृत्व करती हैं, अंतर्विषयी अनुसंधान को मार्गदर्शन प्रदान करती हैं तथा विकासशील देशों से संबंधित पर्यावरणीय एवं व्यापारिक मुद्दों पर व्यापक शोध–कार्य प्रकाशित कर चुकी हैं।

अनुसंधान रुचि के क्षेत्रः

- जलवायु प्रत्यास्थता एवं अनुकूलन
- संधारणीय कृषि एवं खाद्य प्रणालियाँ
- पारंपरिक जल प्रबंधन पद्धतियाँ
- पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं का मूल्यांकन
- पर्यावरणीय एवं विकास अर्थशास्त्र
- ग्रामीण आजीविका एवं गरीबी
- शहरी संधारणीयता एवं संवेदनशीलता
- वन एवं अग्नि प्रबंधन
- संधारणीयता संकेतक एवं नीतिगत प्रभाव
- भू–सूचनाविज्ञान एवं संधारणीय विकास

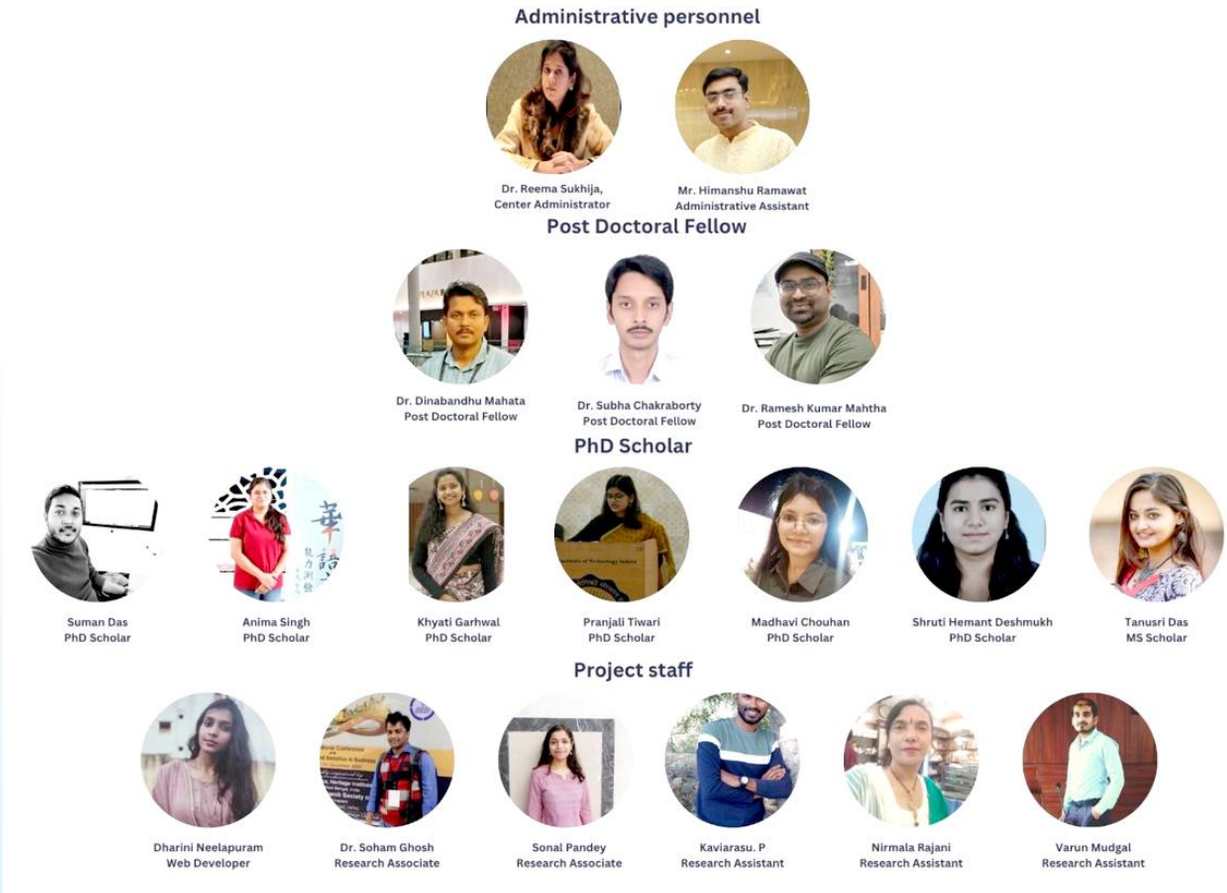

आईआईटीआई दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन



भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अंतर्गत राष्ट्रीय अंतर्विषयी साइबर–भौतिक प्रणाली मिशन (एनएम–आईसीपीएस) के तहत भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर में स्थापित आईआईटीआई दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन एक प्रौद्योगिकी हस्तांतरण अनुसंधान पार्क (टीटीआरपी) के रूप में कार्य करता है। इसका उद्देश्य डीप–टेक नवाचार, अनुसंधान के व्यावहारिक अनुप्रयोग तथा स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र के विकास को बढ़ावा देना है। यह फाउंडेशन डिजिटल स्वास्थ्य सेवा, स्मार्ट विनिर्माण, कृत्रिम बुद्धिमत्ता/मशीन लर्निंग (एआई/एमएल) तथा साइबर–भौतिक प्रणालियों जैसे क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी विकास, व्यावसायीकरण, स्टार्टअप इनक्यूबेशन एवं उद्योग सहयोग के माध्यम से अनुसंधान को वास्तविक जीवन में उपयोगी प्रभावों में रूपांतरित करने में सहायता प्रदान करता है।

दृष्टि सीपीएस ने इनक्यूबेशन, मार्गदर्शन, वित्तीय सहायता, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण संबंधी अवसंरचना, उद्योग साझेदारियों तथा बाज़ार संपर्कों के माध्यम से 250 से अधिक स्टार्टअप एवं अनुसंधान पहलों को सहयोग प्रदान किया है। नवाचार, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण तथा उद्यमिता पारिस्थितिकी तंत्र को सुदृढ़ करने के लिए यह फाउंडेशन एम्स नेटवर्क, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर), श्री चित्रा तिरुनल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (एससीटीआईएमएसटी), कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, रॉयल एकेडमी ऑफ इंजीनियरिंग, जीआईज़ेड, एमसीटीई महू, मध्य प्रदेश सरकार, उद्योगों, स्टार्टअप तथा सरकारी एजेंसियों सहित प्रमुख संस्थानों एवं संगठनों के साथ सक्रिय रूप से सहयोग करता है।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), उद्योग संवर्धन एवं आंतरिक व्यापार विभाग (डीपीआईआईटी), इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (एमईआईटीवाई) तथा सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय (एमएसएमई) सहित भारत सरकार के प्रमुख मंत्रालयों के साथ निकट समन्वय स्थापित करते हुए, दृष्टि सीपीएस सामाजिक एवं औद्योगिक प्रभाव के लिए अनुप्रयोगोन्मुख नवाचार, डिजिटल स्वास्थ्य सेवा, बुद्धिमान विनिर्माण तथा उद्योग–अकादमिक सहयोग को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

एक नज़र में प्रमुख उपलब्धियाँ

₹64+ Cr	124	119+	20	21	3000+	2000+	02
Funding Mobilized	Research Projects Supported	Startups Supported	Academic Spin-off Startups	Patents Granted	People Trained through Skilling Programs	Jobs Created	Technologies Licensed

डिजिटल ट्विन आधारित स्वास्थ्य सेवा प्रणालियों का विकास

स्वास्थ्य सेवा का क्षेत्र तेजी से पूर्वानुमान–आधारित, डेटा–संचालित एवं वैयक्तिकृत देखभाल की दिशा में आगे बढ़ रहा है। आईआईटीआई दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन में एम्स जैसे अग्रणी संस्थानों के सहयोग से एकीकृत डिजिटल स्वास्थ्य प्रौद्योगिकियों का विकास करके इस परिवर्तन को संभव बनाया जा रहा है। ये प्रौद्योगिकियाँ वर्तमान में विकास एवं नैदानिक सत्यापन की प्रक्रिया में हैं, ताकि इन्हें व्यापक स्तर पर स्वास्थ्य सेवाओं में लागू किया जा सके।

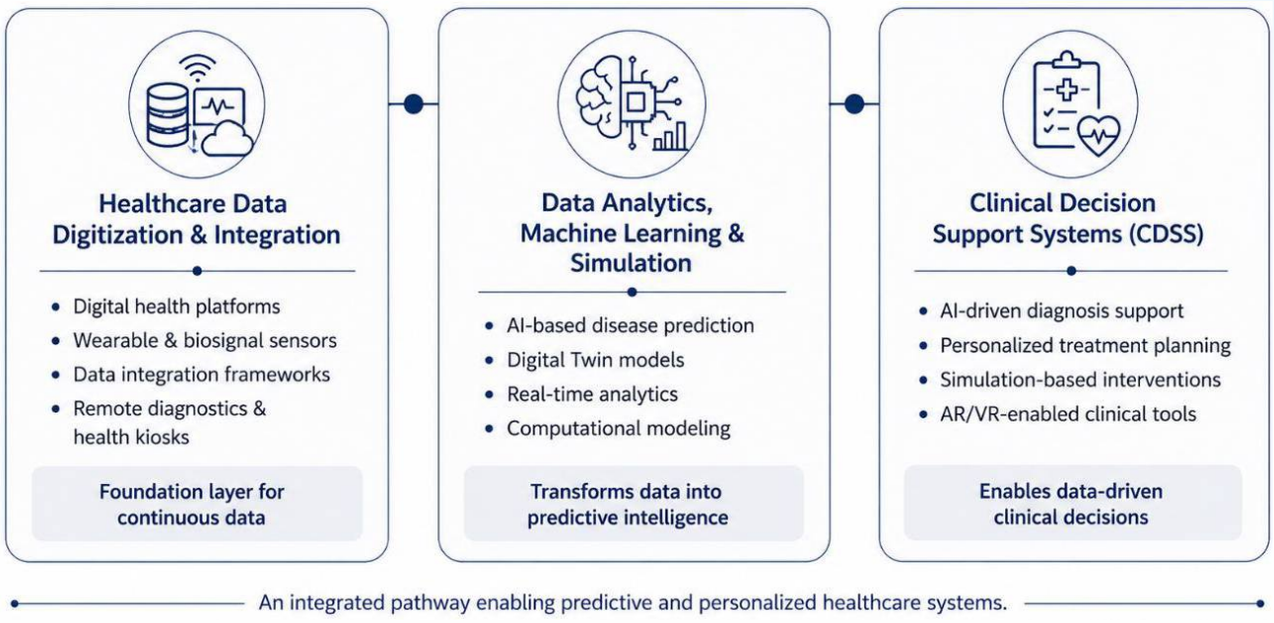

चित्रः मुख्य प्रौद्योगिकी संरचना

इस रूपरेखा में तीन प्रमुख प्रौद्योगिकी स्तरों पर ध्यान केंद्रित किया गया हैरू स्वास्थ्य संबंधी डेटा का एकीकरण, एआई–आधारित विश्लेषण एवं डिजिटल ट्विन प्रणालियाँ तथा नैदानिक निर्णय सहायता प्रणालियाँ (सीडीएसएस)। ये प्रौद्योगिकियाँ मिलकर स्वास्थ्य सेवाओं को प्रतिक्रियात्मक दृष्टिकोण से पूर्वानुमान–आधारित एवं वैयक्तिकृत उपचार की दिशा में आगे बढ़ाने में सक्षम बनाती हैं। प्रौद्योगिकी विकास के अतिरिक्त, दृष्टि सीपीएस व्यावसायीकरण एवं व्यापक स्तर पर अंगीकरण को प्रोत्साहित करने के लिए स्टार्टअप इनक्यूबेशन, वित्तीय सहायता, नैदानिक सत्यापन तथा उद्योग साझेदारियों के माध्यम से अनुसंधान के व्यावहारिक अनुप्रयोग को बढ़ावा देता है।

प्रौद्योगिकी स्थानांतरण

VRET Tool for Acrophobia		Breast Cancer Electronic Patient File (EPF) System		Ventilator Associated Pneumonia (VAP) CDSS		Job Shop Scheduling (AmiT)	
Collaborator	AIIMS Bhopal	Collaborator	SAIMS Indore	Collaborator	AIIMS Delhi	Collaborator	Industry Partnership
Objective	VR-based therapy for fear of heights	Objective	Data-driven clinical decision support	Objective	Early detection of ventilator associated pneumonia	Objective	Optimize MSME production scheduling
Key Features	Modular, immersive simulations up to 7th floor; repeatable sessions	Key Features	Predictive analytics; personalized care	Key Features	ML-based pipeline; real-time risk prediction	Key Features	Multi-scenario AI engine; work order level, batch system
Current Status	Technology transferred	Current Status	Under validation at Hospital	Current Status	Under validation at AIIMS	Current Status	Technology transferred
Impact / Value ₹ 2 Lakhs		Impact / Value 400 Patients Screened		Impact / Value 1500 Patients Screened		Impact / Value ₹ 20 Lakhs	

सहयोग एवं अवसंरचना के माध्यम से प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को बढ़ावा



एम्स रायपुर में एआई परिनियोजन केंद्र

दृष्टि ने एम्स रायपुर के सहयोग से एआई–आधारित प्रौद्योगिकियों को नैदानिक अभ्यास में लागू करने की प्रक्रिया में तेजी लाने के लिए एआई परिनियोजन केंद्र की स्थापना की है। यह केंद्र निदान एवं नैदानिक निर्णय सहायता से संबंधित समाधानों के सत्यापन एवं कार्यान्वयन के लिए एक मंच के रूप में कार्य करेगा। इससे अनुसंधान आधारित नवाचारों को वास्तविक स्वास्थ्य सेवा प्रणालियों के साथ एकीकृत करने तथा रोगी देखभाल के परिणामों में सुधार लाने में सहायता मिलेगी। इस पहल का उद्देश्य डिजिटल स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में नैदानिक सत्यापन की प्रक्रियाओं एवं सहयोगात्मक नवाचार को भी सुदृढ़ करना है।

एम्स भोपाल का रणनीतिक दौरा

दृष्टि एवं आईआईटी इंदौर की एक टीम ने जारी सहयोगात्मक अनुसंधान तथा प्रौद्योगिकी विकास पहलों की समीक्षा एवं उन्हें सुदृढ़ करने के लिए एम्स भोपाल का दौरा किया। संस्थान के नेतृत्व एवं नैदानिक विशेषज्ञों के साथ हुई चर्चाओं में एआई–सक्षम स्वास्थ्य सेवा प्रणालियों, नैदानिक निर्णय सहायता प्रौद्योगिकियों तथा रोगी–केंद्रित डिजिटल स्वास्थ्य समाधानों को आगे बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया गया।







लॉन्चपैड का उद्घाटन

दृष्टि ने मध्य प्रदेश राज्य इलेक्ट्रॉनिक्स विकास निगम (एमपीएसईडीसी), विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) तथा मध्य प्रदेश सरकार के सहयोग से मध्य प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं डॉ. के. सिवन की उपस्थिति में लॉन्चपैड नवाचार एवं इनक्यूबेशन केंद्र का उद्घाटन किया। डीप–टेक नवाचार एवं इनक्यूबेशन केंद्र के रूप में स्थापित यह केंद्र मध्य प्रदेश में प्रौद्योगिकी हस्तांतरण तथा स्टार्टअप विकास को सहयोग प्रदान करता है।

स्वास्थ्यएक्सआररू एआर/वीआर नवाचार प्रयोगशाला

आईआईटी इंदौर स्थित स्वास्थ्यएक्सआर एआर/वीआर नवाचार प्रयोगशाला इमर्सिव प्रौद्योगिकियों, सिमुलेशन–आधारित प्रशिक्षण तथा वास्तविक नैदानिक समस्याओं पर आधारित व्यावहारिक प्रोटोटाइप निर्माण के माध्यम से डिजिटल स्वास्थ्य सेवा में नवाचार को प्रोत्साहित करती है। कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) पहलों के सहयोग से स्थापित यह प्रयोगशाला स्वास्थ्य सेवा नवाचार के लिए उन्नत संवर्धित वास्तविकता (एआर) एवं आभासी वास्तविकता (वीआर) प्लेटफॉर्म से सुसज्जित है।





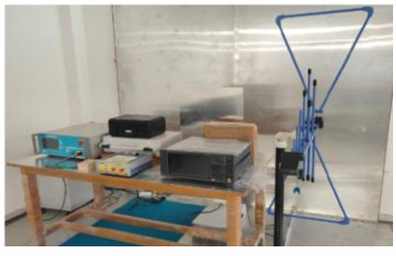

ईएमआई/ईएमसी परीक्षण प्रयोगशाला

इलेक्ट्रॉनिक एवं स्वास्थ्य सेवा प्रौद्योगिकियों के उत्पाद सत्यापन तथा मानकों के अनुरूप परीक्षण को सहयोग प्रदान करने के लिए ईएमआई/ईएमसी परीक्षण प्रयोगशाला की स्थापना की गई है। यह प्रयोगशाला विद्युतचुंबकीय उत्सर्जन एवं प्रतिरक्षा परीक्षण के लिए उन्नत उपकरणों से सुसज्जित है तथा अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप परीक्षण की सुविधा प्रदान करती है।

डिजिटल स्वास्थ्य सेवा कौशल विकास प्रयोगशाला

हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल), नासिक के एमआईजी कॉम्प्लेक्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री संकेत चतुर्वेदी द्वारा उद्घाटित डिजिटल स्वास्थ्य सेवा कौशल विकास प्रयोगशाला, डिजिटल स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में व्यावहारिक प्रशिक्षण एवं प्रौद्योगिकी–आधारित शिक्षण को बढ़ावा देती है। यह सुविधा एआई, सिमुलेशन प्रणालियों तथा उभरती स्वास्थ्य प्रौद्योगिकियों से परिचित होने के अवसर प्रदान करती है, जिससे व्यावहारिक कौशल एवं अंतर्विषयी नवाचार को सुदृढ़ किया जा सके।

राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंचों पर पहुँच का विस्तार



दृष्टि में बौद्धिक संपदा सुविधा केंद्र (आईपीएफसी)

भारत सरकार के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय द्वारा एमएसएमई इनोवेटिव योजना के अंतर्गत आईआईटी इंदौर में बौद्धिक संपदा सुविधा केंद्र (आईपीएफसी) स्थापित करने का दायित्व आईआईटीआई दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन को सौंपा गया है। यह केंद्र सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों, स्टार्टअप तथा नवप्रवर्तकों को पेटेंट खोज, प्रारूपण, आवेदन दाखिल करने तथा आवेदन के बाद की सेवाओं सहित पेटेंट, ट्रेडमार्क, डिज़ाइन एवं भौगोलिक संकेतकों से संबंधित संपूर्ण बौद्धिक संपदा सहायता प्रदान करता है।

बौद्धिक संपदा की पहचान, संरक्षण एवं प्रबंधन के क्षेत्र में विशेषज्ञ मार्गदर्शन के माध्यम से आईपीएफसी का उद्देश्य विचारों को बाज़ार के लिए तैयार समाधानों में परिवर्तित करना है। इससे मध्य प्रदेश एवं मध्य भारत में बौद्धिक संपदा के प्रति जागरूकता, व्यावसायीकरण तथा नवाचार–आधारित विकास को सुदृढ़ करने में सहायता मिलती है। दृष्टि ने बौद्धिक संपदा अधिकारों (आईपीआर) के प्रति जागरूकता बढ़ाने और नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए मध्य प्रदेश के बड़वानी, अलीराजपुर एवं झाबुआ सहित विभिन्न शहरों में एमएसएमई एवं स्टार्टअप को लक्षित करते हुए अनेक जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किए।

दिशा 2.0: डिजिटल स्वास्थ्य सेवा में नवाचार को बढ़ावा

भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अंतर्गत राष्ट्रीय अंतर्विषयी साइबर–भौतिक प्रणाली मिशन (एनएम–आईसीपीएस) के तहत आईआईटीआई दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन द्वारा संचालित दिशा 2.0 डिजिटल स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में डीप–टेक नवाचार की नई दिशा को गति प्रदान कर रहा है। यह कार्यक्रम मार्गदर्शन, सत्यापन, बौद्धिक संपदा (आईपी) संबंधी सहायता तथा व्यावसायीकरण के अवसरों के माध्यम से स्टार्टअप एवं अनुसंधान परियोजनाओं को सहयोग देता है।

आईआईटी इंदौर में आयोजित दिशा 2.0 पुरस्कार समारोह में नवप्रवर्तकों, चिकित्सकों एवं शोधकर्ताओं ने भाग लिया। इसमें नैदानिक निर्णय सहायता, मेडिकल इमेजिंग, डिजिटल ट्विन तथा डेटा–आधारित स्वास्थ्य सेवा प्लेटफॉर्म से संबंधित समाधानों का प्रदर्शन किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत देशभर से 286 आवेदन प्राप्त हुए, जिनमें से 21 स्टार्टअप, 29 परियोजनाओं एवं 6 फेलोशिप का चयन किया गया। इनके लिए लगभग 15 करोड़ की कुल वित्तीय सहायता निर्धारित की गई।











प्रौद्योगिकी उन्नयन में हितधारकों की सहभागिता (सेतु–26)

आईआईटी इंदौर के दृष्टि द्वारा आयोजित सेतु 2026 दो दिवसीय राष्ट्रीय स्तर का सम्मेलन था, जिसमें 46 स्टार्टअप, 15 उद्योग भागीदार, 18 निवेशक, एम्स एवं चिकित्सा संस्थानों के 12 प्रतिनिधि तथा 10 गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में प्रौद्योगिकी प्रदर्शन, विशेषज्ञ सत्र एवं प्रभावशाली पैनल चर्चाएँ आयोजित की गईं। इनका मुख्य केंद्र डिजिटल स्वास्थ्य सेवा एवं डीप–टेक क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, नैदानिक सत्यापन, निवेश की तैयारी तथा उद्योगों द्वारा प्रौद्योगिकी के अंगीकरण को बढ़ावा देना था। डेमो डे के दौरान संवाद एवं उद्योग–अकादमिक सहयोग के माध्यम से सेतु ने अनुसंधान से लेकर व्यापक स्तर पर उपयोगी वास्तविक समाधान विकसित करने तक की यात्रा को प्रदर्शित किया।

इंडिया एआई से जुड़ाव एवं क्षेत्रीय प्रभाव

दृष्टि, आईआईटी इंदौर ने नई दिल्ली में आयोजित इंडिया एआई समिट तथा इसके क्षेत्रीय आयोजन आरएआईआईसी 2026 (भोपाल) में भाग लिया। इन मंचों पर नैदानिक निर्णय सहायता प्रणाली (सीडीएसएस) एवं स्मार्ट आईसीयू मॉनिटरिंग जैसे एआई–आधारित स्वास्थ्य सेवा समाधानों का प्रदर्शन किया गया। एमपीएसईडीसी के साथ मध्य प्रदेश का प्रतिनिधित्व करते हुए दृष्टि ने नीति–निर्माताओं एवं अन्य हितधारकों के साथ संवाद किया तथा साइबर–भौतिक प्रणालियों (सीपीएस) एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के व्यावहारिक अनुप्रयोगों को प्रस्तुत किया।





वैश्विक इनक्यूबेशन सहायतारू जीआईज़ेड बीआईडी कार्यक्रम

आईआईटीआई दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन को जीआईज़ेड (डॉयचे गेसेलशाफ्ट फ्यूर इंटरनेशनल ज़ुसामेनआर्बाइट) द्वारा भारत में बिज़नेस आइडियाज़ फॉर डेवलपमेंट (बीआईडी) कार्यक्रम के स्टार्टअप समूहों को संरचित इनक्यूबेशन एवं विकास सहायता प्रदान करने का दायित्व सौंपा गया है। इस पहल का उद्देश्य प्रवासी उद्यमियों को मार्गदर्शन, व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा पारिस्थितिकी तंत्र संबंधी सहायता प्रदान करके उनके विचारों को विस्तार योग्य उद्यमों में परिवर्तित करने में सक्षम बनाना है।

इसके अंतर्गत व्यवसाय मॉडल विकास, नियामकीय एवं अनुपालन संबंधी पहलुओं, बाज़ार तक पहुँच तथा निवेश के लिए तैयारी पर मार्गदर्शन दिया जाता है। साथ ही,

भारत एवं जर्मनी के हितधारकों के साथ संपर्क स्थापित करने में भी सहायता प्रदान की जाती है।



रक्षा, स्वास्थ्य सेवा एवं प्रौद्योगिकी के बीच सहयोग को सुदृढ़ करना

दृष्टि ने एयर मार्शल शंकर सुब्रमण्यम के साथ महू स्थित एमएच एवं एमसीटीई से आए वरिष्ठ रक्षा स्वास्थ्य सेवा प्रतिनिधिमंडल की आईआईटी इंदौर में मेजबानी की। इस दौरे के दौरान संस्थान के नेतृत्व एवं संकाय सदस्यों के साथ डिजिटल स्वास्थ्य सेवा तथा अनुसंधान के व्यावहारिक अनुप्रयोग को आगे बढ़ाने पर चर्चा हुई। दौरे में चरक केंद्र में संवाद भी शामिल था, जहाँ रक्षा स्वास्थ्य सेवा की आवश्यकताओं के अनुरूप संचालित पहलों एवं स्टार्टअप द्वारा विकसित समाधानों को प्रदर्शित किया गया।



भारत इनोवेट्स 2026

दृष्टि सीपीएस, आईआईटी इंदौर, भारत इनोवेट्स 2026 में स्वास्थ्य सेवा एवं मेडिकल टेक्नोलॉजी (मेडटेक) क्षेत्र के समन्वयक के रूप में सक्रिय योगदान दे रहा है। इसके अंतर्गत स्टार्टअप मूल्यांकन, मार्गदर्शन तथा निवेशकों के साथ संवाद को सहयोग प्रदान किया जा रहा है। टीम ने आईआईटी गांधीनगर एवं आईआईटी बॉम्बे में आयोजित राष्ट्रीय बेसकैंप तथा डीप–टेक प्री–समिट में भाग लिया और स्टार्टअप, मार्गदर्शकों एवं नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र के विभिन्न हितधारकों के साथ संवाद किया। इन प्रयासों से सहयोग सुदृढ़ हो रहा है तथा डीप–टेक नवाचारों को व्यावहारिक एवं प्रभावी समाधानों में परिवर्तित करने की प्रक्रिया को गति मिल रही है।



एससीटीआईएमएसटी के साथ रणनीतिक सहयोग

दृष्टि, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अंतर्गत राष्ट्रीय महत्त्व के संस्थान, श्री चित्रा तिरुनल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (एससीटीआईएमएसटी), तिरुवनंतपुरम के साथ सहयोग कर रहा है। इस सहयोग का उद्देश्य डिजिटल स्वास्थ्य सेवा, चिकित्सा प्रौद्योगिकियों, डिजिटल ट्विन, सिमुलेशन प्रणालियों तथा एआई/एमएल–आधारित समाधानों के क्षेत्रों में संयुक्त अनुसंधान, नैदानिक सत्यापन एवं प्रौद्योगिकी हस्तांतरण आधारित नवाचार के लिए दीर्घकालिक रूपरेखा विकसित करना है।

इस सहयोग के अंतर्गत प्रस्तावित प्रमुख स्वास्थ्य सेवा परियोजनाओं में शैशवावस्था में गंभीर कोरोनरी हृदय रोग की विभिन्न अवस्थाओं की निगरानी हेतु एक प्रणाली तथा शल्य–चिकित्सा–पूर्व ऑनलाइन रोगी छँटाई एवं वर्चुअल वायुमार्ग आकलन प्लेटफॉर्म शामिल हैं।



सुजुकी इनोवेशन सेंटर का दौरा

सुजुकी इनोवेशन सेंटर (एसआईसी) के प्रतिनिधियों ने डिजिटल नवाचार, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण तथा सामाजिक प्रभाव के क्षेत्रों में सहयोग की संभावनाओं का पता लगाने के लिए आईआईटी इंदौर स्थित दृष्टि सीपीएस का दौरा किया। नेक्स्ट भारत वेंचर्स के एक अंग के रूप में एसआईसी भारत एवं जापान के शैक्षणिक संस्थानों, उद्योगों तथा स्टार्टअप को जोड़ने वाले मंच के रूप में कार्य करता है। इस संवाद का उद्देश्य संयुक्त पहलों के लिए सहयोग के संभावित क्षेत्रों की पहचान करना तथा नवाचार–आधारित विकास को गति देने हेतु वैश्विक साझेदारियों को प्रोत्साहित करना था।

अध्यापन एवं पाठ्यचर्या उत्कृष्टता केंद्र (सीपीसीई)



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर स्थित अध्यापन एवं पाठ्यचर्या उत्कृष्टता केंद्र (सीपीसीई) एक अंतर्विषयी शैक्षणिक केंद्र है, जो शिक्षा की गुणवत्ता, शिक्षण की प्रभावशीलता तथा विद्यार्थी–केंद्रित अधिगम पद्धतियों को उन्नत बनाने पर केंद्रित है। केंद्र का उद्देश्य तकनीकी विषयों की विशेषज्ञता को एकीकृत करके तथा शिक्षार्थी–केंद्रित बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाकर भविष्योपयोगी शिक्षणशास्त्र एवं पाठ्यचर्या विकास के लिए एक सुदृढ़ पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करना है।

सीपीसीई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) एवं परिणाम–आधारित शिक्षा (ओबीई) जैसे रणनीतिक ढाँचों के अनुरूप अनुसंधान एवं शिक्षण पद्धतियों को बढ़ावा देकर शिक्षा में परिवर्तन के राष्ट्रीय दृष्टिकोण को सहयोग प्रदान करता है। केंद्र संरचित अभिमुखीकरण पहलों के आयोजन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इनमें शिक्षणशास्त्र एवं शिक्षण उत्कृष्टता पर विशेष संकाय विकास कार्यक्रम (एफडीपी) तथा शिक्षण सहायक प्रशिक्षण कार्यक्रम शामिल हैं।

सहयोगात्मक शैक्षणिक पहलों, उन्नत शिक्षण ढाँचों एवं शिक्षणशास्त्रीय नवाचारों के माध्यम से केंद्र ने आईआईटी इंदौर के विकसित होते शैक्षणिक पारिस्थितिकी तंत्र को सुदृढ़ करने में योगदान दिया है। सीपीसीई शैक्षणिक कौशल उन्नयन को प्रोत्साहित करता है तथा संस्थागत एवं राष्ट्रीय आवश्यकताओं में हो रहे बदलावों के अनुरूप भावी पीढ़ी की पाठ्यचर्याओं के विकास में सहयोग देता है। केंद्र विद्यार्थी–केंद्रित एवं अधिगम–प्राप्ति पर केंद्रित दृष्टिकोणों, आधुनिक कक्षा प्रबंधन तथा नवाचारी शैक्षणिक उपकरणों सहित उभरते शिक्षण क्षेत्रों में शिक्षकों एवं शोधकर्ताओं को प्रशिक्षण देने में भी संलग्न है।

केंद्र की दीर्घकालिक परिकल्पना में शैक्षिक प्रौद्योगिकी के विस्तार, पाठ्यचर्या के आधुनिकीकरण तथा बाह्य संकाय विकास कार्यक्रमों के लिए सुरक्षित, विस्तार योग्य एवं प्रभावोन्मुखी प्रौद्योगिकियों का विकास शामिल है। सीपीसीई को आईआईटी इंदौर के विभिन्न विभागों के ऐसे संकाय सदस्यों का सहयोग प्राप्त है, जो संस्थागत उत्कृष्टता, निरंतर शिक्षणशास्त्रीय विकास एवं पाठ्यचर्या के परिष्करण के लिए प्रतिबद्ध हैं। केंद्र के संचालन संबंधी प्रमुख लक्ष्यों एवं संरचनात्मक विस्तार का व्यवस्थित प्रबंधन इसकी समर्पित मुख्य टीम एवं प्रशासनिक दल द्वारा किया जाता है।

संबद्ध संकाय सदस्य

प्रो. प्रमोद एस. मेहता (सलाहकार)



विजिटिंग विशिष्ट प्रोफेसर, यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग एवं मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग

ईमेलः psmehta/iiti.ac.in

अनुसंधान के क्षेत्रः दहन, वैकल्पिक ईंधन/जैव–ईंधन, ऑटोमोटिव प्रदूषण, आंतरिक दहन (आईसी) इंजन, पाठ्यचर्या एवं शिक्षणशास्त्र।

डॉ. प्रियंक जे. शर्मा (संयोजक)



सहायक प्रोफेसर, सिविल अभियांत्रिकी विभाग

ईमेलः priyanksharma/iiti.ac.in

अनुसंधान के क्षेत्रः

- जलवायु–जल विज्ञान एवं जलवायु की चरम घटनाएँ
- गैर–स्थिर आवृत्ति विश्लेषण
- संयुक्त चरम घटनाओं का अभिलक्षण
- डेटा–आधारित एवं भौतिकी–आधारित संकर मॉडलों का उपयोग करके नदी प्रवाह का पूर्वानुमान
- जलाशय संचालन का अनुकूलन
- बेसिन स्तर पर जल विज्ञान पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव का आकलन
- जल–मौसम विज्ञान संबंधी चरों का सांख्यिकीय विश्लेषण



डॉ. अयान मंडल (सह–संयोजक)
सहायक प्रोफेसर, कंप्यूटर विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग
ईमेलः ayanm/iiti.ac.in
अनुसंधान के क्षेत्रः इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी), एज इंटेलिजेंस, 6जी, क्वांटम नेटवर्क।



डॉ. प्रवर्थना धनपाल
सहायक प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग
ईमेलः dpravarthana/iiti.ac.in
अनुसंधान के क्षेत्रः विद्युत–रासायनिक अंतरापृष्ठों का भौतिक रसायन, उन्नत ऊर्जा सामग्री, स्कैनिंग प्रोब माइक्रोस्कोपी, जलीय एवं ठोस–अवस्था बैटरियाँ, आयन–मॉड्यूलेटेड सामग्री तथा कृत्रिम सिनैप्स/मेमरिस्टिव उपकरण।



डॉ. सिवराज मोहना सुंदरम
सहायक प्रोफेसर, मेहता फैमिली स्कूल ऑफ बायोसाइंसेज़ एंड बायोमेडिकल इंजीनियरिंग
ईमेलः sivarajms/iiti.ac.in
अनुसंधान के क्षेत्रः मस्तिष्क का चयापचय, मस्तिष्क के विकास संबंधी विकार, ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम विकार तथा तंत्रिका तंत्र में हार्मोनल नियमन।



डॉ. दिशारी चट्टराज
सहायक प्रोफेसर, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय
ईमेलः dishari/iiti.ac.in
अनुसंधान के क्षेत्रः उच्च शिक्षा, पाठ्यचर्या एवं शिक्षणशास्त्र, अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान तथा आलोचनात्मक खाद्य अध्ययन।
इन सभी संकाय सदस्यों ने शिक्षण–अधिगम एवं शैक्षणिक प्रशिक्षण गतिविधियों में योगदान दिया। इनमें शिक्षण सहायक अभिमुखीकरण एवं प्रशिक्षण, परिणाम–आधारित शिक्षण पद्धतियाँ तथा अभियांत्रिकी एवं विज्ञान शिक्षा के लिए सक्रिय–अधिगम दृष्टिकोण शामिल हैं।

प्रमुख कार्यक्रम

- शिक्षण सहायक अभिमुखीकरण कार्यक्रम (टीएओपी): आईआईटी इंदौर में 9 मार्च 2026 को आयोजित।
- शिक्षण सहायक अभिमुखीकरण कार्यक्रम (टीएओपी): आईआईटी इंदौर में 15 मई 2026 को आयोजित।
- एक दिवसीय संकाय विकास कार्यशालाः "शिक्षणशास्त्र, पाठ्यचर्या उत्कृष्टता एवं एनआईआरएफ रैंकिंग" विषय पर 16 अक्टूबर 2025 को एस. डी. बंसल कॉलेज, इंदौर में एआईसीटीई मार्गदर्शन योजना के अंतर्गत आयोजित।
- एक दिवसीय संकाय विकास कार्यशालाः "शिक्षणशास्त्र, पाठ्यचर्या उत्कृष्टता एवं एनआईआरएफ रैंकिंग" विषय पर 28 मार्च 2025 को एस. डी. बंसल कॉलेज, इंदौर में एआईसीटीई मार्गदर्शन योजना के अंतर्गत आयोजित।
- नए पाठ्यक्रम का प्रस्तावः आईआईटी इंदौर के स्नातक विद्यार्थियों के लिए "समरसता की समझ" (अंडरस्टैंडिंग हार्मनी) नामक नए पाठ्यक्रम का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया।

नर्मदा नदी क्षेत्र प्रबंधन अध्ययन केंद्र (सीएनआरबीएम)

(सीनर्मदा), आईआईटी इंदौर

भारत सरकार के जल शक्ति मंत्रालय द्वारा प्रारंभ

केंद्र के बारे में

आईआईटी इंदौर में नर्मदा नदी बेसिन प्रबंधन अध्ययन केंद्र (सीनर्मदा) की स्थापना जुलाई 2024 में भारत सरकार के जल शक्ति मंत्रालय की निर्मल धारा पहल के अंतर्गत की गई। यह केंद्र नदी संसाधनों की मानवीय आवश्यकताओं के बीच प्रतिस्पर्धा के कारण नर्मदा नदी के पारिस्थितिक स्वास्थ्य पर पड़े उल्लेखनीय प्रभाव को ध्यान में रखते हुए, उसके पारिस्थितिक स्वास्थ्य में सुधार के माध्यम से नदी की समग्र निर्मलता के पुनर्स्थापन एवं संरक्षण हेतु एकीकृत नदी बेसिन प्रबंधन योजना विकसित करने के लिए समर्पित है।

केंद्र का कार्य पाँच मूलभूत स्तंभों पर केंद्रित हैरू अविरल धारा, निर्मल धारा, अनुदैर्ध्य एवं पार्श्व संपर्कता, नदी के सभी आवश्यक कार्यों के लिए पर्याप्त स्थान तथा पारिस्थितिक इकाई के रूप में नदी का क्रियाशील रहना।

केंद्र, संघटक संस्थान के रूप में आईआईटी गांधीनगर के साथ संयुक्त रूप से नर्मदा नदी बेसिन के लिए व्यापक स्थिति आकलन एवं प्रबंधन योजना (सीएएमपी) तैयार करता है। इसकी प्रगति की निगरानी आईआईटी कानपुर स्थित सीगंगा द्वारा की जाती है।

मानव संसाधन संरचना	
– संकाय सदस्यों की कुल संख्याः	06
– प्राध्यापकः	03
– सह प्राध्यापकः	00
– सहायक प्राध्यापकः	03
– अनुसंधान सहयोगी (पोस्ट–डॉक्टोरल):	03
– शोधार्थी (पीएच.डी.):	06
– परियोजना कर्मचारी / क्षेत्र सहायकः	03

1. आईआईटी इंदौर में प्रथम संयुक्त समीक्षा समिति (जेआरसी) की बैठक

सीनर्मदा की प्रथम संयुक्त समीक्षा समिति (जेआरसी) की बैठक 22 मई 2024 को आईआईटी इंदौर में आयोजित की गई। इसमें परियोजना अन्वेषकों, विषय विशेषज्ञों एवं निगरानी एजेंसियों ने भाग लिया। बैठक में सभी विषयगत समूहों के अंतर्गत परियोजना की प्रगति, कार्यप्रणाली एवं अपेक्षित परिणामों की समीक्षा की गई।

विशिष्ट अतिथिः

- प्रो. सुहास एस. जोशी – निदेशक, आईआईटी इंदौर
- प्रो. विनोद तारे – प्रोफेसर, आईआईटी कानपुर एवं सीगंगा कार्यक्रम के प्रवर्तक
- प्रो. प्रणब कुमार महापात्र – प्रोफेसर, आईआईटी गांधीनगर

2. नर्मदा नदी बेसिन प्रबंधन अध्ययन केंद्र का उद्घाटन

सीनर्मदा पहल की औपचारिक स्थापना के अवसर पर 14 जुलाई 2024 को आईआईटी इंदौर में केंद्र का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर "नर्मदा नदी बेसिन प्रबंधनः मुद्दे एवं चुनौतियाँ" विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें एम.टेक. एवं पीएच.डी. के विद्यार्थियों, अनुसंधान कर्मचारियों, इंटर्न, आईआईटी इंदौर एवं आईआईटी गांधीनगर के संकाय सदस्यों तथा अन्य हितधारकों ने भाग लेकर नदी बेसिन प्रबंधन के महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर चर्चा की।

विशिष्ट अतिथिः

- डॉ. समीर वी. कामत – सचिव, रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग, भारत सरकार तथा अध्यक्ष, डीआरडीओ (मुख्य अतिथि)
- डॉ. के. शिवन – अध्यक्ष, शासी मंडल, आईआईटी इंदौर
- प्रो. सुहास एस. जोशी – निदेशक, आईआईटी इंदौर
- प्रो. विनोद तारे – प्रोफेसर, आईआईटी कानपुर एवं सीगंगा कार्यक्रम
- श्री मुकेश चौहान – नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण (एनसीए)
- डॉ. राहुल बनर्जी कृ प्रतिनिधि, मजलिस
- श्री सत्यसोवन दास – प्रतिनिधि, फाउंडेशन फॉर इकोलॉजिकल सिक्योरिटी (एफईएस)

- श्री संदीप खानवलकर – प्रतिनिधि, इको सोल एन्वायरो प्रा. लि.
- श्री सीताराम टैगोर – पर्यावरण विशेषज्ञ
- श्री हरि सिंह सिंगाड़ – प्रतिनिधि, शिवगंगा समग्र ग्राम विकास परिषद
- श्री सुनील व्यास – वरिष्ठ पर्यावरण वैज्ञानिक (सेवानिवृत्त), मध्य प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण मंडल (एमपीपीसीबी), मध्य प्रदेश

3. जल–मौसम विज्ञान संबंधी डेटा एवं मानक कार्यशाला

"जल–मौसम विज्ञान संबंधी डेटा एवं मानक" विषय पर 11 दिसंबर 2024 को एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें 51 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यशाला में नदी बेसिन प्रबंधन के लिए जल–मौसम विज्ञान संबंधी डेटा के संग्रहण, प्रसंस्करण एवं अनुप्रयोग की गुणवत्ता तथा एकरूपता सुनिश्चित करने में भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) के मानकों की भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया गया।

विशिष्ट अतिथि:

1. प्रो. रमेश तीगावरापु – प्रोफेसर, अटलांटिक फ्लोरिडा विश्वविद्यालय
2. श्री दुष्यंत प्रजापति – प्रमुख, जल संसाधन विभाग, भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस)
3. डॉ. नितिन जोशी – संकाय सदस्य, आईआईटी जम्मू
4. जल गुणवत्ता मापन में मानक कार्यशाला

"जल गुणवत्ता मापन में मानक" विषय पर 4 जनवरी 2025 को एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें 50 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यशाला में सुरक्षित पेयजल की गुणवत्ता सुनिश्चित करने, जल गुणवत्ता निगरानी प्रोटोकॉल तथा नर्मदा नदी बेसिन के संदर्भ में इनके अनुप्रयोग में भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) के मानकों की भूमिका पर चर्चा की गई।

विशिष्ट अतिथि:

1. प्रो. अजय कलमधाड़ – प्रोफेसर, आईआईटी गुवाहाटी
2. प्रो. दीपक खरे – प्रोफेसर, आईआईटी रुड़की
3. प्रो. पी. शंकर गणेश – प्रोफेसर, बिट्स पिलानी, हैदराबाद परिसर
4. सुश्री निताशा डोगर – वैज्ञानिक–ई एवं निदेशक, भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस)
5. नर्मदा नदी क्षेत्र प्रबंधन अध्ययन (एनआरबीएमएस) कार्यशाला

नर्मदा नदी क्षेत्र प्रबंधन अध्ययन पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन आईआईटी इंदौर में 16द्17 जनवरी 2025 को किया गया। इसमें मध्य प्रदेश के विभिन्न संगठनों से 48 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यशाला में नर्मदा नदी बेसिन से संबंधित पारिस्थितिक चिंताओं, कटाव संबंधी समस्याओं तथा एकीकृत प्रबंधन दृष्टिकोणों पर चर्चा की गई। इसमें जल विज्ञान, भू–आकृति विज्ञान, पारिस्थितिकी एवं नीतिगत नियोजन सहित विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों ने भाग लिया।

विशिष्ट अतिथि:

1. श्री आशीष दत्ता – सदस्य (विद्युत), नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण (एनसीए)
2. प्रो. सुहास एस. जोशी – निदेशक, आईआईटी इंदौर
3. प्रो. मनीष कुमार गोयल – संयोजक, सीनर्मदा, आईआईटी इंदौर
4. प्रो. प्रणब कुमार महापात्र – प्रोफेसर, आईआईटी गांधीनगर
5. श्री मनोज जोशी – प्रतिनिधि, नर्मदा समग्र
6. श्री नीलेश कटारिया – पर्यावरण संरक्षणविद् एवं प्रतिनिधि, नर्मदा समग्र
6. संधारणीय जल प्रबंधनः नीति, प्रौद्योगिकी एवं जलवायु प्रत्यास्थता कार्यशाला

विश्व जल दिवस के अवसर पर 22 मार्च 2025 को एक व्यापक एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें 78 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यशाला में नर्मदा नदी बेसिन के लिए संधारणीय जल प्रबंधन पद्धतियों, नीतिगत ढाँचों, प्रौद्योगिकीय हस्तक्षेपों तथा जलवायु प्रत्यास्थता संबंधी रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित किया गया।

विश्व जल दिवस कार्यशाला के विशिष्ट अतिथि

1. प्रो. सुहास एस. जोशी – निदेशक, आईआईटी इंदौर
2. श्री पुष्पेंद्र सिंह – मध्य प्रदेश जल संसाधन विभाग (एमपीडब्ल्यूआरडी)
3. डॉ. गौरव कुमार – जल संसाधन विशेषज्ञ
4. डॉ. मनोज कुमार कुर्मी – पुरातत्त्वविद्
5. प्रो. कन्हैया आहूजा – प्रोफेसर, आईआईटी इंदौर
7. संधारणीय विकास हेतु नीतिगत ढाँचे एवं एकीकृत दृष्टिकोण कार्यशाला

29 मई 2025 को 53 प्रतिभागियों की सहभागिता के साथ एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें नर्मदा नदी बेसिन प्रबंधन के संदर्भ में संधारणीय विकास हेतु नीतिगत ढाँचों एवं एकीकृत दृष्टिकोणों का अध्ययन किया गया। कार्यशाला में पर्यावरणीय नीतियों, कानूनी ढाँचों तथा उनके जमीनी स्तर पर कार्यान्वयन से जुड़ी चुनौतियों के अंतर्संबंधों पर चर्चा की गई।

विशिष्ट अतिथि:

1. डॉ. अखिलेश गुप्ता – पूर्व वरिष्ठ सलाहकार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), भारत सरकार
2. प्रो. आशुतोष शर्मा – अध्यक्ष, भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (आईएनएसए) एवं विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), भारत सरकार के पूर्व सचिव
3. प्रो. वी. वी. श्रीनिवास – प्रोफेसर, भारतीय विज्ञान संस्थान (आईआईएससी), बेंगलुरु
4. प्रो. एस. एन. नरुलकर – प्रोफेसर, श्री गोविंदराम सेकसरिया प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान संस्थान (एसजीएसआईटीएस), इंदा

8. राष्ट्रीय जल सम्मेलन 2026

"संधारणीय एवं प्रत्यास्थ भविष्य के लिए जल संसाधनों को उन्नत बनाना" विषय पर राष्ट्रीय जल सम्मेलन 2026 का आयोजन मेहता फैमिली स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी एवं आईआईटी इंदौर के सिविल अभियांत्रिकी विभाग द्वारा 24 मार्च 2026 को आईआईटी इंदौर के नालंदा सभागार में किया गया। सम्मेलन में 150 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसमें शोधकर्ताओं, नीति–निर्माताओं एवं क्षेत्रीय विशेषज्ञों ने जल संसाधन प्रबंधन की उभरती चुनौतियों, नवाचारों तथा संधारणीय समाधानों पर विचार–विमर्श किया।

विशिष्ट अतिथि:

1. श्री जॉन किंग्सले – प्रबंध निदेशक, मध्य प्रदेश औद्योगिक विकास निगम तथा सचिव, औद्योगिक नीति एवं निवेश प्रोत्साहन विभाग, मध्य प्रदेश सरकार
2. प्रो. ए. के. नेमा – उपनिदेशक, आईआईटी दिल्ली

अनुसंधान क्षेत्र एवं प्रमुख विशेषताएँ

- नदी बेसिन प्रबंधन
- एकीकृत जल संसाधन प्रबंधन
- जलवायु की चरम घटनाएँ एवं जलवायु परिवर्तन आकलन
- बाढ़ जोखिम मॉडलिंग
- जल गुणवत्ता निगरानी एवं आकलन
- भूमि उपयोग / भूमि आवरण परिवर्तन विश्लेषण
- सुदूर संवेदन एवं भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस) अनुप्रयोग
- जलवैज्ञानिक मॉडलिंग
- भूजल आकलन
- भू–आकृतिक मानचित्रण
- नदी एवं जनसमुदाय के बीच संबंध
- पर्यावरणीय नीति एवं शासन
- पारिस्थितिक आकलन
- प्रदूषण स्रोतों का मानचित्रण एवं प्रदूषण भार का आकलन
- कृषि एवं औद्योगिक प्रोफाइल का आकलन
- सामाजिक–आर्थिक प्रभाव विश्लेषण
- नदी स्वास्थ्य निगरानी प्रोटोकॉल का विकास

प्रकाशनः 37 परियोजना रिपोर्ट
परियोजना अन्वेषक (पीआई)

प्रो. मनीष कुमार गोयल (पीआई)



प्रोफेसर, सिविल अभियांत्रिकी विभाग एवं मेहता फैमिली स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी (एमएफएसओएस), आईआईटी इंदौर

अध्यक्ष प्रोफेसर – बीआईएस मानकीकरण

ईमेलः mkgoyal/iiti.ac.in, prof.incharge.cnarmada/iiti.ac.in

अनुसंधान के क्षेत्रः जल संसाधन प्रबंधन, जलवायु परिवर्तन प्रभाव आकलन, जलवैज्ञानिक मॉडलिंग, जल विज्ञान में सुदूर संवेदन एवं एआई अनुप्रयोग, आर्द्रभूमि संरक्षण एवं पुनर्स्थापन, वायु गुणवत्ता पूर्वानुमान, पर्यावरणीय प्रणालियों के लिए बिग डेटा विश्लेषण, बाढ़ एवं सूखे के जोखिम का आकलन तथा स्मार्ट सिटी जल अवसंरचना नियोजन।

प्रो. प्रीति शर्मा (सह परियोजना अन्वेषक)



प्रोफेसर एवं प्रमुख, मेहता फैमिली स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी (एमएफएसओएस), आईआईटी इंदौर

ईमेलः psharma/iiti.ac.in

अनुसंधान के क्षेत्रः प्राकृतिक संसाधन अर्थशास्त्र, कृषि नीति एवं भूमि–जल संसाधन आवंटन, खाद्य सुरक्षा एवं ग्रामीण गरीबी विश्लेषण, जलवायु परिवर्तन प्रत्यास्थता एवं अनुकूलन क्षमता आकलन, पर्यावरणीय एवं विकास अर्थशास्त्र, विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) एवं विकासशील देशों से संबंधित व्यापारिक मुद्दे, ऊर्जा नीति तथा संधारणीय संसाधन शासन के लिए संस्थागत अर्थशास्त्र।

प्रो. किरण बाला (सह परियोजना अन्वेषक)



प्रोफेसर, मेहता फैमिली स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी (एमएफएसओएस), आईआईटी इंदौर

ईमेलः kiranbala/iiti.ac.in

अनुसंधान के क्षेत्रः अपशिष्ट जल उपचार एवं जैव–उपचार के लिए शैवाल जैव–प्रौद्योगिकी, सूक्ष्म शैवाल से जैव–ईंधन एवं जैव–प्लास्टिक उत्पादन, शैवाल प्रणालियों के माध्यम से कार्बन डाइऑक्साइड का पृथक्करण, पर्यावरणीय उपचार के लिए जैव–संश्लेषित शैवाल नैनोकण, ग्रे–वॉटर, सीवेज एवं औद्योगिक अपशिष्ट जल के लिए विकेंद्रीकृत जल उपचार प्रौद्योगिकियाँ तथा संधारणीय संसाधन पुनर्प्राप्ति के लिए एकीकृत जैव–रिफाइनरी दृष्टिकोण।



डॉ. प्रियंक जे. शर्मा (सह परियोजना अन्वेषक)

सहायक प्रोफेसर, सिविल अभियांत्रिकी विभाग, आईआईटी इंदौर
ईमेलः priyanksharma/iiti.ac.in

अनुसंधान के क्षेत्रः जलवायु–जल विज्ञान एवं जलवायु की चरम घटनाएँ, गैर–स्थिर आवृत्ति विश्लेषण, संयुक्त चरम घटनाओं का अभिलक्षण, डेटा–आधारित एवं भौतिकी–आधारित संकर मॉडलों का उपयोग करके नदी प्रवाह का पूर्वानुमान, जलाशय संचालन का अनुकूलन, बेसिन स्तर पर जल विज्ञान पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव का आकलन तथा जल–मौसम विज्ञान संबंधी चरों का सांख्यिकीय विश्लेषण।



डॉ. मयूर शिरीष जैन (सह–परियोजना अन्वेषक)

सहायक प्रोफेसर, सिविल अभियांत्रिकी विभाग, आईआईटी इंदौर
ईमेलः mayur.jain/iiti.ac.in

अनुसंधान के क्षेत्रः ठोस एवं खतरनाक अपशिष्ट प्रबंधन, रोटरी ड्रम कंपोस्टिंग एवं पोषक तत्त्वों की पुनर्प्राप्ति, बायोचार–संवर्धित कंपोस्टिंग एवं अवायवीय पाचन, जल गुणवत्ता आकलन एवं उभरती चिंताजनक संदूषक सामग्री, संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के अनुरूप चक्रीय अर्थव्यवस्था के ढाँचे, मृदा पुनर्जीवन तथा अपशिष्ट उपचार प्रणालियों का तकनीकी–आर्थिक संधारणीयता आकलन।



डॉ. आशुतोष मंडपे (सह परियोजना अन्वेषक)

सहायक प्रोफेसर, जानपद अभियांत्रिकी विभाग, आईआईटी इंदौर
ईमेलः amandpe/iiti.ac.in

अनुसंधान के क्षेत्रः ठोस एवं खतरनाक अपशिष्ट प्रबंधन, लैंडफिल अभियांत्रिकी एवं लीचेट उपचार, दूषित स्थलों का जैव–उपचार, पर्यावरणीय प्रभाव आकलन, अपशिष्ट–से–ऊर्जा प्रौद्योगिकियाँ, चक्रीय अर्थव्यवस्था एवं संसाधन पुनर्प्राप्ति, औद्योगिक एवं नगरपालिका ठोस अपशिष्ट के लिए संधारणीय अपशिष्ट प्रबंधन पद्धतियाँ तथा भूजल संदूषण का आकलन।

संपर्क विवरण

प्रो. मनीष कुमार गोयल
प्रभारी प्रोफेसर, सीनर्मदा
जानपद अभियांत्रिकी विभाग, आईआईटी इंदौर
ईमेलः prof-incharge-cnarmada/iiti.ac.in
फोनः +91 0731 660 3288
नर्मदा नदी क्षेत्र प्रबंधन अध्ययन केंद्र (सीनर्मदा)
प्रथम तल, विद्यार्जन संसाधन केंद्र भवन

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर
खंडवा रोड, सिमरोल, इंदौर – 453552, मध्य प्रदेश
– वेबसाइटः https://sites.google.com/iiti.ac.in/cnarmada
– लिंक्डइनः https://www.linkedin-com/company/cnarmada&iit&indore
– परियोजना पोर्टलः https://cnarmada.org

प्रशासन अनुभाग



प्रशासन अनुभाग दल

प्रशासन अनुभाग, संस्थान के गैर–शिक्षण कर्मचारियों के सामान्य प्रशासन एवं मानव संसाधन संबंधी सभी मामलों के प्रबंधन के लिए उत्तरदायी है। यह अनुभाग कर्मचारियों के संस्थान में कार्यभार ग्रहण करने की तिथि से लेकर संस्थान से कार्यमुक्त होने तक के संपूर्ण सेवा अभिलेखों का रखरखाव एवं संरक्षण करता है। यह प्रशासन के अधिष्ठाता, सह–अधिष्ठाता, कुलसचिव तथा अपर कुलसचिव के समग्र मार्गदर्शन एवं पर्यवेक्षण में कार्य करता है। प्रशासनिक एवं मानव संसाधन संबंधी कार्य सहायक कुलसचिव (प्रशासन) द्वारा संबंधित समूह 'ख' एवं 'ग' के कर्मचारियों की सहायता से संपन्न किए जाते हैं।

प्रशासन अनुभाग के प्रमुख कार्य निम्नलिखित हैं:

क. गैर–शिक्षण कर्मचारियों की कार्यभार ग्रहण संबंधी औपचारिकताओं को पूरा करना तथा उनकी सेवा एवं स्थापना संबंधी मामलों का निपटान करना। इसमें वेतन निर्धारण, पदोन्नति, अवकाश, छुट्टी यात्रा रियायत (एलटीसी), आश्रितों की घोषणा, प्रतिनियुक्ति, वार्षिक वेतनवृद्धि, स्थायीकरण तथा संविदा नियुक्तियों की अवधि का विस्तार शामिल है।

ख. सेवा पुस्तिकाओं, व्यक्तिगत फाइलों तथा अन्य सेवा संबंधी अभिलेखों का रखरखाव, अद्यतन एवं अभिरक्षण करना; सूचना का अधिकार (आरटीआई) आवेदनों, अपीलों, न्यायालयीन मामलों तथा अन्य सेवा संबंधी संदर्भों की जाँच करना और उनके उत्तर प्रस्तुत करना।

ग. शिक्षा मंत्रालय, संसद तथा अन्य वैधानिक प्राधिकरणों को सूचना संकलित करके उपलब्ध कराना; गैर–शिक्षण कर्मचारियों की सीधी भर्ती एवं पदोन्नति के लिए आरक्षण रोस्टर तैयार करना, उनका रखरखाव करना तथा उन्हें अद्यतन करना।

गैर शिक्षण कर्मचारियों की संख्या:

क्र.सं.	*कर्मचारी समूह*	*कर्मचारियों की संख्या*
1	समूह 'क'	27
2	समूह 'ख'	60
3	समूह 'ग'	89
	कुल	***176***

प्रशासन अनुभाग की प्रमुख उपलब्धियाँ एवं विशेष कार्य:

क. सभी नियमित कर्मचारियों के वार्षिक सेवा सत्यापन का निर्धारित समय–सीमा के भीतर सफलतापूर्वक कार्य पूरा किया गया, जिससे सेवा अभिलेखों की सटीकता एवं निर्धारित आवश्यकताओं का अनुपालन सुनिश्चित हुआ।

ख. वर्ष 2025 के लिए समूह 'क' एवं समूह 'ख' के सभी कर्मचारियों द्वारा वार्षिक अचल संपत्ति विवरण (एआईपीआर) प्रस्तुत करना 100% सुनिश्चित किया गया।

ग. सूचना का अधिकार (आरटीआई) आवेदनों/अपीलों, न्यायालयीन मामलों, संसद के प्रश्नों तथा मंत्रालय से प्राप्त संदर्भों की समयबद्ध जाँच एवं उत्तर प्रस्तुत करना सुनिश्चित किया गया।

घ. संस्थान के सभी हितधारकों को स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिए इंदौर शहर के प्रमुख अस्पतालों एवं नैदानिक प्रयोगशालाओं को सीजीएचएस दरों पर सूचीबद्ध कराने में सहायता प्रदान की गई।

ङ. निर्धारित अभिलेख प्रतिधारण नीति एवं प्रक्रियाओं के अनुसार अप्रचलित अभिलेखों की व्यवस्थित छँटाई एवं निस्तारण किया गया।

संस्थान पुरस्कार 2026:

क्र.सं.	*पुरस्कार की श्रेणी*	पुरस्कार प्राप्तकर्ता का नाम
	वरिष्ठ गैर–शिक्षण कर्मचारी द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन	डॉ. आनंद पिटारे कार्यशाला अधीक्षक
	कनिष्ठ गैर–शिक्षण कर्मचारी (समूह 'ख' एवं 'ग') द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन	सुश्री चौनिका मल्होत्रा अधीक्षक
		सुश्री अरुणा देवी मिश्रा प्रबंधक
		श्री तरुण विश्वकर्मा कनिष्ठ सहायक
	तकनीकी कर्मचारी द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन	श्री प्रवीण कौशल कनिष्ठ प्रयोगशाला सहायक
		श्री अभिजीत दत्ता कनिष्ठ प्रयोगशाला सहायक
	सहायक कर्मचारी द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन	श्री राम कुमार कनिष्ठ परिचारक
		श्री अवधेश वर्मा कनिष्ठ परिचारक






Ms. Aruna Devi Mishra
Outstanding Performance by Staff Member


Outstanding Performance by Staff Member


Outstanding Performance by Technical Staff Member


Mr. Abhijeet Dutta
Outstanding Performance by Technical Staff Member


Outstanding Performance by Supporting Staff Member



आईआईटी इंदौर शिशु देखभाल केंद्र (क्रेच) सुविधा

भारत सरकार के महिला एवं बाल विकास मंत्रालय (एमडब्ल्यूसीडी) द्वारा 2 नवंबर, 2018 को जारी कार्यालय ज्ञापन के अनुसार, मातृत्व लाभ (संशोधन) अधिनियम, 2017 की धारा 11ए के अनुपालन में शिशु देखभाल केंद्रों की स्थापना एवं संचालन संबंधी दिशा–निर्देश निर्धारित किए गए हैं। पिछले पाँच वर्षों से आईआईटी इंदौर संस्थान के संकाय सदस्यों, शोधकर्ताओं एवं कर्मचारियों के बच्चों के लिए सुरक्षित, स्नेहपूर्ण एवं देखभालपूर्ण वातावरण प्रदान करने वाली क्रेच सुविधा उपलब्ध करा रहा है। यह सुविधा कार्यरत अभिभावकों को गुणवत्तापूर्ण बाल देखभाल सेवाएँ प्रदान करके सहयोग देती है तथा बच्चों के शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक एवं संज्ञानात्मक विकास को प्रोत्साहित करती है।

मातृत्व लाभ (संशोधन) अधिनियम के अनुसार, 50 या उससे अधिक कर्मचारियों वाले प्रतिष्ठानों के लिए शिशु देखभाल केंद्र की सुविधा उपलब्ध कराना अनिवार्य है। इस सुविधा का लाभ लेने वाली महिला कर्मचारियों को अपने बच्चों से दिन में चार बार मिलने की अनुमति है, जिसमें उन्हें दिया जाने वाला विश्राम अंतराल भी शामिल है। आईआईटी इंदौर ने शिशु देखभाल केंद्र के लिए निर्धारित आयु वर्ग तथा केंद्र की स्थापना एवं संचालन संबंधी दिशा–निर्देशों को लागू किया है। इनमें केंद्र का स्थान, समय, आधारभूत संरचना, उपकरण, सुरक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, प्रशिक्षित मानव संसाधन तथा अभिभावकों की सहभागिता जैसे प्रमुख मानदंड शामिल हैं।

वित्तीय वर्ष 2025–26 के दौरान, प्रातःकालीन, अपराह्न, पूर्ण–दिवसीय एवं लचीली समय–सारणी वाली श्रेणियों में कुल 52 बच्चों का पंजीकरण किया गया। इन बच्चों की आयु 7 माह से 8 वर्ष तक थी। यह संस्थान के सदस्यों की आवश्यकताओं को पूरा करने के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

वर्षभर शिशु देखभाल केंद्र में बच्चों के समग्र विकास को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न विकासात्मक, शैक्षणिक एवं मनोरंजक गतिविधियाँ आयोजित की गईं। इनमें कहानी सुनाना, रचनात्मक कलाएँ, संगीत, इनडोर एवं आउटडोर खेल, विभिन्न त्योहारों का आयोजन, रंग दिवस समारोह तथा ग्रीष्मकालीन शिविर शामिल थे।

केंद्र में बच्चों के अनुकूल वातावरण, शैक्षणिक खिलौने, खेल क्षेत्र तथा बच्चों के आराम के लिए सुविधाजनक व्यवस्था उपलब्ध है, जिससे प्रारंभिक बाल्यावस्था के विकास के लिए अनुकूल वातावरण सुनिश्चित होता है। केंद्र में नियमित सफाई एवं स्वच्छीकरण, सीसीटीवी निगरानी, उपस्थिति की व्यवस्थित निगरानी, प्राथमिक उपचार की उपलब्धता तथा प्रशिक्षित बाल देखभाल कर्मियों के माध्यम से सुरक्षा, संरक्षा एवं स्वच्छता के उच्च मानकों को निरंतर बनाए रखा गया है।

समिति के सदस्यों एवं समर्पित देखभालकर्ताओं के मार्गदर्शन में शिशु देखभाल केंद्र का सफलतापूर्वक संचालन किया गया, जिससे बाल देखभाल सेवाएँ निर्बाध रूप से उपलब्ध होती रहीं। अभिभावकों से प्राप्त सकारात्मक प्रतिक्रियाएँ केंद्र द्वारा प्रदान की जाने वाली देखभाल की गुणवत्ता, स्वच्छता, सुरक्षा उपायों तथा विकासात्मक कार्यक्रमों के प्रति उनकी संतुष्टि को दर्शाती हैं। इंदौर के महिला एवं बाल विकास विभाग के अधिकारियों ने केंद्र का दौरा किया तथा यहाँ के बाल–अनुकूल वातावरण, सुदृढ़ सुरक्षा उपायों एवं उत्कृष्ट बाल देखभाल सेवाएँ प्रदान करने की प्रतिबद्धता की सराहना की।





समिति के सदस्यों एवं समर्पित देखभालकर्ताओं के मार्गदर्शन में शिशु गृह का सफलतापूर्वक संचालन किया जा रहा है, जिससे निर्बाध बाल देखभाल सेवाएँ सुनिश्चित हो रही हैं। अभिभावकों से प्राप्त सकारात्मक प्रतिक्रियाएँ शिशु गृह में उपलब्ध देखभाल की गुणवत्ता, स्वच्छता, सुरक्षा व्यवस्था तथा बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु संचालित कार्यक्रमों के प्रति उनकी संतुष्टि को दर्शाती हैं। महिला एवं बाल विकास विभाग, इंदौर के अधिकारियों द्वारा किए गए निरीक्षण के दौरान शिशु गृह के बाल–अनुकूल वातावरण, सुदृढ़ सुरक्षा व्यवस्था तथा गुणवत्तापूर्ण बाल देखभाल के प्रति प्रतिबद्धता की सराहना की गई।

भर्ती प्रकोष्ठ

1. परिचय: भर्ती प्रकोष्ठ का उद्देश्य एक पारदर्शी, कुशल एवं प्रौद्योगिकी–आधारित भर्ती व्यवस्था विकसित करना है, जो उत्कृष्ट प्रतिभाओं को आकर्षित एवं प्रोत्साहित करे तथा मानव संसाधन संबंधी सभी प्रक्रियाओं में उत्कृष्टता, समावेशिता एवं सत्यनिष्ठा सुनिश्चित करे। यह संस्थान में कर्मचारियों से संबंधित सभी मानव संसाधन गतिविधियों के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके कार्यों में सीधी भर्ती, संविदा एवं आउटसोर्सिंग के माध्यम से नियुक्तियाँ, अंशकालिक नियुक्तियाँ तथा विभागीय पदोन्नति समिति (डीपीसी) से संबंधित प्रक्रियाएँ शामिल हैं। इस प्रकोष्ठ का नेतृत्व अपर कुलसचिव (भर्ती अधिकारी) द्वारा किया जाता है तथा उन्हें दो कर्मचारियों की समर्पित टीम का सहयोग प्राप्त होता है।

2. प्रमुख उत्तरदायित्व

भर्ती प्रकोष्ठ के प्रमुख उत्तरदायित्व निम्नलिखित हैं:

(क) गैर–शिक्षण कर्मचारियों की भर्ती करना।

(ख) विभागीय पदोन्नति समिति (डीपीसी) की बैठकों के आयोजन में सहयोग करना तथा पदोन्नति एवं वित्तीय उन्नयन से संबंधित मामलों की प्रक्रिया पूरी करना।

(ग) कर्मचारियों की भर्ती से संबंधित समग्र अभिलेखों का रखरखाव करना।

(घ) कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग (डीओपीटी) के पोर्टल पर भर्ती संबंधी आँकड़ों को नियमित रूप से अद्यतन करना।

(ङ) कार्यकुशलता एवं पारदर्शिता बढ़ाने के लिए प्रक्रिया स्वचालन, डिजिटल दस्तावेजीकरण तथा ई–गवर्नेंस संबंधी पहलों को लागू करना।

(च) शिक्षा मंत्रालय (एमओई), सूचना का अधिकार (आरटीआई) आवेदनों, शिकायतों तथा संसदीय प्रश्नावलियों (लोकसभा/राज्यसभा) से संबंधित प्रश्नों का समयबद्ध उत्तर देना।

(छ) रोजगार मेला जैसी केंद्र सरकार की पहलों के साथ समन्वय करना।

(ज) आउटसोर्सिंग एजेंसी, विजिटिंग कंसल्टेंट तथा संस्थान में एक वर्ष की अवधि के लिए संविदा के आधार पर नियुक्तियाँ करना।

3. प्रमुख गतिविधियों एवं उपलब्धियों की झलक (2025–26)

(क) विभिन्न माध्यमों से कर्मचारियों की सफलतापूर्वक भर्ती की गई, जिसमें विभागीय पदोन्नति समिति (डीपीसी) की प्रक्रिया के माध्यम से 21 पदोन्नतियाँ/वित्तीय उन्नयन शामिल हैं।

(ख) भर्ती प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित एवं त्वरित बनाने के लिए संस्थान के भर्ती पोर्टल को उन्नत सुविधाओं के साथ अद्यतन किया गया।

(ग) विज्ञापित गैर–शिक्षण पदों पर सीधी भर्ती की प्रक्रिया के लिए भर्ती प्रकोष्ठ द्वारा समर्थ पोर्टल का उपयोग प्रारंभ किया गया।

(घ) भर्ती संबंधी कार्यों को सुरक्षित एवं कुशलतापूर्वक संचालित करने के लिए एक समर्पित स्वतंत्र सर्वर स्थापित किया गया।

(ङ) भर्ती प्रक्रिया को 100 प्रतिशत कागज रहित बनाया गया। इसमें पारंपरिक हस्तचालित फाइलों के स्थान पर टैबलेट के माध्यम से डिजिटल जॉब सूटेबिलिटी टेस्ट/साक्षात्कार आयोजित करना भी शामिल है।

4.वर्ष 2025–26 के दौरान भर्ती किए गए कर्मचारी

भर्ती का माध्यम	भर्ती किए गए कर्मचारियों की संख्या
सीधी भर्ती	13
विभागीय पदोन्नति (डीपीसी)	08
संस्थान में संविदा नियुक्ति	05
आउटसोर्सिंग के माध्यम से नियुक्त कर्मचारी	25
अंशकालिक विजिटिंग कंसल्टेंट एवं चिकित्सक	02

5. निष्कर्ष: भर्ती प्रकोष्ठ, सभी भर्ती प्रक्रियाओं में पारदर्शिता, दक्षता तथा सरकारी नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करके संस्थान के मानव संसाधन आधार को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। स्वचालन एवं डिजिटल रूपांतरण पर इसके निरंतर ध्यान ने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में संस्थान को कुशल एवं प्रौद्योगिकी–आधारित भर्ती प्रक्रियाओं के एक आदर्श के रूप में स्थापित किया है।

वित्त एवं लेखा अनुभाग

2.1 वर्ष 2025–26 की आय एवं व्यय का विवरण निम्नलिखित है:

(₹ करोड़ में)

क्र.सं.	विवरण	2025–2026 चालू वर्ष
1	**आय**	
1.1.	अनुदान	223.55
1.2.	शैक्षणिक प्राप्तियाँ	42.95
1.3.	निवेश से आय	0.00
1.4.	अर्जित ब्याज	22.25
1.5.	अन्य आय	3.66
1.6.	**कुल (1)**	**292.41**
2	**व्यय**	
2.1.	कर्मचारी वेतन एवं लाभ	105.04
2.2.	शैक्षणिक व्यय	35.32
2.3.	प्रशासनिक एवं सामान्य व्यय	46.04
2.4.	परिवहन व्यय	.90
2.5.	मरम्मत एवं रखरखाव	14.14
2.6.	मूल्यह्रास	54.17
2.7.	अन्य व्यय	21.72
2.8.	**कुल (2)**	**277.33**
3	**आय की व्यय पर अधिकता से शेष राशि**	**15.08**

2.2 पूंजीगत संपत्तियों के सृजन से संबंधित स्थिति निम्नलिखित है:

(₹ करोड़ में)

क्र.सं.	विवरण	2025–2026		
		हेफ़ा	अन्य प्रयोजन	कुल
2.1	योजना के अंतर्गत सहायता अनुदान की प्रारंभिक शेष राशि	2.99	24.54	27.53
2.2	वर्ष के दौरान प्राप्त अनुदान	124.81	261.85	386.66
2.3	आईआरजी से जोड़ी गई ओएच–35 / ओएच–31 / ओएच–36 के अंतर्गत कमी की राशि	0.00	2.65	2.65
2.4	**संस्थान के पास उपलब्ध कुल निधि**	**127.80**	**289.04**	**416.84**
2.5	राजस्व व्यय हेतु उपयोग किया गया अनुदान	0.00	209.17	209.17
2.5.1	हेफ़ा के लिए सावधि ऋण पर ब्याज	14.38	0.00	14.38
2.5.2	हेफ़ा ऋण का पुनर्भुगतान (75 प्रतिशत)	86.57	0.00	86.57
2.6	**आय एवं व्यय के लिए उपयोग का समायोजन करने के बाद योजना अनुदान**	**26.85**	**79.87**	**106.72**
2.7	आधारभूत संरचना, भवनों, निर्माण कार्यों, उपकरणों तथा अन्य परिसंपत्तियों के विकास हेतु उपयोग की गई राशि	0.00	71.67	71.67
2.8	**31.03.2026 को अप्रयुक्त शेष राशि**	**26.85**	**8.2**	**35.05**

2.3 निधियों की उपलब्धता एवं उनके उपयोग की स्थितिः

वित्तीय वर्ष 2025–26 के दौरान, ₹1,911.12 करोड़ की संशोधित विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) की स्वीकृति पर शिक्षा मंत्रालय द्वारा ₹386.66 करोड़ (आवर्ती एवं अनावर्ती प्रयोजनों हेतु ₹261.85 करोड़ + हेफा प्रयोजन हेतु ₹124.81 करोड़) की राशि जारी की गई। ओएच–35/ओएच–31 के अंतर्गत कमी की राशि को आंतरिक राजस्व सृजन (आईआरजी) से पूरा करते हुए ₹2.65 करोड़ सहायता अनुदान में जमा किए गए। वर्ष के दौरान, संस्थान की आंतरिक आय ₹32.83 करोड़ रही। आईआरजी से हेफा के मूल ऋण की 25 प्रतिशत राशि (संस्थान का हिस्सा) के भुगतान के समायोजन के बाद यह राशि ₹28.86 करोड़ रही। इसके अतिरिक्त, 01.04.2026 को उपलब्ध अप्रयुक्त शेष राशि ₹35.05 करोड़ को भी ध्यान में रखा गया।

संस्थान के पास उपलब्ध अनुदान में से ₹71.67 करोड़ की राशि का उपयोग पूंजीगत संपत्तियों के सृजन हेतु किया गया तथा ₹310.12 करोड़ की राशि (आवर्ती प्रयोजन हेतु ₹209.17 करोड़ + हेफा प्रयोजन हेतु ₹100.95 करोड़) (जिसमें ₹54.17 करोड़ का मूल्यह्रास शामिल नहीं है) आवर्ती व्यय पर खर्च की गई। इसके अतिरिक्त, वर्ष के दौरान अर्जित ₹32.83 करोड़ की आंतरिक आय में से हेफा ऋण की मूलधन राशि (संस्थान का 25 प्रतिशत हिस्सा) के पुनर्भुगतान, ओएच–35/ओएच–31 के अंतर्गत कमी तथा एसआईपीपीटी/वाईएफआरएसजी योजनाओं के लिए टीआरजी से प्राप्त ₹3.79 करोड़ की वित्तीय सहायता के समायोजन के बाद शेष राशि संग्रह निधि में हस्तांतरित की गई।

हेफा ऋण की स्वीकृति, राशि जारी होने, पुनर्भुगतान एवं बकाया देयता की स्थिति

संस्थान को पाँच चरणों (टीएल–1 से टीएल–5) में कुल ₹1,696.83 करोड़ के हेफा ऋण स्वीकृत किए गए हैं। स्वीकृत कुल राशि में से मार्च 2026 तक टीएल–1 से टीएल–4 के अंतर्गत ₹736.99 करोड़ की राशि वितरित की जा चुकी है।

कुल वितरित राशि ₹736.99 करोड़ में से संस्थान ने ₹529.75 करोड़ का पुनर्भुगतान कर दिया है। इस प्रकार, 31 मार्च, 2026 तक ऋण की बकाया मूलधन राशि ₹207.24 करोड़ है।

2.4. बच्चों के लिए शिक्षा सहायताः

वित्तीय वर्ष 2025–2026 के दौरान, भारत सरकार के मानदंडों के अनुसार, संस्थान ने 210 संकाय सदस्यगण एवं कर्मचारीगण को बच्चों की शिक्षा सहायता के रूप में कुल ₹93,54,375/– की प्रतिपूर्ति की।

2.5. कर्मचारी सदस्यगण के लिए परिवहन सुविधाएँः

आईआईटी इंदौर का परिसर इंदौर शहर से दूर स्थित होने के कारण, विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों एवं कर्मचारियों की सुविधा के लिए संस्थान परिसर से इंदौर शहर तक आने–जाने हेतु रियायती दरों पर परिवहन सुविधाएँ उपलब्ध कराई गई हैं।

2.6. अग्रिम राशिः

प्रतिवेदन वर्ष के दौरान, निम्नलिखित प्रयोजनों के लिए व्यक्तिगत अग्रिम के रूप में कुल ₹61.86 लाख की राशि स्वीकृत की गईः

क्र.सं.	अग्रिम का प्रकार	लाभार्थियों की संख्या	स्वीकृत राशि (₹ में)	31.03.2026 को बकाया राशि (₹ में)
1	मकान निर्माण अग्रिम	07	1,39,74,160	3,30,03,855
2	कार अग्रिम	–	–	29,000
3	व्यक्तिगत कंप्यूटर अग्रिम	02	1,00,000	1,62,655
	कुल		**1,40,74,160**	**3,31,95,520**

2.7 फेलोशिप/छात्रवृत्तियाँ

2.7.1 शोधार्थियों के लिएः

वित्तीय वर्ष 2025–26 के दौरान संस्थान ने निम्नलिखित श्रेणियों के शोधार्थियों को फेलोशिप की राशि वितरित की:

क्र.सं.	शोधार्थियों की श्रेणी	विद्यार्थियों की संख्या	फेलोशिप (प्रतिमाह)
01.	शिक्षा मंत्रालय के अनुदान से संस्थान द्वारा वित्तपोषित – पीएच.डी.	421	जेआरएफ – ₹37,000/–
02.	विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा वित्तपोषित – पीएच.डी.	48	एसआरएफ – ₹42,000/–
03.	शिक्षा मंत्रालय के अनुदान से संस्थान द्वारा वित्तपोषित – एम.टेक.	372	₹12,400/–
04.	शिक्षा मंत्रालय के अनुदान से संस्थान द्वारा वित्तपोषित – एम.एस. (रिसर्च)	56	₹12,400/–
05.	डीबीटी – एनसीसीएस, पुणे	5	₹35,000/–

मेरिट–कम–मीन्स छात्रवृत्तिः

संस्थान ने निर्धारित पात्रता मानदंडों को पूरा करने वाले बी.टेक. एवं एम.एससी. के विद्यार्थियों को विभिन्न श्रेणियों के अंतर्गत ₹6,60,000/– की मेरिट–कम–मीन्स छात्रवृत्ति वितरित की।

डिप्रेव्ड क्लास के विद्यार्थियों की शिक्षण शुल्क में छूटः

संस्थान ने शिक्षा मंत्रालय के पत्र संख्या एफ. सं. 24–2/2016 टीएस–1, दिनांक 4 अप्रैल, 2016 के अनुसार, शैक्षणिक सत्र 2025–26 में प्रवेश लेने वाले डिप्रेव्ड क्लास के स्नातक विद्यार्थियों की शिक्षण शुल्क में छूट के रूप में ₹7,79,00,141/– की राशि माफ की/वितरित की।

तुलन–पत्र तथा आय एवं व्यय का सारांश निम्नलिखित हैः

क. 31 मार्च, 2026 की स्थिति के अनुसार तुलन–पत्र

अलग से संलग्न।

ख. 31 मार्च, 2026 को समाप्त वर्ष का आय एवं व्यय लेखा

अलग से संलग्न।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर
31 मार्च, 2026 तक का तुलन पत्र

(₹ करोड़ में)

निधियों का स्रोत	अनुसूची	31–03–2026 तक	31–03–2025 तक
संग्रह/पूँजीगत निधि	1	14,35,91,74,290	12,60,07,39,960
निर्दिष्ट/निश्चित/धर्मादा निधि	2	30,11,29,190	23,98,60,099
वर्तमान देयताएँ तथा प्रावधान	3	4,71,35,09,189	4,25,09,53,972
कुल		**19,37,38,12,669**	**17,09,15,54,030**
निधियों का उपयोग			
अचल संपत्तियाँ	4		
क. मूर्त संपत्तियाँ		11,33,14,04,331	10,74,27,23,942
ख. अमूर्त संपत्तियाँ		3,83,97,372	4,61,75,852
ग. पूँजीगत कार्य–प्रगति		1,93,12,21,072	81,58,97,943
निश्चित/ धर्मादा निधि से निवेश			
दीर्घ अवधि			
अल्प अवधि	5	38,41,116	28,91,116
निवेश – अन्य	6	1,00,000	1,00,000
चालू संपत्ति	7	4,28,91,10,482	3,34,66,45,174
ऋण, अग्रिम राशि तथा जमा राशि	8	1,77,97,38,296	2,13,71,20,003
कुल		**19,37,38,12,669**	**17,09,15,54,030**

31 मार्च 2026 को समाप्त हुए वित्तीय वर्ष हेतु आय एवं व्यय खाता

(राशि ₹ में)

विवरण		अनुसूची	2025-2026	2024-2025
(क) आय				
अकादमिक प्राप्तियाँ		9	42,95,63,750	46,81,37,595
अनुदान एवं सहायता राशि		10	2,23,55,31,241	1,85,01,50,696
I. हेफा से टर्म लोन पर ब्याज के				
भुगतान के लिए उपयोग किया गया अनुदान	14,37,94,280			
ii. राजस्व व्यय के लिए उपयोग किया गया अनुदान	2,06,52,04,962			
iii. राजस्व/पूँजीगत व्यय के लिए उपयोग किया गया आईआरजी	2,65,31,999			
निवेश से आय		11	-	-
अर्जित ब्याज		12	-	-
- संग्रह पर/आईआरजी			22,25,11,374	19,46,46,400
अन्य आय		13	2,98,98,149	2,25,90,678
पूर्व अवधि आय		14	66,72,841	1,51,87,237
कुल (क)			**2,92,41,77,356**	**2,55,07,12,606**
(ख) व्यय				
कर्मचारी भुगतान तथा हितलाभ (स्थापना व्यय)		15	1,05,04,58,000	1,05,43,07,114
अकादमिक व्यय		16	35,32,48,209	32,18,93,746
प्रशासनिक और सामान्य व्यय		17	46,04,58,882	32,87,59,976
परिवहन व्यय		18	89,56,288	81,46,867
मरम्मत तथा अनुरक्षण		19	14,13,78,117	11,84,26,196
वित्त लागत		20	14,38,47,912	9,39,92,231
मूल्यह्रास		4	54,17,21,549	50,97,42,289
अन्य व्यय		21	32,88,416	23,20,296
पूर्व अवधि व्यय		22	7,00,34,226	81,61,453
कुल (ख)			**2,77,33,91,598**	**2,44,57,50,167**
शेष राशि व्यय पर आय की अधिकता (क–ख)			**15,07,85,758**	**10,49,62,439**
घटाएँ:(i) आईआरजी से उपयोग किए जा रहे ओएच–36 के तहत घाटा			-	-
(ii) आईआरजी से उपयोग किए जा रहे ओएच–31 के तहत घाटा			-2,23,17,769	-8,58,44,355
(iii) आईआरजी से उपयोग किए जा रहे ओएच–35 के तहत घाटा			-42,14,230	-68,47,142
(iv) आईआरजी से 25 प्रतिशत हेफा मूल ऋण का भुगतान (संस्थान शेयर)			-28,85,65,000	-15,70,64,442
(v) आईआरजी से हेफा ऋण पर ब्याज का भुगतान (संस्थान शेयर)			-73,94,577	-44,71,751
(vi) एसआईपीपीटी योजना, आईआरजी से वित्त पोषित			-40,75,000	-
(vii) सामाजिक समस्याओं में टेक्नोलॉजी इंटरवेंशन, आईआरजी से वित्त पोषित			-	-
(viii) वाईएफआरएसजी अनुदान, आईआरजी से वित्त पोषित			-3,38,13,499	-
(ix) 2025–2026 (2024–25) के आंतरिक राजस्व सृजन के लिए संग्रह निधि में ट्रांसफर (महत्वपूर्ण लेखांकन नीतियां देखें – बिंदु संख्या 8.1)			-32,82,66,039	-39,14,58,122
कुल			**-53,78,60,356**	**-53,62,51,623**
जोड़ें: पूँजीगत निधि से राशि स्थानांतरण				
- मूल्यह्रास	54,17,21,549		-	-
- छुट्टी नकदीकरण देयता	55,64,493		-	-
- ग्रेच्युटी देयता	-94,25,685		-	-
शेष अधिशेष (घाटा) पूँजीगत निधि में ले जाया गया			**-53,78,60,356**	**-53,62,51,623**

सामग्री प्रबंधन अनुभाग (एमएमएस)

वित्तीय वर्ष 2025–2026 में 31 मार्च, 2026 तक सामग्री प्रबंधन अनुभाग की गतिविधियों का विवरण

क्र.सं.	विवरण	2025-26	मूल्य (₹)
1.	कुल तैयार किए गए मांग–पत्र (इंडेंट)	कुल मांग–पत्र (इंडेंट) – 600 संख्या विभागीय – 575 संख्या 10 लाख रुपये से अधिक की परियोजनाएँ – 25 संख्या	विभागीय निधिः ₹ 60.22 करोड़ 10 लाख रुपये से अधिक के परियोजना मांग–पत्रः ₹ 24.85 करोड़ कुल मांग–पत्र मूल्यः ₹ 85.07 करोड़
2.	कुल जारी किए गए क्रय आदेश	कुल संख्याः 603 विस्तृत विवरणः • कुल क्रय आदेश (एलपीसी): 403 संख्या (गैर–जेम) • कुल क्रय आदेश (पीएसी): 16 संख्या (गैर–जेम) • कुल क्रय आदेश (सीपीपीपी): 06 संख्या (ई–प्रोक्योरमेंट) • कुल जेम आदेशः 178 संख्या (ई–प्रोक्योरमेंट)	कुल क्रय आदेश मूल्यः ₹ 60,80,57,506/– विस्तृत विवरणः • क्रय आदेश मूल्य (एलपीसी): ₹ 22,67,31,547/– (गैर–जेम) • क्रय आदेश मूल्य (पीएसी): ₹ 1,26,26,041/– (गैर–जेम) • क्रय आदेश मूल्य (सीपीपीपी): ₹ 13,28,98,415/– • जेम पर ई–प्रोक्योरमेंटः ₹ 23,58,01,503/–
3.	बोली–पूर्व बैठक	59 से अधिक संख्या	विभिन्न निविदा प्रक्रियाओं के अंतर्गत आपूर्ति के दायरे, तकनीकी विनिर्देशों, मूल्यांकन मानदंडों तथा संभावित बोलीदाताओं के प्रश्नों के समाधान हेतु बोली–पूर्व बैठकें आयोजित की गईं।
1.	वापस की गई पीबीजी (समाप्त)	56 संख्या	₹ 75,95,940/–
5.	रियायती सीमा शुल्क (आयात)	55 संख्या	₹ 30,56,64,541/–
6.	भारत एवं विदेश में नमूनों/स्पेयर पार्ट्स का निर्यात	04 संख्या	अनुसंधान के उद्देश्य से भारत से बाहर नमूने भेजे गए।
7.	ईएमडी वापसी की प्रक्रिया पूर्ण (31/03/2026 तक अंतिम रूप दी गई निविदाओं के लिए)	71 संख्या	₹ 1,32,26,000/–
8.	स्थापित लेटर ऑफ क्रेडिट (एल/सी)	कुल 17 संख्या (देश के भीतर एवं विदेश)	स्थापित लेटर ऑफ क्रेडिट का कुल मूल्यः ₹ 21,19,29,118/–
9.	कुल खरीद में विभिन्न माध्यमों से खरीद का प्रतिशत	आदेशों की संख्या के अनुसार ई–प्रोक्योरमेंट (जेम + सीपीपी) = 41.88 प्रतिशत	मूल्य के आधार पर ई–प्रोक्योरमेंट (जेम + सीपीपी) = 63.34 प्रतिशत
10.	शिक्षा मंत्रालय से वैश्विक निविदा छूट की स्वीकृति	02 संख्या	₹ 2,44,80,000/–

11.	संकाय सदस्यों/विद्यार्थियों द्वारा सीधे खरीद के अंतर्गत आयात हेतु समन्वय एवं मंजूरी	43 संख्या	₹ 21.56 लाख
	केंद्रीय भंडारण		
12.	कुल स्टॉक प्रविष्टियाँ (उपभोज्य सामग्री)	5,801	₹ 14,13,99,303/–
13.	कुल स्टॉक प्रविष्टियाँ (गैर–उपभोज्य सामग्री/परिसंपत्तियाँ)	2,845	₹ 70,93,10,661/–

प्रशस्त कार्यप्रणालियाँ:

क्र.सं.	विवरण	टिप्पणियाँ
1.	बोली–पूर्व बैठक	बोली–पूर्व बैठकें निविदा प्रक्रिया में पारदर्शिता, निष्पक्षता और प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देती हैं। इनके माध्यम से संभावित बोलीदाताओं को परियोजना संबंधी आवश्यकताओं पर स्पष्टीकरण प्राप्त करने का अवसर मिलता है, जिससे सभी प्रतिभागियों को समान अवसर सुनिश्चित होता है। इसी क्रम में, आईआईटी इंदौर ने वित्तीय वर्ष 2025–26 के दौरान अपनी निविदाओं के अंतर्गत 59 से अधिक बोली–पूर्व बैठकें आयोजित कीं, जिससे निविदा प्रक्रिया में पारदर्शिता और बोलीदाताओं के साथ खुला संवाद सुनिश्चित हुआ।
2.	अयोग्य घोषित बोलीदाताओं को अभ्यावेदन का अवसर	आईआईटी इंदौर अयोग्य घोषित बोलीदाताओं को अपना पक्ष प्रस्तुत करने, किसी भी गलतफहमी को दूर करने तथा संभावित त्रुटियों को सुधारने का अवसर प्रदान करता है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि योग्य बोलीदाताओं को निविदा प्रक्रिया से अनुचित रूप से बाहर न किया जाए। यह दृष्टिकोण संस्थान की खरीद प्रणाली में पारदर्शिता और निष्पक्षता के सिद्धांतों को बनाए रखता है।
3.	परियोजना की समय–सीमा के भीतर खरीद	परियोजना की खरीद संबंधी समय–सीमाओं का पालन करना अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे परियोजना के क्रियान्वयन के लिए आवश्यक सामग्री, सेवाओं और उपकरणों की समय पर उपलब्धता सुनिश्चित होती है। इसी क्रम में, आईआईटी इंदौर ने परियोजना की आवश्यकताओं के अनुरूप खरीद प्रक्रिया को समयबद्ध तरीके से प्रारंभ किया है, ताकि परियोजना की खरीद संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अनुकूलित खरीद चक्र विकसित किया जा सके।
4.	क्षमता निर्माण	1. ईआरपी 2.0 – ईआरपी 2.0 शुरू किया गया है, जिसके अंतर्गत मांग–पत्र तैयार करने से लेकर क्रय आदेश जारी करने तक की संपूर्ण प्रक्रिया ऑनलाइन है। यह सुविधा 25 लाख रुपये तक की खरीद के लिए लागू है। 2. गवर्नमेंट ई–मार्केटप्लेस (जेम) पर मार्गदर्शन सत्र – सभी हितधारकों, मांग–पत्र तैयार करने वाले अधिकारियों, संबंधित सहायक कर्मचारियों तथा कार्यालय कर्मचारियों के लिए मार्गदर्शन सत्र आयोजित किए जाते हैं। इन सत्रों का उद्देश्य खरीद एवं संबंधित गतिविधियों के लिए जेम पोर्टल के प्रभावी उपयोग और संचालन हेतु आवश्यक मार्गदर्शन एवं सहायता प्रदान करना है। इसके अतिरिक्त, इन सत्रों के संचालन हेतु सामग्री प्रबंधन अनुभाग में जेम सहायता डेस्क एवं प्रशिक्षण डेस्क भी स्थापित किए गए हैं।

सेवा अनुबंध



संस्थान की सेवा संविदाओं की बढ़ती संख्या, वित्तीय मूल्य एवं जटिलता तथा दैनिक कार्यों के सुचारु संचालन में आवश्यक सेवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका को ध्यान में रखते हुए, कार्यालय आदेश संख्या आईआईटीआई/आरओ/48/2024/58 दिनांक 09.07.2024 के माध्यम से सेवा संविदा अनुभाग की स्थापना की गई। इस अनुभाग की स्थापना का उद्देश्य संस्थान में सेवा संविदाओं की व्यवस्थित योजना, खरीद, निष्पादन, प्रशासन, निगरानी तथा कार्य–निष्पादन प्रबंधन के लिए संस्थागत ढाँचे को सुदृढ़ करना था।

सेवा संविदा अनुभाग के प्रमुख उद्देश्य प्रभावी एवं पारदर्शी खरीद तथा संविदा प्रबंधन सुनिश्चित करना; व्यवस्थित एवं आवधिक मूल्यांकन के माध्यम से सेवा प्रदाताओं के कार्य–निष्पादन की निगरानी करना; संविदात्मक दायित्वों एवं लागू वैधानिक आवश्यकताओं का अनुपालन सुनिश्चित करना; सेवा की गुणवत्ता, जवाबदेही एवं परिचालन दक्षता में वृद्धि करना; तथा सेवा संविदाओं के प्रबंधन हेतु केंद्रीय नोडल अनुभाग के रूप में कार्य करना है।

सेवा संविदा अनुभाग की प्रमुख उपलब्धियाँ

1. *सक्रिय सेवा संविदाओं का प्रबंधनः* संस्थान के महत्वपूर्ण संचालन एवं आवश्यक सहायक सेवाओं से संबंधित 54 सक्रिय सेवा संविदाओं का सफलतापूर्वक प्रबंधन किया जा रहा है। इसके अंतर्गत 22 करोड़ मूल्य की संविदाओं का व्यवस्थित प्रशासन, निगरानी तथा सेवाओं की निरंतरता सुनिश्चित की जा रही है।

2. *इलेक्ट्रॉनिक बैंक गारंटी (ई–बीजी) को अपनानाः* एनईएसएल पोर्टल के माध्यम से बयाना राशि जमा (ईएमडी)/बोली प्रतिभूति तथा निष्पादन बैंक गारंटी (पीबीजी) के लिए इलेक्ट्रॉनिक बैंक गारंटी प्रणाली शुरू की गई। यह प्रणाली बैंक गारंटियों को सुरक्षित एवं कागजरहित तरीके से जमा करने और उनका सत्यापन करने में सक्षम बनाती है, जिससे संविदा प्रशासन में पारदर्शिता एवं दक्षता बढ़ी है।

3. *संविदात्मक विवादों के न्यूनीकरण हेतु रूपरेखा का संस्थानीकरणः* संविदात्मक विवादों के न्यूनीकरण एवं समाधान के लिए व्यवस्थित दिशा–निर्देश विकसित कर लागू किए गए हैं। इससे सेवा संविदाओं में एकरूपता, पारदर्शिता तथा विवादों का समयबद्ध समाधान सुनिश्चित करने में सहायता मिली है।

4. *प्रतिक्रिया–आधारित संविदा कार्य–निष्पादन एवं विस्तार की निगरानीः* सेवा प्रदाताओं के कार्य–निष्पादन की समीक्षा तथा संविदा विस्तार की प्रक्रिया के लिए मानकीकृत उपयोगकर्ता प्रतिक्रिया तंत्र से युक्त ईआरपी–आधारित संविदा निगरानी प्रणाली शुरू की गई। इससे कार्य–निष्पादन के आधार पर निर्णय लेने, जवाबदेही सुदृढ़ करने तथा सेवा गुणवत्ता में निरंतर सुधार को बढ़ावा मिला है।

5. *संविदा अभिलेखों का डिजिटलीकरणः* 16,932 पृष्ठों वाली 69 संविदा फाइलों का डिजिटलीकरण किया गया। इससे अभिलेखों का कुशल प्रबंधन, बेहतर सुलभता, दस्तावेजों की त्वरित प्राप्ति तथा संविदा प्रशासन में पारदर्शिता बढ़ी है।

6. *ईआरपी प्रणाली का कार्यान्वयनः* अनुभाग ने ईआरपी–आधारित कार्यप्रवाह लागू करके डिजिटलीकरण को आगे बढ़ाया है। इससे सेवाएँ शुरू करने के लिए ऑनलाइन मांग–पत्र प्रस्तुत करने, सेवा के कार्यक्षेत्र को परिभाषित करने तथा अनुमोदन प्राप्त करने की सुविधा उपलब्ध हुई है। स्वचालित अनुस्मारक सेवा निष्पादन की निगरानी तथा संविदाओं की समय पर समीक्षा एवं विस्तार में सहायता करते हैं। यह प्रणाली किराया, बिजली एवं पानी के शुल्कों की समीक्षा में भी सहायक है।

7. *परिसर में वाणिज्यिक सुविधाओं का विस्तारः* परिसर में 4 वाणिज्यिक आउटलेट्स का संचालन शुरू करके तथा 3 अतिरिक्त आउटलेट्स के लिए कार्यादेश जारी करके वाणिज्यिक सुविधाओं के विस्तार में सहयोग दिया गया।



प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रम

खाद्य सुरक्षा एवं स्वच्छता पर FoSTaC प्रशिक्षणः भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई), नई दिल्ली द्वारा 14 जून, 2025 को खाद्य सुरक्षा प्रशिक्षण एवं प्रमाणन (FoSTaC) पहल के अंतर्गत बुनियादी खानपान प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न खाद्य आउटलेट्स एवं मेस सेवा प्रदाताओं के लगभग 50 खाद्य संचालकों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य परिसर की भोजन सुविधाओं में खाद्य सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाना, स्वच्छता मानकों को बनाए रखना तथा लागू खाद्य सुरक्षा संबंधी आवश्यकताओं का अनुपालन सुनिश्चित करना था।



अनुसंधान एवं विकास (आर एंड डी)

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर में अनुसंधान एवं विकास की प्रमुख उपलब्धियाँ

1. समग्र आँकड़े

- विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों द्वारा वित्तपोषित 909 से अधिक अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं का सफलतापूर्वक क्रियान्वयन एवं संचालन किया गया है। इनमें 11 स्पार्क परियोजनाएँ शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, अब तक 731 परामर्श परियोजनाएँ पूरी की जा चुकी हैं।
- प्रायोजित अनुसंधान परियोजनाओं, परामर्श कार्यों, कार्यशालाओं तथा संबंधित शैक्षणिक गतिविधियों के माध्यम से संस्थान को कुल लगभग 843 करोड़ की धनराशि प्राप्त हुई है।
- संकाय सदस्यों एवं शोधकर्ताओं ने प्रतिष्ठित राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं, सम्मेलनों तथा अन्य विद्वत मंचों पर 10,743 से अधिक शोध प्रकाशनों में योगदान दिया है।
- बौद्धिक संपदा सृजन के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति करते हुए संस्थान को 135 पेटेंट प्राप्त हुए हैं, जिनमें 2 अमेरिकी पेटेंट तथा 2 चीनी पेटेंट शामिल हैं।

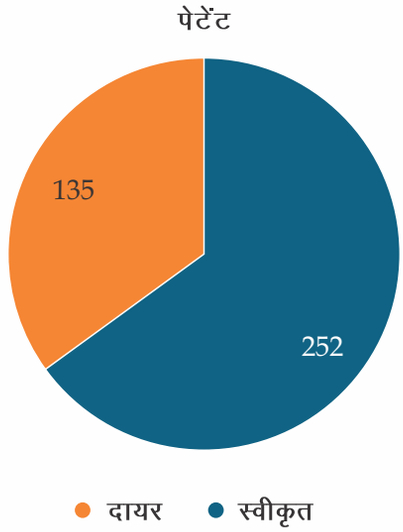

- नवाचारपूर्ण प्रौद्योगिकियों के प्रौद्योगिकी तत्परता स्तर (टीआरएल) को बढ़ाने के लिए ट्रांसलेशनल रिसर्च फेलोशिप (टीआरएफ) कार्यक्रम के अंतर्गत संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष 10–15 फेलोशिप पद स्वीकृत किए गए हैं। इस कार्यक्रम के लिए प्रतिवर्ष अधिकतम रु. 1 करोड़ की वित्तीय सहायता निर्धारित है।
- प्रयोगशाला से जनसामान्य तक (लैब–टू–लैब) की अवधारणा को प्रोत्साहित करने तथा अनुसंधान के परिणामों को व्यावहारिक एवं सामाजिक अनुप्रयोगों में रूपांतरित करने की प्रक्रिया को गति देने के लिए कुल 31 ट्रांसलेशनल रिसर्च फेलोशिप प्रदान की गई हैं।
- उच्च–मूल्य वाली एएनआरएफ–पेयर परियोजना के अंतर्गत, हब संस्थान के रूप में आईआईटी इंदौर ने छह स्पोक संस्थानों सहित अपने लिए कुल रु. 46.30 करोड़ की खरीद संबंधी गतिविधियाँ छह महीने से भी कम समय में सफलतापूर्वक पूरी कीं। इस प्रक्रिया में 20 से अधिक उच्च–मूल्य की निविदाएँ तथा 75 से अधिक एलपीसी (न्यूनतम मूल्य निर्धारण समितियाँ) शामिल थीं। यह उपलब्धि संस्थान के अनुसंधान एवं विकास (आर एंड डी) खरीद प्रकोष्ठ तथा सामग्री प्रबंधन अनुभाग के संयुक्त प्रयासों से संभव हुई।

2. हाल ही में स्वीकृत उच्च–मूल्य की परियोजनाएँ

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर को हाल ही में राष्ट्रीय प्रमुख कार्यक्रमों के अंतर्गत कई प्रतिष्ठित उच्च–मूल्य की परियोजनाओं के लिए स्वीकृति प्राप्त हुई है। निम्नलिखित परियोजना की अंतिम स्वीकृति की प्रतीक्षा है।

- **डीएसटी साथी प्रस्ताव**

आईआईटी इंदौर को डीएसटी साथी प्रस्ताव के लिए सैद्धांतिक स्वीकृति भी प्राप्त हुई है। इस योजना के अंतर्गत विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) से सह–वित्तपोषण की अधिकतम सीमा रु. 60 करोड़ निर्धारित है। डीएसटी ने आईआईटी इंदौर, नैट्रैक्स इंडिया, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय (डीएवीवी), विक्रम विश्वविद्यालय आदि को शामिल करने वाले हमारे समूह का चयन किया है।

3. *प्रमुख अनुसंधान एवं नवाचार पहलें*

- एएनआरएफ–पेयर हब सक्षमः एएनआरएफ–पेयर योजना के अंतर्गत, आईआईटी इंदौर को सक्षम नामक एएनआरएफ–पेयर नेटवर्क के हब संस्थान के रूप में चुना गया है। इस नेटवर्क में छह स्पोक संस्थान शामिल हैं: देवी अहिल्या विश्वविद्यालय (इंदौर), विक्रम विश्वविद्यालय (उज्जैन), आईआईआईटी भोपाल, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, एनआईटी कुरुक्षेत्र तथा आरटीएम नागपुर विश्वविद्यालय। इस नई पहल के लिए आगामी कुछ वर्षों में रु.100 करोड़ का आवंटन किया गया है।

- एनएम–आईसीपीएस टेक्नोलॉजी ट्रांसलेशन रिसर्च पार्क (टीटीआरपी): आईआईटी इंदौर को राष्ट्रीय अंतरविषयी साइबर–भौतिक प्रणाली मिशन (एनएम–आईसीपीएस) के अंतर्गत चार टेक्नोलॉजी ट्रांसलेशन रिसर्च पार्क (टीटीआरपी) में से एक स्थापित करने के लिए भी चुना गया है। यह प्रस्ताव आईआईटीआई दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन के माध्यम से सुदृढ़ डिजिटल स्वास्थ्य सेवा अवसंरचना की बढ़ती राष्ट्रीय आवश्यकता को पूरा करने के उद्देश्य से प्रस्तुत किया गया था। विस्तृत मूल्यांकन के बाद, एनएम–आईसीपीएस के मिशन गवर्निंग बॉडी ने फाउंडेशन को टीटीआरपी के रूप में उन्नत करने के लिए चुना। इस पहल के लिए आगामी कुछ वर्षों में लगभग रु.100 करोड़ की अतिरिक्त धनराशि आवंटित की जाएगी।

- रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ): डॉ. गिरीश चंद्र वर्मा को रु.2.9 करोड़ की एक परियोजना स्वीकृत की गई है। इस परियोजना का शीर्षक है – "हॉट आइसोस्टैटिक प्रेसिंग, द्वितीयक ऊष्मा उपचार तथा लेज़र नाइट्राइडिंग का उपयोग करके डीएमएलएस–निर्मित Ti6Al4V मिश्रधातु की थकान शक्ति, घिसाव एवं संक्षारण गुणों में सुधार हेतु प्रायोगिक अध्ययन"।

- टीआईएच फाउंडेशन – आईओटी, आईओई: डॉ. देबायन सरकार को रु.1.29 करोड़ की "पारंपरिक कटाई–पश्चात प्रबंधन के विकल्प के रूप में पोर्टेबल किट का विकास" शीर्षक वाली परियोजना स्वीकृत की गई है।

- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी): डॉ. देबायन सरकार को रु.1.13 करोड़ की "भारत और नॉर्वे में औषधि लक्ष्यों का सतत संश्लेषण, मशीन लर्निंग, रसायन–एंजाइम आधारित विभेदन तथा प्रौद्योगिकी हस्तांतरण रासायनिक शिक्षा को उन्नत बनाना" शीर्षक वाली परियोजना स्वीकृत की गई है।

4. *अनुसंधान, विकास एवं नवाचार को प्रोत्साहन*

यंग फैकल्टी रिसर्च सीड ग्रांट (वाईएफआरएसजी): आईआईटी इंदौर द्वारा अब तक युवा संकाय सदस्यों को कुल रु.37 करोड़ की राशि के 74 युवा संकाय अनुसंधान सीड अनुदान प्रदान किए गए हैं। यह अनुदान बाहरी वित्तपोषण एजेंसियों से पहला नियमित अनुदान प्राप्त होने से पहले संस्थान द्वारा अंतरिम वित्तीय सहायता के रूप में दिया जाता है।

ड्रीम लैब एवं प्रायस परियोजनाएँ: अब तक आईआईटी इंदौर द्वारा युवा संकाय सदस्यों को कुल रु.3.7 करोड़ की राशि की 42 ड्रीम लैब परियोजनाएँ एवं 33 प्रायस परियोजनाएँ प्रदान की गई हैं। इनका उद्देश्य अत्याधुनिक क्षेत्रों में उच्चस्तरीय अनुसंधान प्रशिक्षण प्रदान करना तथा संस्थान में नामांकित स्नातक विद्यार्थियों के साथ घनिष्ठ सहयोग को प्रोत्साहित करना है।

अनुसंधान उत्कृष्टता पुरस्कार: संस्थान द्वारा विद्यार्थियों एवं संकाय सदस्यों को 8 सर्वश्रेष्ठ प्रौद्योगिकी पुरस्कार, 10 सर्वश्रेष्ठ शोधपत्र पुरस्कार तथा 1 सर्वश्रेष्ठ समीक्षा शोधपत्र पुरस्कार प्रदान किए गए हैं। प्रत्येक पुरस्कार के साथ रु. 2 लाख का आकस्मिक अनुदान दिया गया है।

एसआईपीपीटी योजना : स्कीम फॉर इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी प्रोटेक्शन एंड टेक्नोलॉजी ट्रांसलेशन (एसआईपीपीटी) योजना के अंतर्गत संस्थान द्वारा अब तक 82 आईडीएफ (आविष्कार प्रकटीकरण प्रपत्र) आवेदनों को स्वीकृति प्रदान की गई है। इसके माध्यम से संकाय सदस्यों को भारतीय पेटेंट दाखिल करने हेतु प्रति पेटेंट 50,000 तक की आंशिक वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

ट्रांसलेशन रिसर्च फेलोशिप (टीआरएफ): आईआईटी इंदौर नवाचारों के प्रौद्योगिकी तत्परता स्तर (टीआरएल) को बढ़ाने तथा प्रयोगशाला से जनसामान्य तक (लैब–टू–लैंड) की अवधारणा को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिवर्ष 10–15 टीआरएफ पद प्रदान करता है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत प्रतिवर्ष लगभग रु.1 करोड़ तक की वित्तीय सहायता का प्रावधान है। अब तक कुल 31 ट्रांसलेशन रिसर्च फेलोशिप प्रदान की जा चुकी हैं।

5. अनुसंधान प्रसार एवं ज्ञान का प्रचार–प्रसार

- ***रिसर्च स्पेक्ट्रम:*** आईआईटी इंदौर द्वारा रिसर्च स्पेक्ट्रम नामक त्रैमासिक अनुसंधान पत्रिका प्रकाशित की जाती है, जिसमें संकाय सदस्यों एवं विद्यार्थियों के चयनित अनुसंधान योगदानों के ग्राफिकल सारांश एवं प्रमुख उपलब्धियाँ प्रस्तुत की जाती हैं। इसके खंड 1 एवं खंड 2 के अंतर्गत कुल 8 अंक सफलतापूर्वक प्रकाशित किए जा चुके हैं।
- ***अनुसंधान एवं विकास विवरणिका:*** आईआईटी इंदौर के अनुसंधान एवं विकास अनुभाग का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करने वाली विवरणिका जारी की गई है। लिंक: https://heyzine.com/flip-book/c5b55b13aa.html#page/1



- ***टेक्नोलॉजी हैंडबुक:*** 'आईआईटी इंदौर के विचारों, नवाचारों एवं प्रौद्योगिकियों का संकलन' का तीसरा संस्करण जारी किया गया है। इसमें 12 विभिन्न विषयगत श्रेणियों के अंतर्गत उपलब्ध आईआईटी इंदौर की विभिन्न प्रौद्योगिकियों का संकलन किया गया है।
  लिंक: https://rnd.iiti.ac.in/main/current_handbook



क्र.सं.	विषय	विकसित प्रौद्योगिकियाँ
1	उन्नत कंप्यूटिंग (सुपरकंप्यूटिंग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, क्वांटम कंप्यूटिंग)	14
2	कृषि एवं खाद्य प्रौद्योगिकियाँ	09
3	स्मार्ट सिटी एवं परिवहन	04
4	ऊर्जा, सततता एवं जलवायु परिवर्तन	19
5	जैव प्रौद्योगिकी	10
6	स्वास्थ्य सेवा एवं चिकित्सा प्रौद्योगिकी	28
7	विनिर्माण एवं उद्योग 4.0	26
8	उन्नत पदार्थ, दुर्लभ मृदा तत्व एवं महत्त्वपूर्ण खनिज	32
9	अंतरिक्ष एवं रक्षा	03
10	अर्धचालक	18
11	आपदा प्रबंधन एवं आपदा–सहनीय अवसंरचना	20
12	अगली पीढ़ी की संचार प्रौद्योगिकियाँ	04



वन वीक वन टेक्नोलॉजी: अनुसंधान प्रसार के अंतर्गत, आईआईटी इंदौर में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो रहे नवाचारों एवं अनुसंधान के प्रति जागरूकता और समझ बढ़ाने के उद्देश्य से 'वन वीक वन टेक्नोलॉजी' अभियान शुरू किया गया है। इन नवाचारों से संबंधित विवरण विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित किए जा रहे हैं।
लिंक: https://dspace.iiti.ac.in/handle/123456789/14336

इनोक्वेस्ट टॉक्स 1.0: अनुसंधान प्रसार कार्यक्रम के अंतर्गत अनुसंधान एवं विकास अनुभाग द्वारा तकनीकी पॉडकास्ट शुरू किया गया है। इस मंच पर आईआईटी इंदौर के विभिन्न विभागों के संकाय सदस्यों के अनुसंधान कार्यों पर चर्चा की जाती है। इन चर्चाओं के रिकॉर्ड किए गए सत्र संस्थान के आधिकारिक यूट्यूब चौनल 'इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी ऑफिशियल' पर उपलब्ध कराए जाते हैं।
लिंक: https://www.youtube.com/@IITI_official/videos



अनुसंधान एवं विकास अनुभाग दल

Indian Institute of Technology Indore Official

@IITI_official • 113 subscribers • 18 videos

Welcome to the Official YouTube Channel of Indian Institute of Technology Indore. Subsc...more

linkedin.com/company/innoquest-talks and 3 more links

Customize channel | Manage videos

Videos Shorts Palylists Posts



Director IIT Indore Prof. Suhas Joshi x Priyanka Kimmatkar | Vision & Leadership |...

1.2K views • 4 months ago



Prof. Devendra Deshmukh on Research, Leadership & Industry Collaboration |...

388 views • 3 months ago



Prof. Palani on Smart Materials, DRDO & ISRO Collaborations | InnoQuest Talks Ep#...

461 views • 1 month ago



Prof. Abhirup Datta on Building Space Science in India | InnoQuest Talks Ep#04...

33 views • 6 days ago



Prof. Nirmala Menon on Digital Humanities, Cultural Archives | ...

577 views • 8 months ago



Prof. Avinash Sonawane on Bench to Bedside | Research on novel ...

334 views • 3 months ago

अंतरराष्ट्रीय संबंध



आईआईटी इंदौर निरंतर प्रभावशाली वैश्विक साझेदारियों का विस्तार कर रहा है। अत्याधुनिक अनुसंधान के क्षेत्रों में उत्कृष्टता केंद्र स्थापित करने तथा विश्व के शीर्ष विश्वविद्यालयों के साथ संयुक्त शैक्षणिक कार्यक्रम प्रारंभ करने की परिकल्पना के साथ, संस्थान का उद्देश्य अनुसंधान, शिक्षा और नवाचार को एकीकृत कर समाज की बदलती चुनौतियों का समाधान करना है।

वर्तमान में, संस्थान ने विश्वभर के विभिन्न संस्थानों के साथ 140 से अधिक समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं तथा 400 से अधिक विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ संपर्क एवं सहयोग का नेटवर्क विकसित किया है। इसके अतिरिक्त, विदेशी संस्थानों के साथ 40 से अधिक द्विपक्षीय अनुसंधान अनुदान, 10,000 से अधिक शोध प्रकाशन, 85 से अधिक ज्ञान परियोजनाएँ तथा 28 से अधिक स्पार्क, वज्र एवं एएसईएम–डीयूओ परियोजनाएँ संस्थान की वैश्विक शैक्षणिक एवं अनुसंधान गतिविधियों को दर्शाती हैं।

हाल ही में, आईआईटी इंदौर ने रूस, जर्मनी, यूनाइटेड किंगडम, कैमरून, इथियोपिया, नेपाल तथा अन्य सार्क एवं आसियान देशों, अफ्रीकी देशों और मध्य पूर्व क्षेत्र के विद्यार्थियों की अपने डिग्री एवं विनिमय कार्यक्रमों में मेजबानी की है।

हालिया समझौता ज्ञापन एवं वैश्विक शैक्षणिक सहयोग

संस्थान ने विश्वभर के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों एवं संगठनों के साथ कई समझौता ज्ञापनों और शैक्षणिक समझौतों के माध्यम से अपने वैश्विक सहयोग को सुदृढ़ किया है। इन सहयोगों के अंतर्गत विद्यार्थी एवं संकाय विनिमय, संयुक्त अनुसंधान, शैक्षणिक सहयोग, इंटर्नशिप तथा नवाचार–आधारित साझेदारियों को प्रोत्साहित किया जाता है। ये साझेदारियाँ अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, जर्मनी, फ्रांस, जापान, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण कोरिया सहित अनेक देशों के संस्थानों के साथ विकसित की गई हैं।

संस्थान	*देश*
टेक्निशे यूनिवर्सिटैट बर्लिन, जर्मनी	जर्मनी
ओस्टबायरिशे टेक्निशे होखशूले रेगेन्सबर्ग (ओटीएच रेगेन्सबर्ग), जर्मनी	जर्मनी
द यूनिवर्सिटी ऑफ द विटवाटर्सरैंड, जोहान्सबर्ग (डब्ल्यूआईटीएस), दक्षिण अफ्रीका	दक्षिण अफ्रीका
अल अखवायन यूनिवर्सिटी इन इफ्रान (एयूआई), मोरक्को	मोरक्को
वोलेगा यूनिवर्सिटी (डब्ल्यूयू), इथियोपिया	इथियोपिया
लीडेन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड कंप्यूटर साइंस, लीडेन यूनिवर्सिटी, द नीदरलैंड्स	द नीदरलैंड्स
एजीएच यूनिवर्सिटी ऑफ क्राको, पोलैंड	पोलैंड
शिन्शु यूनिवर्सिटी, जापान	जापान
यूनिवर्सिटी ऑफ ओउलू, फिनलैंड	फिनलैंड
अल अखवायन यूनिवर्सिटी इन इफ्रान (एयूआई), मोरक्को	मोरक्को
टॉम्स्क स्टेट यूनिवर्सिटी, रूस	रूस
आल्टो यूनिवर्सिटी फाउंडेशन्स एसआर, फिनलैंड	फिनलैंड

नेशनल काऊशुंग यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी (एनकेयूएसटी), ताइवान	ताइवान
यूनिवर्सिटी ऑफ पिरायस (यूएनआईपीआई), ग्रीस	ग्रीस
नॉर्थ कैरोलाइना स्टेट यूनिवर्सिटी (एनसीएसयू), यूएसए	यूएसए
हानयांग यूनिवर्सिटी (एचवाईयू), दक्षिण कोरिया	दक्षिण कोरिया
यूनिवर्सिडाडे डी काक्सियास डो सुल (यूसीएस), ब्राज़ील	ब्राज़ील
आईएमआरएसएएस, स्लोवाकिया	स्लोवाकिया
नोवोसिबिर्स्क स्टेट यूनिवर्सिटी, रूस	रूस
किंग मोंगकुट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, लाटक्रबांग, बैंकॉक	थाईलैंड
आल्टो यूनिवर्सिटी, फिनलैंड	फिनलैंड
यूनिवर्सिटी ऑफ हडर्सफील्ड, यूके	यूके
तथा विश्व के अनेक अन्य प्रतिष्ठित संगठन	

आईआईटी इंदौर के अंतरराष्ट्रीय साझेदार

आईआईटी इंदौर प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय नेटवर्कों, वित्तपोषण एजेंसियों और शैक्षणिक संगठनों के साथ सक्रिय रूप से सहयोग करता है। ये सहयोग विद्यार्थियों एवं संकाय सदस्यों के लिए शैक्षणिक आदान–प्रदान, संयुक्त अनुसंधान, अंतरराष्ट्रीय आवागमन, छात्रवृत्तियों तथा वैश्विक स्तर पर सीखने के अवसरों को प्रोत्साहित करते हैं।

1. जर्मन अकादमिक एक्सचेंज सर्विस (डीएएडी)
2. स्टडी इन इंडिया (एसआईआई)
3. भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर)
4. नेपाल छात्रवृत्ति (एडसिल)
5. हेरिटेज नेटवर्क
6. शास्त्री इंडो–कैनेडियन इंस्टीट्यूट (एसआईसीआई)
7. एसोसिएशन ऑफ कॉमनवेल्थ यूनिवर्सिटीज
8. इरास्मस+
9. भारत–इथियोपिया नेटवर्कः 45 इथियोपियाई विश्वविद्यालय
10. शर्मन फाउंडेशन, यूएसए

शैक्षणिक गतिविधियाँ

आईआईटी इंदौर ने पीएच.डी. सह–पर्यवेक्षण, स्नातक विद्यार्थी विनिमय, सी.वी. रमन फेलोशिप, इंडिया साइंस एंड रिसर्च फेलोशिप (आईएसआरएफ), आसियान–भारत अनुसंधान प्रशिक्षण फेलोशिप (एआई–आरटीएफ) आदि विभिन्न शैक्षणिक एवं अनुसंधान कार्यक्रमों के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों और शोधकर्ताओं की मेजबानी की है।

आईआईटी इंदौर प्रत्येक वर्ष स्टडी इन इंडिया (एसआईआई), भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर), दक्षिण–पूर्व एशियाई राष्ट्रों का संगठन (आसियान), सार्क फाइनेंस–भारतीय रिज़र्व बैंक (आरबीआई) तथा नेपाल छात्रवृत्ति जैसी विभिन्न सरकारी योजनाओं के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थियों को प्रवेश प्रदान करता है।

आईआईटी इंदौर में शैक्षणिक कार्यक्रमों के अंतर्गत पूर्णकालिक अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थी

इनबाउंड कार्यक्रम	*प्राप्तकर्ता*	*गृह देश*
मास्टर डिग्री कार्यक्रम	मृण्मय सरकार अर्घो	बांग्लादेश
	सागर कुमार साह	नेपाल
	दिव्यदेव भट्ट	नेपाल
	उज्ज्वल रौनियार	नेपाल
	ईशान सोवाले	यूएसए (ओसीआई कार्डधारक)
	अश्मिता मरासेनज	नेपाल
	सम्श्रिता घिमिरे	नेपाल
	साधना वारियर	यूएसए (ओसीआई कार्डधारक)
	सुदीप्त देबनाथ	बांग्लादेश

वर्ष 2025–26 में अंतरराष्ट्रीय संबंध फेलोशिप कार्यक्रमों के अंतर्गत इनबाउंड श्रेणी के प्राप्तकर्ता:

क्र.सं.	नाम	विभाग	कार्यक्रम	गृह विश्वविद्यालय	देश
1.	मोयाले जॉर्ज खतते	जानपद अभियांत्रिकी	एक्सचेंज प्रोग्राम (शॉर्ट टर्म रिसर्च फेलोशिप)	जोमो केन्याटा यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर एंड टेक्नोलॉजी	केन्या
2.	मोल्ला अदीसु मोसी	विद्युत अभियांत्रिकी	एक्सचेंज प्रोग्राम (शॉर्ट टर्म रिसर्च फेलोशिप)	बहिर दार इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी	इथियोपिया
3.	अबेजे तिलाहुन फेतेने	जानपद अभियांत्रिकी	एक्सचेंज प्रोग्राम (शॉर्ट टर्म रिसर्च फेलोशिप)	बहिर दार इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी	इथियोपिया
4.	आइका ओक्तिंगश्अती आकू	मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान	एक्सचेंज प्रोग्राम (शॉर्ट टर्म रिसर्च फेलोशिप)	सोकोइन यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर	तंजानिया
5.	रोब्सन अबेबे असेफा	यांत्रिक अभियांत्रिकी	एक्सचेंज प्रोग्राम (शॉर्ट टर्म रिसर्च फेलोशिप)	वोलेगा यूनिवर्सिटी	इथियोपिया
6.	दिव्या नागिनलाल मोदी–नागोवाह	रासायनिक अभियांत्रिकी	एक्सचेंज प्रोग्राम (शॉर्ट टर्म रिसर्च फेलोशिप)	यूनिवर्सिटी ऑफ मॉरीशस	मॉरीशस
7.	फहीमा तबस्सुम	बीएसबीई	एक्सचेंज प्रोग्राम (शॉर्ट टर्म रिसर्च फेलोशिप)	यूनिवर्सिटी ऑफ ओसेफ्क	पी
8.	ओयागबोला, एलिजाबेथ ओयेतायो	एमईएमएस	एक्सचेंज प्रोग्राम (शॉर्ट टर्म रिसर्च फेलोशिप)	यूनिवर्सिटी ऑफ इलोरिन	नाइजीरिया
9.	अबुबकर हमिसु कामागाटा	संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी	एक्सचेंज प्रोग्राम (शॉर्ट टर्म रिसर्च फेलोशिप)	नामीबिया यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी	नामीबिया
10.	ताइवो इमैनुएल अयोबामी	रसायन विज्ञान	एक्सचेंज प्रोग्राम (शॉर्ट टर्म रिसर्च फेलोशिप)	यूनिवर्सिटी ऑफ इलोरिन	नाइजीरिया
11.	जॉर्ज एडविन ओविटलो	मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान	सेमेस्टर एक्सचेंज प्रोग्राम (आईआर फेलोशिप)	मासाई मारा यूनिवर्सिटी	केन्या
12.	सुक राज राय	भौतिकी	सेमेस्टर एक्सचेंज प्रोग्राम (आईआर फेलोशिप)	शेरुब्से कॉलेज, भूटान	भूटान

वर्ष 2024–25 में अंतरराष्ट्रीय संबंध फेलोशिप कार्यक्रमों के अंतर्गत विदेश जाने वाले पुरस्कार प्राप्तकर्ता:

क्र.सं.	नाम	विभाग	कार्यक्रम	गृह विश्वविद्यालय	देश
1.	वैभव त्यागी	डीएएएसई	एक्सचेंज प्रोग्राम (शॉर्ट टर्म रिसर्च फेलोशिप)	रॉयल नीदरलैंड्स मेटियोरोलॉजिकल इंस्टीट्यूट (केएनएमआई)	नीदरलैंड
2.	कविता सिंह	एमएफएसबीएसबीई	एक्सचेंज प्रोग्राम (शॉर्ट टर्म रिसर्च फेलोशिप)	यूनिवर्सिटी ऑफ इलिनॉय एट अर्बाना–शैंपेन, यूनाइटेड स्टेट्स	यूएस
3.	लता मीना	रसायन विज्ञान	एक्सचेंज प्रोग्राम (शॉर्ट टर्म रिसर्च फेलोशिप)	क्वानसेई गाकुइन यूनिवर्सिटी	जापान
4.	प्रीतम नस्कर	गणित	एक्सचेंज प्रोग्राम (शॉर्ट टर्म रिसर्च फेलोशिप)	यूनिवर्सिटी ऑफ तुर्कु	फिनलैंड

5.	गुंजन जोशी	एसएचएसएस	एक्सचेंज प्रोग्राम (शॉर्ट टर्म रिसर्च फेलोशिप)	यूनिवर्सिटी हॉस्पिटल बॉन	जर्मनी
6.	बद्री नारायण साहू	एमएफएसबीएसबीई	एक्सचेंज प्रोग्राम (शॉर्ट टर्म रिसर्च फेलोशिप)	एजेंसिया एस्टाटल कॉन्सेजो सुपीरियर दे इन्वेस्टिगासियोनेस सिएंटिफिकास (सीएसआईसी)	स्पेन
7.	निवेदिता सेठिया	सीएसई	एक्सचेंज प्रोग्राम (शॉर्ट टर्म रिसर्च फेलोशिप)	यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, सैंटा बारबरा	यूएसए
8.	गामी प्रतीक्षा कांतिलाल	एमईएमएस	एक्सचेंज प्रोग्राम (शॉर्ट टर्म रिसर्च फेलोशिप)	यूएनएसडब्ल्यू सिडनी	ऑस्ट्रेलिया
9.	मनोजकुमार बालाजी कोकरे	ईई	एक्सचेंज प्रोग्राम (शॉर्ट टर्म रिसर्च फेलोशिप)	यूनिवर्सिटी ऑफ एसेक्स	इंग्लैंड
10.	हर्षवर्धन सोलंकी	जानपद अभियांत्रिकी	एक्सचेंज प्रोग्राम (शॉर्ट टर्म रिसर्च फेलोशिप)	एशियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, थाईलैंड	थाईलैंड

मोबिलिटी ग्रांट 2025–26 प्राप्तकर्ता

क्र.सं.	*प्राप्तकर्ता का नाम*	*विभाग*	*विजिट किया गया संस्थान*
1.	प्रो. मिर्ज़ा साकिब बेग	बीएसबीई	सैपिएन्ज़ा यूनिवर्सिटी, इटली
2.	डॉ. सुमित गौतम	ईई	यूनिवर्सिटी ऑफ लक्ज़मबर्ग, लक्ज़मबर्ग
3.	प्रो. विमल भाटिया	ईई	आल्टो यूनिवर्सिटी, फिनलैंड नेशनल सन यात–सेन यूनिवर्सिटी (एनएसवाईएसयू), ताइवान स्कोडा ऑटो यूनिवर्सिटी (एसएयू), चेक गणराज्य

अंतरराष्ट्रीय यात्रा अनुदान 2025–26 प्राप्तकर्ता

क्र.सं.	*प्राप्तकर्ता का नाम*	*विभाग*	*विजिट किया गया संस्थान*
1	डॉ. संदीप सिंह	एमई	रुहर यूनिवर्सिटी बोखुम, बोखुम, जर्मनी
2	प्रो. नीरज कुमार शुक्ला	गणित	आरडब्ल्यूटीएच आचेन यूनिवर्सिटी, जर्मनी
3	डॉ. हेम चंद्र झा	बीएसबीई	यूनिवर्सिटी ऑफ मॉन्टपेलियर, सीएनआरएस, फ्रांस
4	डॉ. ललित बोराना	सीई	द हांगकांग पॉलिटेक्निक यूनिवर्सिटी, हांगकांग
5	डॉ. सप्तर्षि घोष	ईई	क्वीन्स यूनिवर्सिटी बेलफास्ट, यूके
6	डॉ. अनन्या घोषाल	एचएसएस	द यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन, एन आर्बर, यूएसए
7	प्रो. सुमन मुखोपाध्याय	रसायन विज्ञान	यूनिवर्सिडाडे डी लिस्बोआ (यूएलिस्बोआ), पुर्तगाल
8	डॉ. ईश्वर प्रसाद कोरिमिल्ली	एमईएमएस	द यूनिवर्सिटी ऑफ टोक्यो, जापान
9	प्रो. प्रीति भोबे	भौतिकी	नेशनल डोंग ह्वा यूनिवर्सिटी, ताइवान
10	डॉ. रणवीर सिंह	सीएसई	यूनिवर्सिटी ऑफ बर्गेन, नॉर्वे

अल्पकालिक इंटर्नशिप

क्र.सं.	*इंटर्न का नाम*	*गृह संस्थान*	*आईआईटी इंदौर के होस्ट संकाय सदस्य*
1	भूमिका दोवारका–प्रसाद	यूनिवर्सिटी ऑफ मॉरीशस	प्रो. मिर्ज़ा एस. बेग, एमएफबीएसबीई
2	मनजीत पुरताम्बेकर	मर्डोक यूनिवर्सिटी, ऑस्ट्रेलिया	प्रो. अरुणा तिवारी, एग्रीहब
3	रेवा गांधी	डार्टमाउथ यूनिवर्सिटी, यूएसए	प्रो. प्रीति शर्मा, एमएफएसओएस

अंतरराष्ट्रीय संपर्क एवं वैश्विक सहभागिता

अंतरराष्ट्रीय संपर्क भारत और अन्य देशों के बीच ज्ञान एवं कौशल के आदान–प्रदान को सुगम बनाने का एक माध्यम है। इसके अंतर्गत विशेष रूप से भारतीय विश्वविद्यालयों तथा विदेशों के सार्वजनिक संस्थानों एवं संगठनों के बीच सहयोग को बढ़ावा दिया जाता है। इस वर्ष संस्थान ने विभिन्न क्षेत्रों के प्रख्यात वक्ताओं के साथ ऑनलाइन एवं ऑफलाइन माध्यमों से कई वेबिनार और व्याख्यान आयोजित किए। इनमें से कुछ प्रमुख गतिविधियाँ निम्नलिखित हैं:

प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय वक्ता एवं शैक्षणिक संवाद

आईआईटी इंदौर का अंतरराष्ट्रीय संबंध कार्यालय नियमित रूप से प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं और उद्योग विशेषज्ञों को व्याख्यानों, संगोष्ठियों एवं संवादात्मक सत्रों के लिए आमंत्रित करता है। इन गतिविधियों से विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं और संकाय सदस्यों को वैश्विक अनुभव प्राप्त होता है तथा शैक्षणिक एवं अनुसंधान सहयोग को बढ़ावा मिलता है।



यूएसआईईएफ मुंबई की वरिष्ठ शिक्षा सलाहकार डॉ. डेबोरा रोसारियो द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका में उच्च शिक्षा के अवसरों पर सत्र।



ब्रिटिश काउंसिल की ग्रेट टॉक पहल के अंतर्गत यूनिवर्सिटी ऑफ़ शेफील्ड के डॉ. रिचर्ड थैकरे के साथ सत्र।



फ्रांस के महावाणिज्य दूतावास के वैज्ञानिक एवं उच्च शिक्षा अताशे डॉ. फिलिप मॉरिन द्वारा "फ्रांस में अध्ययन" विषय पर सत्र।



यूएसआईईएफ के वरिष्ठ क्षेत्रीय अधिकारी डॉ. रयान परेरा द्वारा फुलब्राइट–नेहरू फेलोशिप (2027–28 साइकल) पर मार्गदर्शन सत्र।



अमेरिकन फील्ड सर्विस (एएफएस) के सहयोग से आयोजित एसटीईएम अकादमी कार्यक्रम के अंतर्गत 29 अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थियों का भ्रमण।



आईआईटी इंदौर स्थित आईआईटीआई दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन के सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक आदान–प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत बेल्जियम के यूसी ल्यूवेन के विद्यार्थियों का आगमन।

आईआईटी इंदौर के प्रतिनिधिमंडलों के अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों के दौरे

आईआईटी इंदौर के प्रतिनिधिमंडलों ने शैक्षणिक सहयोग, संयुक्त अनुसंधान, विद्यार्थी विनिमय तथा संस्थागत साझेदारियों की संभावनाओं का पता लगाने के लिए विभिन्न अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों एवं संस्थानों का दौरा किया। इन दौरों से वैश्विक सहभागिता सुदृढ़ हुई तथा संस्थान की अंतरराष्ट्रीय संपर्क एवं सहयोग संबंधी पहलों को बढ़ावा मिला।



आईआईटी इंदौर के प्रतिनिधिमंडल का रटगर्स यूनिवर्सिटी–न्यू ब्रंसविक, न्यू जर्सी का दौरा।



आईआईटी इंदौर के प्रतिनिधिमंडल का पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय, यूएसए का दौरा।



आईआईटी इंदौर के प्रतिनिधिमंडल का नोट्रे डेम विश्वविद्यालय, यूएसए का दौरा।



आईआईटी इंदौर के प्रतिनिधिमंडल का पर्ड्यू विश्वविद्यालय, यूएसए का दौरा।



आईआईटी इंदौर के प्रतिनिधिमंडल का मैक्स प्लांक सोसाइटी, जर्मनी का दौरा।



आईआईटी इंदौर के प्रतिनिधिमंडल ने सिंगापुर का दौरा किया तथा सिंगापुर में भारत के उच्चायुक्त महामहिम डॉ. शिल्पक अंबुले से भेंट करने का सम्मान प्राप्त किया।

आईआईटी इंदौर में अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडलों एवं अतिथियों का आगमन

आईआईटी इंदौर के अंतरराष्ट्रीय संबंध कार्यालय ने वर्ष के दौरान कई अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडलों, विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधियों तथा शैक्षणिक क्षेत्र के अग्रणी व्यक्तियों का स्वागत किया। इन दौरों के माध्यम से सहयोगात्मक कार्यक्रमों, अनुसंधान साझेदारियों, विद्यार्थी विनिमय तथा भविष्य में शैक्षणिक सहयोग की संभावनाओं पर चर्चा की गई।



मैक्स प्लांक सोसाइटी की प्रतिनिधि डॉ. पूनम सहगल सूरी।



इम्प्यूट इंक., टोक्यो, जापान के डॉ. मयंक सिंह तथा ऑक्साइड कॉर्पोरेशन, जापान के श्री नाओया ओका।



नॉर्वेजियन यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी (एनटीएनयू), नॉर्वे की प्रो. एलिज़ाबेथ जैकबसेन।



यूनिवर्सिटी ऑफ लिमरिक, आयरलैंड के डॉ. नानासाहेब थोराट।



फ्रांस के महावाणिज्य दूतावास के वैज्ञानिक एवं उच्च शिक्षा अताशे डॉ. फिलिप मॉरिन, कैंपस फ्रांस की सुश्री उर्जिता जयसिंघानी तथा एलायंस फ्रांसेज़ डी भोपाल–इंदौर के श्री विंसेंट रॉबिन गाज़सिटी।



यूनिवर्सिटी ऑफ इलेक्ट्रो–कम्युनिकेशंस (यूईसी), टोक्यो, जापान के प्रो. यासुहिदे होबारा, प्रो. काजुतो मासामोटो, सह–प्रोफेसर हिरोकी फुरुकावा तथा श्री रयोसुके सासाकी।

अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थियों और आईआईटी समुदाय के बीच सेतु

संस्थान समुदाय में समावेशिता और अंतर–सांस्कृतिक सहभागिता को बढ़ावा देने के लिए अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थियों के साथ सांस्कृतिक उत्सवों एवं अनौपचारिक मिलन–समारोहों का आयोजन किया गया। इन पहलों से सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाने तथा अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थियों और आईआईटी इंदौर परिवार के बीच संबंधों को सुदृढ़ करने में सहायता मिली।



क्रिसमस समारोह



दीपावली समारोह

उपलब्धियाँ 2025–26

संकाय सदस्यों की उपलब्धियाँ

आईआईटी इंदौर के संकाय सदस्यों को वर्ष के दौरान कई प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय फेलोशिप, अनुसंधान अनुदान, विजिटिंग प्रोफेसरशिप, पुरस्कार तथा सहयोग के अवसर प्राप्त हुए। ये उपलब्धियाँ संस्थान के सुदृढ़ अनुसंधान परिवेश तथा वैश्विक शैक्षणिक एवं अनुसंधान साझेदारियों के निरंतर विस्तार को दर्शाती हैं।

प्राप्तकर्ता का नाम	*अवार्ड*
प्रो. एस. के. सफीक अहमद	आईसीएम 2026 यात्रा सहायता, यूएसए
डॉ. डैन सथियाराज	अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट फाउंडेशन, जर्मनी
प्रो. सारिका जालान	नेटसाइ सोसाइटी प्रशस्ति पुरस्कार 2025, यूएसए
डॉ. सौमवो घोष	आमंत्रित शोधकर्ता, ऑब्ज़र्वेटोयर डी पेरिस–पीएसएल, फ्रांस

डॉ. गौरव चौहान	एएनआरएफ इंटरनेशनल ट्रैवल सपोर्ट (सीईसीएएम वर्कशॉप), स्विट्ज़रलैंड
डॉ. लोकेश कुमार देवांगन	कॉसमॉस, एक्सीलेंस एनयूटीटीईओ प्रोजेक्ट, फ्रांस
प्रो. अनिर्बान सेनगुप्ता	आईईईईई सीएएसएस डिस्टिंग्विश्ड लेक्चरर; विजिटिंग प्रोफेसर एवं एकेडमिक विज़िटर, सिंगापुर
डॉ. अप्पिना बालसुब्रमण्यम	आईईईईई एसपीएस समर स्कूल, यूएसए
प्रो. कपिल आहूजा	आईसीईआरएम ग्रांट (स्प्रिंग 2026 प्रोग्राम), यूएसए
प्रो. संतोष कुमार साहू	भारतदृकोरिया सहयोगात्मक परियोजना, दक्षिण कोरिया
प्रो. आई. ए. पलानी	सुज़ुकी नेक्स्ट भारत रिसर्च फेलोशिप, जापान
प्रो. किरण बाला	स्पार्क परियोजना, भारतदृजर्मनी
डॉ. हेम चंद्र झा	लीडिंग हाउस साउथ एशिया ग्रांट, स्विट्ज़रलैंड
प्रो. भूपेश कुमार लाड	क्रिटिकल केयर डिजिटल ट्विन प्रोजेक्ट, यूके
प्रो. संदीप चौधरी	टीएनई ग्रांट (ब्रिटिश काउंसिल), यूके; एआईएसआरएफ फ्रेमवर्क प्रोजेक्ट, ऑस्ट्रेलिया; स्पार्क–यूकेआईईआरआई प्रोजेक्ट, यूके
प्रो. देबायन सरकार	भारतदृनॉर्वे परियोजना (आईएनसीपी–2), नॉर्वे
प्रो. अभिरूप दत्ता	वैभव फेलोशिप प्रोग्राम, भारतदृअमेरिका
प्रो. निर्मला मेनन	फुलब्राइट रिसर्च फेलोशिप, यूएस स्टेट डिपार्टमेंट, यूएसए
प्रो. वेंकटेश चेल्वम	स्पार्क परियोजना, भारत / जापान
डॉ. अनन्या घोषाल	टीईएसओएल वर्कशॉप स्कॉलरशिप, टीईएसओएल इंटरनेशनल एसोसिएशन, यूएसए
डॉ. शांतनु मन्ना	एनबीएचएम ट्रैवल ग्रांट अवार्ड्स, फ्रांस तथा आईएमयू द्वारा आईसीएम 2026, यूएसए
डॉ. अभिषेक सिंह	रामानुजन फेलोशिप, मैरी प्रोजेक्ट, डीएफजी, जर्मनी
प्रो. प्रभात कुमार उपाध्याय	एसएसटीएसजी 2025–26, शास्त्री इंडो–कैनेडियन इंस्टीट्यूट (एसआईसीआई), कनाडा
प्रो. अभिषेक श्रीवास्तव	यूनिवर्सिटी ऑफ युवास्क्युला विजिटिंग फेलो ग्रांट, फिनलैंड
प्रो. संतोष कुमार साहू	पुसान नेशनल यूनिवर्सिटी के साथ एचवीएसी पर भारतदृकोरिया सहयोगात्मक परियोजना, दक्षिण कोरिया
प्रो. अजय कुमार कुशवाहा	डीएसटी–एमएसएचई भारत–रूस हरित हाइड्रोजन परियोजना
प्रो. मिर्ज़ा एस. बेग	एएचए इंटरनेशनल विजिटिंग प्रोफेसरशिप अवार्ड (यूएसए) एवं आईसीएमआर–डीएचआर इंटरनेशनल विजिटिंग प्रोफेसरशिप अवार्ड (भारत)
प्रो. शैबल मुखर्जी	अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट फाउंडेशन द्वारा फ्रेडरिक विल्हेम बेसल रिसर्च अवार्ड, जर्मनी
प्रो. प्रीति भोबे	यूनिवर्सिटी ऑफ डुइसबर्ग–एसेन इंटरनेशनल गेस्ट लेक्चरर फेलोशिप, जर्मनी
प्रो. अनिर्बान सेनगुप्ता	आईईटी के फेलो (यूके) एवं ब्रिटिश कंप्यूटर सोसाइटी के फेलो, यूके
डॉ. दिशारी चट्टराज	अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट फाउंडेशन द्वारा फ्रेडरिक विल्हेम बेसल रिसर्च अवार्ड, जर्मनी
डॉ. सुमन मजूमदार	यूनिवर्सिटी ऑफ डुइसबर्ग–एसेन इंटरनेशनल गेस्ट लेक्चरर फेलोशिप, जर्मनी
डॉ. खुशबू देवी	आईजीएसटीसी वाइज़र–2025 अवार्ड, जर्मनी
डॉ. सौमवो घोष	डीएएडी राइज़ वर्ल्डवाइड–2025 स्कॉलरशिप, जर्मनी
प्रो. नीलिमा सत्यम देवरकोंडा	अमेरिकन जियोफिजिकल यूनियन (एजीयू) नेचुरल हैज़र्ड्स मिटिगेशन अवार्ड 2025
प्रो. देबायन सरकार	आईसीएमआर–डीएचआर लॉन्ग–टर्म इंटरनेशनल फेलोशिप 2025, जर्मनी

विद्यार्थियों की उपलब्धियाँ

आईआईटी इंदौर के विद्यार्थियों ने विश्व स्तर पर प्रतिष्ठित संस्थानों एवं विश्वविद्यालयों से प्रतिष्ठित फेलोशिप, छात्रवृत्तियाँ, इंटर्नशिप, विनिमय कार्यक्रमों के अवसर तथा अनुसंधान पुरस्कार प्राप्त कर उत्कृष्ट प्रदर्शन जारी रखा। ये उपलब्धियाँ संस्थान की बढ़ती वैश्विक पहचान और विद्यार्थियों की शैक्षणिक उत्कृष्टता को दर्शाती हैं।

विद्यार्थी का नाम, कार्यक्रम एवं विभाग	*अवार्ड*
डोडिया यशकुमार शैलेश (बीटेक, एएएसई)	एनडी नैनो अंडरग्रेजुएट रिसर्च फेलोशिप, यूएसए
नरोत्तम साहू (एमएससी, रसायन विज्ञान)	जेएसटी–लोटस फेलोशिप, जापान
आयुष गर्ग (पीएचडी, एएसएसई)	ओपस रिसर्च ग्रांट, पोलैंड
निखिल कुमार पांडेय (पीएचडी, सीई)	आईएसएसएमजीई फाउंडेशन अवार्ड, यूके
सायक चक्रवर्ती (पीएचडी, सीई)	मिटैक्स ग्लोबलिंक रिसर्च अवार्ड, कनाडा
अर्पित कुमार सिंह (पीएचडी, एमई)	एएनआरएफ–आईटीएस, भारत
देबोर्षी सिन्हा (पीएचडी, सीई)	मिटैक्स ग्लोबलिंक रिसर्च अवार्ड, कनाडा
अतुल वर्मा (पीएचडी, ईई)	जेएसटी लोटस फेलोशिप, जापान
श्रवण कुमार नामदेव (पीएचडी, ईई)	जेएसटी लोटस फेलोशिप, जापान
श्रद्धा मोह्नानी (पीएचडी, एएएसई)	ट्रांसनेशनल एक्सेस ट्रैवल ग्रांट (एसीएमई), इटली
शीतल गुप्ता (पीएचडी, एमईएमएस)	एएनआरएफ–आईटीएस, भारत
सायली सुधाकर सुराडकर (पीएचडी, एचएसएस)	एसओएएस ट्रैवल ग्रांट, यूके
कनिका किरण (पीएचडी, बीएसबीई)	मोबिलिटी ग्रांट, स्लोवेनिया
दिनेश परिडा (पीएचडी, बीएसबीई)	द्विराष्ट्रीय कोट्यूटेल रिसर्च ग्रांट (डीएएडी), जर्मनी
कुलदीप पाठक (पीएचडी, सीएसई)	रिसर्च स्टे, लोअर सैक्सनी का विज्ञान एवं संस्कृति मंत्रालय (एमडब्ल्यूके)
विकास रावत (पीएचडी, सीई)	इंटरनेशनल ट्रैवल सपोर्ट (आईटीएस) अवार्ड, एएनआरएफ, भारत
नेहा शर्मा (पीएचडी, ईई)	विजिटिंग पीएच.डी. विद्यार्थी, यूनिवर्सिटी ऑफ लक्ज़मबर्ग, लक्ज़मबर्ग
लेखराज सैनी (पीएचडी, एएएसई)	आईईईई, जीआरएसएस एवं इंटरनेशनल ट्रैवल सपोर्ट (आईटीएस) अवार्ड, एएनआरएफ, भारत
आशीष अरुण कुर्डेकर (पीएचडी, भौतिकी)	सीएसआईआर नेट फेलोशिप, भारत
सुरेश चंद्र बराल (पीएचडी, भौतिकी)	कॉमनवेल्थ स्प्लिट–साइट पीएच.डी. स्कॉलरशिप, सीएससी / एफसीडीओ, यूके
प्रतीक्षा गामी (पीएचडी, एमईएमएस)	स्टूडेंट स्पॉन्सरशिप अवार्ड, इंटरनेशनल बैटरी मैटेरियल्स एसोसिएशन की वार्षिक बैठक 2025, सिंगापुर
देवांशी छतबार (यूजी, सीएसई)	एनयूएस यंग फेलोशिप प्रोग्राम, एनयूएस, सिंगापुर
सुमन दास (पीएचडी, जेपीएन सीओई)	द्विपक्षीय मोबिलिटी ग्रांट, सीएमईपीआईयूएस एवं स्लोवेनिया
गुंजन जोशी (पीएचडी, एचएसएस)	ईब्रेन कॉन्फ्रेंस 2026 हेतु ट्रैवल ग्रांट, फ्रांस
ऐश्वर्या गुप्ता (पीएचडी, ईई)	जेएसटी लोटस (भारतदृजापान विज्ञान कार्यक्रम में प्रतिभाशाली युवाओं का आदान–प्रदान)
निस्सार हुसैन (पीएचडी, रसायन विज्ञान)	इंटरनेशनल ट्रैवल सपोर्ट (आईटीएस) अवार्ड, एएनआरएफ, भारत
हर्षिता भुइयाँ (पीएचडी, एएएसई)	द्विराष्ट्रीय पर्यवेक्षण के अंतर्गत डॉक्टरेट डिग्री स्कॉलरशिप, डीएएडी, जर्मनी

पूर्व छात्र एवं कॉर्पोरेट संबंध (एसीआर)



एसीआर कार्यालय के बारे में: पूर्व छात्र एवं कॉर्पोरेट संबंध कार्यालय की स्थापना संस्थान के पूर्व छात्रों तथा कॉर्पोरेट संस्थाओं के साथ संबंध स्थापित करने और उन्हें बनाए रखने के उद्देश्य से की गई है। इस कार्यालय में अधिकारियों एवं कर्मचारियों की एक समर्पित, सक्रिय और उत्साही टीम कार्यरत है। अधिष्ठाता (एसीआर) प्रो. सुमन मुखोपाध्याय के नेतृत्व में यह टीम संस्थान के दृष्टिकोण के अनुरूप उसके उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए निरंतर कार्य करती है।

क. "पूर्व छात्र संबंधों" को सुदृढ़ करने हेतु एसीआर टीम द्वारा की गई गतिविधियाँ

1. पूर्व छात्र मीट

- प्रथम मीटः 20 जुलाई 2025 को चेन्नई में प्रथम अखिल भारतीय पूर्व छात्र मीट सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। इसमें लगभग 15 पूर्व छात्रों ने अपने परिवार के सदस्यों के साथ भाग लिया।
- द्वितीय मीटः 30 अगस्त 2025 को कोलकाता में दूसरा पूर्व छात्र मीट आयोजित किया गया। इसमें लगभग 10 पूर्व छात्रों ने अपने परिवार के सदस्यों के साथ भाग लिया।
- तृतीय मीटः 13 सितंबर 2025 को हैदराबाद में तीसरा पूर्व छात्र मीट आयोजित किया गया। इसमें लगभग 25 पूर्व छात्रों ने अपने परिवार के सदस्यों के साथ भाग लिया।
- चतुर्थ मीटः 17 जनवरी 2026 को बेंगलुरु में चौथा पूर्व छात्र मीटकृबेंगलुरु चौप्टर 2.0 सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। इसमें लगभग 178 पूर्व छात्रों ने अपने परिवार के सदस्यों के साथ भाग लिया।
- पंचम मीटः 28 फरवरी 2026 को म्यूनिख में भारत के बाहर प्रथम पूर्व छात्र मीट आयोजित किया गया। इसमें लगभग 9 पूर्व छात्रों ने अपने परिवार के सदस्यों के साथ भाग लिया।

2. मैग्नम ओपस 2026 (आईआईटी इंदौर परिसर में पूर्व छात्रों का आगमन)

31 जनवरी एवं 1 फरवरी 2026 को आईआईटी इंदौर परिसर में पूर्व छात्रों और वर्तमान विद्यार्थियों के मीट मैग्नम ओपस 2026 का आयोजन किया गया। इसमें लगभग 60 पूर्व छात्रों ने अपने परिवार के सदस्यों के साथ भाग लिया।

3. पूर्व छात्रों के साथ सहयोग

16 मार्च 2026 को मुंबई में मुंबई स्थित पूर्व छात्रों के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए।

4. पूर्व छात्र संवाद एवं परस्पर संवादात्मक सत्र

25 अप्रैल 2026 को म्यूनिख स्थित पूर्व छात्रों द्वारा संवाद सत्र आयोजित किया गया, जिसमें 3 पूर्व छात्रों तथा 60 से अधिक वर्तमान विद्यार्थियों ने भाग लिया।

5. वर्ष पुस्तिका–2025 एवं 2026

वर्ष 2025 एवं 2026 में स्नातक होने वाले विद्यार्थियों के लिए वर्षपुस्तिका एडियोस 4.0 एवं 5.0 के दो संस्करण जारी किए गए।

6. पूर्व छात्र पत्रिका–2024 एवं 2025

13 सितंबर 2025 को हैदराबाद चौप्टर के पूर्व छात्र मीट के दौरान पूर्व छात्र पत्रिका के प्रथम खंड का प्रथम अंक तथा 17 जनवरी 2026 को बेंगलुरु चौप्टर के पूर्व छात्र मीट के दौरान प्रथम खंड का द्वितीय अंक जारी किया गया।

7. *संस्थान की समाचार–पत्रिकाएँ*

- संस्थान की समाचार–पत्रिका पॉड पल्स का द्विमासिक आधार पर नियमित प्रकाशन किया गया।

8. *युवा पूर्व छात्र उपलब्धि पुरस्कार*

- युवा पूर्व छात्र उपलब्धि पुरस्कार (वाईएएए) आईआईटी इंदौर के उभरते पूर्व छात्र नेतृत्वकर्ताओं की उत्कृष्टता, नवाचार एवं नेतृत्व क्षमता का सम्मान करते हैं। इस वर्ष अशोक पंचिली पूथियोत (बी.टेक., कंप्यूटर विज्ञान एवं अभियांत्रिकी, 2014 बैच) को उनकी उल्लेखनीय व्यावसायिक उपलब्धियों तथा अपने कार्यक्षेत्र में प्रभावशाली योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

पूर्व छात्र संबंधी गतिविधियों की कुछ झलकियाँ

पूर्व छात्र मिलन समारोह (देशवार)



म्यूनिख पूर्व छात्र मिलन समारोह –
28 फरवरी, 2026



कोलकाता पूर्व छात्र मिलन समारोह –
30 अगस्त, 2025



चेन्नई पूर्व छात्र मिलन समारोह –
20 जुलाई, 2025



हैदराबाद पूर्व छात्र मिलन समारोह 2.0 –
13 सितंबर, 2025



मुंबई चौप्टर का गठन –
समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर



मैग्नम ओपस – 2026



बेंगलुरु पूर्व छात्र मिलन समारोह 2.0 –
17 जनवरी, 2026



युवा पूर्व छात्र उपलब्धि पुरस्कार







ख. "कॉर्पोरेट संबंधों" को सुदृढ़ करने हेतु एसीआर टीम द्वारा की गई गतिविधियाँ

1. कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) पहलों के अंतर्गत परियोजनाओं का कार्यान्वयन

(क) हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (हुडको): पीएम–अजय विद्यार्थी छात्रावास में तीसरी मंजिल के निर्माण हेतु रु 2. 5 करोड़ की वित्तीय सहायता प्राप्त हुई, जिससे परिसर में आवासीय क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

(ख) किसेम ऊर्जा परियोजना: आईआईटी इंदौर ने आईआईटी मद्रास के साथ रु.1.50 करोड़ के स्वीकृत बजट से "कोटक–आईआईटीएम सेव एनर्जी मिशन (किसेम)–आईआईटी इंदौर स्पोक" की स्थापना हेतु समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। इस पहल का उद्देश्य ऊर्जा दक्षता तथा सतत प्रौद्योगिकी समाधानों को बढ़ावा देना है।

(ग) एन्सिस, सिनॉप्सिस का एक भाग: उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को सहायता प्रदान करने हेतु रु.12.40 लाख के स्वीकृत बजट से मेरिट–कम–मीन्स छात्रवृत्तियों का वितरण किया गया।

(घ) रेविटी हेल्थकेयर इंडिया प्राइवेट लिमिटेड: आईआईटी इंदौर और रेविटी हेल्थकेयर इंडिया प्राइवेट लिमिटेड ने "भारत में मुख कैंसर की चुनौती: मुख की सबम्यूकोसल फाइब्रोसिस की समस्या" नामक अनुसंधान परियोजना को सहयोग देने हेतु सीएसआर कार्यक्रम के अंतर्गत रु30 लाख के स्वीकृत बजट के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं।

(ङ) महले इंजन कंपोनेंट्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (पीथमपुर): आईआईटी इंदौर और महले इंजन कंपोनेंट्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड ने परिसर में आवागमन सुविधाओं को बेहतर बनाने हेतु सहयोग किया है। इस सीएसआर साझेदारी के अंतर्गत, संस्थान के संकाय सदस्यों, विद्यार्थियों और कर्मचारियों के सुरक्षित एवं सुगम आवागमन के लिए 50 सीटों वाली बस उपलब्ध कराने हेतु महले ने रु. 20.14 लाख की राशि स्वीकृत की है।

(च) मोइरा सरिया: मोइरा सरिया ने सीएसआर पहल के अंतर्गत आईआईटी इंदौर के स्वास्थ्य केंद्र को रु.4 लाख मूल्य का टॉपकॉन नॉन–कॉन्टैक्ट टोनोमीटर दान किया है। यह उन्नत नैदानिक उपकरण परिसर के सभी सदस्यों की आँखों की सटीक एवं गैर–आक्रामक जाँच की सुविधा प्रदान करके संस्थान की चिकित्सा संबंधी आधारभूत संरचना को सुदृढ़ करता है।

2. आईआईटी इंदौर में कॉर्पोरेट/उद्योग प्रतिनिधियों का दौरा

शैक्षणिक वर्ष के दौरान, संभावित अनुसंधान साझेदारियों की संभावनाओं का पता लगाने तथा कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) संबंधी पहलों पर संस्थान के साथ सहयोग करने के उद्देश्य से विभिन्न कॉर्पोरेट संस्थाओं एवं उद्योग जगत के प्रतिनिधियों ने आईआईटी इंदौर का दौरा किया। इनमें से कुछ प्रमुख दौरे निम्नलिखित हैं:

(क) हुडको: 17 दिसंबर 2025

(ख) वोल्वो आइशर कमर्शियल व्हीकल्स, पीथमपुर: 19 दिसंबर 2025

(ग) महले इंजन कंपोनेंट्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड: 5 जनवरी 2026

(घ) इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (आईओसीएल): 20 मार्च 2026

(ङ) एसबीआई फाउंडेशन: 24 अप्रैल 2026

3. आईआईटी इंदौर की टीम द्वारा कॉर्पोरेट/उद्योग संस्थानों का दौरा

शैक्षणिक एवं औद्योगिक सहयोग को सुदृढ़ करने तथा अनुसंधान साझेदारी, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और विद्यार्थी सहभागिता के अवसरों का पता लगाने के लिए आईआईटी इंदौर के संकाय सदस्यों एवं वरिष्ठ अधिकारियों ने क्षेत्र के प्रमुख उद्योगों का दौरा किया। इनमें से कुछ प्रमुख दौरे निम्नलिखित हैं:

(क) मोइरा सरिया, पीथमपुर: 20 नवंबर 2025

(ख) जीसीएफ, वीएफजे, जीआईएफ, जबलपुर: 9–11 अप्रैल 2026 (तीन दिवसीय कार्यक्रम)

(ग) एनटीपीसी, खरगोन: 8 मई 2026

4. कॉर्पोरेट एवं उद्योग जगत से संपर्क

आईआईटी इंदौर ने कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) संबंधी पहलों पर संवाद एवं सहयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 8 अगस्त 2025 को दिल्ली में पाँचवीं सीएसआर एवं सीआईसी कॉन्क्लेव बैठक आयोजित की। इस कार्यक्रम में उद्योग जगत के प्रतिनिधियों, शिक्षाविदों, विशिष्ट अतिथियों तथा आईआईटी इंदौर के निदेशक, संकाय सदस्यों एवं अधिकारियों ने भाग लिया।

कॉर्पोरेट संबंधी गतिविधियों की कुछ झलकियाँ



रेविटी हेल्थकेयर इंडिया प्राइवेट लिमिटेड एवं आईआईटी इंदौर के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर – 5 मई, 2026।



एनटीपीसी, खरगोन का दौरा – 8 मई, 2026।



जीसीएफ, वी.जे.एफ. एवं जीआईएफ, जबलपुर का दौरा – 9 से 11 अप्रैल, 2026।



एसबीआई फाउंडेशन – 24 अप्रैल, 2026।



हुडको, भोपाल का आईआईटी इंदौर दौरा – 17 दिसंबर, 2025।



महले इंजन कंपोनेंट्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड का आईआईटी इंदौर दौरा – जनवरी, 2026।



दिल्ली में कॉर्पोरेट एवं उद्योग संपर्क बैठक – 8 अगस्त, 2025।



मोइरा सरिया, पीथमपुर का दौरा – 20 नवंबर, 2025।

ग. एसीआर टीम द्वारा की गई अन्य गतिविधियाँ

1. बाहरी विद्यार्थियों के लिए इंटर्नशिप

आईआईटी इंदौर का पूर्व छात्र एवं कॉर्पोरेट संबंध कार्यालय विभिन्न संस्थानों एवं विश्वविद्यालयों के स्नातक और स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए ग्रीष्मकालीन एवं शीतकालीन इंटर्नशिप के अवसर प्रदान करता है। इस कार्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को आईआईटी इंदौर के संकाय सदस्यों एवं संबद्ध केंद्रों के मार्गदर्शन में अनुसंधान करने तथा व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने का अवसर मिलता है। इससे उनके शैक्षणिक ज्ञान, तकनीकी कौशल और व्यावहारिक अनुभव में वृद्धि होती है।

2. बाहरी विद्यार्थियों के लिए शोध–प्रबंध

आईआईटी इंदौर प्रतिभाशाली एवं प्रेरित विद्यार्थियों को अपने प्रतिष्ठित संकाय सदस्यों के मार्गदर्शन में शोध–प्रबंध कार्य करने के लिए आमंत्रित करता है। इस अवसर के माध्यम से विद्यार्थियों को संस्थान के विशेषज्ञों के मार्गदर्शन तथा अनुसंधान सुविधाओं का लाभ प्राप्त होता है, जिससे उनकी शैक्षणिक यात्रा समृद्ध होती है।

3. छात्रवृत्तियाँ

(क) युवा अनस्टॉपेबल छात्रवृत्ति योजना 2025–26: इस योजना के अंतर्गत शैक्षणिक वर्ष 2025–26 में बी.टेक. प्रथम वर्ष के 8 विद्यार्थियों को प्रतिवर्ष अधिकतम रु. 50,000 की छात्रवृत्ति प्रदान की गई।

(ख) मेरिट–कम–मीन्स (एमसीएम) छात्रवृत्ति योजना 2025–26: इस योजना के अंतर्गत शैक्षणिक वर्ष 2025–26 में एम.एससी. प्रथम वर्ष के 20 विद्यार्थियों को प्रतिवर्ष अधिकतम रु. 27,000 की छात्रवृत्ति प्रदान की गई।

(ग) रूपा राहुल बजाज महिला अभियांत्रिकी छात्रवृत्ति (आरआरबीएसडब्ल्यूई) योजना 2025–26: इस योजना के अंतर्गत शैक्षणिक वर्ष 2025–26 में बी.टेक. प्रथम वर्ष की तीन छात्राओं को प्रतिवर्ष अधिकतम रु. 2,00,000 की छात्रवृत्ति प्रदान की गई।

शैक्षणिक बाह्यसंपर्क



शैक्षणिक बाह्यसंपर्क कार्यालय के बारे में

शैक्षणिक बाह्यसंपर्क कार्यालय की परिकल्पना शिक्षा की उस परिवर्तनकारी शक्ति में गहरे विश्वास पर आधारित है, जो जीवन को संवारने, समुदायों के निर्माण तथा समृद्ध विश्व के सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस कार्यालय का मुख्य उद्देश्य शिक्षा में उत्कृष्टता, समानता और सशक्तीकरण के प्रति प्रतिबद्धता सुनिश्चित करना है। यह विभाग विभिन्न डिग्री एवं प्रमाणपत्र कार्यक्रमों के साथ–साथ कौशल विकास कार्यक्रमों का संचालन करता है।

1. ***डेटा साइंस एवं मैनेजमेंट में मास्टर ऑफ साइंस (एमएसडीएसएम)***

   आईआईएम इंदौर के सहयोग से आईआईटी इंदौर ने डेटा साइंस एवं मैनेजमेंट में दो वर्षीय मास्टर ऑफ साइंस कार्यक्रम प्रारंभ किया है। वर्ष 2021 से अब तक इस कार्यक्रम के चार बैच प्रारंभ किए जा चुके हैं। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय बैच के कुल 156 विद्यार्थियों ने स्नातक की उपाधि प्राप्त की है। चौथे बैच के 69 विद्यार्थी आगामी दीक्षांत समारोह में उपाधि प्राप्त करेंगे।

2. ***वोल्वो आइशर कमर्शियल व्हीकल्स (वीईसीवी) के कर्मचारियों के लिए कार्यकारी एम.टेक. कार्यक्रम***

   संस्थान ने 31 जुलाई 2023 को हस्ताक्षरित शैक्षणिक–औद्योगिक सहयोग समझौते के अंतर्गत शैक्षणिक सत्र 2023–24 में वीईसीवी के कर्मचारियों के लिए "हाइब्रिड एवं इलेक्ट्रिक वाहन प्रौद्योगिकी" में दो वर्षीय कार्यकारी एम.टेक. कार्यक्रम प्रारंभ किया।

   – प्रथम बैचः शैक्षणिक सत्र 2023–24 में वीईसीवी लिमिटेड के 10 कर्मचारियों ने प्रवेश लिया।

   – द्वितीय बैचः शैक्षणिक सत्र 2024–25 में वीईसीवी लिमिटेड के 9 कर्मचारियों ने प्रवेश लिया।

   – तृतीय बैचः शैक्षणिक सत्र 2025–26 में वीईसीवी लिमिटेड के 17 कर्मचारियों ने प्रवेश लिया।

   प्रथम एवं द्वितीय बैच के कुल 19 विद्यार्थी आगामी दीक्षांत समारोह में उपाधि प्राप्त करेंगे।

3. ***मध्य प्रदेश शासन के इंजीनियरिंग महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए स्नातक आगमन कार्यक्रम***

   संस्थान ने मध्य प्रदेश शासन के इंजीनियरिंग महाविद्यालयों के चयनित विद्यार्थियों को आईआईटी इंदौर में बी.टेक. के अंतिम वर्ष की पढ़ाई पूरी करने का अवसर प्रदान करने हेतु एक शैक्षणिक बाह्यसंपर्क कार्यक्रम प्रारंभ किया है। यह कार्यक्रम 28 अगस्त 2023 को मध्य प्रदेश शासन के तकनीकी शिक्षा, कौशल विकास एवं रोजगार विभाग के साथ हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन (एमओयू) के अंतर्गत संचालित किया जा रहा है।

   – प्रथम बैचः 23 चयनित विद्यार्थियों ने कार्यक्रम में प्रवेश लिया और आईआईटी इंदौर में आठवाँ सेमेस्टर पूरा किया।

   – द्वितीय बैचः 17 चयनित विद्यार्थियों ने कार्यक्रम में प्रवेश लिया और आठवाँ सेमेस्टर पूरा किया।

   – तृतीय बैचः 24 चयनित विद्यार्थियों ने कार्यक्रम में प्रवेश लिया और आठवाँ सेमेस्टर पूरा किया।

   चौथा बैच जुलाई–अगस्त 2026 में प्रारंभ होने की संभावना है।

4. ***इंजीनियरिंग महाविद्यालयों के संकाय सदस्यों हेतु पीएच.डी. कार्यक्रम (सीटी श्रेणी):***

शैक्षणिक सहयोग को बढ़ावा देने, शैक्षिक अवसरों का विस्तार करने तथा अनुसंधान संस्कृति को प्रोत्साहित करने के साझा उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए, आईआईटी इंदौर ने मध्य प्रदेश शासन के तकनीकी शिक्षा, कौशल विकास एवं रोजगार विभाग के साथ 28 अगस्त 2024 को हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन (एमओयू) के अंतर्गत शासकीय (स्वायत्त) इंजीनियरिंग महाविद्यालयों, जिनमें यूनिवर्सिटी इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी–राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भोपाल भी शामिल है, के स्थायी संकाय सदस्यों के लिए अंशकालिक पीएच.डी. कार्यक्रम प्रारंभ किया है। शैक्षणिक सत्र 2024–25 में प्रथम बैच के अंतर्गत इन महाविद्यालयों के कुल 03 संकाय सदस्यों ने पीएच.डी. कार्यक्रम में प्रवेश लिया।

5. ***एमसीटीई महू के अधिकारियों हेतु एम.टेक. कार्यक्रम:***

आईआईटी इंदौर अपने यहाँ स्थित सेंटर फॉर फ्यूचरिस्टिक डिफेंस एंड स्पेस टेक्नोलॉजी (सीएफडीएसटी) के अंतर्गत प्रायोजित अभ्यर्थी (एसडब्ल्यू) श्रेणी में अधिकारियों के लिए दो वर्षीय एम.टेक. डिग्री कार्यक्रम प्रारंभ करने जा रहा है। इस पहल का उद्देश्य सशस्त्र बलों में प्रौद्योगिकी के अंगीकरण को गति देना तथा सैन्य अनुप्रयोगों के अनुरूप अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों में विशेषज्ञ मानव संसाधन तैयार करना है। इस कार्यक्रम के माध्यम से रक्षा कर्मियों को अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों का प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा।

जुलाई 2025 में प्रारंभ हुए प्रथम बैच में कुल 30 सेना अधिकारियों ने संस्थान में प्रवेश लिया। जुलाई 2026 के बैच में कुल 15 सेना अधिकारियों के संस्थान में प्रवेश लेने की योजना है।

6. ***आईआईटी इंदौर एवं नेशनल ऑटोमोटिव टेस्ट ट्रैक्स (नैट्रैक्स) के बीच सहयोग:***

आईआईटी इंदौर और नेशनल ऑटोमोटिव टेस्ट ट्रैक्स (नैट्रैक्स) ने संयुक्त अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकी विकास परियोजनाओं के संचालन हेतु एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। इसके अंतर्गत सड़क सुरक्षा, सतत विकास, परीक्षण ट्रैक के पूर्वानुमान–आधारित रखरखाव, ट्रैक निर्माण में वैकल्पिक सामग्रियों के उपयोग तथा इलेक्ट्रिक वाहनों और बैटरियों जैसे प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

7. ***मिलिट्री इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (मिलिट), पुणे के साथ शैक्षणिक सहयोग:***

आईआईटी इंदौर और मिलिट्री इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (मिलिट), पुणे के बीच शैक्षणिक सहयोग स्थापित किया गया है। इसके अंतर्गत आईआईटी इंदौर नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में मिलिट, पुणे की क्षमताओं के विकास में सहायता प्रदान करेगा।

8. ***पीएम श्री जवाहर नवोदय विद्यालयों के टीजीटी–विज्ञान एवं गणित शिक्षकों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम (25–29 नवंबर 2024 एवं 21 नवंबर–1 दिसंबर 2025):***

शिक्षा मंत्रालय ने पीएम श्री विद्यालयों के शिक्षकों के लिए सुव्यवस्थित प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से देशभर में शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के उद्देश्य से एक योजना प्रारंभ की है। इस पहल का उद्देश्य शिक्षकों के शिक्षण कौशल, तकनीकी ज्ञान, शिक्षा में प्रौद्योगिकी के एकीकरण, विषय–विशिष्ट दक्षताओं तथा समग्र कार्यक्षमता को विकसित करना है, ताकि वे विद्यालयों एवं उच्च शिक्षण संस्थानों की बदलती शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा कर सकें।

इस पहल के अंतर्गत, आईआईटी इंदौर को शिक्षकों के प्रशिक्षण सत्र आयोजित करने के लिए आमंत्रित किया गया, जिससे शिक्षण के स्तर में सुधार हो तथा जमीनी स्तर पर शिक्षा की नींव सुदृढ़ हो सके।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत कुल 256 शिक्षकों ने एक सप्ताह के आवासीय शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

9. ***पीएम श्री केंद्रीय विद्यालयों एवं जवाहर नवोदय विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए शैक्षणिक भ्रमण:***

आईआईटी इंदौर, भारत सरकार की पीएम स्कूल्स फॉर राइजिंग इंडिया (पीएम श्री) योजना का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य स्कूली शिक्षा में समानता, पहुँच और समावेशन को बढ़ावा देना है। पीएम श्री विद्यालयों का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों का इस प्रकार विकास करना है कि वे जागरूक, उत्पादक और समाज के विकास में योगदान देने वाले नागरिक बन सकें।

पीएम श्री विद्यालयों के विद्यार्थियों के आईआईटी इंदौर भ्रमण का उद्देश्य उन्हें देश के अग्रणी तकनीकी संस्थानों में से एक में संचालित अत्याधुनिक अनुसंधान, नवाचार और शैक्षणिक उत्कृष्टता से परिचित कराना था। इस भ्रमण के माध्यम से सैद्धांतिक ज्ञान और वास्तविक जीवन में उसके अनुप्रयोगों के बीच की दूरी को कम करने तथा विद्यार्थियों को वर्तमान तकनीकी प्रगति और उसके व्यावहारिक उपयोगों की बेहतर समझ प्रदान करने का प्रयास किया गया।

अगस्त 2024 से मार्च 2026 तक विभिन्न केंद्रीय विद्यालयों, पीएम श्री विद्यालयों, जवाहर नवोदय विद्यालयों, राज्य सरकार के विद्यालयों तथा निजी विद्यालयों के लगभग 4,500 विद्यार्थियों ने आईआईटी इंदौर का भ्रमण किया।

10. विश्वकर्मा पुरस्कार–2025:

मेकर भवन फाउंडेशन द्वारा आयोजित विश्वकर्मा पुरस्कार–2025 का सफल आयोजन भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर में किया गया। इस आयोजन में भारत और सार्क देशों के विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग एवं गणित (एसटीईएम) विषयों के स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के नवाचार, रचनात्मकता और इंजीनियरिंग उत्कृष्टता का उत्सव मनाया गया। इसमें लगभग 3,600 विद्यार्थियों ने भाग लिया तथा अंतिम चरण में पहुँची 12 टीमों ने स्मार्ट मोबिलिटी, स्वास्थ्य सेवा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे क्षेत्रों की वास्तविक चुनौतियों पर केंद्रित नवाचारी हार्डवेयर–आधारित प्रोटोटाइप प्रस्तुत किए।

समारोह में आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रो. सुहास जोशी, डॉ. हेमंत कनाकिया तथा मेकर भवन फाउंडेशन के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री गौतम खन्ना सहित अनेक विशिष्ट अतिथि उपस्थित रहे। इस आयोजन में मार्गदर्शन, तकनीकी मूल्यांकन और उद्यमिता प्रशिक्षण के माध्यम से विद्यार्थियों के विचारों को व्यावहारिक एवं उद्योग–उपयोगी समाधानों में परिवर्तित करने के महत्व को रेखांकित किया गया। विश्वकर्मा पुरस्कार–2025 ने युवा नवोन्मेषकों को अपनी तकनीकी दक्षता, समस्या–समाधान क्षमता तथा सामाजिक विकास के प्रति प्रतिबद्धता प्रदर्शित करने के लिए एक उत्कृष्ट मंच प्रदान किया।

11. मार्गदर्शन योजना:

आईआईटी इंदौर को अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) की वर्ष 2023 की मार्गदर्शन योजना के अंतर्गत मार्गदर्शक संस्थान (एमआई) के रूप में नामित किया गया है। इस योजना का उद्देश्य स्थानीय इंजीनियरिंग महाविद्यालयों (लाभार्थी संस्थानों) को मार्गदर्शन प्रदान करना है। शैक्षणिक सत्र 2025–26 के दौरान इस योजना के अंतर्गत निम्नलिखित गतिविधियाँ आयोजित की गईं:

– संकाय विकास कार्यक्रम (एफडीपी)।

– बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर): दाखिल करने से लेकर प्रकाशन एवं अनुदान प्राप्त करने तक की संपूर्ण प्रक्रिया की समझ।

12. तकनीकी शिक्षा, कौशल विकास एवं रोजगार विभाग, मध्य प्रदेश शासन के अंतर्गत संत शिरोमणि रविदास ग्लोबल स्किल पार्क (जीएसपी):

आईआईटी इंदौर ने 4 अक्टूबर 2023 को मध्य प्रदेश शासन के तकनीकी शिक्षा, कौशल विकास एवं रोजगार विभाग के अंतर्गत संत शिरोमणि रविदास ग्लोबल स्किल पार्क (जीएसपी) के साथ एक समझौता किया। इसके अंतर्गत आईआईटी इंदौर जीएसपी स्थित सेंटर फॉर ऑक्यूपेशनल स्किल्स एक्विजिशन–प्प (सीओएसए–प्प) में प्रशिक्षण सुविधा का संचालन करेगा तथा उद्योग की आवश्यकताओं के अनुरूप कार्यक्रम संचालित करेगा। इस योजना के संभावित लाभार्थियों में मध्य प्रदेश शासन के अधीन संचालित शैक्षणिक संस्थानों के आईटीआई, डिप्लोमा तथा बी.ई./बी.टेक. कार्यक्रमों के विद्यार्थी शामिल हैं।

इस पहल के अंतर्गत कुल 42 विद्यार्थियों ने केंद्रीय कार्यशाला में प्रशिक्षण प्राप्त किया।

13. केस न्यू हॉलैंड कंस्ट्रक्शन इक्विपमेंट (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड के कर्मचारियों हेतु कार्यकारी एम.टेक. कार्यक्रम:

संस्थान ने 31 जनवरी 2026 को हस्ताक्षरित शैक्षणिक–औद्योगिक सहयोग समझौते के अंतर्गत शैक्षणिक सत्र 2026–27 में सीएनएच के कर्मचारियों के लिए "हेवी व्हीकल मोबिलिटी इंजीनियरिंग" में दो वर्षीय कार्यकारी एम.टेक. कार्यक्रम प्रारंभ किया है। शैक्षणिक सत्र 2026–27 के प्रथम बैच में केस न्यू हॉलैंड कंस्ट्रक्शन इक्विपमेंट (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड के कुल 15 कर्मचारियों ने प्रवेश लिया। प्रथम बैच जुलाई/अगस्त 2026 में प्रारंभ होना निर्धारित है।

14. इंजीनियरिंग शिक्षा उत्कृष्टता प्रमाणपत्र कार्यक्रम (सीईईई) हेतु आईएनएई के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर:

इंडियन नेशनल एकेडमी ऑफ इंजीनियरिंग (आईएनएई) और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर ने सेंटर फॉर इंजीनियरिंग एजुकेशन एक्सीलेंस (सीईईई) के प्रमाणपत्र कार्यक्रम हेतु एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। इस कार्यक्रम का उद्देश्य नवाचारी शिक्षण पद्धतियों और संकाय विकास पहलों के माध्यम से इंजीनियरिंग शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना है।

इस सहयोग के अंतर्गत आईआईटी इंदौर इंजीनियरिंग संकाय सदस्यों के लिए मार्गदर्शक केंद्र के रूप में कार्य करेगा। इस पहल का मुख्य उद्देश्य शैक्षणिक उत्कृष्टता, उद्योगोन्मुखी शिक्षण तथा आधुनिक शिक्षण–पद्धतियों को बढ़ावा देना है। भारत में इंजीनियरिंग शिक्षा को सुदृढ़ करने के लिए सीईईई कार्यक्रम को एआईसीटीई और इन्फोसिस फाउंडेशन का सहयोग प्राप्त है।

मेकरस्पेस

आईआईटी इंदौर की मेकरस्पेस प्रयोगशाला में प्रोटोटाइप विकास, नवाचार एवं अनुभवात्मक शिक्षण के लिए विश्वस्तरीय अवसंरचना और अत्याधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं। इस प्रयोगशाला में विद्युत, इलेक्ट्रॉनिक्स, यांत्रिकी एवं संगणकीय क्षेत्रों से संबंधित सभी आवश्यक सुविधाएँ एक ही स्थान पर उपलब्ध हैं, जो प्रायोगिक स्तर पर प्रोटोटाइप एवं उत्पाद विकास की आवश्यकताओं को पूरा करती हैं।

यह प्रयोगशाला आईआईटी इंदौर के प्रथम वर्ष के स्नातक विद्यार्थियों के लिए प्रयोगशाला सत्र आयोजित करती है। इसके अतिरिक्त, यह वरिष्ठ स्नातक, स्नातकोत्तर एवं पीएच.डी. विद्यार्थियों के लिए संचालित कुछ अन्य अनिवार्य एवं वैकल्पिक पाठ्यक्रमों में भी सहयोग प्रदान करती है। इन सुविधाओं का उपयोग स्नातक विद्यार्थी अपने अंतिम वर्ष के बी.टेक. परियोजना कार्यों के लिए, स्नातकोत्तर एवं पीएच.डी. विद्यार्थी अपने अनुसंधान कार्यों के लिए तथा संकाय सदस्य अपनी अनुसंधान परियोजनाओं के निष्पादन के लिए करते हैं।



शैक्षणिक सत्र 2025–26 के दौरान मेकरस्पेस प्रयोगशाला की प्रमुख गतिविधियाँ निम्नलिखित हैं:

- ***जेनेसिस कार्यक्रम:*** मेकरस्पेस प्रयोगशाला द्वारा 29 जुलाई से 1 अगस्त 2025 तक नवप्रवेशित बी.टेक. विद्यार्थियों के लिए जेनेसिस कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसके अंतर्गत विद्यार्थियों ने पुल निर्माण तथा गियरबॉक्स, रोबोट, कार्ब्यूरेटर, क्लच, वाल्व, माइक्रोस्कोप, सीपीयू, माइक्रोवेव और पेपर श्रेडर के संयोजन एवं वियोजन संबंधी गतिविधियाँ कीं।
- ***प्रयोगशाला कक्षाएँ:*** मेकरस्पेस प्रयोगशाला द्वारा शरद एवं शीतकालीन सेमेस्टर में मेकरस्पेस लैब (आईसी–152) की प्रायोगिक कक्षाएँ आयोजित की गईं। विद्यार्थियों ने सिलाई मशीन से एप्रन सिलना, द्विविमीय एवं त्रिविमीय घटकों का मॉडलिंग, 3डी प्रिंटिंग, सीएनसी मशीनिंग, धातुओं को जोड़ना, सर्किट का सिमुलेशन, ब्रेडबोर्ड पर संयोजन एवं परीक्षण, ऑसिलोस्कोप, फंक्शन जनरेटर और विद्युत आपूर्ति स्रोत का उपयोग, सोल्डरिंग, सॉफ्टवेयर की सहायता से पीसीबी रूटिंग, पीसीबी निर्माण एवं परीक्षण, आर्डुइनो और रास्पबेरी पाई के साथ सेंसर की कोडिंग एवं इंटरफेसिंग तथा आर्डुइनो के माध्यम से मूलभूत सिग्नल निर्माण एवं मापन जैसे प्रायोगिक कार्य पूरे किए। इन गतिविधियों में कुल 457 विद्यार्थियों ने भाग लिया।
- ***निर्माण संबंधी अनुरोधों का निष्पादन:*** मेकरस्पेस प्रयोगशाला ने स्नातक एवं स्नातकोत्तर शिक्षण, स्नातकोत्तर अनुसंधान, बी.टेक. परियोजना कार्य तथा प्रायोजित परियोजनाओं सहित विभिन्न उद्देश्यों के लिए प्राप्त 52 निर्माण संबंधी अनुरोधों को पूरा किया।

- ***लाइन–फॉलोअर रोबोट का प्रदर्शनः*** प्रथम वर्ष के बी.टेक. विद्यार्थियों ने आईसी–152 पाठ्यक्रम की अंतिम परियोजना के अंतर्गत विभिन्न अनुप्रयोगों, जैसे कृषि, घरेलू कार्य, परिसर रखरखाव तथा औद्योगिक कार्यों के लिए 80 लाइन–फॉलोअर रोबोट तैयार किए। प्रयोगशाला ने विद्यार्थियों को आवश्यक संसाधन, मार्गदर्शन एवं उपभोग्य सामग्री उपलब्ध कराकर सहयोग प्रदान किया।



लाइन फॉलो रोबोट प्रस्तुति

- ***कैपस्टोन परियोजनाएँः*** विद्यार्थियों के व्यावहारिक कौशल को विकसित करने, अंतर्विषयक शिक्षण को प्रोत्साहित करने तथा कक्षा में सीखी गई अवधारणाओं को वास्तविक जीवन के अनुप्रयोगों में उपयोग करने के उद्देश्य से मेकरस्पेस प्रयोगशाला ने कैपस्टोन परियोजनाएँ प्रारंभ कीं। वर्तमान में संकाय सदस्यों द्वारा 23 परियोजना प्रस्ताव प्रस्तुत किए गए हैं तथा 86 से अधिक विद्यार्थी 18 वास्तविक जीवन पर आधारित परियोजनाओं पर कार्य कर रहे हैं।
- ***प्रशिक्षण कार्यक्रमः*** मेकरस्पेस प्रयोगशाला द्वारा निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गयाः
- ***विद्यार्थियों के बच्चों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रमः*** भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर के संकाय सदस्यों एवं कर्मचारियों के कक्षा 7 से 12 तक में अध्ययनरत बच्चों के लिए 19 से 31 मई 2025 तक विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें व्यावहारिक शिक्षण, रचनात्मकता, डिजिटल निर्माण एवं नवाचार–आधारित गतिविधियों पर विशेष ध्यान दिया गया।
- ***शिशुकुंज इंटरनेशनल स्कूल के विद्यार्थियों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रमः*** मेकरस्पेस प्रयोगशाला द्वारा 10 एवं 11 अगस्त 2025 को शिशुकुंज इंटरनेशनल स्कूल के विद्यार्थियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें आधुनिक प्रोटोटाइप निर्माण उपकरणों, डिज़ाइन थिंकिंग तथा अनुभवात्मक शिक्षण पद्धतियों से परिचित कराया गया।
- ***जवाहर नवोदय विद्यालय के शिक्षकों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रमः*** मेकरस्पेस प्रयोगशाला द्वारा 21 नवंबर से 1 दिसंबर 2025 तक जवाहर नवोदय विद्यालय के शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसका उद्देश्य स्कूली शिक्षा में नवाचार, निर्माण प्रौद्योगिकियों तथा परियोजना–आधारित शिक्षण को समाहित करना था।
- ***मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, भोपाल के विद्यार्थियों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रमः*** 16 से 19 दिसंबर 2025 तक आयोजित इस कार्यक्रम में त्वरित प्रोटोटाइप निर्माण, डिजिटल विनिर्माण तथा अंतर्विषयक उत्पाद विकास से संबंधित प्रशिक्षण प्रदान किया गया।
- ***सीईएलआईटीई परिसर, यूईसी उज्जैन में प्रशिक्षण एवं नवाचार कार्यक्रमः*** मेकरस्पेस प्रयोगशाला द्वारा 9 से 16 मार्च 2026 तक सीईएलआईटीई परिसर, यूईसी उज्जैन में प्रशिक्षण एवं नवाचार कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें निर्माण प्रौद्योगिकियों, इंजीनियरिंग डिज़ाइन तथा रचनात्मक समस्या–समाधान का व्यावहारिक अनुभव प्रदान किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 120 विद्यार्थियों को प्रशिक्षण दिया गया।
- ***एसओईटी, एसवीवी के विद्यार्थियों हेतु सहयोगात्मक प्रशिक्षण कार्यक्रमः*** 28 अप्रैल 2026 को आयोजित इस कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को उन्नत विनिर्माण उपकरणों, प्रोटोटाइप निर्माण तकनीकों तथा नवाचार–आधारित परियोजना विकास का व्यावहारिक अनुभव प्रदान करना था।
- ***प्रतिष्ठित प्रोफेसरों, उद्योगपतियों, वैज्ञानिकों, संकाय सदस्यों, अधिकारियों एवं विद्यार्थियों का भ्रमणः*** शैक्षणिक सत्र 2025–26 के दौरान अनेक प्रतिष्ठित प्रोफेसरों, उद्योगपतियों, वैज्ञानिकों, संकाय सदस्यों, अधिकारियों तथा महाविद्यालयों एवं विद्यालयों के विद्यार्थियों ने मेकरस्पेस प्रयोगशाला की अत्याधुनिक सुविधाओं का भ्रमण किया। सभी आगंतुकों ने प्रयोगशाला में उपलब्ध सुविधाओं की सराहना की।

आधारभूत संरचना विकास कार्यालय



आधारभूत संरचना विकास कार्यालय दल

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर को 501.42 एकड़ भूमि आवंटित की गई थी। संस्थान का आधारभूत संरचना विकास कार्यालय (आईडीओ) प्रमुख सेवा विभागों में से एक है, जो परिसर में आवश्यक आधारभूत संरचनात्मक सुविधाएँ उपलब्ध कराने एवं उनका रखरखाव सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इन सुविधाओं में भवन, विद्युत, जलापूर्ति, सड़कें एवं पैदल पथ, पार्क एवं उद्यान तथा परिसर की अन्य आवश्यक सुविधाएँ शामिल हैं।

संस्थान में लगभग 2.21 लाख वर्ग मीटर क्षेत्रफल में फैली 41 संरचनाओं का निर्माण सफलतापूर्वक पूरा किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त, चरण III (ए) के निर्माण कार्य प्रारंभ हो चुके हैं। चरण III (बी) के अंतर्गत रु 624 करोड़ की लागत वाले प्रस्ताव को शिक्षा मंत्रालय से स्वीकृति प्राप्त हो गई है तथा वर्तमान में यह नियोजन के चरण में है।

गत वर्ष के दौरान परिसर में निम्नलिखित प्रमुख विकास कार्य किए गए हैं:–

चरण III (ए) के निर्माण कार्य

क) भारी एवं परिष्कृत प्रयोगशाला परिसर
ख) बहु–सुविधा परिसर
ग) आवासीय परिसर
घ) स्टूडियो अपार्टमेंट
ङ) छात्रावास
च) नए व्याख्यान कक्ष परिसर
छ) व्याख्यान कक्ष परिसर में कक्षाओं का निर्माण
ज) एनसीसी मैदान का विकास
झ) सड़क नेटवर्क का विकास
ञ) विद्युत उपकेंद्र
ट) केन्द्रीय विद्यालय



भारी एवं परिष्कृत प्रयोगशाला परिसर

29,137 वर्ग मीटर के कुल निर्मित क्षेत्रफल वाला यह आधुनिक बहुमंजिला प्रयोगशाला भवन उन्नत अनुसंधान एवं नवाचार गतिविधियों को समर्थन देने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। इस परिसर में भारी प्रयोगशालाएँ, मॉड्यूलर प्रयोगशालाएँ, उत्कृष्टता केंद्र (सीओई) की प्रयोगशालाएँ, 96 संकाय कक्ष तथा संबंधित अनुसंधान एवं सहायक सुविधाएँ होंगी। भवन में आधुनिक प्रयोगशाला अवसंरचना, उपयोगिता सेवाएँ, एचवीएसी प्रणाली, अग्नि सुरक्षा व्यवस्था तथा लचीले अनुसंधान स्थल उपलब्ध कराने की योजना है, जिससे अंतर्विषयक अनुसंधान, उद्योग सहयोग और उच्चस्तरीय शैक्षणिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा।



बहु–सुविधा परिसर

3,560 वर्ग मीटर के कुल निर्मित क्षेत्रफल वाला यह जी+4 बहुउद्देशीय भवन शैक्षणिक, आवासीय एवं सम्मेलन संबंधी गतिविधियों के लिए विकसित किया जा रहा है। इसमें 1 बीएचके अपार्टमेंट, हॉल, हार्वर्ड शैली की कक्षाएँ, सम्मेलन सुविधाएँ, भोजन क्षेत्र तथा संबंधित सहायक स्थान शामिल हैं। भवन में 3 लिफ्ट, एचवीएसी प्रणाली तथा आधुनिक दृश्य–श्रव्य (एवी) प्रणालियाँ उपलब्ध होंगी, जिससे शैक्षणिक कार्यक्रमों, आवासीय उपयोग, बैठकों, सम्मेलनों तथा संस्थागत गतिविधियों के लिए सुविधाजनक और प्रौद्योगिकी–संपन्न वातावरण उपलब्ध हो सके।

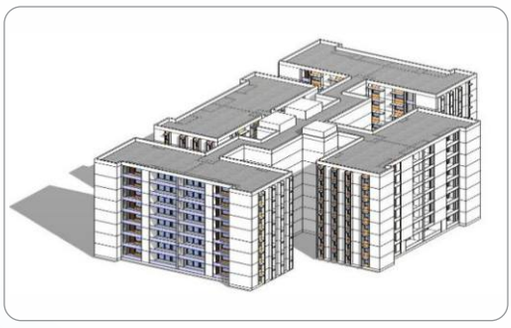

आवासीय परिसर

9,795 वर्ग मीटर के कुल निर्मित क्षेत्रफल वाला यह जी+7 आवासीय भवन संकाय सदस्यों एवं समूह–क के कर्मचारियों के लिए आवासीय सुविधा उपलब्ध कराने हेतु विकसित किया गया है। इस परिसर में 64 फ्लैटों के साथ आवश्यक आवासीय सुविधाएँ, लिफ्ट एवं पार्किंग की व्यवस्था है। भवन को परिसर के भीतर आरामदायक, सुरक्षित एवं सुविधाजनक आवासीय वातावरण प्रदान करने के उद्देश्य से तैयार किया गया है।

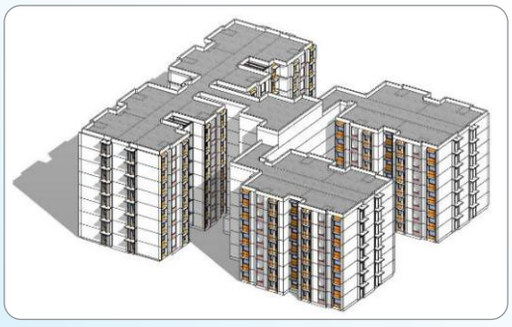

स्टूडियो अपार्टमेंट

11,000 वर्ग मीटर के कुल निर्मित क्षेत्रफल वाला यह जी+7 आवासीय भवन कर्मचारियों एवं शोधकर्ताओं के लिए सुव्यवस्थित और सुविधाजनक आवास उपलब्ध कराने हेतु विकसित किया गया है। इस परिसर में कुल 120 फ्लैट हैं, जिनमें 16 एक बीएचके तथा 104 दो बीएचके अपार्टमेंट शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, लिफ्ट, पार्किंग एवं अन्य आवश्यक आवासीय सुविधाएँ उपलब्ध हैं। इस परियोजना का उद्देश्य कुशल स्थान नियोजन और आधुनिक अवसंरचना के माध्यम से परिसर में विभिन्न आवासीय आवश्यकताओं को पूरा करना है।



छात्रावास (03 इकाइयाँ)

लगभग 15,453 वर्ग मीटर के कुल निर्मित क्षेत्रफल वाले तीन जी+6 छात्रावास भवन परिसर में विद्यार्थियों के लिए आधुनिक आवासीय सुविधाएँ उपलब्ध कराने हेतु विकसित किए गए हैं। प्रत्येक छात्रावास में दोहरी अधिभोग व्यवस्था वाले 375 कमरे हैं, जिनमें कुल 750 विद्यार्थी रह सकते हैं। इनमें भोजन कक्ष, मनोरंजन क्षेत्र, लिफ्ट, सौर जल तापन प्रणाली, आरओ जल सुविधा तथा सीसीटीवी निगरानी जैसी सुविधाएँ शामिल हैं। इन छात्रावासों को विद्यार्थियों के लिए सुरक्षित, आरामदायक एवं सभी आवश्यक सुविधाओं से युक्त आवासीय वातावरण प्रदान करने के उद्देश्य से तैयार किया गया है।



नए व्याख्यान कक्ष परिसर

13,459 वर्ग मीटर के कुल निर्मित क्षेत्रफल वाला यह आधुनिक बहुमंजिला शैक्षणिक परिसर बड़े स्तर पर शिक्षण एवं शैक्षणिक गतिविधियों को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से विकसित किया गया है। इसमें 100 से 600 विद्यार्थियों की क्षमता वाली कक्षाएँ तथा 600 से अधिक व्यक्तियों की क्षमता वाले संगोष्ठी कक्ष शामिल हैं। भवन में आधुनिक शिक्षण अवसंरचना एवं संबंधित सहायक सुविधाएँ उपलब्ध कराने की योजना है, जिससे व्याख्यान, संगोष्ठियों, सम्मेलनों, परीक्षाओं तथा अन्य शैक्षणिक कार्यक्रमों का सुचारु संचालन सुनिश्चित किया जा सके।

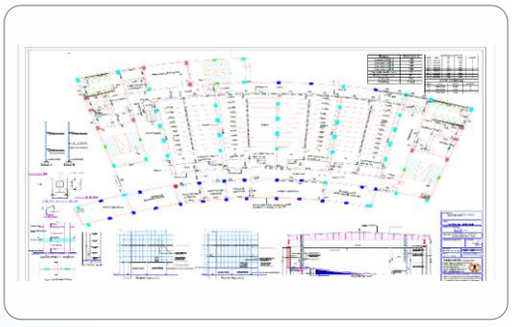

व्याख्यान कक्ष परिसर में 04 कक्षाएँ

1,098 वर्ग मीटर के कुल निर्मित क्षेत्रफल वाली यह शैक्षणिक सुविधा परिसर की शिक्षण क्षमता बढ़ाने के उद्देश्य से विकसित की गई है। इस परियोजना के अंतर्गत आधुनिक दृश्य–श्रव्य (एवी) सुविधाओं से युक्त 04 कक्षाएँ बनाई गई हैं। इनमें एचवीएसी प्रणाली, विद्युत बैकअप तथा अन्य आवश्यक शैक्षणिक अवसंरचनाएँ उपलब्ध हैं, जिससे व्याख्यान, ट्यूटोरियल, परीक्षाओं एवं अन्य शिक्षण गतिविधियों के लिए सुविधाजनक शैक्षणिक वातावरण सुनिश्चित किया जा सके।



एनसीसी मैदान का विकास

11,796 वर्ग मीटर क्षेत्रफल में विकसित यह एनसीसी प्रशिक्षण एवं आयोजन मैदान प्रशिक्षण गतिविधियों, परेड तथा संस्थागत कार्यक्रमों के संचालन के लिए बनाया गया है। परियोजना के अंतर्गत मैदान का विकास करने के साथ मंच, बैठने की व्यवस्था तथा शौचालय सुविधाओं का प्रावधान किया गया है, जिससे बाहरी गतिविधियों के लिए एक सुव्यवस्थित एवं सुविधायुक्त स्थान उपलब्ध हो सके।

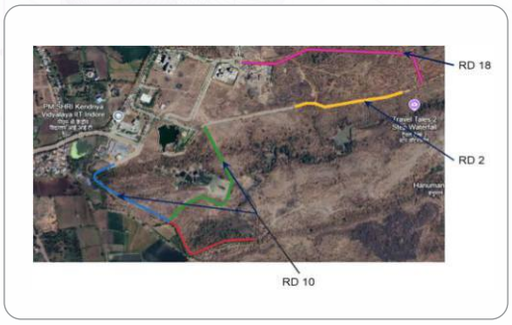

सड़क नेटवर्क का विकास

परिसर में संपर्क एवं आवागमन की सुविधा बेहतर बनाने के लिए लगभग 3.75 मीटर चौड़ाई वाली एकल–लेन की अनेक आंतरिक सड़कों का विकास किया जा रहा है। इस कार्य में घाटी क्षेत्रों एवं वन सीमा वाले क्षेत्रों जैसे चुनौतीपूर्ण भूभागों में सड़क निर्माण के साथ जल निकासी तथा अन्य संबंधित अवसंरचनात्मक कार्य शामिल हैं। इसका उद्देश्य परिसर में सुरक्षित एवं सुगम परिवहन संपर्क सुनिश्चित करना है।



विद्युत उपकेंद्र (ईएसएस–1, ईएसएस–3 एवं ईएसएस–8)

प्रत्येक 563 वर्ग मीटर के प्लिंथ क्षेत्रफल वाले नए विद्युत उपकेंद्र (ईएसएस–1, ईएसएस–3 एवं ईएसएस–8) परिसर के भवनों एवं अवसंरचना को विश्वसनीय विद्युत आपूर्ति उपलब्ध कराने के लिए विकसित किए जा रहे हैं। ये उपकेंद्र संस्थान के विद्युत वितरण नेटवर्क को सुदृढ़ करेंगे तथा निर्बाध विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करने में सहायक होंगे। इनमें ट्रांसफॉर्मर, उच्च एवं निम्न वोल्टेज पैनल, स्विचगियर प्रणाली तथा नियंत्रण कक्ष जैसी सुविधाएँ शामिल हैं।

इन उपकेंद्रों के डिज़ाइन में सुरक्षा संबंधी प्रावधानों, कुशल विद्युत प्रबंधन तथा भविष्य में विस्तार की आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखा गया है।



केन्द्रीय विद्यालय

5,931 वर्ग मीटर के प्लिंथ क्षेत्रफल तथा 3.6 मीटर की तल–से–तल ऊँचाई वाला यह जी+2 विद्यालय भवन आधुनिक शैक्षणिक अवसंरचना उपलब्ध कराने के उद्देश्य से विकसित किया गया है। इसमें कक्षाओं एवं अन्य आवश्यक शैक्षणिक सुविधाओं की व्यवस्था की गई है, जिससे विद्यार्थियों और कर्मचारियों के लिए सुरक्षित, सुव्यवस्थित एवं अनुकूल शिक्षण वातावरण उपलब्ध हो सके।

संकाय कक्षों का निर्माण – लाइट गेज स्टील फ्रेम्ड स्ट्रक्चर (एलजीएसएफ) प्रौद्योगिकी

परिसर की मौजूदा अवसंरचना का बेहतर उपयोग करने के निरंतर प्रयासों के अंतर्गत 325 वर्ग मीटर क्षेत्रफल में संकाय कक्षों के निर्माण की पहल की गई है।

संस्थान अपनी आधारभूत संरचना विकास गतिविधियों में नई निर्माण प्रौद्योगिकियों को अपनाने की संभावनाओं का पता लगा रहा है। इसी क्रम में बीएमटीपीसी द्वारा अनुमोदित लाइट गेज स्टील फ्रेम (एलजीएसएफ) प्रौद्योगिकी को अपनाया गया है, जो आईआईटी इंदौर के लिए नवाचारी निर्माण पद्धतियों की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

इस परियोजना की संकल्पना एवं क्रियान्वयन संस्थान की आंतरिक डिज़ाइन एवं इंजीनियरिंग टीम द्वारा किया गया है।

इस पहल में परिसर के मौजूदा भवनों के ऊपर तीव्र गति से हल्की एवं सतत निर्माण पद्धति अपनाने की व्यापक संभावनाएँ हैं। यह उभरती हुई प्रौद्योगिकियों के प्रयोग तथा नवाचारी एवं कुशल अवसंरचनात्मक समाधान विकसित करने के लिए संस्थान की आंतरिक क्षमता को सुदृढ़ करने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।



निर्माणाधीन – एलजीएसएफ संकाय कक्ष

आईआईटी इंदौर में आरईएससीओ मॉडल के अंतर्गत 1000 किलोवाट सौर ऊर्जा संयंत्र की स्थापना

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर ने भारत सरकार के नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के अंतर्गत कार्यरत सोलर एनर्जी कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया के माध्यम से आरईएससीओ (नवीकरणीय ऊर्जा सेवा कंपनी) मॉडल के अंतर्गत भूमि–आधारित 1000 किलोवाट क्षमता के सौर ऊर्जा संयंत्र की स्थापना की एक महत्वपूर्ण पहल की है।

सौर ऊर्जा संयंत्र परियोजना का भूमिपूजन समारोह 30 मार्च 2026 को आईआईटी इंदौर के शासी मंडल के अध्यक्ष डॉ. के. शिवन द्वारा संपन्न किया गया।

इस परियोजना के लिए 25 वर्षों की अवधि हेतु रु. 3.04 प्रति किलोवाट–घंटा की दर निर्धारित की गई है, जिससे संस्थान को दीर्घकालिक लागत स्थिरता तथा सतत ऊर्जा आपूर्ति सुनिश्चित करने में सहायता मिलेगी। इस सौर ऊर्जा संयंत्र की स्थापना परिसर में लगभग 3.15 एकड़ भूमि पर प्रस्तावित है।

संयंत्र के चालू होने के बाद बिजली व्यय में प्रतिवर्ष लगभग रु. 75 लाख की बचत होने की उम्मीद है। वित्तीय लाभों के अतिरिक्त, यह परियोजना कार्बन उत्सर्जन में कमी लाने तथा परिसर में स्वच्छ ऊर्जा के उपयोग को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान देगी।

यह पहल राष्ट्रीय नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्यों के अनुरूप पर्यावरणीय स्थिरता, ऊर्जा दक्षता तथा हरित प्रौद्योगिकियों को अपनाने के प्रति आईआईटी इंदौर की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाती है।





दैनिक भास्कर इंदौर 31-03-2026

शिलान्यास • इसरो के पूर्व चीफ डॉ. के. सिवन ने किया लोकार्पण, 26.54 करोड़ की लागत से बनेगा नया भवन

आईआईटी में 1 मेगावाट का सोलर पार्क और स्वास्थ्य एक्सआर लैब शुरू, तकनीकी परिदृश्य बदलने में सहायक

24 वर्चुअल रूम के केवी में होगी हाईटेक सुविधाएं

ग्लोबल तकनीकों से सुसज्जित हैं

1000 किलोवाट क्षमता के सौर ऊर्जा संयंत्र का भूमिपूजन समारोह

चरण III (बी) के निर्माण कार्य

संस्थान की शैक्षणिक एवं अनुसंधान गतिविधियों के विस्तार के कारण अतिरिक्त शैक्षणिक एवं सहायक अवसंरचना का निर्माण आवश्यक हो गया है। इसी के अनुरूप, संस्थान ने चरण III (बी) के अंतर्गत विभिन्न निर्माण कार्यों की योजना बनाई है। निर्माण कार्यों हेतु रु. 524.57 करोड़ की लागत वाले प्रस्ताव को उच्च शिक्षा वित्तपोषण एजेंसी (हेफ़ा) द्वारा स्वीकृति प्रदान की गई है। वर्तमान में ये कार्य नियोजन के चरण में हैं। इनका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है:–

क्र.सं.	*कार्य का नाम*	*क्षेत्रफल (वर्ग मीटर में)*
1	शैक्षणिक पॉड	40,000
2	औद्योगिक अनुसंधान पार्क	15,000
3	औद्योगिक डिज़ाइन भवन	1,000
4	व्याख्यान कक्ष परिसर	6,500
5	विद्यार्थी गतिविधि केंद्र	4,000
6	आगंतुक अतिथिगृह	6,500
7	आवासीय परिसर	14,300
8	स्टूडियो अपार्टमेंट	9,270

सिविल अनुरक्षण के अंतर्गत अन्य कार्य





कनेक्टिंग ब्रिज पर आवरण एवं पीओडी भवन की रेलिंग का कार्य

छात्र कार्य

आईआईटी इंदौर का छात्र कार्य कार्यालय संस्थान और विद्यार्थियों के बीच औपचारिक प्रशासनिक संपर्क–सूत्र के रूप में कार्य करता है। यह छात्र जिमखाना के माध्यम से विद्यार्थियों द्वारा संचालित पहलों एवं कार्यक्रमों की देखरेख और उनमें सहयोग प्रदान करता है तथा संस्थान के मूल्यों के अनुरूप उनका सुचारु समन्वय सुनिश्चित करता है। इस कार्यालय का नेतृत्व निम्नलिखित अधिकारी एवं कर्मचारी करते हैं:

- प्रो. आमोद सी. उमरीकर – अधिष्ठाता, छात्र कार्य (डीओएसए)
- डॉ. जयप्रकाश मुरुगेसन – सह अधिष्ठाता, छात्र कार्य (एडीओएसए–1)
- डॉ. अभिजीत जोशी – सह अधिष्ठाता, छात्र कार्य (एडीओएसए–2)
- कमांडर सुनील कुमार (सेवानिवृत्त) – अधिकारी, छात्र कार्य
- श्री सुरेंद्र सिंह सुल्या – अधिष्ठाता, छात्र कार्य के निजी सहायक
- श्री अमन श्रीवास्तव – कनिष्ठ सहायक

परिसर में छात्र जीवन

संस्थान में छात्र जीवन जीवंत, गतिशील तथा शैक्षणिक उत्कृष्टता और व्यक्तिगत विकास को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से सुव्यवस्थित है। यहाँ विद्यार्थियों को ऐसा समग्र वातावरण मिलता है, जो अध्ययन के साथ–साथ अन्वेषण एवं अनुभव प्राप्त करने के अवसर भी प्रदान करता है।

क्लब एवं प्रकोष्ठः विभिन्न सुव्यवस्थित पाठ्येतर गतिविधियाँ विद्यार्थियों की रचनात्मकता, नेतृत्व क्षमता और टीम भावना को प्रोत्साहित करती हैं।

व्यावहारिक अनुभवः बी.टेक. परियोजना कार्य एवं औद्योगिक भ्रमण विद्यार्थियों को व्यावहारिक अनुभव प्रदान करते हैं तथा सैद्धांतिक ज्ञान को वास्तविक परिस्थितियों में लागू करने का अवसर देते हैं।

उद्योग एवं शिक्षा जगत के साथ सहभागिताः सुदृढ़ सहयोगात्मक संबंध विद्यार्थियों को व्यावसायिक चुनौतियों का आत्मविश्वास के साथ सामना करने के लिए तैयार करते हैं।



व्यक्तिगत मार्गदर्शन एवं सहयोगः शैक्षणिक परामर्श और मार्गदर्शन के माध्यम से प्रत्येक विद्यार्थी को सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक सहयोग एवं दिशा प्रदान की जाती है।

लाइव (जीवन कौशल पहल एवं मूल्य शिक्षा): आईआईटी इंदौर में लाइव एक विशिष्ट समिति है, जो विद्यार्थियों के कल्याण पर ध्यान केंद्रित करने के लिए शैक्षणिक क्षेत्र, छात्र कार्य, स्वास्थ्य केंद्र तथा परामर्श केंद्र को एक साथ जोड़ती है। सभी संबंधित पक्षों को एक मंच पर लाकर यह सुनिश्चित किया जाता है कि मानसिक स्वास्थ्य, व्यक्तिगत चिंताओं तथा शैक्षणिक चुनौतियों का सामूहिक संवेदनशीलता एवं देखभाल के साथ समाधान किया जाए। भारत में अपनी तरह का पहला यह एकीकृत मॉडल विद्यार्थियों की शैक्षणिक उत्कृष्टता के साथ–साथ उनके समग्र विकास एवं विपरीत परिस्थितियों से उबरने की क्षमता को विकसित करने के प्रति आईआईटी इंदौर की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

जेनेसिस (छात्र अभिमुखीकरण एवं सहयोग के माध्यम से नवप्रवेशित विद्यार्थियों का मार्गदर्शन): जेनेसिस आईआईटी इंदौर का प्रमुख ओरिएंटेशन कार्यक्रम है, जिसे प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों को संस्थान की शैक्षणिक एवं संस्थागत व्यवस्था से सहज रूप से परिचित कराने के लिए तैयार किया गया है। इस अवधि में कक्षाएँ आयोजित नहीं की जातीं, ताकि विद्यार्थी शैक्षणिक परिचय, मार्गदर्शन, स्वास्थ्य एवं कल्याण सत्रों तथा संस्थान की कार्यसंस्कृति को समझने पर ध्यान केंद्रित कर सकें।

इस कार्यक्रम में आर्मी एयरो नोडल सेंटर, आर्मी मार्क्समैनशिप यूनिट, इन्फैंट्री संग्रहालय तथा कैडेट प्रशिक्षण केंद्र जैसे स्थानों के सुव्यवस्थित भ्रमण भी शामिल हैं। अनुभव, अनुशासन और प्रारंभिक सहभागिता के समन्वय से जेनेसिस विद्यार्थियों में संस्थान के प्रति अपनत्व की भावना विकसित करता है तथा उन्हें शैक्षणिक एवं व्यक्तिगत सफलता के लिए तैयार करता है।

छात्र जिमखानाः छात्र जिमखाना आईआईटी इंदौर का केंद्रीय छात्र निकाय है, जो छात्र गतिविधियों एवं पहलों के समन्वय के लिए उत्तरदायी है। यह पाँच प्रमुख परिषदों में संगठित है:

- ***विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषदः*** 15 क्लबों से युक्त यह परिषद आईआईटीआईएसओसी, कार्यशालाओं एवं राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं जैसी पहलों के माध्यम से तकनीकी उत्कृष्टता को बढ़ावा देती है तथा नवाचार एवं व्यावहारिक शिक्षण को प्रोत्साहित करती है।
- ***सांस्कृतिक परिषदः*** 16 क्लबों के माध्यम से यह परिषद उत्सवों, प्रस्तुतियों एवं रचनात्मक गतिविधियों द्वारा परिसर के जीवन को समृद्ध बनाती है तथा विविधता एवं कलात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करती है।
- ***खेल परिषदः*** यह परिषद इंटर आईआईटी एक्वेटिक्स एवं स्पोर्ट्स मीट जैसी प्रतिष्ठित प्रतियोगिताओं के साथ–साथ लक्ष्य जैसे प्रमुख खेल महोत्सवों का आयोजन करती है। इसके माध्यम से खेल भावना, टीमवर्क और जीवंत खेल संस्कृति को बढ़ावा दिया जाता है।
- ***परामर्श, संपर्क एवं पूर्व छात्र परिषदः*** यह परिषद विद्यार्थियों के कल्याण, पूर्व छात्रों की सहभागिता तथा संपर्क गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करती है और सामुदायिक संबंधों को सुदृढ़ बनाती है।
- ***अन्य परिषदः*** छात्र जिमखाना की विभिन्न परिषदें मिलकर इसे नेतृत्व क्षमता, रचनात्मकता तथा विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए एक गतिशील मंच बनाती हैं।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद



वर्ष 2025–26 के दौरान विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (एसएनटी परिषद) ने प्रभावशाली पहलों, संस्थागत सुधारों, क्लबों के विकास तथा राष्ट्रीय स्तर की उपलब्धियों के माध्यम से आईआईटी इंदौर के तकनीकी परिवेश को सुदृढ़ किया।

परिषद की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि इंटर आईआईटी टेक मीट 14.0 में आईआईटी इंदौर द्वारा समग्र रूप से द्वितीय उपविजेता स्थान प्राप्त करना रही। 2,915 अंकों, अनेक पदकों तथा शून्य दंड के साथ यह इस प्रतियोगिता में संस्थान का पहला पोडियम स्थान था।

अपने क्लबों, कार्यशालाओं, प्रतियोगिताओं, प्रदर्शनियों तथा सहयोगात्मक परियोजनाओं के माध्यम से परिषद ने परिसर में नवाचार, अंतर्विषयक शिक्षण और व्यावहारिक तकनीकी अनुभव को प्रोत्साहित किया।

वर्ष की प्रमुख उपलब्धियाँ निम्नलिखित हैं:

- इंटर आईआईटी टेक मीट 14.0 में समग्र रूप से द्वितीय उपविजेता स्थान प्राप्त किया, जो आईआईटी इंदौर की इस प्रतियोगिता में पहली पोडियम उपलब्धि है।
- जेनेसिस 2025 को एकीकृत सॉफ्टवेयरदृहार्डवेयर प्रारूप में पुनर्गठित किया गया, जिससे विद्यार्थियों की सहभागिता और व्यावहारिक अनुभव के अवसर बढ़े।
- इन्फिनिट्रिक्सः द मैथमेटिक्स क्लब को छात्र जिमखाना के अंतर्गत एक स्वतंत्र क्लब के रूप में स्थापित किया गया।
- सीएई क्लब को रॉकेट्री टीम (टीम व्योमन) के रूप में विकसित किया गया, जिससे बहुविषयक एयरोस्पेस एवं प्रणोदन परियोजनाओं को बढ़ावा मिला।
- उच्च–प्रदर्शन संगणना तथा विभिन्न क्लबों के तकनीकी कार्यों में सहयोग हेतु एनवीआईडीआईए आरटीएक्स ए6000 (48 जीबी) जीपीयू खरीदा गया।
- पारदर्शिता एवं जवाबदेही बढ़ाने के लिए सदस्यता और अभिमुखीकरण की समीक्षा हेतु एक सुव्यवस्थित तंत्र प्रारंभ किया गया।
- भूमिकाओं के बेहतर वितरण तथा परिषद के सुचारु संचालन के लिए प्रशासनिक एवं नीतिगत सुधार किए गए।
- स्वतंत्रता दिवस टेक एक्सपो, कार्यशालाओं, तकनीकी व्याख्यानों तथा विभिन्न क्षेत्रों में सहयोगात्मक प्रतियोगिताओं जैसी गतिविधियों का आयोजन किया गया।

सॉफ्टवेयर, रोबोटिक्स, इलेक्ट्रॉनिक्स, खगोल विज्ञान, गणित, ऑटोमोटिव इंजीनियरिंग और एयरोस्पेस के क्षेत्रों में सक्रिय 15 क्लबों के साथ एसएनटी परिषद ने आईआईटी इंदौर में तकनीकी उत्कृष्टता एवं नवाचार को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शैक्षणिक परिषदः शैक्षणिक परिषद ने संस्थान में छात्र सहभागिता, प्रतिनिधित्व और शैक्षणिक समृद्धि को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से कई पहलें कीं। संभावित बी.टेक. विद्यार्थियों के लिए एक संवादात्मक जेईई ओपन हाउस सत्र आयोजित किया गया, जिसका संचालन कनिष्ठ एवं वरिष्ठ सीनेटरों तथा महासचिवों ने किया। इसका उद्देश्य नवप्रवेशी विद्यार्थियों को शैक्षणिक संरचना एवं छात्र शासन व्यवस्था से परिचित कराना था।



बी.टेक. द्वितीय वर्ष के कक्षा प्रतिनिधियों के चुनाव तथा प्रथम वर्ष के प्रतिनिधियों के लिए सुव्यवस्थित अभिमुखीकरण प्रक्रिया के माध्यम से सक्रिय छात्र सहभागिता सुनिश्चित की गई और नेतृत्व विकास को प्रोत्साहित किया गया। इसके अतिरिक्त, सभी विभागों में विभागीय अभिमुखीकरण सत्र आयोजित किए गए, जिनमें नवप्रवेशी विद्यार्थियों को शैक्षणिक अपेक्षाओं, पाठ्यक्रम संरचना तथा संबंधित विषयों में उपलब्ध अवसरों की विस्तृत जानकारी दी गई। परिषद ने वर्ष के दौरान कई प्रमुख शैक्षणिक एवं बौद्धिक आयोजनों के संचालन में भी सहयोग प्रदान किया।

अनुसंधान एवं औद्योगिक सम्मेलन (आरआईसी) 2026 के अंतर्गत अनुसंधान प्रस्तुतियों, कार्यशालाओं, नवाचार प्रदर्शनियों, हैकाथॉन तथा विशेषज्ञ पैनल चर्चाओं के माध्यम से शिक्षा जगत, उद्योग एवं रक्षा क्षेत्र के प्रतिनिधियों को एक मंच पर लाया गया। इससे अंतर्विषयक शिक्षण को बढ़ावा मिला तथा उद्योग जगत से विद्यार्थियों का जुड़ाव सुदृढ़ हुआ।



एमयूएन 9.0: राजनैतिक कौशल एवं नीतिगत चर्चाओं पर केंद्रित तीन दिवसीय सम्मेलन में प्रतिनिधियों को वैश्विक मुद्दों पर वाद–विवाद, वार्ता तथा प्रस्ताव तैयार करने का मंच प्रदान किया गया। इन सभी पहलों ने संस्थान की अनुसंधान संस्कृति को सुदृढ़ करने, आलोचनात्मक चिंतन को प्रोत्साहित करने तथा विद्यार्थियों की शैक्षणिक, व्यावसायिक एवं नेतृत्व क्षमताओं को विकसित करने में योगदान दिया।

खेल परिषद



आईआईटी इंदौर की खेल परिषद ने विश्वस्तरीय खेल सुविधाओं एवं विशेषज्ञ प्रशिक्षकों के माध्यम से परिसर में जीवंत खेल संस्कृति विकसित की है, जिससे विद्यार्थियों को राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के अवसर मिले हैं।

आईआईटी हैदराबाद में आयोजित इंटर आईआईटी स्पोर्ट्स मीट में संस्थान ने बालिका बैडमिंटन एवं वॉलीबॉल में चौथा स्थान प्राप्त किया, क्रिकेट एवं फुटबॉल में शीर्ष आठ टीमों में जगह बनाई तथा शतरंज में संयुक्त रूप से चौथा स्थान हासिल किया। ये उपलब्धियाँ संस्थान के खिलाड़ियों की क्षमता, समर्पण एवं खेल भावना को दर्शाती हैं।

परामर्श, संपर्क एवं पूर्व छात्र परिषद



ई–समिट '25: ई–समिट 2025 में आईआईटी इंदौर में दो दिवसीय आयोजन के दौरान स्टार्टअप, निवेशक, उद्योग जगत के अग्रणी व्यक्तियों एवं विद्यार्थियों को नवाचार और उद्यमिता के लिए एक मंच पर लाया गया। इस समिट में स्टार्टअप एक्सपो, निवेशकों के समक्ष व्यावसायिक विचार प्रस्तुत करने हेतु पिचएक्स सत्र तथा बोर्डरूम, केस क्रॉनिकल्स, प्रोडक्ट ब्रेकडाउन, डिज़ाइन ओडिसी और डेवक्राफ्ट जैसी प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। इसके प्रमुख आकर्षणों में इनोवेटर्स अनप्लग्ड और विज़नरी वॉल्ट शामिल थे, जिनमें प्रतिष्ठित उद्यमियों एवं उद्योग जगत के अग्रणी व्यक्तियों ने स्टार्टअप, नेतृत्व और नवाचार से संबंधित अपने अनुभव साझा किए।



सेरेनिटी: विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर 11 अक्टूबर को मानसिक स्वास्थ्य एवं कल्याण को प्रोत्साहित करने के लिए सेरेनिटी कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करने हेतु संवादात्मक गतिविधियाँ आयोजित की गईं। विद्यार्थियों द्वारा संचालित खाद्य एवं खेल स्टॉलों के लिए आवश्यक व्यवस्थाएँ की गईं, जिससे उन्हें उद्यमिता के अवसर भी मिले। कार्यक्रम में पेशेवर परामर्शदाताओं के साथ आस्क अस एनीथिंग सत्र आयोजित किया गया। इस आयोजन ने मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने, रचनात्मकता एवं टीम भावना को प्रोत्साहित करने तथा परिसर में सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।



टेडएक्स: टेडएक्सआईआईटीइंदौर 2026 का आयोजन "द अनचार्टेड लैप" विषय के अंतर्गत किया गया। इस कार्यक्रम में बौद्धिक विमर्श के साथ सामुदायिक सहभागिता को भी प्रोत्साहित किया गया। टेडएक्स कार्निवल एवं फूड फेस्ट में संवादात्मक गतिविधियों के माध्यम से 1,500 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसके पश्चात अनिल खोसला, मधुकर स्वयंभू, किशोर तायद और यश आर. मिश्रा सहित प्रतिष्ठित नेतृत्वकर्ताओं, उद्यमियों, शोधकर्ताओं एवं रचनाकारों ने विचारोत्तेजक व्याख्यान दिए। कार्यक्रम का समापन ज़िद्दी बैंड की संगीतमय प्रस्तुति के साथ हुआ।



पैन आईआईटी वेलबीइंग समिट 2026: आईआईटी गुवाहाटी में आयोजित पैन आईआईटी वेलबीइंग समिट 2026 में आईआईटी इंदौर का प्रतिनिधित्व किया गया। इस दौरान शैक्षणिक तनाव, अवसाद की रोकथाम तथा विद्यार्थियों के कल्याण से संबंधित पहलों पर चर्चा हुई और विभिन्न आईआईटी के प्रतिनिधियों के साथ विचारों का आदान–प्रदान किया गया। इस सहभागिता से संस्थागत मानसिक स्वास्थ्य संबंधी कार्यप्रणालियों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई। साथ ही, संस्थान में परामर्श संबंधी पहलों को सुदृढ़ करने तथा अधिक स्वस्थ एवं सहयोगपूर्ण परिसर वातावरण विकसित करने के लिए उपयोगी सुझाव प्राप्त हुए।



इंजेनियम 3.0: आईआईटी इंदौर का प्रमुख वार्षिक तकनीकी–सांस्कृतिक महोत्सव इंजेनियम 3.0 13 से 15 मार्च 2026 तक सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। "क्रोनोवर्स दृ पास्ट. प्रेज़ेंट. फ्यूचर." विषय पर आधारित इस महोत्सव में सांस्कृतिक विविधता और तकनीकी अन्वेषण का अनूठा समन्वय देखने को मिला।



महोत्सव का शुभारंभ दिवस 0 पर स्पिक मैके के अंतर्गत पंडित पार्थो सारोथी की भावपूर्ण सरोद प्रस्तुति से हुआ, जिसने आगामी आयोजनों के लिए संगीतमय वातावरण तैयार किया। इसके बाद काव्यांजलि का आयोजन हुआ, जिसमें आठ प्रतिष्ठित कवियों ने अपनी प्रस्तुतियों के माध्यम से शब्दों एवं अभिव्यक्ति की शक्ति का उत्सव मनाया।

अगले दो दिनों में इंजेनियम 3.0 के अंतर्गत 26 तकनीकी एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं, जिनमें देशभर से विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। तकनीकी प्रदर्शनी प्रमुख आकर्षण रही, जिसमें ड्रोन सॉकर जैसी संवादात्मक गतिविधियों के माध्यम से प्रतिभागियों को नवाचार एवं उभरती प्रौद्योगिकियों का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हुआ। एमसीटीई महू के सहयोग से आयोजित रक्षा प्रदर्शनी ने आधुनिक सैन्य प्रौद्योगिकियों की जानकारी प्रदान की तथा उभरते करियर अवसरों पर चर्चा के नए मार्ग खोले।

वड्र्स ऑफ विज़डम सत्रों के अंतर्गत डॉ. चेतन सिंह सोलंकी और आचार्य प्रशांत ने स्थिरता, जीवन के उद्देश्य तथा जीवन–दृष्टि से संबंधित प्रेरक एवं विचारोत्तेजक विचार साझा किए। 14 मार्च को याकोबेह की आकर्षक फायर एवं फ्लो आर्ट प्रस्तुति ने प्रौद्योगिकी और कला के समन्वय को जीवंत किया। इसके बाद इल्यूमिनाटी डांस क्रू ने शानदार लेज़र प्रदर्शन एवं अपने विशिष्ट ट्रॉन एक्ट के माध्यम से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। भविष्यवादी दृश्यों और ऊर्जावान नृत्य संयोजन ने प्रस्तुति को विशेष बना दिया। उत्सव में हास्य का रंग भरते हुए आशीष सोलंकी ने लाइव स्टैंड–अप प्रस्तुति दी, जिसे दर्शकों ने खूब सराहा।

महोत्सव का समापन 250 ड्रोनों के समन्वित लाइट शो के साथ हुआ। आकाश में निर्मित मनमोहक आकृतियों ने क्रोनोवर्स की अवधारणा को साकार करते हुए संस्थान की जीवंत एवं गतिशील भावना को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया।





अन्य प्रमुख गतिविधियाँ

छात्रावास दिवस समारोह

इस वर्ष छात्रावास दिवस समारोह में चौंपियनशिप प्रारूप की शुरुआत की गई, जिससे पूरे परिसर में उत्साह का वातावरण बना। विभिन्न छात्रावासों की टीमों ने अनेक प्रतियोगिताओं में अंक अर्जित किए। बैंड प्रतियोगिता, एकल गायन, कविता, चित्रकला सहित विभिन्न गतिविधियों में विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। विभिन्न छात्रावासों के व्यक्तिगत प्रतिभागियों एवं संयुक्त टीमों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लेकर आपसी सौहार्द को बढ़ावा दिया। रस्साकशी, आर्म रेसलिंग और पुश–अप जैसी खेल प्रतियोगिताओं ने आयोजन में ऊर्जा एवं स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का संचार किया। अंक–आधारित प्रारूप ने पूरे आयोजन के दौरान रोमांच बनाए रखा और इसे रचनात्मक, उत्साहपूर्ण एवं कड़ी प्रतिस्पर्धा वाला समारोह बनाया।

स्थापना दिवस समारोह

संस्थान का 17वाँ स्थापना दिवस डॉ. शरद कुमार सराफ, अध्यक्ष, शासी मंडल, आईआईटी जम्मू तथा श्री संकेत चतुर्वेदी, मुख्य कार्यकारी अधिकारी (एमआईजी कॉम्प्लेक्स), हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड, नासिक की गरिमामयी उपस्थिति में मनाया गया।

सांस्कृतिक उत्कृष्टता – इंटर आईआईटी प्रतियोगिताओं में उपलब्धियाँ

- फैशन क्लब 'ड्रेप्स' (तृतीय स्थान): आईआईटी कानपुर में आयोजित इंटर आईआईटी सांस्कृतिक मीट 2025 में राहुल, धार्वी, निमाई, उबैद, लेखराज, अक्षत, अभिषेक, आदर्श, कीर्तन, लिसा, श्रेया, गोविंद, अंशिका, हर्षिता, अभिमन्यु, तान्या, सुहानी, ध्रुव और आकांक्षा ने शानदार प्रदर्शन करते हुए अपने प्रथम प्रयास में समग्र रूप से तृतीय स्थान प्राप्त किया।
- विज़ुअलाइज़र ला रियलिते (तृतीय स्थान): प्रनीत, मानन, हेमंत, श्रेया लहाने, मयंक बिसारिया, रोहन, पार्थ, निधि मरस्कोले, विशारद, आयुष, अर्नव और तन्मय ने डिजिटल कला एवं एनीमेशन कौशल का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।
- स्ट्रीट फोटोग्राफी (पाँचवाँ स्थान): काव्या पटेल, उमंग दोसी, ऋषि राठौर, अतुल्य कुमार, तीर्थ गोहिल और हर्ष पाठक ने रचनात्मक छायाचित्रों एवं प्रभावशाली दृश्यात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से पाँचवाँ स्थान प्राप्त किया।
- ऑनलाइन फिल्म निर्माण (छठा स्थान): विश्वजीत, प्रियाश, सार्थ, मित्तल, सुहानी, देवांशी कवलानी, अश्मिता, संचित गोयल, संचित भारती, साक्षी, राइमा, मानव, यश तिवारी, हेतल सराफ, लावण्या और अंशुल विजयवर्गीय ने प्रभावशाली फिल्म निर्माण प्रस्तुति के साथ छठा स्थान प्राप्त किया।
- स्ट्रीट प्ले (सातवाँ स्थान): मपांश फोगाट, जय धुर्वे, अपूर्व, पार्ल, कनक, वैदेही, अर्नव देशपांडे, नैन्सी, दक्ष, सोहिल डांगी, सूर्या, वंश, प्रीतिश, शिवकेश, भूपेश, फिया, ऋषिका, कालिया, रुद्रनील, वरुण, प्रणव, मंदार, तोशल, अमन, मोहित, आर्यन, सार्थक, हेनिल और कनिका ने सामाजिक सरोकारों पर आधारित प्रभावशाली प्रस्तुति देकर सातवाँ स्थान प्राप्त किया।

कल्याणकारी गतिविधियाँ

सामुदायिक भावना एवं सामाजिक उत्तरदायित्व का परिचय देते हुए, छात्र कार्य अनुभाग ने वर्षभर अनेक प्रभावशाली कल्याणकारी गतिविधियाँ आयोजित कीं।

रक्तदान शिविर: संस्थान के 17वें स्थापना दिवस पर आयोजित रक्तदान शिविर में 432 रक्तदाताओं ने स्वेच्छा से रक्तदान कर जीवन बचाने के इस पुनीत कार्य में योगदान दिया।

वस्त्र दान अभियान: अवाना क्लब द्वारा परिसरव्यापी वस्त्र एवं स्टेशनरी दान अभियान दो चरणों में आयोजित किया गयाकृ10 से 25 अप्रैल तथा 10 से 13 मई 2026 तक। इस पहल के माध्यम से जरूरतमंदों को सहायता प्रदान की गई। पूरे परिसर के समुदाय ने इसमें योगदान दिया तथा एकत्रित सामग्री को सुविचारित ढंग से वंचित वर्गों तक पहुँचाया गया। करुणा को सक्रिय प्रयासों में बदलने वाला यह अभियान सामूहिक सद्भावना की शक्ति का उदाहरण बना।

दीपावली संपर्क पहल: विद्यार्थियों ने परिवहन कर्मचारियों के साथ मिठाइयाँ एवं पैक किए गए खाद्य पदार्थ साझा कर दीपावली मनाई। इस पहल ने परिसर में कृतज्ञता, समावेशिता एवं प्रसन्नता की भावना को बढ़ावा दिया।

विद्यालय सहभागिता पहल: अवाना टीम ने सिमरोल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं कन्याशाला में कक्षा 4 से 12 तक के विद्यार्थियों के लिए संवादात्मक शैक्षणिक सत्र आयोजित कर शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसके अतिरिक्त, टीम संस्थान द्वारा गोद लिए गए गजिंदा स्थित शासकीय विद्यालय का नियमित भ्रमण भी करती है।

स्वच्छता अभियान: अवाना क्लब ने 11 जनवरी 2026 को भेरू घाट में स्वच्छता अभियान आयोजित किया। इस पहल ने पर्यावरणीय स्थिरता एवं सामुदायिक कल्याण के प्रति क्लब की प्रतिबद्धता को दर्शाया। पर्यावरण संरक्षण में युवाओं की सहभागिता बढ़ाने के उद्देश्य से यह अभियान एमआईटी पुणे के 'गो ग्रीन' समूह के विद्यार्थियों के सहयोग से संचालित किया गया।













करियर उन्नयन एवं मार्गदर्शन केंद्र



आईआईटी इंदौर का प्रशिक्षण एवं नियोजन प्रकोष्ठ (टीपीसी) वर्ष 2026 में औपचारिक रूप से विकसित होकर करियर उन्नयन एवं मार्गदर्शन केंद्र (सीएएमसी) बन गया है। यह केंद्र अग्रणी बहुराष्ट्रीय कंपनियों, अनुसंधान संस्थानों तथा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (पीएसयू) के साथ सुदृढ़ संबंध स्थापित करके विद्यार्थियों के लिए उत्कृष्ट करियर अवसर उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। परिसर में प्लेसमेंट गतिविधियों के केंद्रीय समन्वय निकाय के रूप में कार्य करते हुए, यह केंद्र नियोक्ताओं एवं विद्यार्थियों दोनों के लिए भर्ती प्रक्रिया को सुचारु एवं प्रभावी बनाता है।

संकाय सदस्यों, कर्मचारियों तथा उत्साही विद्यार्थी कार्यबल की समर्पित टीम के साथ, सीएएमसी पूर्णकालिक नियुक्तियों एवं इंटर्नशिप के अवसर उपलब्ध कराने के लिए प्रतिष्ठित भारतीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ सक्रिय रूप से संपर्क करता है। यह सहयोगात्मक व्यवस्था पूरे वर्ष प्लेसमेंट संबंधी गतिविधियों के सुचारु संचालन को सुनिश्चित करती है।

प्लेसमेंट सत्र का विवरण

शैक्षणिक सत्र 2025–26 के लिए प्लेसमेंट प्रक्रिया मिश्रित प्रारूप में आयोजित की गई। पूर्णकालिक भर्ती प्रक्रिया अक्टूबर 2025 में प्रारंभ हुई और जून 2026 में समाप्त होने वाली थी। इंटर्नशिप सत्र अगस्त 2025 में प्रारंभ होकर दिसंबर 2025 तक चला।

प्रमुख उपलब्धियाँ

- वर्ष 2025–26 के प्लेसमेंट सत्र के दौरान स्नातक होने वाले विद्यार्थियों के प्लेसमेंट परिणामों ने एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। बी. टेक. विद्यार्थियों का प्लेसमेंट प्रतिशत 93 से अधिक रहा, जबकि रिपोर्ट तैयार किए जाने के समय स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए प्लेसमेंट प्रक्रिया जारी थी।
- वर्ष की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि यह रही कि संस्थान के इतिहास में पहली बार 11 विद्यार्थियों को रु 1 करोड़ प्रतिवर्ष से अधिक के वेतन पैकेज वाले अंतरराष्ट्रीय नियुक्ति प्रस्ताव प्राप्त हुए। कैंपस भर्ती कार्यक्रम 2025–26 में सॉफ्टवेयर, परामर्श, बैंकिंग एवं वित्त, ऑटोमोटिव, सेमीकंडक्टर, कोर इंजीनियरिंग, ऊर्जा तथा तेल एवं गैस सहित विभिन्न क्षेत्रों की 150 से अधिक अग्रणी बहुराष्ट्रीय कंपनियों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों तथा अनुसंधान संगठनों ने भाग लिया।
- इंटर्नशिप सत्र में भी उत्साहजनक परिणाम प्राप्त हुए। वर्ष 2027 में स्नातक होने वाले बैच के 175 से अधिक विद्यार्थियों ने प्रतिष्ठित संगठनों में सवेतन ग्रीष्मकालीन इंटर्नशिप प्राप्त की। ये उपलब्धियाँ विद्यार्थियों की गुणवत्ता, प्रतिभा एवं व्यावसायिक तैयारी के प्रति उद्योग जगत के बढ़ते विश्वास को दर्शाती हैं।

छात्र प्लेसमेंट की तैयारी

सीएएमसी, करियर विकास संबंधी व्यापक पहलों एवं उद्योग सहभागिता कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों को प्लेसमेंट और इंटर्नशिप के लिए तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कार्यशालाओं, प्रतियोगिताओं तथा ज्ञान–साझाकरण मंचों के माध्यम से विद्यार्थियों को ऐसे कौशलों से सुसज्जित किया जाता है, जो उद्योग जगत की बदलती अपेक्षाओं के अनुरूप हों।

वर्ष के दौरान की गई प्रमुख पहलें निम्नलिखित हैं:

1. ***विद्यार्थियों की तैयारी एवं हैकाथॉन:*** विद्यार्थियों को बेहतर तैयारी में सहायता प्रदान करने के लिए गीक्सफॉरगीक्स, ब्लैकबक्स आदि प्रतिष्ठित भागीदारों के सहयोग से अनेक मॉक तकनीकी आकलन एवं मॉक साक्षात्कार आयोजित किए गए। इन आकलनों को

संस्थान के प्रमुख भर्तीकर्ताओं तथा पिछले अनुभवों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया। सीएएमसी ने पूर्व छात्र प्रकोष्ठ के सहयोग से साथी (SAATHI) – पूर्व छात्र मार्गदर्शन कार्यक्रम प्रारंभ किया। इस पहल का उद्देश्य विद्यार्थियों को प्रतिष्ठित पूर्व छात्रों के अनुभवों एवं सुझावों से सीखकर अपनी प्लेसमेंट यात्रा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने में सहायता प्रदान करना था। इसके अतिरिक्त, सीएएमसी ने विद्यार्थियों को लॉरियल ब्रांडस्टॉर्म 2026, सैमसंग इनोवेटएक्स एएक्स हैकाथॉन 2026 आदि राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय हैकाथॉन में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। इस वर्ष पहली बार सीएएमसी ने परिसर में दो बड़े राष्ट्रीय हैकाथॉनकृ'वी कनेक्ट हैकाथॉन, हीरो चौलेंज' तथा 'भारत ब्रिक्स हैक्स 2026 – डेटाब्रिक्स द्वारा संचालित'कृआयोजित किए, जिनसे विद्यार्थियों को वैश्विक स्तर का अनुभव एवं अवसर प्राप्त हुए।

2. ***कौशल संवर्धन एवं बायोडाटा निर्माण कार्यशालाएँ:*** अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए 'लेवल अपः प्लेसमेंट तैयारी कार्यशाला – बायोडाटा एवं साक्षात्कार मार्गदर्शन' आयोजित की गई। इसके अंतर्गत 'एक प्रभावशाली सीवी तैयार करना' तथा 'प्रभावी साक्षात्कार' विषयक सत्रों में 150 से अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया और विशेषज्ञों से व्यावहारिक सुझाव प्राप्त किए। इसके अतिरिक्त, 'रिफाइन एंड राइजः स्वयं का बेहतर संस्करण बनने की दिशा में एक कदम' सत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को अपने लक्ष्यों की प्राप्ति तथा अधिक पेशेवर दृष्टिकोण विकसित करने के लिए मार्गदर्शन दिया गया।

3. ***'प्लेसमेंट अनुभव पुस्तिका' एवं 'इंटर्नशिप अनुभव पुस्तिका':*** प्लेसमेंट पुस्तिका के तीसरे संस्करण का औपचारिक विमोचन सीएएमसी दिवस पर संस्थान के निदेशक एवं भर्तीकर्ताओं द्वारा किया गया। यह विशेष रूप से तैयार की गई पुस्तिका विद्यार्थियों के साथ साझा की जाती है, जिसमें सहपाठियों के अनुभवों पर आधारित मार्गदर्शन, तैयारी की रणनीतियाँ तथा सफलता की कहानियाँ शामिल हैं, जो उनकी प्लेसमेंट यात्रा में सहायक होती हैं।

4. ***भर्तीकर्ता आभार समारोह – सीएएमसी दिवस 2026:*** सीएएमसी दिवस 2026 ने पूर्ववर्ती प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट प्रकोष्ठ से सीएएमसी में औपचारिक परिवर्तन को चिह्नित किया। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों, पूर्व छात्रों एवं भर्तीकर्ताओं के बीच सहभागिता को सुदृढ़ करना था। सफल प्लेसमेंट सत्र में अमूल्य योगदान के लिए प्रमुख भर्तीकर्ताओं के प्रति आभार व्यक्त किया गया और उनकी सराहना की गई। इस अवसर पर केंद्र के लोगो का अनावरण किया गया तथा प्लेसमेंट वार्ताओं एवं अन्य विद्यार्थी सहभागिता गतिविधियों में उल्लेखनीय योगदान देने वाली विद्यार्थी टीम को सम्मानित किया गया।

5. ***ऑपर्च्यूनएक्स – आईआईटी इंदौर का प्रमुख मानव संसाधन कार्यक्रम:*** ऑपर्च्यूनएक्स श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए इस वर्ष संबद्ध एवं लक्षित भर्तीकर्ताओं के साथ कई सत्र आयोजित किए गए। इनमें पैनल चर्चाएँ और विशेषज्ञ वार्ताएँ शामिल थीं, जिनमें प्रतिभा अधिग्रहण के क्षेत्र के प्रतिष्ठित नेतृत्वकर्ताओं ने विद्यार्थियों के साथ उद्योग संबंधी महत्वपूर्ण जानकारियाँ साझा कीं।

6. ***लेसमेंट स्वचालन सॉफ्टवेयर:*** प्लेसमेंट प्रक्रिया को अधिक सुव्यवस्थित बनाने के लिए एक नया सॉफ्टवेयर प्लेटफॉर्म शुरू किया गया। यह विद्यार्थियों एवं भर्तीकर्ताओं, दोनों के लिए उपयोगकर्ता–अनुकूल इंटरफेस तथा वास्तविक समय में संचार की सुविधा प्रदान करता है।

7. ***व्यक्तिगत मानव संसाधन मार्गदर्शन:*** एक विशेष पहल के अंतर्गत आंतरिक सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता के विजेता विद्यार्थियों को अग्रणी मानव संसाधन विशेषज्ञों से व्यक्तिगत करियर मार्गदर्शन प्राप्त करने का विशेष अवसर प्रदान किया गया।

8. ***प्लेसमेंट वार्ता श्रृंखला – प्लेसमेंट टॉक 3.0:*** पिछले वर्ष की सफलता के बाद सीएएमसी ने हाल ही में प्लेसमेंट प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों द्वारा वार्ताओं की एक नई श्रृंखला आयोजित की। सॉफ्टवेयर, कोर इंजीनियरिंग, परामर्श एवं विश्लेषिकी जैसे विभिन्न क्षेत्रों पर केंद्रित इन सत्रों में वर्तमान विद्यार्थियों को विस्तृत तैयारी रणनीतियों तथा व्यक्तिगत अनुभवों से अवगत कराया गया।

9. ***अधिकारियों को संवेदनशील बनाना:*** विद्यार्थियों के साथ कार्य करने वाले अधिकारियों एवं टीम के सदस्यों को इस संबंध में जागरूक करने के लिए छोटी बैठकें आयोजित की जा रही हैं कि विद्यार्थियों को किस प्रकार परामर्श एवं मार्गदर्शन प्रदान किया जाए।

सीएएमसी द्वारा आयोजित उपर्युक्त कार्यक्रमों एवं गतिविधियों की झलकियाँ











आईआईटी इंदौर के प्रमुख भर्तीकर्ता

आईआईटी इंदौर में परिसर में आने वाली कंपनियों की संख्या तथा विद्यार्थियों को दिए जाने वाले वेतन पैकेज, दोनों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। प्लेसमेंट सत्र के प्रारंभिक चरण में सॉफ्टवेयर विकास, अनुसंधान एवं विकास, कृत्रिम बुद्धिमत्ता/मशीन लर्निंग (एआई/एमएल) तथा डेटा साइंस/एनालिटिक्स के क्षेत्र में अवसर प्रदान करने वाली कंपनियों की प्रमुख भागीदारी रही। इनमें से कई कंपनियाँ अपने–अपने क्षेत्रों में वैश्विक स्तर पर अग्रणी हैं।

विश्व की प्रमुख परामर्श कंपनियों, बैंकों एवं सॉफ्टवेयर कंपनियों ने प्लेसमेंट प्रक्रिया में भाग लिया। यह प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की भर्ती के लिए उत्कृष्ट भर्तीकर्ताओं को आकर्षित करने में आईआईटी इंदौर की सफलता को दर्शाता है।

इसके अतिरिक्त, परिसर भर्ती में सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (पीएसयू) की भागीदारी में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई। एचपीसीएल, बीपीसीएल, ईआईएल, बीईएल तथा सी–डॉट जैसे प्रमुख सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों ने विद्यार्थियों को पूर्णकालिक नियुक्ति के अवसर प्रदान किए।

पूर्णकालिक नियुक्तियों एवं इंटर्नशिप के अवसर प्रदान करने वाली प्रमुख कंपनियों में गूगल, डी. ई. शॉ, क्वाडआई, ब्लैकरॉक, डेटाब्रिक्स, बीएनवाई मेलॉन, डेलॉइट, टीसीएस, क्वालकॉम, एडोबी, महिंद्रा एंड महिंद्रा, इटर्नल लिमिटेड (जोमैटो), क्योरएआई, एलएंडटी, वोल्वो आइशर कमर्शियल व्हीकल्स प्राइवेट लिमिटेड, पेटीएम, फ्यूचर्स फर्स्ट, गोल्डमैन सैक्स, सिग्मॉइड एनालिटिक्स, एआरएआई, टेक्सास इंस्ट्रूमेंट्स, एनवीडिया, डसॉल्ट सिस्टम्स, वर्सा नेटवर्क्स, एनालॉग डिवाइसेस तथा एचसीएल टेक आदि शामिल रहीं।

शैक्षणिक कार्यक्रमवार प्लेसमेंट आँकड़े: चार्ट एवं मैट्रिक्स (शैक्षणिक सत्र 2025–26)

शैक्षणिक कार्यक्रम	कुल विद्यार्थी संख्या	पंजीकृत विद्यार्थी	कुल नियोजित विद्यार्थी	नियोजित विद्यार्थियों का प्रतिशत	औसत वेतन पैकेज (लाख रुपये प्रतिवर्ष)	उच्चतम वेतन पैकेज (लाख रुपये प्रतिवर्ष)3
बी.टेक.		301	279	92.69	27.81	254.3
एम.टेक.		97	51	52.57	12.46	40
एम.एस. (आर)		21	15	71.42	18.09	44.73
एम.एससी.		41	9	21.95	6.8	9

ग्राफ

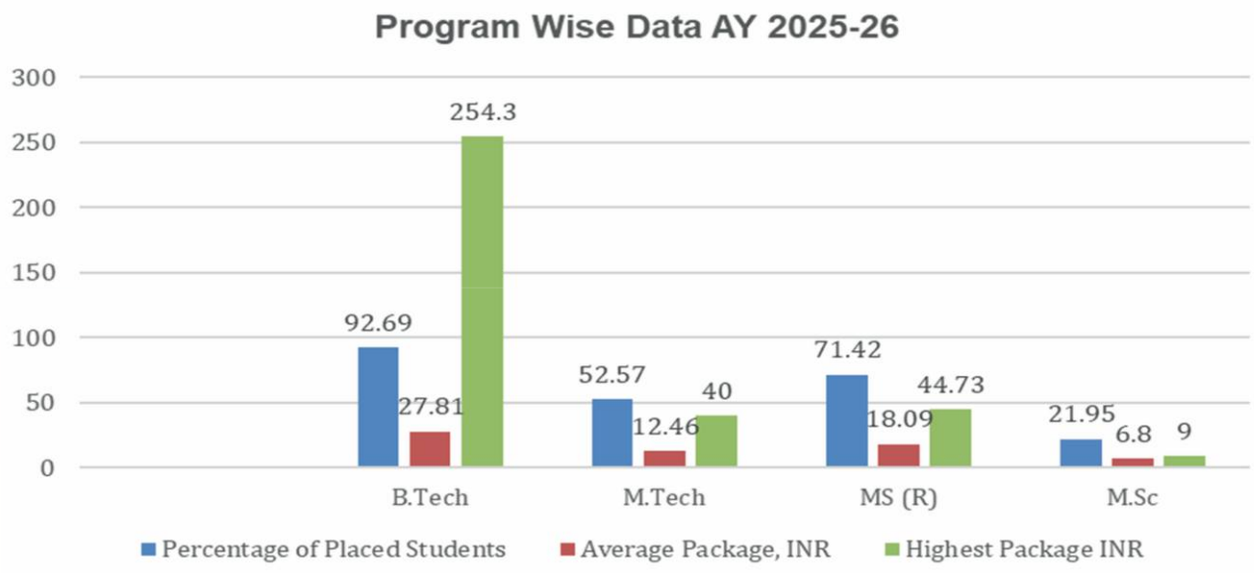

विभागवार बी.टेक. प्लेसमेंट आँकड़ेः आलेख एवं मैट्रिक्स (शैक्षणिक सत्र 2025–26)

विभागवार (बी.टेक.)	पंजीकृत विद्यार्थी	कुल नियोजित विद्यार्थी	नियोजित विद्यार्थियों का प्रतिशत	उच्चतम वेतन पैकेज (लाख रुपये प्रतिवर्ष)	औसत वेतन पैकेज (लाख रुपये प्रतिवर्ष)
सीएसई	79	76	96.20	254.3	45.76
ईई	73	67	91.78	137	29.09
एमई	72	66	91.67	47	16.85
सीई	38	37	97.37	47	16.28
एमईएमएस	39	32	82.05	56	19.86

ग्राफ

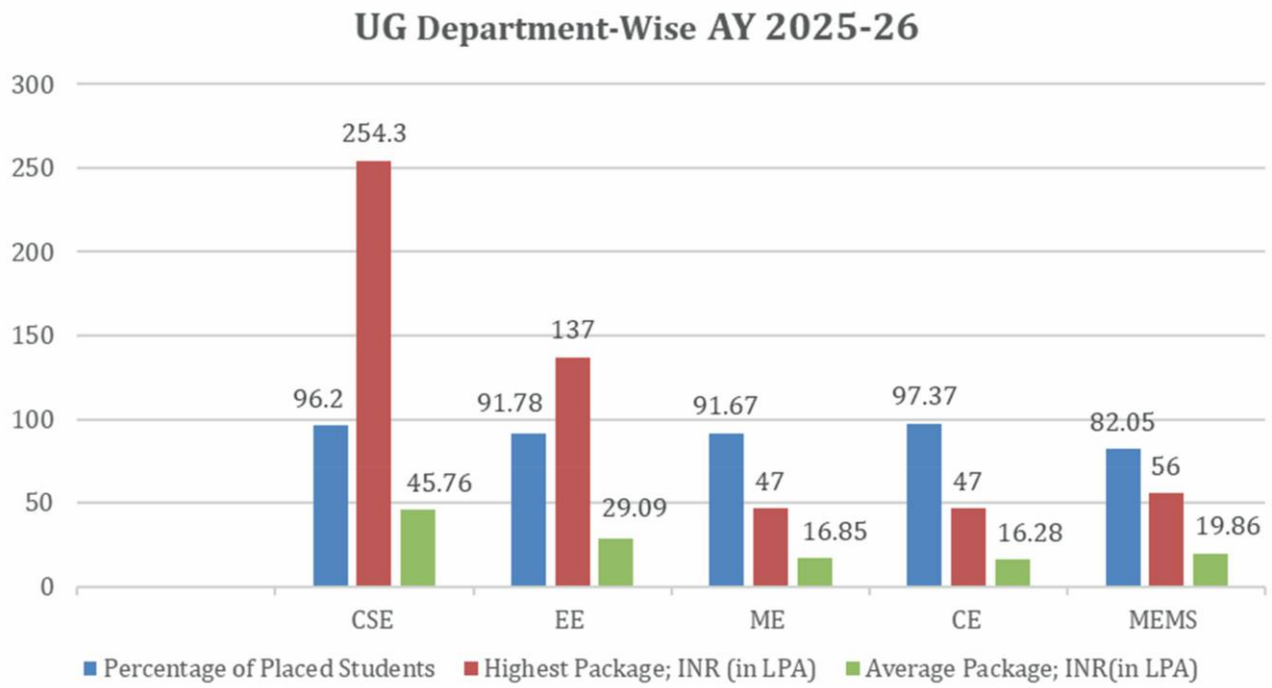

इंटर्नशिप प्रतिवेदन

कॉर्पोरेट जगत में करियर बनाने के इच्छुक विद्यार्थियों के लिए औद्योगिक अनुभव अत्यंत महत्वपूर्ण है। विद्यार्थियों को वास्तविक कार्यपरिवेश का अनुभव प्राप्त करने तथा कक्षा में सीखी गई अवधारणाओं को व्यावसायिक परिवेश में लागू करने के उद्देश्य से छठे सेमेस्टर के बाद ग्रीष्मकालीन इंटर्नशिप करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

इंटर्नशिप की प्रमुख उपलब्धियाँ

- भारत एवं विदेशों के अग्रणी संगठनों में अंतिम वर्ष से पहले के 170 से अधिक विद्यार्थियों ने इंटर्नशिप प्राप्त की।
- इंटर्नशिप के लिए दिया गया अधिकतम वजीफा रु7.5 लाख प्रतिमाह रहा।
- स्नातक होने वाले बैच को 50 से अधिक प्री–प्लेसमेंट ऑफर (पीपीओ) प्राप्त हुए, जो इंटर्नशिप के दौरान विद्यार्थियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन को दर्शाते हैं।

इंटर्नशिप के प्रस्ताव एवं प्री–प्लेसमेंट ऑफर (पीपीओ) में रूपांतरण (बैच 2026)

विभाग	इंटर्नशिप के प्रस्तावों की संख्या	प्री–प्लेसमेंट ऑफर (पीपीओ) में रूपांतरण (बैच 2026)
बी.टेक.	172	50 से अधिक

निष्कर्ष

वैश्विक रोजगार बाजार में मंदी के बावजूद, आईआईटी इंदौर में प्लेसमेंट सत्र 2025–26 सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस दौरान संस्थान ने निम्नलिखित उपलब्धियाँ हासिल कीं:

- कंपनियों की भागीदारी तथा नौकरी के प्रस्तावों में वृद्धि।
- ऑटोमोटिव, वित्त, परामर्श, कोर इंजीनियरिंग, सूचना प्रौद्योगिकी, अनुसंधान एवं विकास तथा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों सहित विभिन्न क्षेत्रों में भर्तीकर्ताओं की विविधता का विस्तार।
- बायोडाटा निर्माण, मॉक साक्षात्कार तथा करियर मार्गदर्शन सहित विद्यार्थियों के कौशल उन्नयन पर विशेष ध्यान।

छात्रावास

आईआईटी इंदौर में छात्रावास अवसंरचना

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर ने जीवंत एवं सहयोगात्मक परिसर जीवन को प्रोत्साहित करने के लिए सुदृढ़ और समावेशी छात्रावास अवसंरचना विकसित की है। संस्थान के स्थायी परिसर में वर्ष 2016 में उद्घाटित ए.पी.जे. अब्दुल कलाम छात्रावास ने छात्रावास जीवन की शुरुआत की। इसके पश्चात वर्ष 2019 में होमी जहाँगीर भाभा (एचजेबी) छात्रावास तथा वर्ष 2020 में देवी अहिल्या (डीए), विक्रम साराभाई (वीएसबी) और सी.वी. रमन (सीवीआर) छात्रावासों का उद्घाटन किया गया।

प्रत्येक छात्रावास में 99 आवासीय इकाइयाँ हैं, जिनमें कुल 574–600 विद्यार्थियों के रहने की व्यवस्था है।

शैक्षणिक सहभागिता एवं सामाजिक मेलजोल को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रत्येक आवासीय इकाई में छह साझा शयनकक्ष, पूर्णतः सुसज्जित बैठक कक्ष, एक साझा रसोईघर, दो शौचालय तथा दो स्नानघर उपलब्ध हैं। राष्ट्रीय एकता एवं अंतर्विषयी सहयोग को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न राज्यों, भाषायी पृष्ठभूमियों एवं शैक्षणिक विषयों के विद्यार्थियों को प्रत्येक इकाई में सुविचारित ढंग से साथ रखा जाता है।

पिछले वर्ष संस्थान के छात्रावास परिवार में पीएम अजय छात्रावास भी शामिल हुआ, जिसमें 248 विद्यार्थियों के रहने की व्यवस्था तथा दिव्यांगजनों के लिए छह विशेष कक्ष उपलब्ध हैं।

सतत विकास के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता के अनुरूप सभी छात्रावासों में सौर जल तापन प्रणालियाँ स्थापित की गई हैं। इसके अतिरिक्त, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम छात्रावास में केंद्रीकृत वातानुकूलन की सुविधा उपलब्ध है, जिससे विद्यार्थियों को पूरे वर्ष बेहतर आवासीय सुविधा मिलती है।

छात्रावास अवसंरचना का विस्तार

बढ़ते शैक्षणिक समुदाय की आवश्यकताओं को पूरा करने तथा आवासीय सुविधाओं को बेहतर बनाने के लिए आईआईटी इंदौर में विश्वस्तरीय सुविधाओं से युक्त तीन नए छात्रावासों का निर्माण कार्य प्रगति पर है। इन छात्रावासों को स्थिरता, आराम एवं सामुदायिक जीवन पर विशेष ध्यान देते हुए विद्यार्थियों के आवास की अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तैयार किया जा रहा है।

आगामी वर्षों में इनके संचालन से संस्थान की गुणवत्तापूर्ण आवासीय सुविधाएँ प्रदान करने की क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि होगी। इससे शिक्षा एवं अनुसंधान के क्षेत्र में संस्थान की निरंतर प्रगति और उत्कृष्टता के प्रति प्रतिबद्धता को बल मिलेगा।

प्रशासन

छात्रावास प्रशासन का दायित्व मुख्य छात्रावास अधीक्षक डॉ. सप्तर्षि घोष के नेतृत्व में संचालित होता है। इस कार्य में सुश्री पूजा दुआत्ता, सहायक कुलसचिव (एचसीयू); सुश्री चंद्राणी मित्र सरकार, कनिष्ठ सहायक; तथा श्री राज नगर, कनिष्ठ सहायक सहयोग प्रदान करते हैं।

प्रत्येक छात्रावास का संचालन एक समर्पित छात्रावास अधीक्षक के मार्गदर्शन में किया जाता है, जिन्हें दैनिक व्यवस्थाओं के सुचारु संचालन के लिए एक पर्यवेक्षक एवं एक परिचर का सहयोग प्राप्त होता है।

क्र. सं.	छात्रावास का नाम	छात्रावास का प्रकार	छात्रावास अधीक्षक सह	छात्रावास अधीक्षक
01	एपीजे (अवुल पकिर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम)	बालक	डॉ. शिवराज मोहना सुंदरम	–
02	सीवीआर (चंद्रशेखर वेंकट रमन)	बालक	डॉ. अक्षय प्रताप सिंह	–
03	एचजेबी (होमी जहाँगीर भाभा)	बालक	डॉ. अयान मंडल	–
04	डीए (देवी अहिल्या) एवं इसका विस्तार (डीए–ई)	बालिका	डॉ. अरात्रिका दास	–
05	वीएसबी (विक्रम साराभाई)	बालक	डॉ. सान्सुमा ब्रह्मा	–
06	पीएम अजय	बालक	डॉ. शुभदीप पालधी	–

अतिथि आवास सुविधाएँ

आईआईटी इंदौर अपने छात्रावास परिसर में सुव्यवस्थित एवं पूर्णतः सुसज्जित अतिथि कक्षों की सुविधा प्रदान करता है, ताकि आने वाले विद्यार्थियों, अतिथियों एवं गणमान्य व्यक्तियों का प्रवास सुखद एवं सुविधाजनक हो। विभिन्न छात्रावासों में स्थित अतिथि आवासों में एक समय में कुल 500 अतिथियों के ठहरने की व्यवस्था है। वर्तमान में दो प्रकार के अतिथि कक्ष उपलब्ध हैंकृमूलभूत सुविधाओं से युक्त साझा आधार पर विद्यार्थियों के लिए अतिथि कक्ष तथा उन्नत सुविधाओं से युक्त एकल आवास वाले टीईक्यूआईपी अतिथि कक्ष।

प्रत्येक अतिथि कक्ष में निम्नलिखित सुविधाएँ उपलब्ध हैं:

- गद्दा एवं कंबल
- चादर एवं तकिया
- तौलिये
- कपड़े रखने का स्टैंड

इसके अतिरिक्त, प्रत्येक टीईक्यूआईपी अतिथि कक्ष में निम्नलिखित आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं:

- स्मार्ट एलईडी टीवी
- सोफा सेट
- सेंटर टेबल
- माइक्रोवेव
- इलेक्ट्रिक केतली

इन सुविधाओं का उद्देश्य संस्थान में आने वाले सभी अतिथियों को आरामदायक एवं सुविधाजनक आवास उपलब्ध कराना तथा उनके लिए स्वागतपूर्ण वातावरण सुनिश्चित करना है।

छात्रावास की तस्वीरें



छात्रावास संख्या 01 – ए.पी.जे. अब्दुल कलाम



छात्रावास संख्या 02 – सी. वी. रमन



छात्रावास संख्या 03 – होमी जे. भाभा



छात्रावास संख्या 04 – देवी अहिल्या



छात्रावास संख्या 05 – विक्रम साराभाई



छात्रावास संख्या 06 – पीएम अजय

छात्रावासों में उपलब्ध मूलभूत सुविधाएँ


सामान्य कक्ष


सामुदायिक कक्ष


स्नानघर एवं शौचालय


आरओ जल सुविधा सहित रसोईघर


वाई–फाई


आरओ जल वितरक

छात्रावासों में खेल सुविधाएँ


बैडमिंटन कोर्ट


टेबल टेनिस



टेबल सॉकर

छात्रावासों में अन्य सुविधाएँ


समाचार–पत्र स्टैंड


पत्रिका स्टैंड


व्यायाम उपकरण

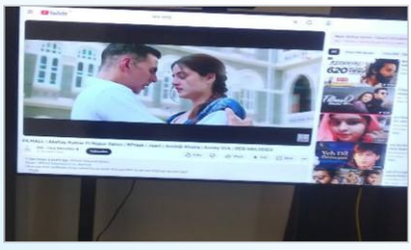
बड़ी स्क्रीन वाला टेलीविजन



वेंडिंग मशीन


डिजिटल डिस्प्ले बोर्ड

केंद्रीय आहार सुविधा

केंद्रीय आहार सुविधाः सामूहिक भोजन के माध्यम से सामुदायिक भावना को बढ़ावा

संस्थान की केंद्रीय आहार सुविधा, जिसे लोकप्रिय रूप से कार्बन बिल्डिंग के नाम से जाना जाता है, परिसर की समावेशी एवं समुदाय–केंद्रित भावना का प्रतीक है। लगभग 2,800 व्यक्तियों को एक साथ भोजन परोसने की क्षमता वाली यह सुविधा विभिन्न छात्रावासों के विद्यार्थियों को एक साथ भोजन करने के लिए प्रोत्साहित करती है, जिससे उनमें एकता एवं सौहार्द की भावना विकसित होती है।

आहार परिसर में तीन कैटरर्स–सुरिंदर अरोड़ा, शीला तथा फूड सूत्र–की सेवाएँ उपलब्ध हैं। यहाँ विद्यार्थियों, संस्थान के कर्मचारियों एवं अतिथियों के लिए अलग–अलग अनुभाग निर्धारित हैं। इस सुविधा को अनेक रसोईघरों, सुगम्य शौचालयों तथा लिफ्ट की व्यवस्था के साथ सुविचारित ढंग से विकसित किया गया है, ताकि सभी को आरामदायक एवं समावेशी अनुभव प्राप्त हो। आगामी अवसंरचना विकास के अंतर्गत रसोईघरों के आधुनिकीकरण की योजना भी बनाई गई है।

आमंत्रित गणमान्य व्यक्तियों एवं विशिष्ट अतिथियों के लिए कार्यपालक आहार कक्ष में उत्कृष्ट भोजन एवं आतिथ्य सेवाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं। प्रतिदिन पौष्टिक एवं संतुलित भोजन परोसा जाता है। विद्यार्थी साप्ताहिक बैठकों के माध्यम से भोजन–सूची के चयन में सक्रिय भागीदारी निभाते हैं। विद्यार्थी समुदाय के सहयोग से आहार समिति व्यवस्थाओं की निगरानी एवं गुणवत्ता नियंत्रण सुनिश्चित करती है।

आहार सुविधा की व्यवस्था में पारदर्शिता एवं सुगमता को विशेष महत्व दिया जाता है। एक व्यापक आहार वेबसाइट के माध्यम से आवंटन प्रपत्र, लंबी एवं छोटी अवधि के रिबेट प्रपत्र, शिकायत एवं विसंगति संबंधी प्रपत्र, बिलिंग संबंधी जानकारी, कैटरर्स का विवरण, भोजन–सूची तथा संपर्क संबंधी जानकारी उपलब्ध कराई जाती है। इसके अतिरिक्त, क्यूआर कोड आधारित पहुँच प्रणाली भी उपलब्ध है।

कार्बन बिल्डिंग कोविड–उपयुक्त सभी मानदंडों का अनुपालन करती है। यहाँ कई कियोस्क भी संचालित हैं, जो चौबीसों घंटे जलपान एवं अन्य सेवाएँ उपलब्ध कराते हैं और परिसर के जीवंत वातावरण को बनाए रखने में योगदान देते हैं।

केंद्रीय आहार सुविधा का संचालन एक समर्पित टीम द्वारा किया जाता है, जिसमें प्रशासनिक कर्मचारी, कनिष्ठ सहायक श्रीमती तरुणा तोमर एवं श्री प्रशांत पहारे, परिचर तथा विद्यार्थी स्वयंसेवक शामिल हैं। समग्र प्रशासन का दायित्व आहार समिति के पास है, जिसकी अध्यक्षता आहार अधिष्ठाता डॉ. कलंदी सी. प्रधान करते हैं।



आहार सुविधा भवन



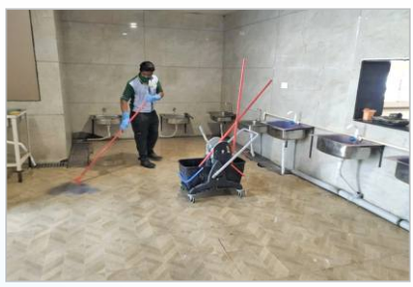



आहार सुविधा में साफ–सफाइ



डॉ. कालंदी सी. प्रधान
डाइनिंग वार्डन



श्री प्रशांत पहारे
कनिष्ठ सहायक



श्रीमती तरुणा तोमर
कनिष्ठ सहायक



श्री जवाहरलाल मोतीलाल
परिचारक



श्री अनिल भाबर
परिचारक

छात्रावासों के आहार सचिव

क्र. सं.	*छात्रावास का नाम*	*आहार सचिव का नाम*	*ईमेल आईडी*
1	एपीजे	श्री करि साई बाबू	diningsecy.apj@iiti.ac.in
2	सीवीआर	श्री अतुल यादव	diningsecy.cvrj@iiti.ac.in
3	एचजेबी	श्री योगेंद्र बिहारे	gs.dining@iiti.ac.in / diningsecy.hjb@iiti.ac.in
4	वीएसबी	श्री चिंतला शशिधर	diningsecy.vsb@iiti.ac.in
5	डीए	सुश्री प्रणली राव	diningsecy.da@iiti.ac.in
6	पीएम अजय	श्री अभिजीत रावत	diningsecy.pmajay@iiti.ac.in

परामर्श प्रकोष्ठ

आईआईटी इंदौर का परामर्श प्रकोष्ठ, छात्र कार्य अनुभाग का एक महत्वपूर्ण अंग है, जो दिसंबर 2011 में अपनी स्थापना के बाद से विद्यार्थियों के कल्याण एवं व्यक्तिगत विकास में सक्रिय रूप से सहयोग प्रदान कर रहा है। वर्तमान में यह प्रकोष्ठ जीवन कौशल पहल एवं मूल्य शिक्षा (लाइव) के व्यापक दायरे में कार्यरत है, जिससे विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के प्रति इसके प्रयासों को नई दिशा मिली है। यह एक सहयोगात्मक, गोपनीय एवं समावेशी वातावरण उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है, जहाँ विद्यार्थी शैक्षणिक तनाव, भावनात्मक चिंताओं तथा व्यक्तिगत चुनौतियों पर खुलकर चर्चा कर सकें।

भावनात्मक दृढ़ता बढ़ाने एवं सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से परामर्श प्रकोष्ठ की सेवाएँ स्नातक, स्नातकोत्तर तथा पीएचडी सहित सभी शैक्षणिक कार्यक्रमों के विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध हैं। लाइव पहल के अंतर्गत मनोवैज्ञानिक समस्याओं की शीघ्र पहचान, उनकी रोकथाम तथा समय पर सहायता प्रदान करने पर विशेष बल दिया जाता है।

सुनियोजित परामर्श सेवाओं, निवारक जागरूकता गतिविधियों तथा मूल्य–आधारित जीवन कौशल शिक्षा के माध्यम से प्रकोष्ठ विद्यार्थियों को व्यक्तिगत एवं शैक्षणिक दोनों क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए सशक्त बनाता है। इससे आईआईटी इंदौर में सकारात्मक एवं भावनात्मक रूप से स्वस्थ परिसर संस्कृति विकसित करने में सहायता मिल रही है।



प्रो. आमोद सी. उमरीकर
अधिष्ठाता, छात्र कार्य



प्रो. एंटनी विजेश
प्रभारी प्राध्यापक, लाइव



डॉ. अभिजीत जोशी
सह–अधिष्ठाता,
छात्र कार्य–I



डॉ. जयप्रकाश मुरुगेसन
सह–अधिष्ठाता,
छात्र कार्य–II



डॉ. शिल्पा राउत
मुख्य चिकित्सा अधिकारी



सुश्री शुभ्रा व्यास
परामर्शदाता



सुश्री सिमरन त्यागी
वेलनेस थेरेपिस्ट



सुश्री वृंदा भिकादिया
वेलनेस थेरेपिस्ट

परिसर कल्याण एवं सहायता रूपरेखा

कल्याण स्वयंसेवक – तल–वार प्रभारी

विद्यार्थी समुदाय के बीच सहकर्मी सहयोग को सुदृढ़ करने तथा मानसिक कल्याण को बढ़ावा देने के लिए छात्रावासों में प्रत्येक तल पर तैनात 37 कल्याण स्वयंसेवकों की एक टीम गठित की गई है। ये स्वयंसेवक विद्यार्थियों के लिए सहज एवं सुलभ सहकर्मी संपर्क के रूप में कार्य करते हैं तथा भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक या व्यक्तिगत सहायता की आवश्यकता होने पर उन्हें परामर्शदाता से संपर्क करने में मदद करते हैं।

इस पहल का उद्देश्य समय रहते सहायता लेने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करना, मानसिक स्वास्थ्य सहायता की सुलभता बढ़ाना तथा विद्यार्थियों के कल्याण के लिए सहयोगात्मक वातावरण विकसित करना है।

मार्गदर्शक–मार्गदर्शनार्थी सहायता प्रणाली

प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों को परिसर जीवन में शैक्षणिक एवं व्यक्तिगत रूप से सहजता से समायोजित होने में सहायता प्रदान करने के लिए मार्गदर्शक–मार्गदर्शनार्थी सहायता प्रणाली स्थापित की गई है। इस पहल के अंतर्गत द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ वर्ष के वरिष्ठ विद्यार्थियों को प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के मार्गदर्शन एवं सहायता के लिए मार्गदर्शक नियुक्त किया जाता है। यह कार्यक्रम सहकर्मी अधिगम को प्रोत्साहित करने, अपनत्व की भावना विकसित करने तथा संस्थान के वातावरण में नए विद्यार्थियों के समायोजन के दौरान सुलभ सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से संचालित किया जाता है।

संकाय सलाहकार प्रणाली

निरंतर शैक्षणिक मार्गदर्शन एवं विद्यार्थियों को समग्र सहायता प्रदान करने के लिए प्रत्येक विद्यार्थी को एक संकाय सलाहकार आवंटित किया जाता है। संकाय सलाहकार विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति, परिसर के वातावरण में समायोजन, व्यक्तिगत चिंताओं तथा समग्र कल्याण पर चर्चा करने के लिए समय–समय पर उनसे मिलते हैं।

इस सहायता प्रणाली को और सुदृढ़ बनाने के लिए प्रत्येक विभाग में एक परामर्शदाता भी नियुक्त किया गया है, जो संकाय सलाहकारों के साथ समन्वय स्थापित करता है तथा आवश्यकता पड़ने पर मानसिक स्वास्थ्य संबंधी सहायता प्रदान करता है। विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप अतिरिक्त पेशेवर सहायता एवं समयबद्ध हस्तक्षेप सुनिश्चित करने के लिए संकाय सलाहकार विद्यार्थियों को परामर्शदाता से संपर्क करने में सहायता प्रदान कर सकते हैं।

वर्ष 2025–26 के दौरान परामर्श प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित प्रमुख कार्यक्रम

स्नातक विद्यार्थियों के लिए जेनेसिस

जेनेसिस पहल के अंतर्गत परामर्श प्रकोष्ठ ने प्रथम वर्ष के स्नातक विद्यार्थियों के लिए सुव्यवस्थित ओरिएंटेशन सत्र आयोजित किए। इन सत्रों में मानसिक स्वास्थ्य एवं परिसर में उपलब्ध परामर्श सेवाओं की संक्षिप्त जानकारी दी गई। भावनात्मक समायोजन, शैक्षणिक परिवर्तन, मूल्य–आधारित निर्णय लेने, स्वयं की पहचान को समझने तथा संबंधों को बेहतर ढंग से निभाने जैसे विषयों पर विशेष बल दिया गया।

निर्देशित आत्मचिंतन, समूह चर्चाओं एवं प्रेरक वार्ताओं के माध्यम से विद्यार्थियों को मानसिक दृढ़ता विकसित करने, आवश्यकता पड़ने पर सहायता लेने तथा आईआईटी इंदौर में अपनी शैक्षणिक यात्रा के प्रारंभ से ही परिसर समुदाय में सक्रिय भागीदारी निभाने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

स्नातकोत्तर एवं पीएचडी विद्यार्थियों के लिए ओरिएंटेशन

परामर्श प्रकोष्ठ ने नवप्रवेशित स्नातकोत्तर एवं पीएचडी विद्यार्थियों को परिसर में उपलब्ध मानसिक स्वास्थ्य सहायता एवं परामर्श सेवाओं से परिचित कराने के लिए ओरिएंटेशन सत्र भी आयोजित किए। इन सत्रों में शैक्षणिक दबाव, अनुसंधान संबंधी तनाव, कार्य एवं जीवन के बीच संतुलन, पारस्परिक संबंधों तथा नए शैक्षणिक वातावरण में समायोजन से जुड़ी चुनौतियों पर चर्चा की गई।

विद्यार्थियों को अपने कल्याण को प्राथमिकता देने, तनाव से निपटने की स्वस्थ रणनीतियाँ विकसित करने तथा आईआईटी इंदौर में अपनी शैक्षणिक यात्रा के दौरान आवश्यकता पड़ने पर सहायता लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

विद्यार्थी मार्गदर्शन कार्यक्रम

विद्यार्थी मार्गदर्शन कार्यक्रम के अंतर्गत नवप्रवेशित विद्यार्थियों को स्नातक एवं स्नातकोत्तर कार्यक्रमों के प्रशिक्षित वरिष्ठ विद्यार्थियों से जोड़ा गया। मार्गदर्शकों ने शैक्षणिक योजना, तनाव प्रबंधन तथा परिसर जीवन से संबंधित विषयों पर मार्गदर्शन प्रदान किया। नियमित संवाद, अनौपचारिक बातचीत एवं सहयोगात्मक समस्या–समाधान के माध्यम से विश्वास एवं भावनात्मक सहयोग को बढ़ावा मिला, जिससे विद्यार्थियों में अपनत्व की भावना सुदृढ़ हुई और नए वातावरण में समायोजन से संबंधित तनाव कम करने में सहायता मिली।

संकाय सलाहकार बैठकें

विभिन्न विभागों के संकाय सलाहकारों ने अगस्त तथा अक्टूबर–नवंबर में दो चरणों में विद्यार्थियों के साथ सुव्यवस्थित बैठकें आयोजित कीं। इन बैठकों में शैक्षणिक कठिनाइयों, व्यक्तिगत तनाव के कारणों तथा संस्थान की गतिविधियों में विद्यार्थियों की कम भागीदारी जैसे विषयों पर चर्चा की गई। आवश्यकतानुसार विद्यार्थियों की पहचान करने तथा उन्हें समानांतर सहायता प्रदान करने में परामर्शदाताओं ने सहयोग किया।








प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के साथ संवाद

परीक्षा अवधि के दौरान विद्यार्थियों को सहायता प्रदान करने के लिए परामर्श प्रकोष्ठ ने तनाव प्रबंधन पर एक संवादात्मक सत्र आयोजित किया। इसमें सचेतनता अभ्यास, वर्तमान क्षण से जुड़ाव के अभ्यास तथा शैक्षणिक योजना बनाने की रणनीतियाँ शामिल थीं।

संस्थान के निदेशक प्रो. सुहास जोशी ने प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के साथ संवाद किया तथा परिसर की सुविधाओं, संस्थान में उनके सामने आने वाली चुनौतियों और घर से परिसर के वातावरण में समायोजन से संबंधित विषयों पर सार्थक चर्चा की। इस संवाद से विद्यार्थियों को अपनी चिंताएँ व्यक्त करने एवं अनुभव साझा करने का अवसर मिला। साथ ही, प्रशासन को विद्यार्थियों की आवश्यकताओं तथा उन क्षेत्रों को बेहतर ढंग से समझने में सहायता मिली, जहाँ सहायता व्यवस्था को और सुदृढ़ किया जा सकता है।

उच्च शिक्षण संस्थानों में विशिष्ट अधिगम अक्षमताओं (एसएलडी) पर क्षमता संवर्धन कार्यक्रम (सितंबर एवं अक्टूबर 2025)

परामर्श प्रकोष्ठ के प्रतिनिधियों ने भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के तत्वावधान में दो चरणों में आयोजित उच्च शिक्षण संस्थानों में विशिष्ट अधिगम अक्षमताओं (एसएलडी) पर क्षमता संवर्धन कार्यक्रम में भाग लिया। इसका ऑनलाइन चरण सितंबर 2025 तथा ऑफलाइन चरण अक्टूबर 2025 में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य विशेषज्ञों के सत्रों, जागरूकता गतिविधियों एवं संवादात्मक चर्चाओं के माध्यम से विशिष्ट अधिगम अक्षमताओं के प्रति जागरूकता और समझ बढ़ाकर समावेशी शिक्षा के लिए संस्थागत क्षमता को सुदृढ़ करना था। इस पहल से उच्च शिक्षा संस्थानों में सुगम्यता, विद्यार्थी कल्याण तथा समान शैक्षणिक अवसरों को बढ़ावा देने वाले सहयोगात्मक एवं समावेशी शैक्षणिक वातावरण के विकास में सहायता मिली।

सेरेनिटी कार्निवल – मानसिक स्वास्थ्य दिवस का आयोजन (11 अक्टूबर 2025)

विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर परामर्श प्रकोष्ठ ने 'सेरेनिटी – मानसिक स्वास्थ्य कार्निवल' आयोजित किया। यह विद्यार्थियों द्वारा, विद्यार्थियों के लिए तैयार की गई पहल थी, जिसका उद्देश्य मानसिक कल्याण को बढ़ावा देना तथा रचनात्मकता एवं सहभागिता को प्रोत्साहित करना था। इस कार्निवल ने विद्यार्थियों को शैक्षणिक गतिविधियों से इतर समय बिताने और विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने का अवसर प्रदान किया।

कार्यक्रम में विद्यार्थियों द्वारा संचालित खाद्य एवं खेल स्टॉल लगाए गए, जिनकी तैयारी, आयोजन और प्रबंधन में विद्यार्थियों ने सक्रिय भूमिका निभाई। बैंड एवं नृत्य प्रस्तुतियों सहित सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने आयोजन को जीवंत बनाया। मूड बोर्ड, विचार बोर्ड, मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता गतिविधियों तथा डीजे नाइट जैसे संवादात्मक कार्यक्रमों ने विद्यार्थियों के लिए उत्साहपूर्ण एवं सहभागितापूर्ण वातावरण तैयार किया। समग्र रूप से, सेरेनिटी ने समावेशी वातावरण में भावनात्मक कल्याण, रचनात्मकता तथा विद्यार्थी सहभागिता को बढ़ावा देने के लिए एक प्रभावी मंच प्रदान किया।







मानसिक स्वास्थ्य प्राथमिक सहायता प्रशिक्षण

7 एवं 8 नवंबर 2024 को बीइंग बैलेंस्ड कंसल्टेंसी की संस्थापक डॉ. टीना ऑगस्टीन जोसेफ के नेतृत्व में मानसिक स्वास्थ्य प्राथमिक सहायता कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह प्रशिक्षण संकाय सदस्यों एवं विद्यार्थी स्वयंसेवकों, दोनों के लिए आयोजित किया गया, जिसमें सहभागितापूर्ण सत्रों, संवादात्मक गतिविधियों तथा भूमिका–अभिनय का समावेश था।

इसका उद्देश्य प्रतिभागियों को मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों का सामना कर रहे विद्यार्थियों की पहचान करने तथा उन्हें आवश्यक सहायता प्रदान करने के लिए जरूरी कौशलों से सुसज्जित करना था। शीघ्र हस्तक्षेप एवं संवेदनशील प्रतिक्रिया पर बल देते हुए इस कार्यक्रम ने समय पर सहायता प्रदान करने और संस्थान में समग्र कल्याण को बढ़ावा देने की सामुदायिक क्षमता को सुदृढ़ किया।

राष्ट्रीय कल्याण सम्मेलन – आईआईटी बॉम्बे (22–23 नवंबर 2025)

विद्यार्थी समुदाय के दो प्रतिनिधियों एवं संकाय सदस्यों को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान बॉम्बे में आयोजित द्वितीय राष्ट्रीय कल्याण सम्मेलन में भाग लेने के लिए नामित किया गया। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के उच्च शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित यह सम्मेलन उच्च शिक्षण संस्थानों में मानसिक स्वास्थ्य, मानसिक दृढ़ता एवं कल्याण को बढ़ावा देने के लिए एक राष्ट्रीय मंच के रूप में कार्यरत रहा।

इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के उद्देश्यों के अनुरूप विद्यार्थी सहायता प्रणालियों, मानसिक स्वास्थ्य संबंधी प्रशासनिक व्यवस्था तथा संस्थागत कल्याण रूपरेखाओं को सुदृढ़ करने पर चर्चा की गई। सम्मेलन के अंतर्गत संवादात्मक सत्र, विभिन्न संस्थानों के बीच विचारों एवं श्रेष्ठ कार्यप्रणालियों का आदान–प्रदान, विद्यार्थी मानसिक स्वास्थ्य पहलों तथा नीतिगत कार्यान्वयन पर विचार–विमर्श, विद्यार्थी कल्याण की श्रेष्ठ कार्यप्रणालियों के संकलन का विमोचन तथा उच्च शिक्षण संस्थानों की नवाचारी पहलों को प्रदर्शित करने वाली प्रदर्शनी आयोजित की गई।

इस सम्मेलन में भागीदारी से मानसिक स्वास्थ्य एवं विद्यार्थी कल्याण के लिए सहयोगात्मक प्रयासों और उभरते दृष्टिकोणों से परिचित होने का अवसर मिला, जिससे सहयोगात्मक एवं समावेशी शैक्षणिक वातावरण को बढ़ावा देने में सहायता मिली।

अखिल भारतीय कल्याण शिखर सम्मेलन

9 से 11 जनवरी 2026 तक आईआईटी गुवाहाटी में आयोजित पैन–आईआईटी कल्याण शिखर सम्मेलन विद्यार्थी मानसिक स्वास्थ्य एवं परिसर कल्याण पर केंद्रित एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय स्तरीय आयोजन था। इसमें विभिन्न आईआईटी के प्रतिनिधियों ने भाग लेकर उच्च शिक्षा में सहायता प्रणालियों को बेहतर बनाने से संबंधित साझा चुनौतियों एवं व्यावहारिक समाधानों पर चर्चा की।

शिखर सम्मेलन में शैक्षणिक एवं व्यक्तिगत तनाव का सामना कर रहे विद्यार्थियों के लिए परामर्श सेवाओं को सुदृढ़ करने, सहकर्मी सहयोग बढ़ाने, संकाय सदस्यों को संवेदनशील बनाने तथा समय पर मानसिक स्वास्थ्य हस्तक्षेप सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर बल दिया गया।

आईआईटी इंदौर की ओर से छात्र कार्य अधिष्ठाता प्रो. अमोद सी. उमरीकर, प्रो. श्रीवत्सन वासुदेवन, वेलनेस थेरेपिस्ट सुश्री सिमरन, परामर्शदाता आश्का तथा विद्यार्थी अथर्वकांत चंदोरीकर एवं नवेद अशरफ ने भाग लिया। उनकी सहभागिता विद्यार्थी कल्याण एवं मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ावा देने के प्रति आईआईटी इंदौर की सक्रिय प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

इस शिखर सम्मेलन ने प्रमुख तकनीकी संस्थानों के बीच सहयोग को प्रोत्साहित किया, ताकि मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों का व्यवस्थित ढंग से समाधान किया जा सके और अधिक स्वस्थ परिसर वातावरण विकसित किया जा सके।

सहयोग 2.0 – इंटर–आईआईटी वेलनेस मीट, आईआईटी रुड़की (11–12 फरवरी 2026)

परामर्श प्रकोष्ठ के प्रतिनिधियों ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रुड़की में आयोजित सहयोग 2.0, मानसिक स्वास्थ्य नीति विकास पर अंतर–आईआईटी संवाद, में भाग लिया। इस कार्यक्रम ने उच्च शिक्षण संस्थानों में मानसिक स्वास्थ्य प्रशासन से संबंधित उभरती राष्ट्रीय सिफारिशों के अनुरूप आईआईटी समुदाय में मानसिक स्वास्थ्य एवं कल्याण के लिए संस्थागत रूपरेखाओं को सुदृढ़ करने हेतु सहयोगात्मक मंच प्रदान किया।

विचार–विमर्श में मानसिक स्वास्थ्य नीति निर्माण के लिए संस्थागत दृष्टिकोण, निवारक एवं प्रतिक्रियात्मक देखभाल तंत्र, संकट प्रबंधन रणनीतियों तथा नीतियों के कार्यान्वयन में वेलनेस केंद्रों, परामर्श प्रकोष्ठों एवं विद्यार्थी कल्याण प्रणालियों की भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया गया। इस संवाद में भागीदारी से श्रेष्ठ कार्यप्रणालियों के आदान–प्रदान को बढ़ावा मिला तथा आईआईटी में समावेशी, व्यापक एवं विद्यार्थी–केंद्रित मानसिक स्वास्थ्य पहलों को सुदृढ़ करने में सहायता मिली।

कार्यस्थल पर आत्म–देखभाल – प्रशासनिक कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण सत्र (20 जून 2025)

परामर्श प्रकोष्ठ द्वारा प्रशासनिक कर्मचारियों के लिए 'कार्यस्थल पर आत्म–देखभालरू कार्यजनित थकान की पहचान एवं बेहतर कार्यजीवन के लिए रणनीतियाँ' विषय पर प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया गया। इसका उद्देश्य कार्यस्थल पर कल्याण को बढ़ावा देना तथा तनाव प्रबंधन के प्रति जागरूकता विकसित करना था।

सत्र में आत्म–देखभाल की अवधारणा को समझने, कार्यजनित थकान के संकेतों एवं कारणों की पहचान करने तथा मानसिक दृढ़ता बढ़ाने और स्वस्थ कार्य–जीवन संतुलन बनाए रखने के लिए व्यावहारिक रणनीतियाँ अपनाने पर ध्यान केंद्रित किया गया। संवादात्मक चर्चाओं एवं आत्मचिंतन संबंधी गतिविधियों के माध्यम से प्रतिभागियों को अपनी व्यक्तिगत कल्याण संबंधी आवश्यकताओं को पहचानने तथा कार्यस्थल पर भावनात्मक, मानसिक एवं व्यावसायिक स्वास्थ्य बनाए रखने के प्रभावी उपाय विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्रशासनिक कर्मचारियों को कार्यस्थल की आवश्यकताओं का प्रभावी ढंग से प्रबंधन करने, तनाव संबंधी चुनौतियों को कम करने, उत्पादकता बढ़ाने तथा समग्र कार्य संतुष्टि एवं कल्याण में सुधार करने में सहायता प्रदान करना भी था।

एक भारत श्रेष्ठ भारत (ईबीएसबी)

आईआईटी इंदौर की एक भारत श्रेष्ठ भारत (ईबीएसबी) टीम अपने संयोजक डॉ. नीरज कुमार शुक्ला (प्रोफेसर, गणित विभाग) के नेतृत्व में भारत सरकार की प्रमुख पहलों को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न गतिविधियाँ सक्रिय रूप से आयोजित करती है। इनमें एक भारत श्रेष्ठ भारत (ईबीएसबी), राष्ट्रीय आविष्कार अभियान (आरएए), उन्नत भारत अभियान (यूबीए), स्वच्छ भारत अभियान (एसबीए) तथा रूटैग (RuTAG) शामिल हैं।

एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम का उद्देश्य भारत के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के बीच निरंतर एवं सार्थक सांस्कृतिक संबंधों को प्रोत्साहित करना है। इस कार्यक्रम का शुभारंभ माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 31 अक्टूबर 2015 को सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर किया था। इस कार्यक्रम के माध्यम से विभिन्न राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों के लोगों के बीच निरंतर संवाद एवं आदान–प्रदान के जरिए भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता का उत्सव मनाया जाता है, जिससे राष्ट्रीय एकता एवं आपसी समझ को सुदृढ़ किया जा सके।

आईआईटी इंदौर के 14वें दीक्षांत समारोह के अवसर पर ईबीएसबी टीम ने विविधता में एकता की भावना को बढ़ावा देने में सक्रिय भूमिका निभाई। इस समारोह में देश के विभिन्न हिस्सों से आए विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों, पूर्व छात्रों, विशिष्ट अतिथियों एवं गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। सांस्कृतिक संवाद एवं सहयोगात्मक सहभागिता के माध्यम से इस समारोह ने भारत की विविध परंपराओं, भाषाओं तथा सांस्कृतिक विरासत के प्रति परस्पर सम्मान को प्रोत्साहित करते हुए ईबीएसबी के मूल उद्देश्यों को प्रतिबिंबित किया।

इस कार्यक्रम ने राष्ट्रीय एकता के संदेश को सुदृढ़ किया तथा सांस्कृतिक सद्भाव, सामाजिक समरसता और 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की परिकल्पना को आगे बढ़ाने वाली पहलों के प्रति आईआईटी इंदौर की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया।

आईआईटी इंदौर की ईबीएसबी टीम

क्र. सं.	नाम	पदनाम	ईमेल आईडी
1	डॉ. नीरज कुमार शुक्ला	संयोजक	ebsb@iiti.ac.in
2	डॉ. मृगेन्द्र दुबे	सदस्य	mdubey@iiti.ac.in
3	डॉ. आशीष कुमार	सदस्य	akumar@iiti.ac.in
4	डॉ. अनन्या घोषाल	सदस्य	aghoshal@iiti.ac.in
5	डॉ. अरुणा तिवारी	सदस्य	artiwari@iiti.ac.in
6	कमांडर सुनील कुमार (सेवानिवृत्त)	सदस्य सचिव	drsa@iiti.ac.in
7	श्री ललित जैन	सदस्य	lalit@iiti.ac.in
8	श्री संतोष के. शर्मा	सदस्य	santosh@iiti.ac.in

एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत गतिविधियाँ



एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम के अंतर्गत केंद्रीय विद्यालय के लगभग 200 विद्यार्थियों ने आईआईटी इंदौर का भ्रमण किया।



आईआईटी इंदौर एवं शासकीय विद्यालय, सिमरोल ने एक भारत श्रेष्ठ भारत पहल के अंतर्गत संयुक्त रूप से वसंत पंचमी–2026 समारोह का आयोजन किया।





एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम के अंतर्गत इंदौर के नेहरू स्टेडियम में आयोजित गणतंत्र दिवस समारोह–2026 हेतु आमंत्रण।



आईआईटी इंदौर एवं इंदौर स्मार्ट सिटी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री अर्थ जैन (आईएएस) ने सहयोगात्मक पहलों के अंतर्गत इंदौर शहर के विकास एवं विभिन्न गतिविधियों के लिए संयुक्त रूप से कार्य किया।



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर एवं इंदौर के प्रबंध निदेशक श्री चंद्रमौली शुक्ला (आईएएस), एमपीपीआईडीसी ने सहयोगात्मक पहलों के अंतर्गत इंदौर शहर के विकास एवं विभिन्न गतिविधियों के लिए संयुक्त रूप से कार्य किया।

आईआईटी इंदौर के एक भारत श्रेष्ठ भारत क्लब द्वारा आयोजित कार्यक्रम

आईआईटी – आईआईएम – ह्यूमैनिटी–I



आईआईटी इंदौर के एक भारत श्रेष्ठ भारत क्लब ने 8 नवंबर, 2025 को पीओडी भवन में आईआईएम इंदौर के ह्यूमैनिटी–I के साथ संयुक्त चर्चा सत्र का आयोजन किया। इस अवसर पर आईआईएम इंदौर के लगभग 25–30 विद्यार्थियों ने परिसर का भ्रमण किया तथा डिजिटल शिक्षा एवं जागरूकता के माध्यम से वंचित वर्ग के विद्यार्थियों को सशक्त बनाने के उद्देश्य से संचालित की जा रही विभिन्न पहलों पर चर्चा की।

तलाईनाका वार्ड एवं विद्यालय का शैक्षणिक भ्रमण



आईआईटी इंदौर के एक भारत श्रेष्ठ भारत क्लब के सदस्यों ने स्थानीय वार्ड एवं विद्यालय की स्थिति को समझने के उद्देश्य से निकटवर्ती गाँव तलैनाका का भ्रमण किया। इस दौरान विद्यार्थियों को अपने सपनों एवं उन्हें साकार करने के उपायों के बारे में मार्गदर्शन दिया गया। साथ ही, अध्ययन की अच्छी आदतों पर चर्चा की गई तथा सीखने की प्रक्रिया को रोचक एवं सहभागितापूर्ण बनाने के लिए रचनात्मक खेलों का आयोजन किया गया।

इस भ्रमण के दौरान विद्यालय के समक्ष एक बड़ी चुनौती भी सामने आई। विद्यालय का पुराना भवन ढह जाने के कारण वहाँ केवल 2–3 कमरे ही शेष रह गए हैं, जिसके चलते विद्यार्थियों को दो अलग–अलग पालियों में कक्षाएँ लेनी पड़ रही हैं। इससे विद्यालय के समक्ष कठिन परिस्थितियाँ उत्पन्न हो गई हैं।

विविधा – बथुकम्मा उत्सव





तेलंगाना एवं आंध्र प्रदेश की समृद्ध संस्कृति और परंपराओं को दर्शाने वाले इस उत्सव का आयोजन हर्षोल्लास एवं रंगारंग वातावरण में किया गया। इसने लोगों को एक साथ आने और सांस्कृतिक परंपराओं से जुड़ने का अवसर प्रदान किया। इस अवसर पर बाहर से लाए गए फूलों, मुख्यतः गेंदे के फूलों को कई परतों में सजाकर सुंदर बथुकम्मा तैयार किया गया। अनेक लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और बथुकम्मा बनाने की गतिविधि का आनंद लिया।

जनसंपर्क कार्यालय

जनसंपर्क कार्यालय (पीआरएलओ) भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर की सार्वजनिक छवि एवं जनसंपर्क को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह विभिन्न मंचों के माध्यम से संस्थान की उपलब्धियों, शैक्षणिक उत्कृष्टता, अनुसंधान संबंधी प्रगति, विद्यार्थी गतिविधियों तथा संस्थागत पहलों का प्रचार–प्रसार करता है। यह कार्यालय संस्थान और बाहरी हितधारकों, जिनमें मीडिया संगठन, सरकारी एजेंसियाँ, उद्योग जगत, पूर्व छात्र तथा आम जनता शामिल हैं, के बीच प्रमुख संचार माध्यम के रूप में कार्य करता है। इसके अतिरिक्त, यह मीडिया संवाद, प्रेस विज्ञप्तियों, सोशल मीडिया के माध्यम से जनसंपर्क, कार्यक्रमों के प्रचार–प्रसार तथा संस्थान से संबंधित महत्वपूर्ण सूचनाओं के प्रसार का समन्वय भी करता है।

संस्थान ने अपने आधिकारिक सोशल मीडिया मंचों के माध्यम से डिजिटल पहुँच का उल्लेखनीय विस्तार किया है। इसके आधिकारिक एक्स (ट्विटर) खाते @IITIOfficial पर लगभग 29.8 हजार, जबकि इंस्टाग्राम खाते @iitindoreofficial पर लगभग 15.2 हजार अनुयायी हैं। संस्थान के हाल ही में प्रारंभ किए गए लिंक्डइन पेज पर लगभग 23.3 हजार अनुयायी हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त, संस्थान के लिंक्डइन खाते पर लगभग 5.4 हजार अनुयायी हैं। आधिकारिक फेसबुक पेज ने भी लगभग 6.8 हजार अनुयायियों के साथ अपनी सुदृढ़ डिजिटल उपस्थिति स्थापित की है।

वर्ष 2025–26 के दौरान संस्थान ने कार्यक्रमों की योजना एवं समन्वय प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करने के लिए जनसंपर्क कार्यालय के साथ एकीकृत कार्यक्रम प्रकोष्ठ की स्थापना भी की। यह प्रकोष्ठ दीक्षांत समारोह, स्थापना दिवस, सम्मेलनों, जनसंपर्क कार्यक्रमों तथा राष्ट्रीय स्तर के दौरों जैसे संस्थागत आयोजनों के नियोजन एवं समन्वय में सहायता करता है। साथ ही, इसका उद्देश्य संस्थान की प्रमुख गतिविधियों, अभिलेखों तथा कार्यक्रमों से संबंधित दस्तावेजों का एक केंद्रीकृत भंडार विकसित करना भी है।

प्रमुख गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ (2025–26)

- संस्थान की महत्वपूर्ण शैक्षणिक, अनुसंधान संबंधी एवं संस्थागत उपलब्धियों को व्यापक मीडिया कवरेज दिलाने में सहयोग किया।
- सोशल मीडिया एवं ऑनलाइन संचार मंचों पर नियमित अपडेट के माध्यम से संस्थान की डिजिटल पहुँच को सुदृढ़ किया।
- प्रमुख संस्थागत आयोजनों, जिनमें शैक्षणिक सम्मेलन, जनसंपर्क कार्यक्रम तथा आधिकारिक दौरे शामिल हैं, के प्रचार–प्रसार एवं मीडिया प्रबंधन का समन्वय किया।
- हितधारकों की सहभागिता एवं जन–जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रेस विज्ञप्तियाँ, समाचार–पत्रिकाएँ तथा जनसंचार संबंधी सामग्री जारी की।
- संस्थान की उपलब्धियों एवं राष्ट्रीय रैंकिंग को प्रदर्शित करने वाली ब्रांडिंग एवं प्रचार संबंधी पहलों में सहयोग किया।
- मीडिया एवं बाहरी एजेंसियों तक महत्वपूर्ण घोषणाओं और सूचनाओं का समयबद्ध प्रसार सुनिश्चित किया।
- संस्थागत आयोजनों के समन्वित प्रबंधन तथा कार्यक्रम अभिलेखों के केंद्रीकृत संग्रह के लिए कार्यक्रम प्रकोष्ठ की स्थापना की।
- इन गतिविधियों के माध्यम से राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर पर संस्थान की दृश्यता और जनसंपर्क को सुदृढ़ करने में योगदान दिया।

संस्थान के कार्यक्रम एवं समारोह

सिंघासा आईटी पार्क, इंदौर में इन्क्यूबेशन एवं नवाचार केंद्र की स्थापना

मध्य प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इंदौर के सिंघासा आईटी पार्क में प्रस्तावित इन्क्यूबेशन एवं नवाचार केंद्र का डिजिटल माध्यम से भूमिपूजन किया। आईआईटी इंदौर की आईआईटीआई दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन और एमपीएसईडीसी के बीच हुए समझौता ज्ञापन (एमओयू) के माध्यम से स्थापित होने वाली यह 10,000 वर्ग फुट की सुविधा नवाचार, उद्यमिता एवं स्टार्टअप विकास को प्रोत्साहित करेगी। आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रो. सुहास एस. जोशी ने इस केंद्र की भूमिका को रेखांकित करते हुए बताया कि यहाँ उन्नत प्रोटोटाइप निर्माण प्रयोगशालाएँ, सह–कार्यस्थल, मार्गदर्शन तथा निवेश के अवसर उपलब्ध कराए जाएँगे। इस केंद्र का लक्ष्य इन्क्यूबेशन, त्वरण कार्यक्रमों, हैकाथॉन तथा वित्तपोषण पहलों के माध्यम से सात वर्षों में 100 से अधिक प्रौद्योगिकी स्टार्टअप को सहयोग प्रदान करना है। इससे इंदौर के डीप–टेक स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र को सुदृढ़ करने में सहायता मिलेगी।



सेमीकंडक्टर शिक्षा एवं अनुसंधान पर विचार–मंथन सत्र

आईआईटी इंदौर ने 25 अप्रैल 2025 को बेंगलुरु में सेमीकंडक्टर शिक्षा एवं अनुसंधान पर एक विचार–मंथन सत्र आयोजित किया, जिसमें सेमीकंडक्टर उद्योग के 50 से अधिक प्रतिष्ठित नेतृत्वकर्ताओं, संकाय सदस्यों तथा संस्थान के अधिकारियों ने भाग लिया। विद्युत अभियांत्रिकी विभाग के प्रो. संतोष कुमार विश्वकर्मा की पहल तथा पूर्व छात्र एवं कॉर्पोरेट संबंध अधिष्ठाता कार्यालय के सहयोग से आयोजित इस सत्र का उद्देश्य सेमीकंडक्टर शिक्षा, अनुसंधान तथा उद्योग–शिक्षा जगत के बीच सहयोग को सुदृढ़ करना था। आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रो. सुहास एस. जोशी ने प्रमुख अनुसंधान प्राथमिकताओं की पहचान करने तथा पाठ्यक्रमों को उद्योग की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने पर बल दिया। चर्चा में चिप डिजाइन, क्वांटम कंप्यूटिंग, उन्नत सामग्री, एआई हार्डवेयर तथा व्यावहारिक प्रशिक्षण जैसे विषय शामिल रहे, जिनका उद्देश्य भारत के सेमीकंडक्टर मिशन को आगे बढ़ाना था।



आईआईटी इंदौर के अध्ययन में कोविड–19 के विभिन्न स्वरूपों के स्वास्थ्य पर अलग–अलग प्रभावों का खुलासा

आईआईटी इंदौर के एक महत्वपूर्ण अध्ययन में, जो जर्नल ऑफ प्रोटीम रिसर्च में प्रकाशित हुआ, यह सामने आया कि सार्स–कोव–2 के विभिन्न स्वरूपों ने मानव शरीर के चयापचय तथा रोग की गंभीरता को अलग–अलग ढंग से प्रभावित किया। आईआईटी इंदौर के डॉ. हेम चंद्र झा तथा केआईएमएस, भुवनेश्वर के डॉ. निर्मल कुमार महाकुड़ के नेतृत्व में किए गए इस अनुसंधान में मशीन लर्निंग एवं बहु–ओमिक्स पद्धतियों का उपयोग करते हुए 3,134 रोगियों के नैदानिक आँकड़ों का विश्लेषण किया गया। डेल्टा स्वरूप में चयापचय एवं हार्मोन संबंधी मार्गों में सबसे अधिक व्यवधान देखे गए, जो थायरॉइड की कार्यप्रणाली में गड़बड़ी तथा हृदय संबंधी जटिलताओं में योगदान दे सकते हैं। आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रो. सुहास एस. जोशी ने कोविड–19 एवं दीर्घकालिक कोविड के लिए स्वास्थ्य सेवाओं, निदान तथा लक्षित उपचारों को आगे बढ़ाने में अंतर्विषयी अनुसंधान के महत्व को रेखांकित किया।





नर्मदा नदी क्षेत्र प्रबंधन पर राष्ट्रीय कार्यशाला

आईआईटी इंदौर ने "सतत विकास के लिए नीतिगत रूपरेखाएँ एवं नर्मदा नदी बेसिन प्रबंधन के लिए एकीकृत दृष्टिकोण" विषय पर एक राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की, जिसमें देशभर के 80 से अधिक विशेषज्ञों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में पद्मश्री प्रो. आशुतोष शर्मा, अध्यक्ष, भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (आईएनएसए), तथा डॉ. अखिलेश गुप्ता, पूर्व वरिष्ठ सलाहकार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी),

विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रो. सुहास एस. जोशी ने सतत जल संसाधन प्रबंधन एवं जलवायु–अनुकूल नीतियों के महत्व पर प्रकाश डाला। प्रो. मनीष गोयल ने एकीकृत नियोजन तथा हितधारकों के बीच सहयोग पर बल दिया। इस अवसर पर नर्मदा बेसिन, वायु प्रदूषण निगरानी तथा मध्य प्रदेश में सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के कार्यान्वयन से संबंधित तीन महत्वपूर्ण रिपोर्टों का विमोचन किया गया।

आईआईटी इंदौर में एग्रीहब प्रौद्योगिकी केंद्र का उद्घाटन



आईआईटी इंदौर में एग्रीहब प्रौद्योगिकी केंद्र का उद्घाटन मध्य प्रदेश शासन के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अपर मुख्य सचिव श्री संजय दुबे, आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रो. सुहास एस. जोशी, आईसीएआर–एनएसआरआई, इंदौर के निदेशक डॉ. कुंवर हरेंद्र सिंह तथा एग्रीहब परियोजना की प्रमुख अन्वेषक प्रो. अरुणा तिवारी की उपस्थिति में किया गया। इस केंद्र का उद्देश्य अंतर्विषयी सहयोग एवं प्रौद्योगिकी–आधारित नवाचार के माध्यम से कृषि संबंधी चुनौतियों का समाधान करना है। अत्याधुनिक एनवीडिया डीजीएक्स एच200 जीपीयू प्रणाली तथा उच्च क्षमता वाले भंडारण अवसंरचना से सुसज्जित यह केंद्र कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग तथा कृषि आँकड़ा विश्लेषण को बढ़ावा देगा। इससे सतत कृषि पद्धतियों को आगे बढ़ाने तथा प्रौद्योगिकी–आधारित समाधानों के माध्यम से किसानों को सशक्त बनाने में सहायता मिलेगी।

16वाँ आईईईई आईसीसीसीएनटी 2025



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर में कंप्यूटिंग, संचार एवं नेटवर्किंग प्रौद्योगिकियों पर 16वें आईईईई अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन (आईसीसीसीएनटी 2025) का शुभारंभ हुआ। छह दिवसीय हाइब्रिड सम्मेलन का उद्घाटन आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रो. सुहास एस. जोशी ने किया। प्रो. सूर्या प्रकाश एवं प्रो. प्रकाश दुरईसामी के नेतृत्व में आयोजित इस सम्मेलन में 99 देशों के प्रतिभागियों ने भाग लिया तथा 10,000 से अधिक शोध–पत्र प्राप्त हुए, जिससे यह एशिया का सबसे बड़ा विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अभियांत्रिकी एवं गणित (एसटीईएम) सम्मेलन बना। सम्मेलन में मुख्य व्याख्यान, तकनीकी सत्र, पैनल चर्चाएँ तथा पहली बार आयोजित उद्योग प्रदर्शनी शामिल रही। इस आयोजन ने विश्वभर के शैक्षणिक संस्थानों, उद्योग जगत तथा अनुसंधान संगठनों के बीच सहयोग को प्रोत्साहित किया।

13वाँ दीक्षांत समारोह 2025

आईआईटी इंदौर ने अपना 13वाँ दीक्षांत समारोह आयोजित किया, जिसमें स्नातक, स्नातकोत्तर एवं डॉक्टरेट कार्यक्रमों के 809 विद्यार्थियों को उपाधियाँ प्रदान की गईं। इस समारोह में एचसीएल के सह–संस्थापक पद्म भूषण डॉ. अजय चौधरी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे, जबकि शासी मंडल के अध्यक्ष डॉ. के. शिवन ने समारोह की अध्यक्षता की। आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रो. सुहास एस. जोशी ने समारोह का संचालन किया। कंप्यूटर विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग के श्री कदम माधव मुकुंद को स्नातक होने वाले सभी विद्यार्थियों में सर्वश्रेष्ठ शैक्षणिक प्रदर्शन के लिए राष्ट्रपति स्वर्ण पदक प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त, शैक्षणिक उत्कृष्टता, अनुसंधान तथा समग्र प्रदर्शन के लिए कई अन्य विद्यार्थियों को भी संस्थान के पदकों एवं पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।



आईआईटी इंदौर में जैवविज्ञान एवं सततता के स्कूलों का शुभारंभ



आईआईटी इंदौर एवं मेहता फैमिली फाउंडेशन (एमएफएफ) ने मेहता फैमिली स्कूल ऑफ बायोसाइंसेज एंड बायोमेडिकल इंजीनियरिंग तथा मेहता फैमिली स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी की स्थापना की घोषणा की। यह पहल 18 महीनों की रणनीतिक योजना का परिणाम है तथा स्वास्थ्य सेवा, जैव प्रौद्योगिकी, सततता, जलवायु अध्ययन एवं ऊर्जा प्रणालियों में शिक्षा और अनुसंधान को आगे बढ़ाने की साझा प्रतिबद्धता को दर्शाती है। ये स्कूल आईआईटी इंदौर परिसर में स्थित एक समर्पित, अत्याधुनिक भवन से संचालित होंगे, जिसमें उन्नत प्रयोगशालाएँ एवं अंतर्विषयी अनुसंधान केंद्र होंगे। इन स्कूलों में स्नातक, स्नातकोत्तर, डॉक्टरेट तथा प्रमाणपत्र कार्यक्रम संचालित किए जाएँगे। इनका उद्देश्य नवाचार को प्रोत्साहित करना तथा वैश्विक वैज्ञानिक एवं पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान करने के लिए भावी नेतृत्वकर्ताओं को तैयार करना है।

स्नातक ओरिएंटेशन कार्यक्रम 2025



आईआईटी इंदौर ने 25 जुलाई 2025 को नवप्रवेशित स्नातक विद्यार्थियों के लिए ओरिएंटेशन कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किया। इसमें विभिन्न स्नातक कार्यक्रमों के लगभग 502 विद्यार्थियों का स्वागत किया गया, जिनमें नवप्रारंभित बैचलर ऑफ डिजाइन (बी.डिज़ाइन) कार्यक्रम के 16 विद्यार्थी शामिल थे। इस अवसर पर मेजर जनरल गौतम महाजन, सेना मेडल, उप कमांडेंट एवं मुख्य प्रशिक्षक, एमसीटीई महू, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। अपने संबोधन में आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रो. सुहास एस. जोशी ने विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों को बधाई दी तथा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता पर बल दिया। 26 जुलाई 2025 से प्रारंभ हुए अभिमुखीकरण कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों को शैक्षणिक गतिविधियों, अनुसंधान, नवाचार, प्लेसमेंट, छात्र कार्य, साइबर सुरक्षा, सुरक्षा व्यवस्था, छात्रावासों, स्वास्थ्य सेवाओं, पुस्तकालय सुविधाओं तथा अंतरराष्ट्रीय संपर्क गतिविधियों से परिचित कराया गया।

आईआईटी इंदौर एवं एसएफआरआई जबलपुर के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर तथा राज्य वन अनुसंधान संस्थान (एसएफआरआई), जबलपुर ने मानव–वन्यजीव संघर्ष की चुनौतियों के समाधान एवं सतत वन प्रबंधन को बढ़ावा देने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा उन्नत प्रौद्योगिकियों के उपयोग हेतु एक समझौता ज्ञापन पर



हस्ताक्षर किए। इस सहयोग का मुख्य उद्देश्य रेलवे विस्तार तथा वन्यजीवों के आवासों के निकट अन्य अवसंरचना परियोजनाओं से उत्पन्न चुनौतियों के लिए नवाचारी समाधान विकसित करना है। इस समझौता ज्ञापन पर आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रो. सुहास एस. जोशी तथा एसएफआरआई के निदेशक श्री प्रदीप वासुदेव की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए गए। इस साझेदारी का उद्देश्य अनुसंधान उत्कृष्टता, तकनीकी नवाचार तथा क्षेत्रीय स्तर पर कार्यान्वयन को एकीकृत करके मध्य प्रदेश में वन्यजीव संरक्षण एवं वानिकी अनुसंधान को सुदृढ़ करना है।

ल्यूकेमिया के बेहतर उपचार के लिए आईआईटी इंदौर ने नवीन औषधि प्रौद्योगिकी का हस्तांतरण



आईआईटी इंदौर ने तीव्र लिम्फोब्लास्टिक ल्यूकेमिया (एएलएल) के उपचार हेतु एक नवीन प्रौद्योगिकी का डीके बायोफार्मा को हस्तांतरण करके कैंसर अनुसंधान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। जैवविज्ञान एवं जैवचिकित्सा अभियांत्रिकी विभाग के प्रो. अविनाश सोनवणे एवं उनकी टीम द्वारा विकसित अभियांत्रिकीकृत एल–एस्पैराजिनेज औषधि को मौजूदा उपचारों की तुलना में अधिक सुरक्षित, प्रभावी, स्थिर एवं किफायती

बनाने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। प्रयोगशाला अध्ययनों में इस औषधि ने ल्यूकेमिया कोशिकाओं के 85 प्रतिशत से अधिक को नष्ट करने की क्षमता प्रदर्शित की है। साथ ही, यह वर्तमान उपचार पद्धतियों से जुड़े गंभीर दुष्प्रभावों को कम करने की क्षमता भी रखती है। इस प्रौद्योगिकी का हस्तांतरण रोगियों, विशेषकर बच्चों एवं युवा वयस्कों के लिए उन्नत एवं सुलभ ल्यूकेमिया उपचार उपलब्ध कराने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

एग्रीकनेक्ट कार्यशाला



आईआईटी इंदौर में 16 सितंबर 2025 को दो दिवसीय एग्रीकनेक्ट कार्यशाला का उद्घाटन किया गया। इसमें प्रौद्योगिकी विकासकर्ताओं, कृषि क्षेत्र के हितधारकों, शोधकर्ताओं, किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ), गैर–सरकारी संगठनों तथा किसानों को एक साझा मंच पर लाया गया। आईआईटी इंदौर, आईसीएआर–एनएसआरआई इंदौर, आईसीएआर–सीआईएई भोपाल तथा सी–डैक पुणे द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित इस कार्यशाला को इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (एमईआईटीवाई) तथा मध्य प्रदेश शासन के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग का सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यशाला का उद्देश्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं मशीन लर्निंग (एआई/एमएल), ड्रोन, बिग डेटा तथा परिशुद्ध कृषि के उपयोग से भारतीय कृषि को सुदृढ़ करना था। एमईआईटीवाई के संयुक्त सचिव श्री के. के. सिंह ने विशिष्ट अतिथि के रूप में भाग लिया, जबकि आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रो. सुहास एस. जोशी ने तकनीकी नवाचारों को किसानों के लिए व्यावहारिक समाधानों में परिवर्तित करने की आवश्यकता पर बल दिया। एग्रीहब परियोजना की प्रमुख अन्वेषक प्रो. अरुणा तिवारी ने बताया कि कार्यशाला में नवाचारों का प्रदर्शन, विशेषज्ञ व्याख्यान तथा डिजिटल कृषि, फसल सुधार, ड्रोन अनुप्रयोगों और एआई–आधारित रोग एवं कीट निदान जैसे विषयों पर सहयोगात्मक चर्चा पर विशेष ध्यान दिया गया।

79वाँ स्वतंत्रता दिवस



आईआईटी इंदौर में 15 अगस्त 2025 को 79वाँ स्वतंत्रता दिवस उत्साह एवं देशभक्ति की भावना के साथ मनाया गया। समारोह का शुभारंभ संस्थान के निदेशक प्रो. सुहास जोशी द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराने तथा राष्ट्रगान के साथ हुआ। अपने संबोधन में प्रो. जोशी ने राष्ट्र निर्माण, नवाचार एवं सामूहिक उत्तरदायित्व के महत्व पर प्रकाश डाला। संकाय सदस्यों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों ने समारोह में उत्साहपूर्वक भाग लिया। शारीरिक स्वास्थ्य, पर्यावरणीय सततता तथा एकता को बढ़ावा देने के लिए साइकिल रैली भी आयोजित की गई। इस आयोजन ने राष्ट्रीय प्रगति एवं विकास में योगदान देने के प्रति गौरव, एकजुटता और प्रतिबद्धता की भावना को सुदृढ़ किया।



आईआईटी इंदौर में क्षमता विस्तार संबंधी अवसंरचना परियोजनाओं का शिलान्यास

आईआईटी इंदौर ने क्षमता विस्तार संबंधी अवसंरचना परियोजनाओं के शिलान्यास समारोह के साथ एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की। इन परियोजनाओं का वर्चुअल उद्घाटन श्री नरेंद्र मोदी द्वारा किया गया। उच्च शिक्षा वित्तपोषण एजेंसी (एचईएफए) के माध्यम से वित्तपोषित 624.57 करोड़ की चरण–III विस्तार परियोजना में नए शैक्षणिक भवन, आवासीय सुविधाएँ, औद्योगिक अनुसंधान पार्क, डिजाइन विभाग, विद्यार्थी गतिविधि केंद्र तथा अन्य आधुनिक अवसंरचना शामिल हैं। इस समारोह में मध्य प्रदेश का प्रतिनिधित्व करते हुए श्री तुलसी सिलावट उपस्थित रहे। इनके साथ संकाय सदस्यों, विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों ने भी भाग लिया। आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रो. सुहास एस. जोशी ने कहा कि यह विस्तार संस्थान के शैक्षणिक, अनुसंधान एवं नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र को सुदृढ़ करेगा तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्वकर्ता बनने के संस्थान के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाएगा।

राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 2025



आईआईटी इंदौर के रसायन विज्ञान विभाग के सह–प्राध्यापक डॉ. देबायन सरकार को भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा शुद्ध विज्ञान श्रेणी में प्रतिष्ठित राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 2025 से सम्मानित किया गया। राष्ट्रीय शिक्षक दिवस के अवसर पर भारत के माननीय राष्ट्रपति द्वारा प्रदान किया गया यह पुरस्कार नवाचारी, समावेशी एवं विद्यार्थी–केंद्रित शिक्षण पद्धतियों में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए दया गया। डॉ. सरकार की यह उपलब्धि शैक्षणिक उत्कृष्टता के प्रति उनके समर्पण तथा विद्यार्थियों को अधिगम, अनुसंधान एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के लिए प्रेरित करने के उनके प्रयासों को रेखांकित करती है। यह सम्मान उच्च शिक्षा एवं शिक्षण में उत्कृष्टता के प्रति आईआईटी इंदौर की प्रतिबद्धता को और सुदृढ़ करता है।

स्वच्छता पखवाड़ा 2025

स्वच्छता पखवाड़ा 2025 के अंतर्गत आईआईटी इंदौर ने स्वच्छता, स्वास्थ्य एवं पर्यावरणीय सततता को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न पहलें



आयोजित कीं। विशेष अभियान 5.0 के अंतर्गत आईआईटी समुदाय की सक्रिय भागीदारी से सिमरोल पुलिस स्टेशन में 'आईआईटीआई समुदाय द्वारा श्रमदान' कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। संस्थान ने परिसर की स्वच्छता एवं जनस्वास्थ्य में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले सफाईमित्रों के लिए स्वास्थ्य जाँच शिविर भी आयोजित किया। इसके अतिरिक्त, मेघदूत सरोवर में सफाई अभियान तथा वृक्षारोपण गतिविधि में सफाईमित्रों एवं समुदाय के सदस्यों ने भाग लिया। इन पहलों ने स्वच्छता, सततता, सामुदायिक कल्याण तथा नागरिक उत्तरदायित्व के प्रति आईआईटी इंदौर की प्रतिबद्धता को सुदृढ़ किया।

मेहता फैमिली स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटीः सततता की प्रमुख चुनौतियों पर पैनल चर्चा



आईआईटी इंदौर के मेहता फैमिली स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी ने जल, जलवायु, ऊर्जा एवं पर्यावरणीय अर्थशास्त्र से संबंधित प्रमुख सततता चुनौतियों पर एक पैनल चर्चा आयोजित की। इसमें नीतियों, प्रौद्योगिकी तथा सामाजिक प्रभाव के दृष्टिकोण से इन मुद्दों का विश्लेषण किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता मेहता फैमिली फाउंडेशन के श्री राहुल मेहता ने की तथा आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रो. सुहास एस. जोशी ने सह–अध्यक्षता की। पैनल में अमेरिका के पर्ड्यू विश्वविद्यालय के प्रो. अनंत ग्रामा तथा कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, सैन डिएगो के प्रो. शंकर सुब्रमण्यम शामिल हुए। चर्चा का संचालन मेहता फैमिली स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी की प्रमुख प्रो. प्रीति शर्मा ने किया।

अद्वैतः भावी विश्व के लिए दृष्टि



आईआईटी इंदौर में मध्य प्रदेश शासन के संस्कृति विभाग के तत्वावधान में आचार्य शंकर सांस्कृतिक एकता न्यास द्वारा 'अद्वैतः भावी विश्व के लिए दृष्टि' विषय पर एक दार्शनिक व्याख्यान आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में ब्राजील के पद्मश्री आचार्य जोनास मासेट्टी के साथ स्वामी शुद्धिदानंद एवं स्वामिनी सद्विद्यानंद सरस्वती ने भाग लिया। वक्ताओं ने आधुनिक युग में आत्मबोध एवं सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहित करने में अद्वैत दर्शन की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में राहुल आर. वेल्लाल एवं उनकी टीम द्वारा कर्नाटक संगीत की मनमोहक प्रस्तुति भी दी गई। इस आयोजन में आईआईटी इंदौर के संकाय सदस्यों, विद्यार्थियों, कर्मचारियों तथा आमंत्रित अतिथियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

राजभाषा समीक्षा बैठक



आईआईटी इंदौर ने इंदौर के द पार्क होटल में आयोजित राजभाषा संबंधी संसदीय राजभाषा समिति की प्रदर्शनी एवं समीक्षा बैठक में भाग लिया तथा राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार एवं कार्यान्वयन के लिए किए जा रहे प्रयासों को प्रदर्शित किया। संस्थान ने अपने हिंदी प्रकाशनों, प्रशासनिक कार्यप्रणालियों तथा 'विज्ञान पर चर्चा' एवं शोध पत्रिका जैसे नवाचारी कार्यक्रमों की जानकारी प्रस्तुत की। संसदीय राजभाषा समिति ने आईआईटी इंदौर के प्रयासों की सराहना की तथा राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन एवं प्रचार–प्रसार के लिए संस्थान को 'अच्छी' श्रेणी प्रदान की।

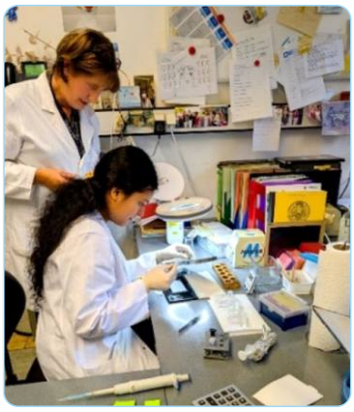

जर्मनी का दौरा

आईआईटी इंदौर के मेहता फैमिली स्कूल ऑफ बायोसाइंसेज एंड बायोमेडिकल इंजीनियरिंग के दस पीएचडी शोधार्थियों ने भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय तथा जर्मनी के संघीय विदेश कार्यालय द्वारा वित्तपोषित स्पार्क–जीआईएएनटी परियोजना के अंतर्गत जर्मनी के वुर्ज़बर्ग विश्वविद्यालय में 'हैंड्स–ऑन ऑर्गेनॉइड एंड इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोपी' कार्यशाला में भाग लिया। विद्यार्थियों को ऑर्गेनॉइड विकास एवं इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोपी का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस परियोजना का संयुक्त नेतृत्व आईआईटी इंदौर के प्रो. अविनाश सोनवणे तथा वुर्ज़बर्ग विश्वविद्यालय के प्रो. श्रीकांत कर्नाटी कर रहे हैं। इस दौरे के दौरान शोधार्थियों ने नोबेल पुरस्कार विजेता एवं एक्स–किरणों के खोजकर्ता प्रो. विल्हेम कॉनराड रॉन्टगन की प्रयोगशाला का भी भ्रमण किया।

मालवा केमिकल कॉन्क्लेव 2025



आईआईटी इंदौर के रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग ने 13 दिसंबर 2025 को प्रथम मालवा केमिकल कॉन्क्लेव 2025 का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इस कार्यक्रम में रासायनिक अभियांत्रिकी क्षेत्र में सहयोग को सुदृढ़ करने के लिए उद्योग जगत के नेतृत्वकर्ताओं, नीति–निर्माताओं एवं शिक्षाविदों ने भाग लिया। भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) के सहयोग से आयोजित इस कॉन्क्लेव में 'विकसित भारत' की परिकल्पना के अनुरूप उद्योग संबंधी चुनौतियों, नवाचार, सततता तथा मानकीकरण पर ध्यान केंद्रित किया गया। आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रो. सुहास एस. जोशी ने अपने संबोधन में तकनीकी एवं सामाजिक प्रगति को गति देने में शिक्षा जगत और उद्योग के बीच साझेदारी के महत्व पर बल दिया। कार्यक्रम में शैक्षणिक एवं अनुसंधान संबंधी अवसरों पर भी प्रकाश डाला गया। इनमें जुलाई 2026 से रासायनिक प्रक्रिया अभिकल्पना एवं बुद्धिमत्ता में नए एम.टेक. कार्यक्रम का शुभारंभ भी शामिल था।

एआईएमटीडीआर 2025



आईआईटी इंदौर ने 11 से 13 दिसंबर 2025 तक 10वें अंतरराष्ट्रीय एवं 31वें अखिल भारतीय विनिर्माण प्रौद्योगिकी, डिजाइन एवं अनुसंधान सम्मेलन (एआईएमटीडीआर 2025) का सफलतापूर्वक आयोजन किया। 'हरित विनिर्माण' विषय पर केंद्रित इस सम्मेलन में शिक्षा जगत, उद्योग तथा अनुसंधान एवं विकास संगठनों के 650 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। यह आईआईटी इंदौर में आयोजित अब तक का सबसे बड़ा सम्मेलन रहा। सम्मेलन के दौरान 44 तकनीकी सत्रों में कुल 371 शोध–पत्र प्रस्तुत किए गए। इसके अतिरिक्त, मुख्य व्याख्यान, स्मृति व्याख्यान तथा प्रौद्योगिकी प्रदर्शनियाँ भी आयोजित की गईं। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रो. सुहास एस. जोशी ने जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने में सतत विनिर्माण के महत्व पर बल दिया। सम्मेलन का समापन नवाचार–आधारित एवं पर्यावरण के प्रति उत्तरदायी विनिर्माण पद्धतियों को बढ़ावा देने के नए संकल्प के साथ हुआ।



तकनीकी हिंदी संगोष्ठी 2025

आईआईटी इंदौर ने आईआईटी जोधपुर तथा सीएसआईआर–निस्पर, नई दिल्ली के सहयोग से अभ्युदय–3 के अंतर्गत तकनीकी हिंदी संगोष्ठी 2025 का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इस संगोष्ठी का उद्देश्य विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अनुसंधान एवं नवाचार के क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करना था। इसमें प्रतिष्ठित शिक्षाविदों, वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं एवं विद्यार्थियों ने आमंत्रित व्याख्यानों, तकनीकी शोध–पत्र प्रस्तुतियों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा विज्ञान संचार संबंधी गतिविधियों में भाग लिया। कार्यक्रम में हिंदी में तकनीकी एवं वैज्ञानिक विमर्श को सुदृढ़ करने तथा ज्ञान को समाज के लिए अधिक सुलभ बनाने संबंधी पहलों को रेखांकित किया गया। उत्कृष्ट शोध प्रस्तुतियों को सम्मानित किया गया, जबकि चर्चाओं में शिक्षा, नवाचार एवं राष्ट्र निर्माण में स्थानीय भाषाओं के महत्व पर बल दिया गया।



77वाँ गणतंत्र दिवस

आईआईटी इंदौर में 77वाँ गणतंत्र दिवस अत्यंत उत्साह एवं देशभक्ति की भावना के साथ मनाया गया। समारोह का शुभारंभ संस्थान के निदेशक प्रो. सुहास जोशी द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराने तथा राष्ट्रगान के साथ हुआ। विद्यार्थियों ने देशभक्ति गीतों, नृत्य एवं संगीत प्रस्तुतियों से सुसज्जित एक जीवंत सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया, जिसमें भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत एवं एकता की भावना झलकी। संकाय सदस्यों, कर्मचारियों, विद्यार्थियों तथा उनके परिवारों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस कार्यक्रम ने राष्ट्रीय गौरव एवं एकजुटता की भावना को सुदृढ़ किया और संस्थान के समस्त समुदाय के लिए इस समारोह को यादगार एवं प्रेरणादायक बनाया।

मैग्नम ओपस 2026

आईआईटी इंदौर 30 जनवरी से 1 फरवरी 2026 तक 'मैग्नम ओपस 2026' नामक अपने वार्षिक पूर्व छात्र समारोह का आयोजन करेगा। इस वर्ष की विषयवस्तु 'रूट्स एंड रूट्स' (जड़ें और मार्ग) है। पूर्व छात्र एवं कॉर्पोरेट संबंध कार्यालय द्वारा आयोजित यह समारोह संस्थान और उसके पूर्व छात्रों के बीच स्थायी संबंधों का उत्सव मनाने के साथ–साथ मार्गदर्शन, सहयोग एवं ज्ञान के आदान–प्रदान को प्रोत्साहित करेगा। कार्यक्रम में अंडर 25 समिट, टेक एक्सपो, परिसर भ्रमण, वक्ता सत्र, पैनल चर्चाएँ, सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ तथा सम्मान समारोह शामिल होंगे। उद्योग, शिक्षा जगत, अनुसंधान, उद्यमिता एवं लोक सेवा से जुड़े पूर्व छात्रों को एक मंच पर लाकर मैग्नम ओपस 2026 का उद्देश्य आजीवन संबंधों को सुदृढ़ करना तथा आईआईटी इंदौर की निरंतर प्रगति एवं प्रभाव को बढ़ावा देना है।



पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय का दौरा

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर के प्रतिनिधिमंडल ने पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय का दौरा किया। इस प्रतिनिधिमंडल में प्रो. प्रभात कुमार उपाध्याय, प्रो. मनीष कुमार गोयल, प्रो. प्रीति शर्मा, प्रो. परिमल कर तथा प्रो. हितेंद्र कुमार शामिल थे। दौरे का उद्देश्य अंतरिक्ष जैवचिकित्सा, पुनर्योजी चिकित्सा तथा नैदानिक अनुप्रयोगों पर केंद्रित स्वास्थ्य अनुसंधान में सहयोग की संभावनाओं का पता लगाना था। प्रतिनिधिमंडल ने पुनर्योजी चिकित्सा के मैकगोवन संस्थान के निदेशक डॉ. चंदन के. सेन के साथ चर्चा की तथा विश्वविद्यालय के अग्रणी अंतरिक्ष जैवचिकित्सा कार्यक्रम के बारे में जानकारी प्राप्त की। श्री जेफ व्हाइटहेड, डॉ. शाश्वती रॉय तथा डॉ. शोमिता स्टाइनर के साथ संवाद से भविष्य में शैक्षणिक एवं अनुसंधान सहयोग की संभावनाएँ और सुदृढ़ हुईं। इस दौरे के समन्वय में सहयोग के लिए डॉ. कन्हैया सिंह के प्रति विशेष आभार व्यक्त किया गया।





बेंगलुरु चौप्टर मिलन समारोह

आईआईटी इंदौर ने 17 जनवरी 2026 को बेंगलुरु के एमएलआर कन्वेंशन सेंटर, व्हाइटफील्ड में अपना छठा पूर्व छात्र मिलन समारोह तथा दूसरा बेंगलुरु चौप्टर मिलन समारोह सफलतापूर्वक आयोजित किया। इस कार्यक्रम में 173 से अधिक पूर्व छात्र तथा संकाय सदस्यों, संस्थान के अधिकारियों एवं अतिथियों सहित लगभग 235 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस समारोह ने पूर्व छात्रों को अपने संस्थान से पुनः जुड़ने, व्यावसायिक नेटवर्क को सुदृढ़ करने तथा सहयोग के नए अवसर तलाशने के लिए एक मंच प्रदान किया। अपने संबोधन में आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रो. सुहास एस. जोशी ने विद्यार्थियों के मार्गदर्शन, नवाचार को सहयोग तथा अनुसंधान को आगे बढ़ाने में पूर्व छात्रों की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का समापन संवादात्मक चर्चाओं, नेटवर्किंग सत्रों एवं सांस्कृतिक मेल–मिलाप के साथ हुआ, जिससे आईआईटी इंदौर और उसके पूर्व छात्र समुदाय के बीच संबंध और सुदृढ़ हुए।

दिशा 2.0



दिशा 2.0 (सफल उपयोग एवं अंगीकरण के लिए नवाचारों का विकास) पुरस्कार समारोह आईआईटी इंदौर में आयोजित किया गया। इसमें डिजिटल स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में नवाचार को आगे बढ़ाने वाले उत्कृष्ट स्टार्टअप, परियोजनाओं एवं फेलो को सम्मानित किया गया। भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अंतर्गत राष्ट्रीय अंतर्विषयी साइबर–भौतिक प्रणाली मिशन (एनएम–आईसीपीएस) के तहत आईआईटीआई दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन द्वारा कार्यान्वित यह कार्यक्रम अनुसंधान को प्रभावशाली स्वास्थ्य समाधानों में परिवर्तित करने में सहायता प्रदान करता है। पुरस्कार विजेताओं को एआई–आधारित नैदानिक निर्णय सहायता, स्वास्थ्य सेवा संबंधी आँकड़ा विश्लेषण तथा उभरती डिजिटल स्वास्थ्य प्रौद्योगिकियों जैसे क्षेत्रों में उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया। दिशा 2.0 शिक्षा जगत, चिकित्सकों, स्टार्टअप एवं उद्योग के बीच सहयोग के माध्यम से भारत के स्वास्थ्य नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र को सुदृढ़ कर रहा है तथा विकसित भारत की परिकल्पना को समर्थन प्रदान कर रहा है।

सतत विकास के लिए बीआईएस–शिक्षा जगत सहयोग



आईआईटी इंदौर ने 11 फरवरी 2025 को 'सतत विकास के लिए बीआईएस–शिक्षा जगत सहयोग' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इसमें शिक्षा जगत, उद्योग, स्टार्टअप एवं सरकारी क्षेत्र के 200 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यशाला में नवाचार, गुणवत्ता एवं सततता को बढ़ावा देने में मानकीकरण के महत्व को रेखांकित किया गया। बीआईएस–आईआईटी इंदौर सहयोग के अंतर्गत अब तक 12 कार्यशालाओं के माध्यम से 800 से अधिक हितधारकों को जोड़ा गया है, सात बीआईएस विद्यार्थी चौप्टर स्थापित किए गए हैं तथा छह अनुसंधान परियोजनाओं को स्वीकृति प्रदान की गई है। कार्यक्रम में सततता, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई), बुद्धिमान परिवहन, ऊर्जा प्रणालियों तथा अवसंरचना जैसे विषयों पर चर्चा की गई। इसने राष्ट्रीय विकास एवं जलवायु अनुकूलन को समर्थन देने में शिक्षा जगत और उद्योग के बीच साझेदारी की भूमिका को सुदृढ़ किया।

17वाँ स्थापना दिवस 2026



आईआईटी इंदौर ने 17 फरवरी 2026 को अपना 17वाँ स्थापना दिवस मनाया। यह अवसर शिक्षा, अनुसंधान, नवाचार तथा सामाजिक प्रभाव के क्षेत्र में संस्थान की सत्रह वर्षों की उपलब्धियों का प्रतीक रहा। इस समारोह में एक प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी के माध्यम से संस्थान की उन्नत अनुसंधान उपलब्धियों एवं स्वदेशी नवाचारों को प्रदर्शित किया गया। अपने संबोधन में निदेशक प्रो. सुहास जोशी ने शैक्षणिक उत्कृष्टता, समावेशी विकास तथा सामाजिक चुनौतियों के समाधान के लिए अनुसंधान–आधारित उपायों के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया। विशिष्ट अतिथियों डॉ. शरद कुमार सराफ तथा श्री संकेत चतुर्वेदी ने संस्थान की तीव्र प्रगति एवं राष्ट्र निर्माण में उसके योगदान की सराहना की। समारोह में नई अनुसंधान सुविधाओं का उद्घाटन, उत्कृष्ट संकाय सदस्यों, कर्मचारियों एवं पूर्व छात्रों का सम्मान तथा भारत की समृद्ध विरासत को दर्शाने वाला सांस्कृतिक कार्यक्रम भी शामिल था।

एआई इम्पैक्ट समिट 2026



आईआईटी इंदौर ने इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट 2026 में अपनी अत्याधुनिक कृत्रिम बुद्धिमत्ता संबंधी नवाचारों का प्रदर्शन किया। इसमें स्वास्थ्य सेवा, कृषि, जलवायु सततता, स्मार्ट अवसंरचना, साइबर सुरक्षा, मैन्युफैक्चरिंग 4.0 तथा सेमीकंडक्टर जैसे क्षेत्रों में परिवर्तनकारी प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित किया गया। संस्थान ने वास्तविक जीवन की चुनौतियों के समाधान तथा राष्ट्रीय विकास को समर्थन देने के उद्देश्य से विकसित एआई–आधारित समाधानों का प्रदर्शन किया। एग्रीहब तथा आईआईटीआई दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन ने क्रमशः कृषि एवं डिजिटल स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में उन्नत एआई अनुप्रयोग प्रस्तुत किए। समिट को संबोधित करते हुए निदेशक प्रो. सुहास जोशी ने सामाजिक प्रभाव के लिए उत्तरदायी एवं समावेशी एआई के महत्व पर बल दिया। इस सहभागिता से उद्योग, स्टार्टअप एवं सरकारी एजेंसियों के साथ सहयोग की संभावनाएँ सुदृढ़ हुईं तथा एआई–आधारित अनुसंधान एवं नवाचार में आईआईटी इंदौर की अग्रणी भूमिका रेखांकित हुई।

म्यूनिख में पूर्व छात्र मिलन समारोह



आईआईटी इंदौर ने 28 फरवरी 2026 को म्यूनिख में पूर्व छात्र मिलन समारोह आयोजित किया, जिसमें विभिन्न बैचों, विषयों एवं व्यावसायिक पृष्ठभूमियों के पूर्व छात्र एकत्रित हुए। इस कार्यक्रम ने संस्थान से पुनः जुड़ने तथा वैश्विक पूर्व छात्र नेटवर्क को सुदृढ़ करने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान किया। निदेशक प्रो. सुहास जोशी ने संस्थान की प्रमुख उपलब्धियों एवं भावी पहलों की जानकारी साझा की, जबकि अधिष्ठाताओं ने शैक्षणिक विकास तथा विस्तारित होते अंतरराष्ट्रीय सहयोग पर प्रकाश डाला। पूर्व छात्रों ने मार्गदर्शन, अनुसंधान साझेदारी, उद्योग सहभागिता तथा इंटर्नशिप के अवसरों पर चर्चाओं में सक्रिय भाग लिया। कार्यक्रम का समापन औपचारिक रात्रिभोज के साथ हुआ, जिसने सार्थक संवाद को प्रोत्साहित किया तथा पूर्व छात्रों के साथ निरंतर जुड़ाव और अंतरराष्ट्रीय संपर्कों को सुदृढ़ करने के प्रति आईआईटी इंदौर की प्रतिबद्धता को दर्शाया।

टेडएक्सआईआईटीइंदौर 2026



'द अनचार्टेड लैप' विषयवस्तु पर आधारित टेडएक्स आईआईटी इंदौर 2026 ने आईआईटी इंदौर में नवाचार, प्रेरणा एवं सामुदायिक सहभागिता को एक मंच पर प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का शुभारंभ जीवंत टेडएक्स कार्निवल एवं फूड फेस्ट से हुआ, जिसमें संवादात्मक गतिविधियाँ आयोजित की गईं तथा विभिन्न पृष्ठभूमियों के 1,500 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। मुख्य सम्मेलन में प्रतिष्ठित वक्ताओंकृअनिल खोसला, मधुकर स्वयंभू, किशोर ताईद तथा यश आर. मिश्राकृने

नेतृत्व, उद्यमिता, अनुसंधान एवं रचनात्मकता से जुड़े महत्वपूर्ण विचार साझा किए। इस आयोजन ने सार्थक चर्चाओं को प्रोत्साहित किया तथा प्रतिभागियों को नए दृष्टिकोणों के साथ सोचने के लिए प्रेरित किया। दिन का समापन जिद्दी बैंड की ऊर्जावान संगीत प्रस्तुति के साथ हुआ।

इन्जेनियम 3.0



आईआईटी इंदौर के प्रमुख तकनीकी–सांस्कृतिक महोत्सव इन्जेनियम 3.0 का आयोजन 13 से 15 मार्च 2026 तक 'क्रोनोवर्स – अतीत। वर्तमान। भविष्य।' विषयवस्तु के अंतर्गत किया गया। इस महोत्सव में सांस्कृतिक प्रस्तुतियों, तकनीकी प्रदर्शनों तथा बौद्धिक गतिविधियों का समृद्ध समन्वय देखने को मिला। प्रमुख आकर्षणों में पंडित पार्थो सारथी द्वारा स्पिक मैके के अंतर्गत सरोद वादन, काव्यांजलि काव्य सत्र, 26 तकनीकी एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताएँ तथा ड्रोन सॉकर और एमसीटीई महू के सहयोग से आयोजित रक्षा प्रदर्शनी जैसी संवादात्मक प्रदर्शनियाँ शामिल थीं। डॉ. चेतन सिंह सोलंकी एवं आचार्य प्रशांत के प्रेरक व्याख्यानों, मनमोहक प्रस्तुतियों तथा 250 ड्रोनों के शानदार प्रकाश प्रदर्शन ने महोत्सव को भव्य सफलता प्रदान की।



भारत इनोवेट्स 2026

आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रो. सुहास जोशी के नेतृत्व में आईआईटी इंदौर एवं आईआईटीआई दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन के वरिष्ठ प्रतिनिधिमंडल ने 21–22 मार्च 2026 को आईआईटी बॉम्बे में आयोजित भारत इनोवेट्स 2026 के डीप–टेक प्री–समिट में भाग लिया। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा आयोजित इस सम्मेलन में प्रमुख डीप–टेक स्टार्टअप तथा सरकार, शिक्षा जगत एवं उद्योग के महत्वपूर्ण हितधारक एकत्रित हुए। इस कार्यक्रम को माननीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान ने संबोधित किया। इसमें भारत के विज्ञान एवं नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र के प्रतिष्ठित नेतृत्वकर्ताओं ने भी भाग लिया। स्वास्थ्य सेवा एवं चिकित्सा प्रौद्योगिकी (मेडटेक) क्षेत्र के समन्वयक के रूप में आईआईटी इंदौर एवं दृष्टि सीपीएस मूल्यांकन, मार्गदर्शन तथा नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र के विकास संबंधी पहलों को निरंतर सहयोग प्रदान कर रहे हैं।

लॉन्चपैडः इन्क्यूबेशन एवं नवाचार केंद्र



मध्य प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की उपस्थिति में इंदौर के सिंघासा आईटी पार्क में लॉन्चपैडरू इन्क्यूबेशन एवं नवाचार केंद्र का उद्घाटन किया गया। मध्य प्रदेश शासन के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अंतर्गत आईआईटीआई दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन तथा एमपीएसईडीसी द्वारा संयुक्त रूप से स्थापित इस केंद्र का उद्देश्य राज्य के डीप–टेक नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र को सुदृढ़ करना है। इस अवसर पर आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रो. सुहास जोशी, इसरो के पूर्व अध्यक्ष एवं आईआईटी इंदौर के शासी मंडल के अध्यक्ष डॉ. के. सिवन तथा मध्य प्रदेश शासन के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के प्रमुख सचिव श्री एम. सेल्वेंद्रन उपस्थित रहे। यह केंद्र कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स, डिजिटल स्वास्थ्य सेवा तथा उन्नत विनिर्माण के क्षेत्रों में स्टार्टअप एवं नवाचार को सहयोग प्रदान करेगा।

नई अनुसंधान एवं सततता सुविधाएँ



आईआईटी इंदौर ने 30 मार्च 2026 को प्रमुख अवसंरचना परियोजनाओं का शिलान्यास तथा उन्नत अनुसंधान सुविधाओं का उद्घाटन करके शैक्षणिक एवं अनुसंधान उत्कृष्टता की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की। आईआईटी इंदौर के शासी मंडल के अध्यक्ष डॉ. के. सिवन ने 1 मेगावाट सौर पार्क तथा केंद्रीय विद्यालय के नए भवन का शिलान्यास किया। साथ ही, उन्होंने सीजीएस उन्नत अनुसंधान परिसर तथा स्वास्थ्यएक्सआर एआर/वीआर नवाचार प्रयोगशाला का उद्घाटन किया ये अत्याधुनिक सुविधाएँ संस्थान में अनुसंधान, सततता तथा डिजिटल स्वास्थ्य सेवा संबंधी नवाचार को सुदृढ़ करेंगी। इस अवसर पर आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रो. सुहास जोशी के साथ संकाय सदस्यों, शोधकर्ताओं तथा सहयोगी संस्थानों के विशिष्ट अतिथियों ने भाग लिया।

छात्राओं में डिजिटल अधिगम एवं पठन–पाठन को बढ़ावा



सामुदायिक संपर्क तथा समावेशी शिक्षा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के अंतर्गत आईआईटी इंदौर ने समग्र शिक्षा अभियान के तहत सिमरोल स्थित नेताजी सुभाष चंद्र बोस आवासीय बालिका छात्रावास में पुस्तकालय एवं कंप्यूटर कियोस्क स्थापित किया। इस सुविधा का उद्घाटन 27 मार्च 2026 को श्रीमती मालती सिवन ने संस्थान के अधिकारियों, विद्यालय प्राधिकारियों तथा छात्राओं की उपस्थिति में किया। आईआईटी इंदौर ने अधिगम एवं डिजिटल पहुँच को बढ़ावा देने के लिए पुस्तकें, भंडारण अलमारियाँ, कंप्यूटर, यूपीएस प्रणाली, मेज एवं कुर्सियाँ उपलब्ध कराईं। इस पहल का उद्देश्य छात्राओं में पठन–पाठन की आदत, डिजिटल साक्षरता तथा स्व–अधिगम को प्रोत्साहित करना और उन्हें शैक्षणिक रूप से सशक्त बनाना है। इससे उनके सर्वांगीण विकास एवं आत्मविश्वास को बढ़ावा मिलेगा।

राष्ट्रीय जल सम्मेलन 2026



'सतत एवं आपदा–सहिष्णु भविष्य के लिए जल संसाधनों का संवर्धन' विषयवस्तु पर आधारित राष्ट्रीय जल सम्मेलन 2026 का आयोजन आईआईटी इंदौर में मेहता फैमिली स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी तथा सिविल इंजीनियरिंग विभाग द्वारा भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) एवं भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (आईएनएसए) के सहयोग से किया गया। इस सम्मेलन में नीति–निर्माताओं, शोधकर्ताओं, शिक्षाविदों तथा उद्योग विशेषज्ञों सहित 150 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसमें जल संसाधन प्रबंधन, जलवायु परिवर्तन, भू–स्थानिक प्रौद्योगिकियों तथा सतत विकास जैसे विषयों पर चर्चा की गई। आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रो. सुहास एस. जोशी ने जल सुरक्षा के लिए अनुसंधान–आधारित समाधानों के महत्व पर बल दिया, जबकि प्रो. ए. के. नेमा ने जल संबंधी उभरती चुनौतियों के समाधान में उन्नत प्रौद्योगिकियों की भूमिका को रेखांकित किया। इस आयोजन ने नीतियों, नवाचार तथा सतत जल शासन पर सार्थक संवाद को प्रोत्साहित किया।

राजभाषा समिति

काव्य पाठ प्रतियोगिता (स्वरचित)



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (के.), इंदौर के तत्वावधान में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर के संयोजन से दिनांक 11 जून, 2025 को स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया। यह प्रतियोगिता एलआरसी भवन के भू–तल स्थित सेमिनार हॉल में अपराह्न 3 बजे से आयोजित हुई। प्रतियोगिता में नराकास (के.), इंदौर के अंतर्गत विभिन्न कार्यालयों से कुल 29 प्रतिभागियों ने पंजीयन कराया, जिनमें से 24 प्रतिभागियों ने उपस्थित होकर अपनी स्वरचित कविताओं का प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण किया। प्रतिभागियों ने हिंदी भाषा की अभिव्यक्ति, साहित्यिक सौंदर्य एवं रचनात्मकता का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता में श्री सत्य प्रकाश व्यास, पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र. 1, इंदौर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। द्वितीय स्थान सुश्री अनन्या मिश्र, भारतीय प्रबंध संस्थान इंदौर तथा तृतीय स्थान श्री अंजनेय उपाध्याय, सीमा शुल्क आयुक्त कार्यालय, इंदौर को प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त डॉ. दिव्यांशु दीक्षित, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर एवं श्रीमती चेतना खांबेटे, पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय आईआईटी, इंदौर को क्रमशः प्रथम एवं द्वितीय सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए गए। कार्यक्रम का आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ तथा सभी प्रतिभागियों एवं उपस्थित अधिकारियों द्वारा इसकी सराहना की गई।

राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह



भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अंतर्गत राजभाषा विभाग द्वारा 26 जून, 2025 को नई दिल्ली स्थित भारत मण्डपम् में स्वर्ण जयंती समारोह का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम राजभाषा विभाग के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित हुआ। इस समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में भारत सरकार के ओजस्वी केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी उपस्थित थे। समारोह में विभिन्न गणमान्य अतिथियों, हिंदी अधिकारियों एवं देशभर से आए हजारों प्रतिभागियों ने सहभागिता की। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन से हुआ तथा विभिन्न हिंदी पुस्तकों एवं पत्रिकाओं का विमोचन किया गया। इस अवसर पर "सप्त सिंधु शब्द कोश" का भी लोकार्पण किया गया। अपने संबोधन में अमित शाह ने भारतीय भाषाओं को देश की एकता का सशक्त माध्यम बताया। इस समारोह में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर की ओर से कुलसचिव श्री एस. पी. होता, सहायक कुलसचिव–सह–राजभाषा अधिकारी श्री राजीव पाण्डेय एवं कनिष्ठ हिंदी अनुवादक श्री शिशिर कुमार उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान संस्थान द्वारा हिंदी पुस्तकों का भी क्रय किया गया।











हिंदी पखवाड़ा – 2025

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर द्वारा राजभाषा समिति के तत्वावधान में दिनांक 16 से 29 सितंबर, 2025 तक "हिंदी पखवाड़ा – 2025" का सफल आयोजन किया गया। इस अवधि में स्वरचित हिंदी काव्य पाठ, हिंदी निबंध, कहानी पाठ (किस्सागोई), हिंदी क्विज़, हिंदी विज्ञान पोस्टर प्रतियोगिता तथा संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन पुरस्कार सहित विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें संकाय सदस्यगण, छात्रगण, अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। हिंदी पखवाड़ा के अंतर्गत 'भारतीः काव्य सम्मेलन' एवं हिंदी कार्यशाला का भी आयोजन किया गया, जिसमें आमंत्रित कवियों ने अपनी काव्य प्रस्तुतियों एवं व्याख्यानों के माध्यम से हिंदी साहित्य एवं रचनात्मक लेखन के विविध आयामों पर प्रकाश डाला। साथ ही, विद्यार्जन संसाधन केंद्र में हिंदी पुस्तकों की विशेष प्रदर्शनी एवं विभिन्न विभागों में "दैनिक हिंदी शब्द/सुविचार" का प्रदर्शन किया गया, जिससे हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा मिला। दिनांक 29 सितंबर, 2025 को हिंदी पखवाड़ा – 2025 के समापन अवसर पर पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। समारोह में संस्थान के निदेशक प्रोफेसर सुहास एस. जोशी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस अवसर पर कुल 40 प्रतिभागियों को प्रमाण–पत्र एवं नकद पुरस्कार प्रदान किए गए। कार्यक्रम के दौरान "वि.प्र.म. विज्ञान द्य प्रौद्योगिकी द्य मानविकी" पत्रिका का विमोचन भी किया गया। समारोह के अंत में राजभाषा अधिकारी श्री राजीव पाण्डेय द्वारा सभी अतिथियों, प्रतिभागियों एवं राजभाषा समिति के सदस्यों का धन्यवाद ज्ञापित किया गया।






'भारतीः काव्य सम्मेलन' एवं हिंदी कार्यशाला

हिंदी पखवाड़ा – 2025 के अंतर्गत 'भारतीः काव्य सम्मेलन' का सफल आयोजन किया गया, जिसमें कवि राजेश कुमार, पंकज दीक्षित, धीरज चौहान एवं कान्ताप्रसाद कमल ने अपनी ओजपूर्ण एवं भावपूर्ण काव्य प्रस्तुतियों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। कार्यक्रम में देशप्रेम, सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक मूल्यों एवं मानवीय संवेदनाओं पर आधारित रचनाओं का प्रभावशाली पाठ किया गया। कार्यक्रम के अंत में आमंत्रित कवियों का सम्मान किया गया तथा हिंदी भाषा एवं साहित्य के प्रचार–प्रसार में इस प्रकार के आयोजनों की महत्ता पर प्रकाश डाला गया। साथ ही, हिंदी कार्यशाला के अंतर्गत राजेश कुमार एवं पंकज दीक्षित द्वारा काव्य विधा, छंद, अलंकार एवं रचनात्मक लेखन पर ज्ञानवर्धक व्याख्यान प्रस्तुत किए गए। प्रतिभागियों ने सक्रिय सहभागिता करते हुए अपने प्रश्न प्रस्तुत किए, जिनका कवियों ने प्रेरणादायी ढंग से समाधान किया।

संसदीय राजभाषा समिति की प्रदर्शनी एवं समीक्षा बैठक



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर ने दिनांक 6 अक्टूबर, 2025 को आयोजित संसदीय राजभाषा समिति की प्रदर्शनी एवं समीक्षा बैठक में सक्रिय सहभागिता निभाई। यह कार्यक्रम भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड द्वारा द पार्क होटल में आयोजित किया गया। बैठक की अध्यक्षता राज्य सभा सदस्य डॉ. दिनेश शर्मा ने की। बैठक में विभिन्न केंद्रीय कार्यालयों एवं संस्थानों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग एवं क्रियान्वयन की समीक्षा की गई। संस्थान की ओर से निदेशक प्रोफेसर सुहास जोशी, कुलसचिव श्री एस. पी. होता, राजभाषा अधिकारी श्री राजीव पाण्डेय तथा अन्य अधिकारियों ने सहभागिता की। प्रदर्शनी में संस्थान द्वारा हिंदी में किए जा रहे प्रशासनिक कार्यों, प्रकाशनों एवं नवाचारों को प्रदर्शित किया गया। विशेष रूप से 'विज्ञान पर चर्चा' पहल एवं 'वि.प्र.म.' शोध पत्रिका को सराहना प्राप्त हुई। संसदीय राजभाषा समिति के सदस्यों ने संस्थान द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रभावी क्रियान्वयन की प्रशंसा की। समीक्षा बैठक के दौरान संसदीय राजभाषा समिति की प्रथम उप–समिति द्वारा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर को उत्कृष्ट राजभाषा गतिविधियों के लिए "अच्छा" श्रेणी प्रदान कर सम्मानित किया गया।

तकनीकी हिंदी संगोष्ठी – 2025



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर में अभ्युदय – 3 के अंतर्गत दिनांक 05 एवं 06 जनवरी, 2026 को "तकनीकी हिंदी संगोष्ठी – 2025" का सफल आयोजन किया गया। यह संगोष्ठी भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर एवं सीएसआईआर – राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हुई। संगोष्ठी का उद्देश्य विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार के क्षेत्र में हिंदी भाषा के प्रयोग को बढ़ावा देना तथा तकनीकी ज्ञान को जनसामान्य तक पहुँचाना था। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं अतिथियों के स्वागत के साथ हुआ। उद्घाटन सत्र में प्रोफेसर सुहास जोशी, प्रोफेसर अविनाश कुमार अग्रवाल, प्रोफेसर सुनील कुमार खिजवानिया, श्री सी. बी. सिंह, प्रोफेसर संदीप चौधरी एवं प्रोफेसर राजेश कुमार ने तकनीकी हिंदी, विज्ञान संचार एवं मातृभाषा में ज्ञान–विज्ञान के महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर संगोष्ठी स्मारिका, हिंदी कैलेंडर – 2026 तथा विभिन्न हिंदी प्रकाशनों का विमोचन भी किया गया। संगोष्ठी के दौरान विज्ञान एवं अभियांत्रिकी तथा डिजिटल तकनीक एवं नवाचार विषयों पर शोध आलेख प्रस्तुति सत्र आयोजित किए गए, जिनमें देशभर के शोधार्थियों एवं शिक्षकों ने हिंदी में अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए। साथ ही विशेषज्ञ व्याख्यान, विज्ञान कवि सम्मेलन, विज्ञान जादू शो एवं सांस्कृतिक संध्या का भी आयोजन किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में पद्मश्री भेरू सिंह चौहान द्वारा प्रस्तुत लोकगीत एवं कबीर भजन विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा। समापन सत्र में तकनीकी हिंदी के विकास एवं मातृभाषा में ज्ञान प्रसार की आवश्यकता पर बल दिया गया। विभिन्न सत्रों में उत्कृष्ट शोध प्रस्तुतियों को सम्मानित किया गया। यह संगोष्ठी हिंदी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी संवाद को सशक्त बनाने तथा "ज्ञान को जन–जन तक पहुँचाने" के राष्ट्रीय उद्देश्य को आगे बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल सिद्ध हुई।

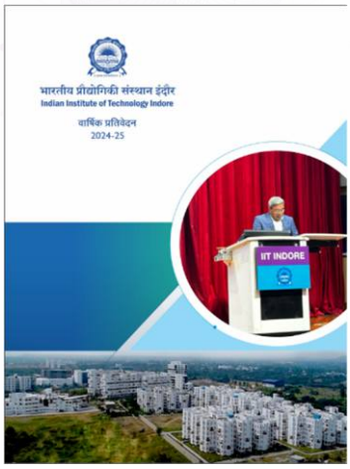

वार्षिक एवं वित्तीय प्रतिवेदन

संस्थान में प्रत्येक वर्ष अनिवार्य रूप से हिंदी एवं अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में वार्षिक प्रतिवेदन तथा वित्तीय प्रतिवेदन प्रकाशित किए जाते हैं। वार्षिक प्रतिवेदन में विगत वर्ष के दौरान विभिन्न विभागों, अनुभागों एवं केंद्रों द्वारा किए गए महत्वपूर्ण कार्यों एवं उनकी उपलब्धियों का विवरण सम्मिलित होता है, जैसे संकाय सदस्यों द्वारा प्रस्तुत शोध–पत्र, पोस्टर प्रस्तुतीकरण, प्राप्त पेटेंट, इत्यादि। इसके अतिरिक्त, इस प्रतिवेदन में वर्ष भर आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों, बैठकों एवं सम्मेलनों का भी विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया जाता है। वहीं, वित्तीय प्रतिवेदन में विभिन्न विभागों, अनुभागों एवं केंद्रों द्वारा विभिन्न मदों के अंतर्गत किए गए व्यय का विस्तृत ब्यौरा दिया जाता है। इन दोनों प्रतिवेदनों के लिए कुल मिलाकर लगभग 65,000 से अधिक अंग्रेज़ी शब्दों का हिंदी में अनुवाद किया गया।

राजभाषा समिति

संयोजकः

प्रोफेसर राजेश कुमार,

भौतिकी विभाग (19 सितंबर 2025 तक)

प्रोफेसर नीरज कुमार शुक्ला,

गणित विभाग (20 सितंबर 2025 से)

सदस्यः

प्रोफेसर शरद गुप्ता,

मेहता फैमिली स्कूल ऑफ़ बायोसाइंसेज एंड बायोमेडिकल इंजीनियरिंग

डॉ. अभिषेक यादव,

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान स्कूल

श्री नीरज कुमार सोनी,

प्रशासन अनुभाग (19 सितंबर 2025 तक)

सुश्री पूजा तिवारी, स्वास्थ्य केंद्र

सुश्री मिताली दवे,

रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग (20 सितंबर 2025 से)

राजभाषा अधिकारीः

श्री राजीव पाण्डेय (9 मार्च 2026 तक)

श्री राजेश कुमार (10 मार्च 2026 से)

सदस्य सचिवः

श्री शिशिर कुमार

संस्थान की सुविधाएँ

विद्यार्जन संसाधन केंद्र

विद्यार्जन संसाधन केंद्र (एलआरसी) संस्थान में शिक्षण, अधिगम, अनुसंधान तथा अन्य शैक्षणिक गतिविधियों के लिए आवश्यक सहयोग प्रदान कर रहा है। उपयुक्त प्रौद्योगिकी के उपयोग से यह पुस्तकालय सूचना संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति, आजीवन अधिगम को प्रोत्साहन तथा शैक्षणिक समुदाय के लिए उत्पादक वातावरण का निर्माण सुनिश्चित करता है।



चित्र 1. विद्यार्जन संसाधन केंद्र (एलआरसी) भवन

पुस्तकालय संग्रह

पुस्तकालय मुद्रित एवं डिजिटल स्वरूपों में अपने संग्रह का निरंतर विस्तार कर रहा है। इसमें शिक्षण एवं अनुसंधान से संबंधित सभी प्रमुख विषयों की पुस्तकें शामिल हैं। विद्यार्जन संसाधन केंद्र (एलआरसी) में कथा–साहित्य, साहित्य तथा समसामयिक घटनाओं, खेलकूद आदि जैसे सामान्य रुचि के विषयों पर पुस्तकों का समृद्ध संग्रह भी उपलब्ध है, जो पाठकों की अवकाश एवं मनोरंजन संबंधी पठन आवश्यकताओं को पूरा करता है। गांधीवादी अध्ययन संग्रह, हिंदी संग्रह, बाल पुस्तक संग्रह तथा मातृभाषा संग्रह जैसे विशिष्ट संग्रह विद्यार्जन संसाधन केंद्र की विशेष पहचान हैं। 31 मार्च, 2026 तक पुस्तकालय में 42,690 से अधिक मुद्रित पुस्तकें तथा 10,615 से अधिक ई–पुस्तकें उपलब्ध हैं।

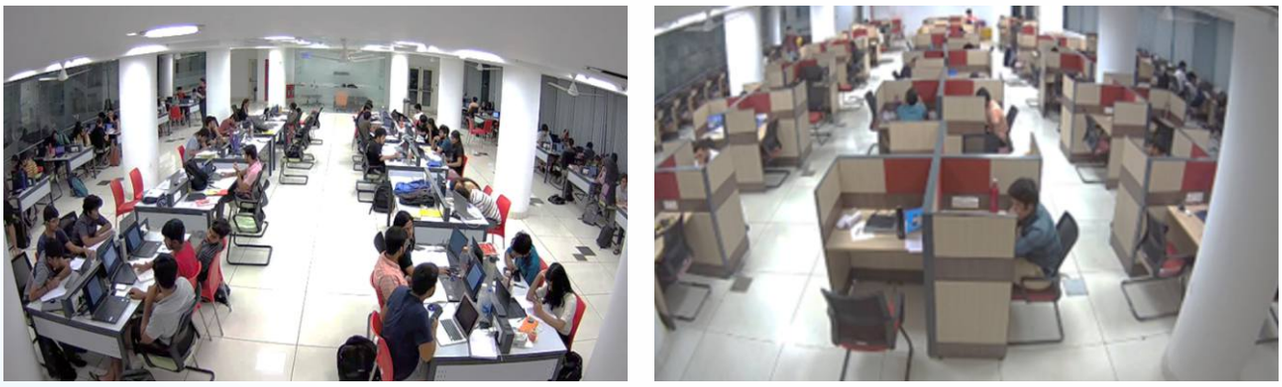

चित्र 2. स्वाध्याय कक्ष

इलेक्ट्रॉनिक संसाधन

सूचना के तीव्र विस्तार के वर्तमान युग में इलेक्ट्रॉनिक सूचना संसाधनों तक पहुँच आवश्यक है, विशेषकर शैक्षणिक परिवेश में। वर्ष 2026 के दौरान, विद्यार्जन संसाधन केंद्र (एलआरसी) ने 2,825 से अधिक ई–जर्नलों तथा 15 से अधिक डेटाबेस की सदस्यता ली है और उनकी पहुँच उपलब्ध कराई है। सदस्यता प्राप्त प्रमुख इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों में जेएसटीओआर, एसआईएएम, एसीआई मानक एवं जर्नल, साइफाइंडर, स्कोपस, मैथसाइनेट, लेक्चर नोट्स इन कंप्यूटर साइंस सहित कंप्यूटर साइंस ई–बुक्स संग्रह, इंडियास्टैट, सीएमआईई प्रोवेस,

सीएमआईई कंज्यूमर पिरामिड्स हाउसहोल्ड सर्वे, सीएसडी एंटरप्राइज कैंपस, ईपीडब्ल्यूआरएफ इंडिया टाइम सीरीज़, निंबस, ग्रामरली, मैग्ज़टर, ओवरलीफ, ट्रैक्सन, टर्निटिन फीडबैक स्टूडियो आदि शामिल हैं।

इसके अतिरिक्त, भारत सरकार की वन नेशन वन सब्सक्रिप्शन (ओएनओएस) पहल के सदस्य के रूप में, आईआईटी इंदौर के शैक्षणिक समुदाय को 13,000 से अधिक ई–जर्नलों तक पहुँच प्राप्त हो रही है।

उपयोगकर्ताओं की सुविधा के लिए सभी इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों की हाइपरलिंक सहित संपूर्ण सूची विद्यार्जन संसाधन केंद्र की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

संस्थागत रिपॉजिटरी

पुस्तकालय ने आईआईटी इंदौर के संकाय सदस्यों, विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों के रचनात्मक, शैक्षणिक एवं अनुसंधान कार्यों को संकलित, संरक्षित, व्यवस्थित करने तथा उन तक पहुँच उपलब्ध कराने के लिए व्यापक रूप से उपयोग किए जाने वाले मुक्त स्रोत डी–स्पेस सॉफ्टवेयर का उपयोग करके एक संस्थागत डिजिटल रिपॉजिटरी स्थापित की है। इस रिपॉजिटरी में 17,100 से अधिक सामग्री इकाइयाँ निम्नलिखित संग्रहों में उपलब्ध हैं: आईआईटीआई शैक्षणिक प्रकाशन (अनुसंधान लेख एवं पुस्तकें), शोध–प्रबंध एवं लघु शोध–प्रबंध, आईआईटी इंदौर की प्रौद्योगिकी संबंधी प्रमुख उपलब्धियाँ, बी.टेक. परियोजनाएँ, डिजिटल ह्यूमैनिटीज लैब, समाचार–पत्रों की कतरनें, दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए संसाधन (ऑडियो व्याख्यान), वार्षिक प्रतिवेदन, दीक्षांत समारोह प्रतिवेदन, पत्रिकाएँ एवं समाचार–पत्रिकाएँ आदि।

परिचालन एवं संदर्भ सेवा

पुस्तकालय की परिचालन सेवा कोहा–आईएलएमएस (मुक्त स्रोत सॉफ्टवेयर) के माध्यम से स्वचालित है तथा इसे आरएफआईडी प्रणाली के साथ एकीकृत किया गया है। उपयोगकर्ता आरएफआईडी स्व–सेवा कियोस्क के माध्यम से पुस्तकों एवं अन्य उधार ली गई सामग्री को जारी करा सकते हैं और वापस कर सकते हैं। 1 अप्रैल, 2025 से 31 मार्च, 2026 तक, सभी श्रेणियों के उपयोगकर्ताओं को घर पर अध्ययन हेतु कुल 18,609 दस्तावेज जारी किए गए अथवा उनका नवीनीकरण किया गया। उपयोगकर्ता श्रेणी के अनुसार परिचालन संबंधी आँकड़े नीचे दी गई तालिका में प्रस्तुत हैं:

	यूजी	पीजी	पीएच.डी. एवं आरए	संकाय सदस्य	अन्य
गृह अध्ययन हेतु जारी किए गए दस्तावेज	8499	4518	2950	1726	916

पुस्तकालय संदर्भ सेवा, नई पुस्तकों के आगमन संबंधी सूचना, नवप्रवेशित विद्यार्थियों के लिए ओरिएंटेशन कार्यक्रम, अंतर–पुस्तकालय ऋण सेवा, विषय–मार्गदर्शिकाएँ, इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों के उपयोग हेतु प्रशिक्षण सत्र, पुस्तकालय की विभिन्न सेवाओं के लिए क्यूआर कोड तथा आईआरआईएनएस पोर्टल के माध्यम से संकाय प्रोफाइल प्रबंधन जैसी सेवाएँ भी प्रदान करता है।

दस्तावेज़ वितरण सेवा पोर्टल

विद्यार्जन संसाधन केंद्र (एलआरसी) अपने संग्रह में उपलब्ध न होने वाले शोध लेखों को विभिन्न स्रोतों से प्राप्त करने की व्यवस्था करता है। यह सेवा कॉपीराइट कानूनों की सीमाओं के अंतर्गत संकाय सदस्यों, शोधार्थियों, विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों को शैक्षणिक और अनुसंधान संबंधी उद्देश्यों के लिए प्रदान की जाती है। इस सेवा को सुव्यवस्थित करने के लिए एलआरसी ने मुक्त स्रोत सॉफ्टवेयर का उपयोग करके एक "दस्तावेज़ वितरण सेवा" पोर्टल विकसित किया है। अप्रैल 2025 से मार्च 2026 की अवधि के दौरान, अन्य संस्थानों के पुस्तकालयों से 1,000 से अधिक शोध लेख प्राप्त कर आईआईटी इंदौर के उपयोगकर्ताओं को उपलब्ध कराए गए।

मातृभाषा संग्रहः

पुस्तकालय के इस मातृभाषा संग्रह अनुभाग को आईआईटी इंदौर के निदेशक, प्रो. सुहास एस. जोशी द्वारा समुदाय को समर्पित किया गया। आईआईटी इंदौर के संकाय सदस्यों एवं कर्मचारियों ने 8 भारतीय भाषाओं–संस्कृत, तेलुगु, कन्नड़, ओड़िया, मराठी, बांग्ला, गुजराती एवं हिंदी–में 1,435 से अधिक पुस्तकें दान की हैं।

स्वाध्याय

विद्यार्जन संसाधन केंद्र (एलआरसी) का स्वाध्याय स्थल विद्यार्थियों को स्वाध्याय के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करता है। यह स्थल मुख्य एलआरसी भवन से अलग स्थित है तथा उपयोगकर्ताओं के लिए 24x7 खुला रहता है। वर्ष के दौरान बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने इस सुविधा का उपयोग किया और इससे लाभान्वित हुए।

स्वाध्याय

विद्यार्जन संसाधन केंद्र (एलआरसी) का स्वाध्याय स्थल विद्यार्थियों को स्वाध्याय के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करता है। यह स्थल मुख्य एलआरसी भवन से अलग स्थित है तथा उपयोगकर्ताओं के लिए 24×7 खुला रहता है। वर्ष के दौरान बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने इस सुविधा का उपयोग किया और इससे लाभान्वित हुए।



चित्र 3. स्वाध्याय स्थल (स्वाध्याय हेतु स्थान)



चित्र 4. पुस्तकालय दल

स्वास्थ्य केंद्र



सुविधाएँ: स्वास्थ्य केंद्र संस्थान के विद्यार्थियों, शोध कर्मचारियों, अन्य कर्मचारियों तथा उनके आश्रितों को समर्पित स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करता है। यहाँ बाह्य रोगी सेवा, डे–केयर तथा सामान्य बीमारियों के लिए अंतःरोगी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। आपातकालीन चिकित्सा देखभाल एवं एम्बुलेंस सेवाएँ 24x7 उपलब्ध हैं। केंद्र में सुसज्जित फिजियोथेरेपी सेवाओं की सुविधा भी है। स्वास्थ्य केंद्र की टीम ईसीजी तथा जीआरबीएस, ट्रोपोनिन–I आदि जैसी त्वरित जाँचों सहित आवश्यक आंतरिक जाँच सुविधाएँ उपलब्ध कराती है।

नैदानिक सेवाएँ: केंद्र में उपलब्ध नैदानिक प्रयोगशाला एवं एक्स–रे सुविधा रोगियों को व्यापक स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करने में सहायक हैं।

विशेषज्ञ परामर्श सुविधाएँ: दंत चिकित्सा, नाक–कान–गला (ईएनटी), सामान्य चिकित्सा, प्रसूति एवं स्त्री रोग, बाल रोग, मनोचिकित्सा, नेत्र रोग, अस्थि रोग, आहार विज्ञान तथा त्वचा रोग के विशेषज्ञों से परामर्श की सुविधा उपलब्ध है। संस्थान के स्वास्थ्य केंद्र में दंत चिकित्सा की छोटी प्रक्रियाएँ, प्रसवपूर्व अनुवर्ती जाँच तथा ईएनटी से संबंधित छोटी प्रक्रियाएँ भी की जाती हैं। ईएनटी बाह्य रोगी विभाग की नैदानिक सुविधाओं के उन्नयन से उच्चतर चिकित्सा केंद्रों में रेफर किए जाने वाले मामलों में कमी आई है।

उच्च स्तरीय जाँच एवं उपचार की आवश्यकता वाले मामलों को इंदौर शहर के सूचीबद्ध अस्पतालों में रेफर किया जाता है।

निवारक एवं प्रोत्साहक स्वास्थ्य देखभाल गतिविधियाँ

बीमारियों की रोकथाम, शीघ्र पहचान तथा समय पर उपचार शुरू करने के लिए स्वास्थ्य केंद्र की टीम द्वारा विभिन्न गतिविधियाँ संचालित की जाती हैं। संस्थान के कर्मचारियों के लिए वार्षिक स्वास्थ्य जाँच आयोजित की गई। निवारक स्वास्थ्य देखभाल एवं स्व–स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए स्वास्थ्य जागरूकता सत्र आयोजित किए गए। निवारक एवं प्रोत्साहक स्वास्थ्य देखभाल गतिविधि के अंतर्गत परिसर सहायक कर्मचारियों तथा संस्थान के वाहन चालकों जैसे अग्रिम पंक्ति के कर्मियों की बुनियादी स्वास्थ्य जाँच भी आयोजित की गई। मधुमेह एवं उच्च रक्तचाप की जाँच हेतु शिविर आयोजित किए गए, जिससे इन रोगों की शीघ्र पहचान तथा उपचार प्रबंधन में सहायता मिली।

वर्ष 2025–2026 के लिए स्वास्थ्य केंद्र के संख्यात्मक आँकड़े

विवरण	कुल संख्या
कुल बाह्य रोगी (ओपीडी)	22,753
डे–केयर एवं अंतःरोगी (आईपीडी)	1,084
आपातकालीन मामले	78
ट्रॉमा एवं चोट के मामले	525

विवरण	कुल संख्या
आंतरिक जाँचें	1,560
ओपीडी समय के बाद देखे गए मामले	2,926
फिजियोथेरेपी	2,902



रक्तदान शिविर 2026 कुल रक्तदानः 432

केंद्रीय कार्यशाला



आईआईटी इंदौर की केंद्रीय कार्यशाला की स्थापना शैक्षणिक सत्र 2011–2012 में की गई थी। यह प्रयोगशाला कक्षाओं के संचालन तथा अनुसंधान एवं परियोजनाओं से संबंधित घटकों के निर्माण का कार्य करती है। यहाँ आधुनिक, अत्याधुनिक सुविधाओं एवं उच्चस्तरीय अनुसंधान उपकरणों से युक्त उत्कृष्ट अवसंरचना उपलब्ध है। केंद्रीय कार्यशाला में सात अनुभाग हैं–मशीनिंग, वेल्डिंग, फॉर्मिंग, फाउंड्री, इंजेक्शन मोल्डिंग, फिटिंग एवं बढ़ईगीरी। इन अनुभागों में दक्ष एवं उच्च कौशलयुक्त कर्मचारियों की टीम कार्यरत है।

कार्यशाला में टर्निंग, मिलिंग, ड्रिलिंग, सरफेस ग्राइंडिंग, इंजेक्शन मोल्डिंग, शीट कटिंग, बेंडिंग, ड्रॉइंग, वायर ड्रॉइंग, निबलिंग, आर्क वेल्डिंग, एमआईजी/एमएजी वेल्डिंग, टीआईजी वेल्डिंग, गैस वेल्डिंग, प्लाज्मा एयर कटिंग, इंडक्शन हीटिंग, धातु ढलाई, फिटिंग तथा बढ़ईगीरी से संबंधित निर्माण कार्य किए जाते हैं।

इसकी स्थापना विद्यार्थियों को सरल यांत्रिक घटकों के उत्पादन एवं निर्माण का व्यावहारिक अनुभव प्रदान करने के उद्देश्य से की गई थी। यह मशीन टूल्स एवं कार्य–मेज पर कंप्यूटर के उपयोग पर आधारित एक छोटा, प्रभावी एवं सफल कार्य मॉडल है। विद्यार्थियों को विभिन्न विनिर्माण विधियों, सामग्रियों एवं घटकों, प्रक्रियाओं तथा वाणिज्यिक विनिर्माण एवं असेंबली प्रक्रियाओं में वर्तमान में उपयोग किए जाने वाले सॉफ्टवेयर से परिचित कराया जाता है। यह अनुभव विद्यार्थियों को कुशल इंजीनियर के रूप में विकसित करने में अत्यंत सहायक है।

केंद्रीय कार्यशाला तकनीकी विशेषज्ञता एवं अवसंरचनात्मक सहायता प्रदान करके विद्यार्थियों और शोधार्थियों को उनके अनुसंधान उद्देश्यों की प्राप्ति तथा नवीन एवं अत्याधुनिक अनुसंधान करने में सहयोग देती है। इसके अतिरिक्त, कार्यशाला व्यावहारिक प्रशिक्षण सत्रों एवं कार्यशालाओं के माध्यम से विद्यार्थियों को प्रायोगिक प्रशिक्षण और कौशल विकास के अवसर भी प्रदान करती है।



प्रभारी प्राध्यापक,
केंद्रीय कार्यशाला
डॉ. डैन सथियाराज
सह प्राध्यापक (यांत्रिक अभियांत्रिकी)
workshopincharge@iiti.ac.in

अनुसंधान रुचियाँ:

- मध्यम से उच्च एंट्रॉपी मिश्रधातुएँ
- गंभीर प्लास्टिक विरूपण (एसपीडी)
- पुनःक्रिस्टलीकरण एवं ग्रेन ग्रोथ का अध्ययन
- एमईए एवं एचईए की माइक्रो एवं नैनोमशीनिंग
- सतह संशोधन अभियांत्रिकी (एसएमएटी, लेज़र शॉट–पीनिंग आदि)
- यांत्रिक एवं कार्यात्मक गुणों का अध्ययन

वर्ष 2025–2026 के दौरान गतिविधियाँ

- केंद्रीय कार्यशाला में प्राप्त कार्य अनुरोध: केंद्रीय कार्यशाला ने वर्ष 2025–2026 के दौरान स्नातक/स्नातकोत्तर अनुसंधान एवं शिक्षण, स्नातकोत्तर अनुसंधान, बीटीपी, प्रायोजित परियोजनाओं तथा अन्य निर्माण कार्यों सहित विभिन्न उद्देश्यों के लिए प्राप्त 372 कार्य अनुरोधों को पूरा किया। कार्यशाला में उपलब्ध स्क्रैप सामग्री का उपयोग विभिन्न घटकों के निर्माण, जेनेसिस कार्यक्रम हेतु पुलों के निर्माण, भंडारण टैंकों, कंप्रेसर शेड, स्वास्थ्य केंद्र के लिए फर्नीचर, क्राफ्ट सेंटर के लिए बाँस–प्लाईवुड की छत, मेजों आदि के निर्माण में किया गया।
- पुरस्कार एवं उपलब्धियाँ: केंद्रीय कार्यशाला को 31 अक्टूबर, 2025 को आईआईटी इंदौर में आयोजित स्वच्छता पखवाड़ा समारोह 5.0 के दौरान सर्वश्रेष्ठ स्वच्छता पुरस्कार प्राप्त हुआ।

- प्रयोगशाला कक्षाएँः केंद्रीय कार्यशाला ने विनिर्माण प्रक्रियाएँ प्रयोगशाला (एमई–258), मशीनिंग विज्ञान एवं मेट्रोलॉजी प्रयोगशाला (एमई–355) तथा कास्टिंग एवं वेल्डिंग प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एमएम252) की प्रायोगिक कक्षाएँ आयोजित कीं।
- विद्यालय के विद्यार्थियों का भ्रमण एवं ओरिएंटेशन कार्यक्रमः केंद्रीय कार्यशाला द्वारा 3,000 से अधिक विद्यालयी विद्यार्थियों के लिए भ्रमण एवं ओरिएंटेशन कार्यक्रम आयोजित किए गए।
- नई सुविधाओं का विकासः केंद्रीय कार्यशाला ने प्रयोगशाला एवं अनुसंधान कार्यों में सहयोग हेतु सीएनसी मिलिंग मशीन ट्रेनर तथा एब्रेसिव वॉटर जेट कटिंग मशीन की सुविधा शुरू की।



रिएक्टर पात्र का निर्माण



मशीन के पुर्जे की मरम्मत

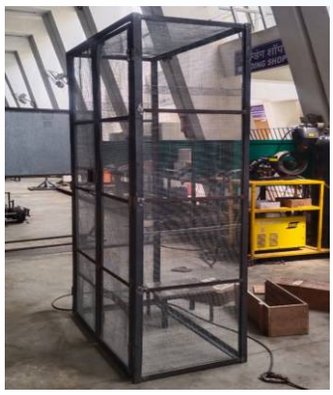

सिलेंडर सुरक्षा कैबिनेट का निर्माण



सीआरडीटी के लिए बाँस का खुला कैबिनेट स्टैंड



डिस्क पॉलिशिंग मशीन के लिए टेबल का निर्माण



एमईएमएस विभाग के लिए भट्ठी हेतु टेबल



वेल्डिंग पर्दे के लिए स्टैंड का निर्माण



कोट स्टैंड का निर्माण



एमईएमएस विभाग के लिए मशीन टेबल का निर्माण



बीएसबीई विभाग की अनुसंधान परियोजना



फील्ड शेपर का संरेखण



टिंकरर्स लैब के लिए मशीन टेबल



जेनेसिस कार्यक्रम के अंतर्गत प्रथम वर्ष के बी.टेक. विद्यार्थियों के लिए ट्रस संरचना का संयोजन



जेनेसिस कार्यक्रम के अंतर्गत प्रथम वर्ष के बी.टेक. के विद्यार्थी



विभिन्न विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के विद्यार्थियों का भ्रमण















भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर
खंडवा रोड, सिमरोल, इंदौर – 453 552, भारत
वेबसाइट: www.iiti.ac.in